हिन्दी
तिलिस्मा
अविश्वसनीय मायाजाल
4
Ring of Atlantis
शिवेन्द्र सूर्यवंशी

तिलिस्मा

अविश्वसनीय मायाजाल

Shivendra Suryavanshi

कॉपीराइट © 2021 Shivendra Suryavanshi

सर्वाधिकार सुरक्षित

यह उपन्यास पूर्णतया काल्पनिक है। इसका किसी व्यक्ति या घटना से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस कहानी का उद्देश्य किसी धर्म या संप्रदाय की भावनाओं को आहत पहुंचाने का भी नहीं है। यदि उपन्यास में किसी स्थान या घटना की जानकारी दी गयी है तो वह मात्र उपन्यास को कौतूहल वर्धक व मनोरंजक बनाने के लिए की गयी है।

इस पुस्तक का कोई भी भाग लेखक की लिखित अनुमति के बिना, पुनर्प्राप्ति प्रणाली में पुनरुत्पादित या संग्रहीत नहीं किया जा सकता या इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या किसी भी रूप में अन्यथा रूप से संचारित नहीं किया जा सकता है।

लेखक की कलम से

ॐ नमः शिवायः

नमामीशमीशान निर्वाण रूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदः स्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाश माकाशवासं भजेऽहम् ॥

अर्थात् हे मोक्षरुप, ईशान दिशा के ईश्वर, विभु, व्यापक ब्रह्म, वेदस्वरुप, महादेव, मैं आपको नमस्कार करता हूं। निज स्वरुप में स्थित, चेतन, इच्छा रहित, भेद रहित, आकाश रुप महाशिव मैं आपको सदैव नमन करता हूं।

(प्रस्तुत पंक्तियां पवित्र ग्रंथ 'रामचरितमानस' के 'रुद्राष्टक' से उद्धृत है, जिसके रचयिता श्री गोस्वामी तुलसीदास जी हैं)

दोस्तों इन्हीं कथनों के साथ मैं शिवेन्द्र सूर्यवंशी, अपनी चौथी पुस्तक 'तिलिस्मा' को लेकर, एक बार फिर आपके समक्ष प्रस्तुत हूं।

दोस्तों, जिस प्रकार से आपने मेरी पिछली तीन पुस्तकों को सम्मान और प्यार दिया, उसके लिये मैं हृदय से आपका आभारी हूं और आशा करता हूं कि आप उसी प्रकार मेरी इस चौथी पुस्तक को भी, अपने नेत्रों की कृपादृष्टि से अभिसिंचित कर मुझे उत्साहित करते रहेंगे।

दोस्तों, मैं आज यहां पर आपसे ज्यादा कुछ ना कहते हुए, अपने बाल्यकाल की एक घटना सुनाना चाहता हूं- जहां तक मुझे याद है, उस समय मेरी उम्र 6 वर्ष के आसपास थी। उस समय ना तो हाथ में मोबाइल रहता था और ना ही टेलीविजन पर आने वाले अनगिनत सीरीयल। बिजली का प्रकोप अलग चलता रहता था। उस समय मैं बेसब्री से शाम होने का इंतजार करता रहता था। शाम होते ही गर्मी के समय में सभी लोग मिट्टी से बनी छत को पानी से सींचते थे, जिससे दिन भर की सूर्य की तपिश, छत से निकल जाती थी और फिर चारो ओर पतली रस्सियों से बुनी हुई खाट को बिछा दिया जाता था। परिवार के सभी सदस्य खाना खाकर छत पर ही आ जाते थे, सोने के लिये। तब मिश्रित परिवार होने की वजह से, घर में बच्चे बहुत ज्यादा हुआ करते थे और इसके बाद शुरु होता था, मेरे दिन का सबसे खूबसूरत लम्हा। यानि की खुले आसमान के नीचे, सितारों की चादर तले, अपने पापा से नयी-नयी कहानियां सुनना। वह सुख तो आजकल के ए.सी. कमरों में भी नहीं मिलता। उस समय की बात ही कुछ और थी। मेरे पापा लगभग रोज नयी कहानियां सुनाते थे।

एक दिन मेरे बाल मन में यह विचार कौंधा कि पापा के पास रोज-रोज नयी कहानियां आ कहां से जाती हैं? बस यह सोच एक दिन मैंने यही प्रश्न, अपने पापा से पूछ लिया। पापा ने कहा कि उन्हें इतनी सारी कहानियां नहीं आतीं .... वह तो वो तुरंत ही कहानियों को गढ़कर हमें सुना

देते हैं। यह बात मेरे नन्हें से दिमाग को समझ नहीं आयी। मैंने उनसे पूछा कि आप आखिर ये करते कैसे हैं? तो उन्होंने बताया कि “ये सब कल्पना शक्ति का कमाल है। आप जितनी अच्छी कल्पना करोगे, उतनी ही अच्छी कहानी को बना सकोगे।” मैंने पापा से पूछा कि क्या ये शक्ति सबके अंदर होती है? तो उन्होंने कहा कि “हां, यह सबके अंदर होती है, पर जो इसका प्रयोग नहीं करता, उसकी शक्ति खो जाती है और जो इसका प्रयोग प्रतिदिन करता है, उसकी यह शक्ति बढ़ती जाती है।“ फिर उन्होंने मुझे बेहतर समझाने के लिये 5 शब्द दिये और कहा कि तुरंत इन 5 शब्दों पर कोई अच्छी सी कहानी गढ़कर मुझे सुनाओ। .... अब मुझे तो मानो एक नया खेल मिल गया था। मैं इस कार्य के लिये सहर्ष तैयार हो गया और फिर कुछ देर के बाद उन 5 शब्दों की खिचड़ी बनाकर उन्हें सुना दिया। ... फिर क्या था, अब रोज रात को एक नयी रात्रिचर्या शुरु हो गई थी। ... अब वह मुझे कहानी सुनाने की जगह पर, मुझे कुछ शब्द देते थे और मैं उन शब्दों से नित नयी कहानी गढ़ता था।

बस वो दिन है और आज का दिन। समय बदल गया है .... अब वह हमें छोड़कर ईश्वर से कहानी लिखवा रहें होंगे .... पर मैं आज तक नहीं बदला। मैं हर रोज कुछ नये शब्द अपने बच्चों को देता हूं और उन्हें कल्पना शक्ति का ज्ञान बांटता हूं। ..... पात्र बदल गये हैं, पर किरदार वही है।

ऐसी ही जिंदगी के कुछ लम्हों को यादकर, मैंने अपने पापा के लिये कविता की कुछ पंक्तियां लिखी हैं, जो मैं आज आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूं। आशा करता हूं कि आपको पसंद आयेंगी-

“सूरज की पहली किरण से हैं पापा, बनके रोशनी जगमगाते रहे,
खुशियों को मेरी पलकों पर रखके, मुश्किलों में भी मुस्कुराते रहे,
जब कभी डगमगाए मेरे कदम, मुझे रास्ता वो दिखाते रहे,
जीवन के हर वक्त का फलसफा, मुझे हर घड़ी वो सिखाते रहे,
सूरज की पहली किरण से हैं पापा, बनके रोशनी जगमगाते रहे,
छाने लगा जब अंधेरा घना, वो मन में शमा को जलाते रहे,
जब भी मिलती कहीं तारीफें मुझे, संस्कार उनके नजर आते रहे,
रोम-रोम में भरके जीत का जज्बा, मेरा हौसला वो बढ़ाते रहे,
‘शिवेन्द्र’ जब देखा गौर से रब को, मुझे मेरे पापा नजर आते रहे,
सूरज की पहली किरण से हैं पापा, बनके रोशनी जगमगाते रहे।”

तो दोस्तों इन पंक्तियों के साथ, मैं यह लेखन कार्य यहीं समाप्त करता हूं और आपसे एक छोटी सी गुजारिश भी करता हूं कि कृपया पुस्तक पढ़ने के बाद, अपनी निष्पक्ष राय, रिव्यू और कमेंट के माध्यम से हमें अवश्य दें।

अच्छे दिन की शुभकामनाओं सहित,

आपका दोस्त

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

◆ ◆ ◆

प्राक्कथन

कल्पना- एक ऐसा शब्द जो अपने अंदर संपूर्ण ब्रह्मांड को समेटे है। इस ब्रह्मांड में लहराता हुआ सागर भी है और सितारों से भरा आकाश भी। इस ब्रह्मांड में प्रकृति के सुंदर रंग भी हैं और समस्त जीवों की असीम भावनाएं भी। तो क्यों ना इस कल्पना की कूची से, अपने जीवन को एक नया रंग देकर देखें। यकीन मानिये, वह अहसास बहुत ही खूबसूरत होगा।

मायाजाल- एक ऐसा शब्द, जो हमारी आँखों के सामने रहस्यों से भरी पहेलियों का एक संसार खड़ा कर देता है। जहां एक ओर गणितीय उलझनें होती हैं, तो वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी वैचारिक पहेलियां, जिनमें उलझना अधिकांशतः लोगों को पसंद होता है। पर क्या हो? जब ऐसी उलझनों और पहेलियों के मध्य आपका जीवन दाँव पर लगा हो। अर्थात अगर आप इन उलझनों को पार ना कर पायें, तो आप हमेशा-हमेशा के लिये इस मायाजाल में कैद हो जाएं। इस पुस्तक में कुछ मनुष्यों के सामने, कुछ ऐसी ही मुसीबतें खड़ी हैं।

जरा सोचकर देखिये-

1) क्या हो अगर हमें किसी फूल की पहली पंखुड़ी को पहचानना पड़े?

2) क्या हो अगर आप किसी विशाल कछुए की पीठ पर रखे पिंजरे में बंद हो जाएं और वह आपको लेकर समुद्र की गहराई में चला जाए?

3) क्या हो जब आप छोटे होकर चींटियों के संसार में पहुंच जाएं? और चींटियां आप पर आक्रमण कर दें।

4) क्या हो जब स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी जीवित होकर आप पर हमला कर दे?

5) क्या हो जब किसान खेत में बारिश की बाट जोह रहा हो? और आपको देवराज इंद्र की भूमिका निभानी हो।

6) क्या हो जब आपके सामने पृथ्वी की रोटेशन रुक जाये? क्या आप पृथ्वी को गति दे सकते है?

7) क्या हो जब आपका टकराव 4 ऋतुओं से हो जाये?

8) क्या हो जब आप किसी वृक्ष में समाकर, किसी ऐसी दुनिया में पहुंच जाएं? जो स्वप्न से भी परे हो।

9) क्या हो जब आपको पेगासस और ड्रैगन जैसे जीवों का निर्माण करना पड़े?

10) क्या हो जब दूसरी आकाशगंगा के शक्तिशाली जीव आपके सामने खड़े हों? और उन पर आपकी पृथ्वी का कोई नियम ना लागू होता हो?

ऐसे ही अनगिनत सवालो का जवाब है यह पुस्तक। तो आइये इन्हें जानने के लिये पढ़ते हैं, रहस्य, रोमांच, तिलिस्म और साहसिक कार्यों से भरपूर, एक ऐसा हिंदी कथानक, जो विज्ञान के इस युग में भी ईश्वरीय शक्ति का अहसास दिलाता है-

“तिलिस्मा- अविश्वसनीय मायाजाल”

◆ ◆ ◆

चैपटर-1

कल्पना शक्ति

19125 वर्ष पहले ....

माया क्रीड़ा स्थल, माया सभ्यता, बेलिज शहर, सेण्ट्रल अमेरिका

मयासुर की पुत्री माया, भगवान गणेश के श्राप के चलते, भारतवर्ष से हजारों किलोमीटर दूर, सेण्ट्रल अमेरिका में आकर बस गई। बेलिज शहर से 70 किलोमीटर दूर, कैरेबियन सागर में स्थित 'दि ग्रेट ब्लू होल' की समुद्री गुफाओं में माया ने अपना निवास स्थान चुनाएक बार जब माया सागर की गहराइयों से निकलकर, बेलिज शहर के तट पर, भगवान सूर्य की सुनहरी धूप का आनन्द उठा रही थी, उसी समय एक प्राचीन अमेरिकी कबीले 'हांडा' के एक मनुष्य 'कबाकू' की निगाह माया पर जा पड़ी।

माया को देवी समझ, वह माया के समक्ष नतमस्तक हो गया।

माया को यह भोला-भाला आदिवासी बहुत अच्छा लगा।

माया ने कबाकू को हांडा कबीले का सरदार बना दिया और हांडा कबीले के लिये एक नयी सभ्यता का निर्माण किया, जिसे बाद में 'माया सभ्यता' के नाम से जाना गया।

माया सभ्यता के लोग माया को देवी की तरह से पूजते थे, पर माया कबाकू के सिवा किसी से मिलती नहीं थी।

माया सिर्फ कबाकू से मानसिक शक्तियों के द्वारा ही बात करती थी।

पूरी माया सभ्यता में हिन्दू देवी-देवताओं के मंदिर बने थे।

माया ने अपनी शक्तियों से सूर्य और चन्द्र के विशाल पिरामिडों का भी निर्माण किया। इन पिरामिडों में खगोल शास्त्र, ज्योतिष और ज्यामिति का ज्ञान भी दिया जाता था।

इन पिरामिडों में माया की सिर्फ आवाज ही गूंजती थी, किसी ने माया को देखा नहीं था।

फिर विभिन्न परिस्थितियों में, माया को कैस्पर और मैग्ना को पालने की जिम्मेदारी मिली।

कैस्पर और मैग्ना 6 वर्ष के हो गये थे, पर इन बीते 6 वर्षों में माया ने दोनों को सिर्फ एक ही चीज सिखाई थी और वह थी योग के माध्यम से कल्पना करना।

दोनों बच्चों का बचपन बिना किसी भय और बाधा के आराम से बीत रहा था।

माया ने इन दोनों बच्चों को विभिन्न परिस्थितियों में साँस लेने के अनुकूल बनाया था।

इन दोनों बच्चों के मिलने के बाद, माया का समय अच्छे से बीतने लगा, पर ऐसा नहीं था कि माया को नीलाभ और हनुका की याद नहीं आती थी।

हनुका के बाल स्वप्न आज भी माया को विचलित करते थे।

आज भी वह अपनी इन्हीं कल्पनाओं में खोई हुई थी कि मैग्ना ने उसे झंझोड़कर उठा दिया।

“क्या माँ आप अभी भी कुछ सोच रहीं हैं? आज तो आपने हमें हमारी शिक्षा का पहला पाठ देना था। देखो हम दोनों कितनी देर से आपके स्वप्न से बाहर आने का इंतजार कर रहे हैं।” मैग्ना ने भोलेपन से मुंह बनाते हुए कहा।

मैग्ना के झंझोड़ने पर माया उठकर बैठ गई।

उसने एक नजर अपने बिस्तर के पास खड़े मैग्ना और कैस्पर पर मारी और फिर उन दोनों के बालों में हाथ फेरकर उनके माथे पर एक चुंबन ले लिया।

माया ने 20,000 वर्ष तक कुछ ना बोलने का कठोर प्रण लिया था, इसलिये वह सभी से मानसिक शक्तियों के द्वारा ही बात करती थी।

“तुम लोग तैयार हो, बाहर चलने के लिये?” माया की आवाज वातावरण में गूंजी।

“क्या माँ ... हम तो कब से तैयार बैठे हैं, आप ही सोई हुईं थीं।” मैग्ना ने फिर चटाक से जवाब दिया।

“तुझे बड़ा आता है फटाक से जवाब देना।” माया ने प्यार से मैग्ना के कान उमेठते हुए कहा- “एक कैस्पर को देख कितना शांत रहता है और तू है कि पट्-पट् बोलते जाती है।”

“अरे माँ, वो तो तो भोंदू है ... उसे तो थोड़ी देर तक कुछ भी समझ नहीं आता।” मैग्ना ने अपना कान छुड़ाते हुए कहा।

“मैं भोंदू हूं ... रुक चुहिया अभी बताता हूं तुझे।” इतना कहकर कैस्पर मैग्ना के पीछे दौड़ पड़ा।

माया इन दोनों की शैतानियां देखकर मुस्कुरा उठी।

इससे पहले कि दोनों कोई और शैतानी कर पाते, माया ने लपककर दोनों का हाथ पकड़ लिया और गुफा से बाहर आ गई।

गुफा के बाहर एक ब्लू व्हेल खड़ी थी।

सभी को आता देख ब्लू व्हेल ने अपना मुंह खोल दिया।

माया, कैस्पर और मैग्ना को लेकर ब्लू व्हेल के खुले मुंह में प्रवेश कर गई।

“क्या माँ, कुछ नयी सवारी ले लो, मुझे इस व्हेल के मुंह में बैठना बिल्कुल भी नहीं पसंद।” मैग्ना ने मुंह बनाते हुए कहा- “इसके दाँत देखो ... यह तो अपना मुंह भी साफ नहीं करती। छीःऽऽ!”

सबके बैठते ही व्हेल बेलिज शहर की ओर चल पड़ी।

“ऐसा नहीं बोलते मैग्ना, व्हेल को बुरा लगेगा।” माया ने मुस्कुराते हुए कहा।

“मैं तो बड़ी होकर एक अच्छा सा हाइड्रा ड्रैगन लूंगी, जो पानी में तैर भी सके और आसमान में उड़ भी सके।” मैग्ना ने कल्पना करते हुए कहा- “ओये भोंदू ... बड़ा होकर तू क्या लेगा?”

“मैं एक ऐसा घोड़ा लूंगा, जिसके पंख हों और पानी में वह समुद्री घोड़ा बन जाए।” कैस्पर ने भी अपनी कल्पनाओं में एक तस्वीर को उकेरा।

“अरे वाह! तुम दोनों की कल्पनाएं तो काफी अच्छी हो गईं हैं।” माया ने खुश होते हुए कहा।

“अरे माँ ... हमने आज तक कल्पना करने के सिवा किया ही क्या है?” मैग्ना ने किसी बड़े के समान बोलते हुए कहा- “पिछले 5 वर्ष से हम

अभी तक बस कल्पना ही तो कर रहे हैं। मैंने तो अब तक इस भोंदू के सिर की जगह भी, 100-200 जानवरों के चेहरे की कल्पना कर ली है।”

कैस्पर ने घूरकर मैग्ना को देखा, पर कुछ कहा नहीं।

“कोई बात नहीं मैग्ना ... यह कल्पना शक्ति ही अब तुम्हारे काम आने वाली है।” माया ने मैग्ना के बालों पर हाथ फेरते हुए कहा।

“कैसे माँ?” मैग्ना ने ना समझने वाले अंदाज में कहा।

“चलो अभी बताती हूं, कुछ देर की बात और है बस?” मैग्ना ने अभी यह कहा ही था कि तभी व्हेल पानी के बाहर आ गई।

व्हेल ने अपना मुंह खोलकर सभी को बेलिज के तट पर उतार दिया।

तट पर कबाकू पहले से ही खड़ा था। उसके पास 4 सफेद घोड़ों का रथ भी था।

उसने झुककर तीनों को प्रणाम किया और फिर बोला- “आपके कहे अनुसार आज कोई भी क्रीड़ा स्थल पर नहीं है देवी। क्रीड़ा स्थल पूर्णतया खाली है।”

माया ने सिर हिलाकर कबाकू को आगे चलने का आदेश दिया।

कबाकू ने आगे बढ़कर दोनों बच्चों को रथ पर बैठाया और फिर माया को भी बैठने का इशारा कर, स्वयं आगे कोचवान वाली जगह पर जाकर बैठ गया।

माया के बैठते ही कबाकू ने रथ को आगे बढ़ा दिया।

कैस्पर की निगाह तो बस उन सफेद घोड़ों पर ही थी। वह अपलक उन घोड़ों को निहार रहा था, लेकिन यह बात मैग्ना की निगाह से छिपी नहीं थी।

कुछ ही देर में रथ क्रीड़ा स्थल तक पहुंच गया।

कबाकू ने रथ को क्रीड़ा स्थल के बाहर ही रोक दिया और क्रीड़ा स्थल का द्वार खोल माया को अंदर जाने का इशारा किया।

माया, मैग्ना और कैस्पर को लेकर क्रीड़ा स्थल के अंदर प्रविष्ठ हो गई।

तीनों के अंदर प्रवेश करते ही कबाकू ने द्वार को बंद कर दिया और स्वयं वहीं बाहर बैठकर उन तीनों के निकलने की प्रतीक्षा करने लगा।

क्रीड़ा स्थल किसी विशाल स्टेडियम की भांति बड़ा था।

उसमें चारो ओर लोगों के बैठने के लिये सीटें लगीं थीं।

इस क्रीड़ा स्थल का प्रयोग विशाल आयोजनों के लिये माया ने ही करवाया था।

इस समय उस स्थान पर कोई भी नहीं था।

"सबसे पहले मैं, कैस्पर को सिखाऊंगी।" माया ने यह कहकर कैस्पर की ओर देखा।

कैस्पर ने सिर हिलाकर अपने तैयार होने की पुष्टि कर दी।

"देखो कैस्पर अब मैं जो कुछ भी बता रहीं हूं, उसे ध्यान से सुनना।" माया ने कैस्पर की ओर देखते हुए कहा- "मेरा एक-एक शब्द पूरी जिंदगी तुम्हारे काम आने वाला है।"

यह पाठ मैग्ना के लिये नहीं था, फिर भी मैग्ना सारी बातें ध्यान से सुन रही थी।

दोनों को ध्यान से सुनते देख माया ने बोलना शुरु कर दिया- "समस्त ब्रह्मांड कणों से बना है और प्रत्येक कण में त्रिकण शक्ति होती है। प्रथम कण धनात्मक, द्वितीय कण ऋणात्मक और तृतीय कण तटस्थ होता है। तटस्थ कण नाभिक में स्थित होता है और वही इन दोनों कणों को बांधे रखता है। धनात्मक और ऋणात्मक कण नाभिक के चारो ओर चक्कर लगातें हैं। यह कण वातावरण में भी फैले हैं और हमारा शरीर भी इन्हीं कणों से बना है। हम वातावरण में उपस्थित कणों को नियंत्रित नहीं कर सकते, परंतु अपने शरीर में उपस्थित जीवद्रव्य और जीवऊर्जा की मदद से, अपने शरीर के कणों को बांधे रखते हैं। अब ब्रह्मांड में एक ऐसी शक्ति है, जो इन प्रत्येक कणों को नियंत्रित कर सकती है और वह शक्ति है ब्रह्मशक्ति। हां ... यह वही शक्ति है जिसके द्वारा ब्रह्मदेव ने ब्रह्मांड की रचना की। उन्होंने अपनी शक्ति से इन कणों का नियंत्रण किया और ग्रहों के साथ समस्त वातावरण व प्राकृतिक पदार्थों की रचना की। आज मैं तुम्हें उसी ब्रह्मशक्ति का ज्ञान देने जा रही हूं। इस ब्रह्मशक्ति के माध्यम से तुम निर्जीव व सजीव सभी चीजों की रचना कर सकते हो। परंतु ये ध्यान रखना कि इस ब्रह्मशक्ति से उत्पन्न जीव स्वयं की वंशवृद्धि नहीं कर सकते। वह जिस कार्य के लिये उत्पन्न किये जायेंगे, उस कार्य को समाप्त करने के बाद, वह स्वयं वातावरण में विलीन हो जायेंगे। ठीक उसी प्रकार तुम इनसे जिन इमारतों, भवनों और शहरों का निर्माण करोगे, उनकी आयु भी निश्चित होगी। हां उनकी आयु को निश्चित करने का अधिकार तुम्हारे ही

पास होगा, लेकिन वह तुम्हें निर्माण के समय ही सोचना होगा। अब इसके बाद मैं तुम्हें बताती हूं कि मैंने 5 वर्षों तक तुम लोगों को कल्पना करना क्यों सिखाया? ..... ब्रह्मशक्ति के प्रयोग में सबसे विशेष स्थान कल्पना का ही है। जिस समय तुम किसी चीज का निर्माण करोगे, वह सभी कुछ कल्पना के ही आधार पर होगा। जितनी अच्छी कल्पना होगी, उतना ही अच्छा निर्माण करने में तुम सफल होगे। तो कैस्पर ... क्या अब तुम तैयार हो ब्रह्मशक्ति प्राप्त करने के लिये?"

कैस्पर ने सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दी।

कैस्पर को तैयार देख माया ने अपनी दोनों आँखों को बंद कर, अपना दाहिना हाथ आगे कर लिया और मन ही मन किसी मंत्र का उच्चारण करने लगी।

माया के मंत्र का उच्चारण करते ही अचानक से, आसमान में घने काले बादल घिर आये और मौसम बहुत खराब दिखने लगा।

अब बादलों में ब्रह्मदेव का चेहरा नजर आने लगा।

तभी आसमान में एक जोर की बिजली कड़की और सीधे आकर माया के फैलाये हाथ पर जा गिरी।

इसी के साथ ही बादल सहित, ब्रह्मदेव का चेहरा भी आसमान से गायब हो गया।

मौसम अब फिर सामान्य हो गया था, परंतु अब माया के हाथों में एक पीले रंग की मणि चमक रही थी।

मणि से निकल रही रोशनी बहुत तेज थी।

माया ने अब अपनी आँखें खोल दीं और बोली- "कैस्पर पुत्र ... मेरे साथ-साथ अब हाथ जोड़कर इस मंत्र को तेज-तेज तीन बार दोहराओ।

यह कहकर माया ने ब्रह्मदेव का मंत्र बोलना शुरु कर दिया- "ऊँ चतुर-मुखाया विद्महे हंसा-रुड़ाये धीमही तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।"

कैस्पर ने ब्रह्मदेव के मंत्र को तीन बार दोहराया।

माया ने अब उस पीले रंग की मणि को कैस्पर के मस्तक से स्पर्श करा दिया।

एक तीव्र रोशनी फेंकते हुए वह मणि कैस्पर के मस्तक में समा गई।

कैस्पर घबराकर अपने चेहरे को देखने लगा, पर वहां पर अब किसी भी प्रकार का कोई निशान नहीं था।

“ब्रह्मशक्ति ने अब तुम्हारे मस्तक में अपना स्थान बना लिया है।” माया ने कैस्पर को प्यार से देखते हुए कहा- “अब तुम्हारे सिवा इस मणि को कोई भी तुम्हारे मस्तक से नहीं निकाल सकता। क्या अब तुम इसके प्रयोग के लिये तैयार हो कैस्पर?”

“हां ... मैं इसका प्रयोग करने के लिये तैयार हूं।” कैस्पर ने कहा।

“ठीक है ... तो अब अपने दोनों हाथों को सामने फैलाकर, अलग-अलग दिशा में गोल-गोल लहराओ।” माया ने कहा।

कैस्पर ने ऐसा ही किया।

कैस्पर के ऐसा करते ही वातावरण में उपस्थित कण, हवा में गोल-गोल नाचने लगे। जैसे-जैसे कैस्पर अपने हाथों को नचा रहा था, कणों की संख्या बढ़ती जा रही थी।

“जब तुम्हें लगे कि अब वातावरण में पर्याप्त कण हो गयें हैं, तो अपने दोनों हाथों से उन कणों को धक्का देकर दूर भेज देना और फिर अपनी आँख बंद करके, किसी भी प्रकार के निर्माण के बारे में सोचना .... जब तुम आँख खोलोगे तो निर्माण हो चुका होगा।” माया ने कैस्पर को समझाते हुए कहा।

कैस्पर माया की बात को सुनकर कुछ देर तक हवा में अपने दोनों हाथ हिलाता रहा, फिर उसने एक धक्के से हवा में नाच रहे उन कणों को दूर धकेला और आँख बंदकर कुछ कल्पना करने लगा।

माया और मैग्ना की उत्सुक निगाहें, सामने कणों से हो रही उस रचना पर थी।

उस रचना के आधा बनते ही, माया के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

वह एक शानदार ऊंची कद काठी वाला, सफेद रंग का पंखों वाला घोड़ा था।

कुछ देर तक कल्पना करने के बाद, कैस्पर ने अपनी आँखें खोलीं।

उसके सामने दूध सा सफेद पंखों वाला घोड़ा खड़ा था।

कैस्पर से आँख मिलते ही घोड़े ने हिनहिना कर, अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

कैस्पर मंत्रमुग्ध सा उस विलक्षण घोड़े को निहार रहा था कि तभी वह घोड़ा बोल उठा- “कृपया मुझे मेरा नाम बताएं।”

“तुम्हारा नाम जीको होगा ... तुम आसमान में अपने पंख पसार कर उड़ सकोगे और पानी में समुद्री घोड़े का रुप लेकर तैर सकोगे ... तुम्हारी आयु मेरी आयु के बराबर होगी। तुम मेरी सवारी बनोगे।” कैस्पर ने घोड़े को छूते हुए कहा।

“जो आज्ञा कैस्पर। क्या तुम अभी मुझ पर बैठकर सवारी करना चाहोगे?” जीको ने पूछा।

कैस्पर ने मुड़कर माया की ओर देखा। माया ने अपनी पलकें झपकाकर कैस्पर को अनुमति दे दी।

यह देख कैस्पर तुरंत घोड़े पर सवार हो गया।

कैस्पर के सवार होते ही जीको कैस्पर को लेकर आसमान में उड़ चला।

कुछ देर तक कैस्पर ने जीको को कसकर पकड़ रखा था, फिर धीरे-धीरे उसका डर खत्म होता गया।

अब कैस्पर अपने दोनों हाथों को छोड़कर, जीको के साथ आसमान में उड़ने का मजा ले रहा था।

जीको अब एक सफेद बादलों की टुकड़ी के बीच उड़ रहा था।

हर ओर मखमल के समान बादल देख, कैस्पर को बहुत अच्छा महसूस हो रहा था।

कई बार तो कई पक्षी भी, कैस्पर के बगल से निकले, जो कि आश्चर्य से इस उड़ने वाले घोड़े को देख रहे थे।

उन पक्षियों के लिये भी जीको किसी अजूबे से कम नहीं था।

कुछ देर तक आसमान में उड़ते रहने के बाद कैस्पर ने जीको को समुद्र के अंदर जाने को कहा।

जीको आसमान से उतरकर, समुद्र की गहराइयों में प्रवेश कर गया।

अब जीको ने समुद्री घोड़े का रुप ले लिया था, परंतु जीको का आकार, अब भी घोड़े के बराबर ही था।

नीले पानी में रंग बिरंगे जलीय जंतु दिखाई दे रहे थे।

ना तो जीको को पानी में साँस लेने में कोई परेशानी हो रही थी और ना ही कैस्पर को।

कैस्पर अभी छोटा ही तो था, इसलिये यह यात्रा उसके लिये सपनों सरीखी ही थी।

वह अपनी नन्हीं आँखों में, इस दुनिया के सारे झिलमिल रंगों को समा लेना चाहता था।

तभी उसके मस्तिष्क में माया की आवाज सुनाई दी- "अब लौट आओ कैस्पर, जीको अब तुम्हारे ही पास रहेगा ... फिर कभी इसकी सवारी का आनन्द उठा लेना।"

माया की आवाज सुन, कैस्पर ने जीको को वापस चलने का आदेश दिया।

कुछ ही देर में उड़ता हुआ जीको वापस क्रीड़ा स्थल में प्रवेश कर गया।

जहां एक ओर कैस्पर के चेहरे पर, दुनिया भर की खुशी दिख रही थी, वहीं मैग्ना के चेहरे पर मायूसी साफ झलक रही थी।

"कैसा है मेरा जीको?" कैस्पर ने जीको से उतरते हुए मैग्ना से पूछा।

"बहुत गन्दा है ... इसका सफेद रंग मुझे बिल्कुल भी नहीं पसंद ... इसके पंख भी बहुत गंदे हैं।" मैग्ना ने गुस्साते हुए कहा।

"अरे ... तुम्हें क्या हो गया?" कैस्पर ने आश्चर्य से भरते हुए कहा।

"घोड़ा पाते ही अकेले-अकेले लेकर उड़ गये ... मुझसे पूछा भी नहीं कि मुझे भी उसकी सवारी करनी है क्या? .... कैस्पर तुम बहुत गंदे हो ... मैं भी जब अपना ड्रैगन बनाऊंगी तो तुम्हें उसकी सवारी नहीं करने दूंगी।"

दोनों ने फिर झगड़ना शुरु कर दिया।

यह देख माया ने बीच-बचाव करते हुए कहा- "हां ठीक है ... मत बैठने देना कैस्पर को अपने ड्रैगन पर ... पर पहले अपना ड्रैगन बना तो लो।"

यह सुन मैग्ना ने जीभ निकालकर, नाक सिकोड़ते हुए कैस्पर को चिढ़ाया और माया के पास आ गई।

"मैग्ना ... मैं तुम्हें ब्रह्म शक्ति नहीं दे सकती।" माया ने मैग्ना को देखते हुए कहा- "क्योंकि वह मेरे पास एक ही थी।"

यह सुनकर मैग्ना का चेहरा उतर गया।

“पर तुम उदास मत हो ... उसके बदले मैं तुम्हें 1 नहीं बल्कि 2 शक्तियां दूंगी।” माया ने कहा।

“येऽऽऽऽऽ 2 शक्तियां!” यह कहकर उत्साहित मैग्ना ने फिर कैस्पर को चिढ़ाया।

माया ने एक बार फिर आँख बंदकर ‘यम’ और ‘गुरु बृहस्पति’ को स्मरण किया। इस बार तेज हवाओं के साथ माया के दोनों हाथों में 2 मणि दिखाई दीं।

माया ने मंत्र पढ़कर दोनों मणियों को मैग्ना के दोनों हाथों में स्थापित कर दिया।

“मैग्ना! तुम्हारे बाएं हाथ में, जो गाढ़े लाल रंग की मणि है, उसमें जीव शक्ति है और दाहिने हाथ में जो हल्के हरे रंग की मणि है, वो वृक्ष शक्ति है।” माया ने मैग्ना को देखते हुए कहा- “जीव शक्ति से तुम अपनी कल्पना से किसी भी जीव का निर्माण कर सकती हो और वृक्ष शक्ति से किसी भी प्रकार के वृक्ष का निर्माण कर सकती हो। जीव शक्ति में एक और विशेषता है, यह समय के साथ तुम्हें समझते हुए, स्वयं में बदलाव भी करती रहेगी। यानि की इसकी शक्तियां अपार हैं, बस तुम्हें इसे ठीक से समझने की जरुरत है। जीव शक्ति आगे जाकर इच्छाधारी शक्ति में भी परिवर्तित हो सकती है, जिससे तुम अपने शरीर के कणों में आवश्यक बदलाव करके किसी भी जीव में परिवर्तित हो सकती हो। क्या अब तुम अपनी शक्तियों के प्रयोग के लिये तैयार हो?”

“मैं तो मरी जा रही हूं कब से।” मैग्ना ने मासूमियत से जवाब दिया।

“तो फिर पहले अपने दोनों हाथों को जोर से हवा में गोल लहराओ और फिर संकेन्द्रित वायु को जमीन पर रखकर वृक्ष शक्ति का प्रयोग करो।” माया ने कहा।

माया के इतना कहते ही मैग्ना ने जोर से अपने दोनों हाथों को हवा में लहराया और फिर वातावरण मे घूम रहे कणों को जमीन पर रखकर, अपनी आँखें बंदकर कल्पना करने लगी।

मैग्ना के कल्पना करते ही उसके आसपास से, जमीन से बिजली निकलकर, उन हवा में घूम रहे कणों पर पड़ने लगी।

जमीन से निकल रही बिजली तेज ध्वनि और चमक दोनों ही उत्पन्न कर रही थी, पर मैग्ना की कल्पना लगातार जारी थी।

माया और कैस्पर की आश्चर्य भरी निगाहें, मैग्ना की कल्पना से बन रहे वृक्ष पर थी।

जमीन की सारी बिजली एक ही स्थान पर पड़ रही थी, परंतु काफी देर बाद भी, कोई वृक्ष उत्पन्न होता हुआ नहीं दिखाई दिया।

अचानक मैग्ना ने अपनी आँखें खोल दी।

मैग्ना के आँख खोलते ही सारी बिजली वापस जमीन में समा गई।

जिस जगह से बिजली टकरा रही थी, वह स्थान अब भी खाली था।

यह देखकर कैस्पर जोर से हंसकर बोला- “वाह-वाह! चुहिया ने क्या कल्पना की है। एक घास भी नहीं बना पाई, वृक्ष तो दूर की बात है।”

पर पता नहीं क्यों इस बार मैग्ना ने कैस्पर की बात का बुरा नहीं माना।

वह धीरे-धीरे चलती हुई आगे आयी और उस स्थान को ध्यान से देखने लगे, जहां पर संकेद्रित वायु के कण तैर रहे थे।

ध्यान से देखने के बाद मैग्ना ने हाथ बढ़ाकर, जमीन से कोई चीज उठाई और उसे लेकर माया के पास जा पहुंची।

माया ने आश्चर्य से मैग्ना के हथेली पर रखे, एक भूरे रंग के बीज को देखा।

माया को कुछ समझ नहीं आया कि मैग्ना उसे क्या दिखाना चाहती है?

तभी मैग्ना ने आगे बढ़कर वहां पहले से ही रखे एक पानी से भरे मस्क को उठाया और उस बीज को जमीन पर रखकर, उस पर पानी डाल दिया।

पानी की बूंद पड़ते ही वह बीज अंकुरित हो गया और उससे एक नन्हीं सी हरे रंग की कोपल बाहर निकली।

वह कोपल तेजी से अपना आकार बढ़ा रही थी।

धीरे-धीरे वह एक नन्हा पेड़ बनने के बाद, एक विशाल वृक्ष में बदल गया, पर वृक्ष का बढ़ना अभी रुका नहीं था।

लगभग 5 मिनट में ही वृक्ष की शाखाएं आसमान छूने लगीं।

माया और कैस्पर हैरानी से उस वृक्ष को बढ़ते देख रहे थे।

अब उस वृक्ष के सामने पूरा द्वीप ही बौना लगने लगा था, मगर वृक्ष का बढ़ना अभी भी जारी था।

यह देख माया के चेहरे पर चिंता के भाव उभरे।

“मैग्ना .... अब वृक्ष का बढ़ना रोक दो, नहीं तो यह वृक्ष पृथ्वी के वातावरण को ही नष्ट कर देगा।” माया ने भयभीत होते हुए कहा।

माया के यह कहते ही मैग्ना ने आगे बढ़कर वृक्ष को धीरे से सहलाया।

ऐसा लगा जैसे वृक्ष मैग्ना की बात समझ गया हो, अब उसका आकार छोटा होने लगा था।

कुछ ही देर में उस महावृक्ष का आकार, एक साधारण वृक्ष के समान हो गया।

“तुमने क्या कल्पना की थी मैग्ना?” माया ने मैग्ना से पूछा।

“मैंने कल्पना की, एक ऐसे महावृक्ष की ... जिसके पास स्वयं का मस्तिष्क हो, वह किसी इंसान की भांति चल फिर सके, बोले व भावनाओं को समझे। वह अपने शरीर को छोटा बड़ा भी कर सके। वह अपने अंदर छिपे सपनो के संसार से, लोगों को ज्ञान दे, उन्हें सही मार्ग दिखलाए। वह स्वयं की शक्तियों का विकास करे। उसके अंदर एक पुस्तकों की भंडार हो, उसके तनों से अनेकों दुनिया के रास्ते खुलें। उसकी पत्तियों में जीवनदायिनी शक्ति हो, उसके फलों में किसी को भी ऊर्जा देने की शक्ति हो, उसके फूलों में अनंत ब्रह्मांड के रहस्य हों और जब तक धरती पर एक भी मनुष्य है, उसका जीवन तब तक रहे।” इतना कहकर मैग्ना चुप हो गयी।

माया आश्चर्य से अपलक मैग्ना को निहार रही थी।

इतनी शक्तिशाली कल्पना तो देवताओं के लिये भी करना आसान नहीं था और वह भी तब, जब वह मात्र 6 वर्ष की थी।

“इतने नन्हें मस्तिष्क से इतनी बड़ी कल्पना तुमने कर कैसे ली? और वह भी कुछ क्षणों में ही।” माया ने मैग्ना को देखते हुए कहा।

“अब मैं इतनी छोटी थोड़ी ना हूं।” मैग्ना ने अपनी पलकें झपकाते हुए कहा।

माया समझ गई कि इन बच्चों को उसने शक्तियां देकर गलत नहीं किया है।

तभी इतनी देर से शांत वह वृक्ष बोल पड़ा- “मैंने सुन लिया कि मेरा निर्माण क्यों हुआ है? अब कृपया मुझे मेरा नाम बताने का कष्ट करें।”

मैग्ना ने कुछ देर सोचा और फिर कहा- “तुम्हारा नाम महावृक्ष होगा। कैसा लगा तुम्हें अपना यह नाम?”

“बिल्कुल आप ही की तरह सुंदर।” महावृक्ष ने कहा।

“तो फिर ठीक है ... चलो अब छोटे होकर मेरी हथेली के बराबर हो जाओ .... अभी मैं तुम्हें अपने साथ रखूंगी ... बाद में सोचूंगी कि तुम्हें कहां लगाऊं।” मैग्ना ने कहा।

मैग्ना की बात मानकर महावृक्ष छोटा होकर मैग्ना की हथेली के बराबर हो गया।

अब मैग्ना ने माया से दूसरी शक्ति का प्रयोग करने की आज्ञा मांगी।

माया की आज्ञा पाकर मैग्ना ने फिर से अपने दोनों हाथों को हवा में लहराया और कल्पना करना शुरु कर दिया।

इस कल्पना को समझना माया और कैस्पर दोनों के लिये ही बहुत आसान था।

इस बार मैग्ना ने जीव शक्ति का प्रयोग कर एक हाइड्रा ड्रैगन बनाया, जो हवा और पानी के हिसाब से अपना आकार बदल सके।

मैग्ना ने जब आँखें खोलीं तो उसके सामने सोने के रंग का एक नन्हा ड्रैगन का बच्चा था, जिस पर लाल रंग से धारियां बनीं हुईं थीं।

“ओऽऽऽऽऽऽ कितना प्यारा है यह नन्हा ड्रैगन।” मैग्ना तो जैसे नन्हें ड्रैगन में खो सी गई- “मैं तुम्हारा नाम ड्रैंगो रखूंगी .... और हां उस गंदे कैस्पर के साथ बिल्कुल मत खेलना ... समझ गये।”

ड्रैगन ने अपने गले से ‘क्री’ की आवाज निकाली।

ऐसा लगा जैसे कि वह सब कुछ समझ गया था।

कैस्पर ने भी ड्रैगन को देख मुंह बनाया और जीको को गले से लगा लिया।

दोनों की शैतानियां फिर शुरु हो गईं थीं, जिसे देख माया मुस्कुराई और फिर दोनों को लेकर वापस ब्लू होल की ओर चल दी।

मैग्ना ने महावृक्ष को अपने कंधे पर बैठा लिया था और नन्हें ड्रैगन को किसी खिलौने की भांति अपने हाथों में पकड़े थी।

कैस्पर जीको की पीठ पर इस प्रकार बैठा था, जैसे वह कभी उतरेगा ही नहीं।

कुछ भी हो पर दोनों बच्चे आज बहुत खुश थे।

◆ ◆ ◆

बाल हनुका

20,010 वर्ष पहले........

प्रातःकाल, गंधमादन पर्वत, हिमालय

हिमालय पर कैलाश पर्वत से कुछ ही दूरी पर स्थित है- 'गंधमादन पर्वत'। देवताओं का वह स्थान जहां वह साधना करते थे।

प्रातःकाल का समय था, चारो ओर स्वच्छ, स्निग्ध, श्वेत हिमखंड फैले हुए थे। बहुत ही पवित्र वातावरण था।

मंद-मंद वायु बह रही थी। ऐसे में एक विशाल पहाड़ के नीचे, नन्हा यति बर्फ में लोट-लोट कर खेल रहा था।

उस नन्हें यति की आयु 1 वर्ष की भी नहीं लग रही थी। वह दूध पीने वाला अबोध बालक लग रहा था।

उसके माता-पिता कुछ ही दूरी पर बैठे, अपने नन्हें बालक को खेलते हुए निहार रहे थे।

नन्हा यति कभी-कभी बर्फ के गोले बनाकर अपने माता-पिता पर भी फेंक दे रहा था।

एकाएक उस नन्हें यति को हवा में बह रही एक ध्वनि सुनाई दी- "रामऽऽऽऽऽऽ रामऽऽऽऽऽऽऽ"

अब वह खेलना छोड़, अपने कान खड़े करके, उस ध्वनि पर ध्यान देने लगा।

उसे वह ध्वनि सामने उपस्थित, एक बर्फ के टीले से आती सुनाई दी।

नन्हें यति ने कुछ देर तक उस आवाज को सुना और फिर पलटकर अपने माता-पिता की ओर देखा।

उसके माता-पिता आपस में कुछ बातें कर रहे थे, यह देख नन्हा यति घुटनों के बल, उस बर्फ के टीले की ओर बढ़ने लगा।

जैसे-जैसे वह आगे बढ़ रहा था, 'राम' नाम की गूंज तेज होती जा रही थी।

नन्हें यति ने उस टीले को अपने हाथ से छूकर देखा, पर उसे कुछ समझ नहीं आया।

तभी अचानक पहाड़ से, एक बर्फ की भारी चट्टान, उस नन्हें यति के माता-पिता पर जा गिरी।

चट्टान के गिरने की भीषण आवाज ने, नन्हें यति को बुरी तरह से डरा दिया।

नन्हें यति ने पलटकर अपने माता-पिता की ओर देखा।

दोनों ही उस चट्टान के नीचे बुरी तरह से कुचल गये थे।

नन्हा यति टीले से आ रही आवाज को छोड़, घुटनों के बल चलता, अपने माता-पिता की ओर भागा।

टीले के नीचे से खून से लथपथ उसकी माँ का हाथ नजर आ रहा था। नन्हें यति ने रोते हुए अपने नन्हें हाथों से चट्टान को हटाने की कोशिश की, पर वह सफल नहीं हो पाया।

अब नन्हा यति जोर-जोर से बिलख रहा था।

उसके बिलखने की आवाज बहुत ही करुणादायक थी।

तभी राम नाम की ध्वनि बंद हो गई और उस टीले में हरकत होने लगी।

कुछ ही क्षणों में टीले की सारी बर्फ नीचे गिरी पड़ी थी और उसके स्थान पर पवनपुत्र हनुमान नजर आने लगे।

हनुमान की निगाह, बिलख रहे उस नन्हें यति पर गई।

हनुमान से उसका बिलखना देखा नहीं गया। वह सधे कदमों से उस नन्हें यति के पास आ गये।

एक क्षण में ही उनकी तीक्ष्ण निगाहों ने, बर्फ के नीचे दबे उस नन्हें यति के माता-पिता को देख लिया था।

हनुमान ने एक हाथ से ही उस चट्टान को उठाकर दूर फेंक दिया।

चट्टान के हटते ही नन्हा यति, अपनी माँ के निर्जीव शरीर से जा चिपका।

हनुमान ने उस नन्हें यति को अपनी गोद में उठा लिया।

किसी के शरीर का स्पर्श पाते ही नन्हा यति चुप हो गया, परंतु वह अब भी सिसकियां ले रहा था।

हनुमान ने नन्हें यति के माता-पिता के निर्जीव शरीर की ओर देखा।

हनुमान की आँखों से किरणें निकलीं और दोनों यति के पार्थिव शरीर, कणों में बदलकर बर्फ में समा गये।

हनुमान उस नन्हें यति को लेकर अब बर्फ पर अकेले खड़े थे।

“हे प्रभु, यह कैसी माया है .... इतने नन्हें बालक से उसका सहारा छीन लिया .... अब मैं इस बालक का क्या करुं? ... इसे यहां छोड़कर भी नहीं जा सकता और इसे लेकर भी कहां जाऊं? .... मैं तो ब्रह्मचारी हूं और सदैव साधना में रत रहता हूं .... फिर इस बालक की देखभाल कैसे कर पाऊंगा? मुझे मार्ग दिखाइये प्रभु।” हनुमान मन ही मन बड़बड़ा रहे थे।

उन्हें समझ ही नहीं आ रहा था कि वह क्या करें? आज तक पूरी जिंदगी में उन्होंने कभी इस प्रकार की परिस्थिति का सामना नहीं किया था।

तभी उस नन्हें यति ने फिर से रोना शुरु कर दिया।

अब तो और विकट स्थिति खड़ी हो गई थी। हनुमान को उसे चुप कराना भी नहीं आ रहा था।

वह कभी उसे गोद में लेकर हिलाते, तो कभी उसे हवा में उछालते .... पर इस समस्या का समाधान उनके पास नहीं था।

नन्हा यति चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

“लगता है कि इसे भूख लगी है .... पर ... पर मैं इसे खिलाऊं क्या?” हनुमान बहुत ही असमंजस में थे।

हनुमान ने अब नन्हें यति को जमीन पर बैठा दिया और अपनी शक्तियों से उसके सामने हजारों प्रकार के विचित्र फल और खाद्य पदार्थ रख दिया, पर उस नन्हें यति ने उन सभी पदार्थों की ओर देखा तक नहीं।

कुछ ना समझ में आता देख हनुमान उस नन्हें यति के सामने नाचने लगे।

हनुमान का विचित्र नृत्य देखकर, नन्हा यति चुप हो गया। यह देख खुशी के मारे हनुमान और जोर से नाचने लगे।

नन्हा यति अपनी पलकें झपकाकर हनुमान के उस विचित्र नृत्य का आनंद उठा रहा था।

धीरे-धीरे काफी समय बीत गया, पर हनुमान जैसे ही रुकते थे, वह नन्हा यति फिर से रोने लगता था।

अब वह नन्हा यति हनुमान के लिये, एक मुसीबत बन गया था, तभी एक आवाज वातावरण में गूंजी- “अपनी इस कला का प्रदर्शन तो तुमने कभी किया ही नहीं हनुमान? हम तो आश्चर्यचकित रह गये तुम्हारी इस विद्या को देखकर।”

हनुमान ने आश्चर्य से पीछे पलटकर देखा।

पीछे नंदी संग महादेव खड़े थे।

नंदी को घूरता देख हनुमान एक पल को अचकचा से गये, फिर उन्होंने महादेव को प्रणाम किया।

“महादेव ... अब आप ही बचाइये मुझे इस बालक से।” हनुमान ने महादेव के पैर पकड़ लिये- “पिछले एक घंटे से यह बालक मुझे नचा रहा है।”

“तुमने कभी गृहस्थ आश्रम का आनंद नहीं उठाया है ना, इसलिये तुम इस क्षण की महत्वता नहीं समझ सकते।” महादेव ने हनुमान को उठाते हुए कहा।

“मैं समझना भी नहीं चाहता प्रभु ... बहुत अच्छा हुआ कि मैं ब्रह्मचारी हूं ... इस क्षण की महत्वता को मैंने 1 घंटे में जी लिया ... अब आप मुझे इससे छुटकारा दिलाइये प्रभु।” हनुमान तो महादेव को छोड़ ही नहीं रहे थे।

तभी उस नन्हें यति ने फिर से रोना शुरु कर दिया।

यह देख हनुमान और भी डर गये।

उन्होंने गुस्से से नंदी की ओर देखते हुए कहा- “देख क्या रहे हो? इसे चुप क्यों नहीं कराते।”

“मैं! .... म ....म ... मुझे भी नहीं आता बालकों को चुप कराना।” यह कहकर नंदी भी भागकर महादेव के पीछे छिप गया।

“मैं और नंदी, नीलाभ और माया के विवाह में जा रहें हैं, हमारे साथ तुम भी चलो। क्या पता वहां पर तुम्हें इससे छुटकारा पाने का कोई हल

मिल ही जाये?” महादेव ने मुस्कुराते हुए हनुमान से कहा।

“मैं चलूंगा .... आप जहां कहेंगे, वहां चलूंगा।” इतना कह हनुमान ने नन्हें यति को गोद में उठाया और महादेव के पीछे-पीछे चल पड़े।

महादेव, हनुमान और नंदी के साथ आकाश मार्ग से कैलाश पर्वत के पास स्थित विवाह स्थल पर पहुंच गये।

माया ने कैलाश के पास ही विवाह के मंडप स्थल का निर्माण किया था।

केले के पत्ते और सुगंधित फूलों से सजा विशाल मंडप बहुत ही आकर्षक लग रहा था।

विवाह स्थल के बाहर 2 हाथी, हर आने वाले पर, अपनी सूंढ़ से सुगंधित इत्र का छिड़काव कर रहे थे।

अंदर कुछ सफेद अश्व अपने पैरों में घुंघरु बांधकर, अपने पैरों को जोर-जोर आगे-पीछे कर, नृत्य कर रहे थे।

एक स्थान पर कुछ व्यक्ति रंगीन वस्त्र पहने शहनाई बजा रहे थे।

महादेव और हनुमान को विवाह स्थल पर प्रवेश करते देख, कुछ स्त्रियां उनके पैरों के आगे फूल बिछाकर रास्ता बनाने लगीं।

कुछ आगे जाने पर एक छोटा सा सरोवर दिखाई दिया, जिसमें नीले रंग का शुद्ध जल भरा हुआ था और उस जल में कुछ हंस कलरव कर रहे थे, हंस के आसपास सुर्ख लाल रंग की नन्हीं मछलियां, पानी में उछलकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवा रहीं थीं।

एक स्थान पर, हरी घास पर मोर अपने पंख फैलाकर नृत्य कर रहे थे, कुछ रंग-बिरंगी छोटी चिड़ियां अपने मीठे कंठ से सुरम्य आवाज कर, मोर को उत्साहित कर रहीं थीं।

कुल मिलाकर वहां का वातावरण इतना खूबसूरत था कि उसे शब्दों में व्यक्त करना ही मुश्किल हो रहा था।

कुछ आगे बढ़ने पर एक विशाल मंडप बना था, जिसके एक किनारे पर एक विशाल सिंहासन पर माया व नीलाभ आसीन थे।

इंद्रधनुष के रंगों में रंगा मंडप, एक अद्भुत छटा बिखेर रहा था।

सिंहासन के पीछे कुछ थालियों में, विभिन्न प्रकार के रंग रखे हुए थे, जिसे तितलियां अपने शरीर पर लगाकर उड़-उड़कर, सभी के चेहरे पर

मल रहीं थीं।

एक ओर से आ रही मीठे पकवानों की सुगंध लोगों की भूख बढ़ा रही थी।

बहुत से देवी-देवता, गंधर्व, अप्सराएं इधर-उधर विचर रहे थे।

महादेव को देख सभी अपने स्थान से खड़े हो गये, परंतु सबकी निगाहें महादेव से ज्यादा, हनुमान की गोद में पकड़े बच्चे की ओर थी।

“क्या हनुमान ने विवाह कर लिया? क्या ये हनुमान का पुत्र है? ये तो ब्रह्मचारी थे।” कुछ दबी-दबी सी आवाजें हनुमान के कानों में पड़ीं।

इन चुभती निगाहों और इन कटाक्ष भरे शब्दों से, हनुमान को अपनी शक्ति क्षीण होती महसूस हो रही थी।

वो तो अब कैसे भी इस बालक से छुटकारा चाहते थे?

महादेव आगे बढ़कर नीलाभ व माया के पास जा पहुंचे।

नीलाभ और माया ने आगे बढ़कर महादेव के चरण स्पर्श किये।

महादेव ने दोनों को आशीर्वाद देते हुए नंदी की ओर इशारा किया। नंदी ने इशारा समझ अपने हाथ में पकड़े, एक सुनहरे रंग से लिपटी भेंट को, माया की ओर बढ़ा दिया।

माया ने महादेव की भेंट को अपने मस्तक से छूकर, सिंहासन के पीछे खड़ी एक सेविका के सुपुर्द कर दिया।

महादेव अब थोड़ा पीछे हट गये और उन्होंने हनुमान को आगे बढ़ने का इशारा किया।

हनुमान आगे तो बढ़ गये, पर उन्हें कुछ समझ नहीं आया?

नीलाभ और माया ने आगे बढ़कर हनुमान के भी चरण स्पर्श किये।

हनुमान ने ना समझने वाले भाव से महादेव की ओर देखा।

उन्हें अपनी ओर देखते देख महादेव बोल उठे- “सोच क्या रहे हो हनुमान? आशीर्वाद दो माया को।”

महादेव की बात सुन, हनुमान ने अपनी गोद में पकड़ा वह नन्हा यति माया को पकड़ा दिया।

माया ने उस नन्हें बालक को देखा, पर उन्हें कुछ समझ में नहीं आया?

"ये क्या प्रभु? मैं कुछ समझी नहीं?" माया ने पहले हनुमान को देखा और फिर महादेव की ओर।

"इसमें ना समझने वाली कौन सी बात है? अरे .... ये हनुमान का आशीर्वाद है।" महादेव ने मुस्कुराते हुए कहा।

माया समझ गयी कि यह देवों की कोई लीला है, इसलिये उसने नन्हें यति को अपने माथे से लगाया और उसे निहारने लगी।

नन्हा यति अपनी आँखें टिप-टिप कर माया को देख रहा था।

उसने माया की उंगली जोर से पकड़ ली और बोला- "माँ"

बस इस एक शब्द में ही पता नहीं कौन सा जादू था कि माया ने उस नन्हें से यति को गले से लगा लिया।

माया की आँखों से स्वतः ही अविरल अश्रु की धारा बहने लगी, अचानक ही उसके अंदर ममता का सागर कुलाँचे मारने लगा।

हनुमान इस ममतामई दृश्य को बिना पलक झपकाये निहार रहे थे।

कुछ देर बाद जब माया को याद आया कि वह कहां खड़ी है, तो उसने वापस हनुमान की ओर देखा। हनुमान ने अपने हाथ आगे कर माया को आशीर्वाद दिया।

"बड़ा ही अद्भुत बालक है। वैसे इसका नाम क्या है?" माया ने हनुमान की ओर देखते हुए पूछा।

"अब आप इसकी माता हैं ... आप स्वयं इसका नामकरण करिये।" हनुमान ने भोलेपन से माया को जवाब दिया।

माया ने कुछ देर सोचा और फिर बोल उठी- "चूंकि ये 'हनु' का आशीर्वाद है, इसलिये आज से इसका नाम 'हनुका' होगा।"

हनुमान की इस अद्भुत भेंट पर, सभी देवता हर्षातिरेक से हनुमान का जयकारा लगाने लगे।

हनुमान भी खुश हो गये क्योंकि इस नन्हें यति के लिये, इससे अच्छी माँ नहीं मिल सकती थी।

तभी माया को हनुमान के पीछे से झांकते हुए गणेश दिखाई दिये।

माया ने बालक गणेश को आगे आने का इशारा किया।

जब गणेश आगे आ गये तो माया ने धीरे से उनके कान में कहा- “आपने तो कहा था कि मुझे पुत्र की प्राप्ति नहीं होगी, पर मुझे तो शादी के दिन ही पुत्र प्राप्त हो गया ... अब क्या कहते हो?”

“ईश्वर की माया, ईश्वर ही जाने ....।” गणेश ने मुस्कुराकर कहा, और अपना बड़ा सा कान छुड़ाकर उस ओर चल दिया, जिधर ढेर सारे मोदक रखे हुए दिखाई दे रहे थे।

माया को कुछ समझ नहीं आया, उसने एक बार फिर हनुका की ओर देखा और धीरे से उसके मस्तक को चूम लिया।

◆ ◆ ◆

पिछली पुस्तक का सारांश

हैलो दोस्तों,

यह पुस्तक ‘रिंग ऑफ़ अटलांटिस’ सीरीज की चौथी पुस्तक है। क्या आपने इस पुस्तक को पढ़ने के पहले इसका प्रथम, द्वितीय व तृतीय भाग पढ़ा है? अगर नहीं .... तो इस पुस्तक का पूर्ण आनन्द उठाने के लिये कृपया इसके पहले भाग ‘सन राइजिंग’, दूसरे भाग ‘अटलांटिस’ एवं तीसरे भाग ‘मायावन’ को अवश्य पढ़ें।

अगर आप किसी कारणवश ‘सन राइजिंग’, ‘अटलांटिस’ व ‘मायावन’ को नहीं पढ़ना चाहते तो आइये तीनों पुस्तकों के सारांश को पढ़कर, उन पुस्तकों की यादों को ताजा कर लें-

प्रथम भाग ‘सन राइजिंग’ का सारांशः

माइकल अपनी पत्नि मारथा और अपनी 13 वर्षीय बेटी शैफाली के साथ ‘सन राइजिंग’ नामक पानी के जहाज से न्यूयार्क से सिडनी जाने का प्लान बनाता है। उस जहाज से माइकल के कॉलेज के समय के प्रोफेसर, अलबर्ट भी सिडनी जाने वाले थे। चूंकि शैफाली अपने जर्मन शेफर्ड कुत्ते ब्रूनो के बिना नहीं जाना चाहती थी, इसलिये माइकल जहाज के कैप्टेन सुयश से ब्रूनो को ले जाने के लिये विशेष अनुमति ले लेता है। अभी ये लोग बात कर ही रहे होते हैं कि तभी जन्म से अंधी शैफाली को सोते समय कुछ विचित्र से सपने आते हैं। उन सपनों से शैफाली डरकर उठ जाती है। माइकल और मारथा को आश्चर्य होता है कि जन्म से अंधी शैफाली को सपने कैसे आ सकते हैं?

सन राइजिंग न्यूयार्क बंदरगाह से अपने सफर पर चल पड़ता है। सन राइजिंग के डेक पर खड़ा ऐलेक्स एक इटैलियन लड़की क्रिस्टी को देखता है जो ‘वर्ल्ड फेमस बैंक रॉबरी’ नामक, एक किताब पढ़ रही होती है। तभी क्रिस्टी के कॉलेज की दोस्त लॉरेन उसे मिल जाती है। क्रिस्टी, लॉरेन के साथ बात करते हुए, वहां से चली जाती है, पर उसकी किताब वहीं छूट जाती है, जिसे ऐलेक्स उठा लेता है।

उधर क्रिस्टी और लॉरेन एक दूसरे से अपनी पुरानी बातें शेयर करतीं हैं। क्रिस्टी को पता चलता है कि लॉरेन का ब्वायफ्रेंड भी इसी जहाज पर है। क्रिस्टी लॉरेन से उसकी फोटो दिखाने के लिये जिद करती है। लॉरेन क्रिस्टी को अपने ब्वायफ्रेंड की फोटो अगले दिन दिखाने का वादा करती

है। लॉरेन बताती है कि वह इस जहाज पर ड्रीम्स डांस ग्रुप के साथ आयी है, जिसकी मुख्य डांसर जेनिथ के साथ वह उसके कमरे में रहती है।

शाम को ऐलेक्स क्रिस्टी का रुम नम्बर पता करके, उसकी किताब वापस करने जाता है और क्रिस्टी को डिनर पर चलने के लिये कहता है, पर क्रिस्टी ऐलेक्स में अपना इंट्रेस्ट नहीं दिखाती।

रात में डिनर के समय सन राइजिंग का कैप्टेन सुयश सभी यात्रियों से अपने चालक दल का परिचय कराता है। इसके बाद जेनिथ और लॉरेन का डांस शुरु हो जाता है। डांस खत्म होने पर जेनिथ को वहां तौफीक दिखाई देता है। जेनिथ लॉरेन को बताती है कि तौफीक ने एक बार एक एक्सीडेंट से उसकी जान बचाई थी। वह लॉरेन से तौफीक का कमरा नम्बर पता करने को कहती है। तभी उनके कमरे में जैक और जॉनी नाम के 2 बदमाश घुस जाते हैं और जेनिथ से बद्तमीजी करने लगते हैं। यह देख लॉरेन जहाज के कप्तान और सिक्योरिटी के आदमियों को बुला लेती है। सुयश जैक और जॉनी को चेतावनी देकर छोड़ देता है।

तभी सन राइजिंग के कंट्रोल रुम में न्यूयार्क बंदरगाह से बताया जाता है कि उनके जहाज पर कुछ अपराधी भी घुस आये हैं। सुयश को कहा जाता है कि अपराधी को वह स्वयं से ढूंढे और अगले स्टापेज पर उसे इंटरपोल के हवाले कर दें।

सुयश असिस्टेंट कैप्टेन रोजर और सिक्योरिटी इंचार्ज लारा के साथ मिलकर, एक निशानेबाजी की प्रतियोगिता का प्लान बनाता है। जिसमें 28 प्रतियोगी भाग लेते हैं और तौफीक, लोथार और जैक क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार जीतते हैं। सुयश अब सिर्फ इन्हीं 28 प्रतियोगियों के कमरों को, अपनी सिक्योरिटी के लोगों को, न्यू इयर वाले दिन चेक करने को कहता है।

उधर अलबर्ट शैफाली का दिमाग चेक करने के लिये, शैफाली का अलग-अलग तरह से टेस्ट लेता है और शैफाली की प्रतिभा से प्रभावित हो जाता है। वहीं दूसरी ओर जेनिथ अपने प्यार का इजहार तौफीक से करती है।

उधर अगले दिन लॉरेन ऐलेक्स को अपना ब्वायफ्रेंड बनाकर क्रिस्टी से मिलाती है, पर क्रिस्टी अपने तेज सवालों से जान जाती है कि ऐलेक्स लॉरेन का ब्वायफ्रेंड नहीं है। उधर जॉनी जैक से 10,000 डॉलर की शर्त लगा लेता है कि वह सबके सामने जेनिथ को ‘किस’ करके दिखाएगा। अपनी शर्त को पूरा करने के लिये जॉनी जेनरेटर रुम में काम करने वाले आर्थर को, कुछ पैसे देकर अपना काम करने के लिये मना लेता है।

मगर जॉनी का पूरा प्लान जहाज के सिक्योरिटी इंचार्ज ब्रैंडन को पता चल जाता है, वह सुयश को बता देता है कि जॉनी न्यू इयर के दिन, एक मिनट की लाइट ऑफ़ करवाकर, किसी को ‘किस’ करना चाहता है? सुयश ब्रैंडन को कहता है कि लाइट को 30 सेकेण्ड में ही ऑन करवा देना। इससे जॉनी प्लान के बीच में ही पकड़ा जायेगा।

न्यू ईयर के दिन जहाज के कंट्रोलरुम में जहाज का सेकेण्ड असिस्टेंट कैप्टेन असलम, सभी को शराब पिलाकर न्यू ईयर सेलीब्रेट करता है। उधर जहाज के हॉल में जैसे ही न्यू इयर पर लाइट ऑफ़ होती है, एक गोली की आवाज सुनाई देती है और जब लाइट को जलाया जाता है, तो स्टेज पर लॉरेन की लाश दिखाई देती है, जिसके कि माथे पर एक गोली लगी होती है। हॉल से सुयश को एक रिवाल्वर भी बरामद हो जाती है। सुयश को लगता है कि जिसने भी गोली चलाई होगी, उसने जरुर रिवाल्वर को रुमाल से पकड़ रखा होगा। यह सोचकर सुयश सभी के रुमाल जमा करवाकर लैब में चेक करने के लिये भेज देता है। बाद में ध्यान से देखने पर सुयश को लॉरेन के गले में पड़ा एक लॉकेट दिखाई देता है, जिसमें रेडियम लगा होता है। सुयश समझ जाता है कि इसी रेडियम को देखकर कातिल ने अंधेरे में गोली चलाई होगी। वह लॉरेन की लाश को स्टोर रुम में रखवा देता है।

बाद में सिक्योरिटी वाले बताते हैं, कि जब वो जैक का कमरा चेक कर रहे थे, तो उन्हें बगल वाले कमरे से कुछ अजीब सी आवाजें सुनाई दीं। सुयश उस रुम में जाकर चेक करता है, तो पता चलता है कि वो रुम शैफाली का है और वह विचित्र सी आवाज ब्रूनो के दरवाजा खुरचने की वजह से आ रही थी। तभी शैफाली उसे कातिल की कुछ आदतों के बारे में बताती है। सुयश भी शैफाली के तर्क सुनकर शैफाली से प्रभावित हो जाता है। तभी एक सिक्योरिटी का आदमी आकर बताता है, कि कंट्रोलरुम में कोई दरवाजा नहीं खोल रहा है।

सुयश कंट्रोलरुम का इमर्जेंसी दरवाजा खुलवाता है। कट्रोलरुम के सभी सदस्य शराब के नशे में बेहोश पड़े थे। तभी उन्हें फ्लोरिडा से एक मैसेज मिलता है कि उनका जहाज गलत दिशा में भटक कर बारामूडा त्रिकोण के खतरनाक क्षेत्र में पहुंच गया है।

तभी जहाज के ऊपर से एक नीली रोशनी बिखेरती उड़नतश्तरी निकलती है। जिसके निकलने के बाद जहाज के सारे इलेक्ट्रानिक यंत्र खराब हो जाते हैं। अभी सब लोग ठीक से समझ भी नहीं पाते हैं कि तभी सन राइजिंग के आगे एक विशालकाय भंवर आ जाती है, जिसमें सन राइजिंग फंस जाता है। सुयश के अनुभव और सूझबूझ से चालक दल

जहाज को भंवर से निकालने में सफल हो जाते हैं। मगर भंवर से बचने के चक्कर में सन राइजिंग बारामूडा त्रिकोण के क्षेत्र में और अंदर पहुंच जाता है।

सुयश सही रास्ते को पता करने के लिये रोजर को हेलीकॉप्टर से भेजता है, जहां एक रहस्यमय द्वीप को देखते हुए रोजर का हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है। उधर सुयश के कपड़े, एक ब्लू व्हेल पानी उछालकर भिगो देती है, जिससे ब्रैंडन को सुयश की पीठ पर बना, एक सुनहरे रंग का सूर्य का टैटू दिख जाता है।

उसी रात शैफाली के सोते समय, कोई उसके पास एक सोने का सिक्का छोड़ जाता है। अलबर्ट बताता है कि यह सोने का सिक्का प्राचीन लुप्त शहर अटलांटिस का है, जिस पर वहां की देवी और एक डॉल्फिन का चित्र अंकित था। तभी शैफाली को फिर सपने आते हैं, जिसमें उसे एक रहस्यमय द्वीप और एक सुनहरा मानव दिखाई देता है।

अगले दिन असलम को वही रहस्यमय द्वीप दिखाई देता है, पर सुयश जहाज को उस द्वीप की ओर मोड़ने से मना कर देता है। सुयश लारा को ब्लैक थंडर नामक, एक जहाज की कहानी सुनाता है, जो 16 वर्ष पहले सन राइजिंग की ही भांति बारामूडा त्रिकोण में खो गया था। तभी लारा और सुयश को एक परछाई, अपने कंधे पर कोई चीज उठाए भागती दिखाई देती है। दोनों उसका पीछा करते हैं, पर वह परछाई पानी में कूद जाती है। सुयश और लारा वहां डेक पर खड़े, अलबर्ट से पूछताछ करते है। पर उसके कुछ खास पता नहीं चलता। सुयश को डेक की रेलिंग पर एक फटा हुआ कपड़ा मिलता है, जो वह अपने पास रख लेता है। तभी इन सभी को क्रिस्टी की चीख सुनाई देती है।

जब ये सब क्रिस्टी के कमरे में पहुंचते हैं तो इन्हें एक खतरनाक हरा कीड़ा दिखाई देता है, जो कि वहां खड़े एक गार्ड को मार देता है। तौफीक उस कीड़े को गोली मार देता है। अलबर्ट बताता है कि उस कीड़े को इसके पहले साइबेरिया में देखा गया था। गार्ड की लाश को भी स्टोर रुम में रखने के लिये भेज दिया जाता है।

तभी गार्ड की लाश को ले जाने वाले दोनो व्यक्ति भागकर आते हैं और बताते हैं कि लॉरेन की लाश स्टोर रुम से गायब हो गयी है। सुयश सहित सभी व्यक्ति जब भागकर स्टोर रुम पहुंचते हैं, तो वह लॉरेन की लाश के साथ अभी मरे गार्ड की लाश को भी गायब पाते हैं। सुयश ब्रूनो को गायब हुई, लॉरेन की लाश की जगह सुंघाता है, तो ब्रूनो भागकर एक डेक पर आ जाता है, जहां सुयश को एक रुमाल मिलता है, जो शायद

लाश गायब करने वाले का था। उस रुमाल पर अंग्रेजी के ‘जे’ या उर्दू के ‘लाम’ जैसी आकृति बनी होती है। बहुत देर के वाद-विवाद के बाद भी, सुयश को पता नहीं चलता कि वह रुमाल किसका है? सुयश दोबारा स्टोर रुम में आकर, ब्रूनो को फिर वह जगह सुंघाकर, पीछे की तरफ जाने का इशारा करता है। इस बार ब्रूनो जेनिथ के रुम के दरवाजे पर पहुंच जाता है। दरवाजा खोलने पर जेनिथ के कमरे का सारा सामान बिखरा हुआ दिखाई देता है, ऐसा लगता है जैसे किसी ने कमरे की तलाशी ली हो।

एक बार फिर स्टोर रुम में जाकर, सभी गार्ड की लाश की जगह की जांच करते हैं तो अलबर्ट को एक खिड़की के पास समुद्र का पानी गिरा हुआ दिखता है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे कोई खिड़की के द्वारा समुद्र से आकर गार्ड की लाश ले गया हो?

उधर न्यूयार्क बंदरगाह पर राबर्ट और स्मिथ के पास एक व्यक्ति आकर, स्वयं को सन राइजिंग का सेकेण्ड असिस्टेंट कैप्टेन असलम बताता है। वह कहता है कि कोई उसे बेहोश कर, उसकी जगह लेकर सन राइजिंग पर चला गया है। जिसके बाद इस केस को हल करने के लिये जेरार्ड, सी.आई.ए के काबिल एजेंट, व्योम को इस मिशन पर भेज देता है।

उधर सुयश को दूसरी बार वही रहस्यमयी द्वीप दिखाई देता है। सुयश फिर उस द्वीप पर नहीं जाने का विचार करता है, पर लारा सुयश को जबरदस्ती मनाकर, 2 गार्ड के साथ उस द्वीप की ओर चल देता है, पर पानी में मौजूद कोई रहस्यमय जीव लारा और दोनों गार्ड को मार देता है।

दूसरी ओर व्योम को समुद्र में वही रहस्यमय द्वीप दिखाई देता है, व्योम हेलीकॉप्टर से उस रहस्मय द्वीप के पीछे जाने की कोशिश करता है, पर उसे वह द्वीप पानी पर घूमता दिखाई देता है। उस द्वीप पर उसे पोसाइडन पर्वत के पास, एक झोपड़ी हवा में उड़ती हुई दिखाई देती है। इसके बाद उसका हेलीकॉप्टर द्वीप से निकली, रहस्यमय तरंगों का शिकार होकर हवा में लहराने लगता है। व्योम हेलीकॉप्टर को सुरक्षित पानी पर उतारने में सफल हो जाता है, वह अब हेलीकॉप्टर को बोट बनाकर द्वीप की ओर बढ़ने लगता है। तभी पीछे से आई एक विशालकाय पानी की लहर व्योम की बोट को तोड़ देती है और व्योम पानी में गिरकर बेहोश हो जाता है। बेहोश होने से पहले वह देखता है कि वह किसी सुनहरे मानव के हाथों में है।

सन राइजिंग पर ऐलेक्स को कुछ हरे कीड़े दिखाई देते हैं। वह ये बात सुयश और ब्रैंडन को बता देता है। बाद में अलबर्ट के साथ जब सभी उसके कमरे में पहुंचते हैं तो उन्हें अलबर्ट की पत्नि मारिया, अपनी जगह

से गायब दिखाई देती है, जिसके बाद अलबर्ट अर्द्धविक्षिप्त सा हो जाता है।

सुयश और ब्रैंडन दोबारा गश्त पर निकलते हैं तभी जॉनी सीढ़ियों से आकर, उनके पास गिरता है और डेक पर जाकर लोथार को बचााने को कहता है। सुयश ब्रैंडन के साथ जब डेक पर पहुंचता है, तो उसे लोथार डेक की रेलिंग पर खड़ा दिखाई देता है। सुयश के मना करने के बाद भी लोथार, एक ओर इशारा करके पानी में कूद जाता है। जब सुयश की नजर उस दिशा में जाती है, तो वहां एक साया खड़ा होता है। सुयश उसे पकड़ने की कोशिश करता है, पर वह साया भी पानी में कूद जाता है। सुयश के हाथ में उस साये का फटा हुआ कॉलर आ जाता है, जिस पर रोजर की नेम प्लेट लगी होती है। दूसरी तरफ ब्रैंडन पानी में गिरे लोथार को बचाने की बहुत कोशिश करता है, पर लोथार को पानी में मौजूद कोई अंजान जीव खींच ले जाता है। बाद में जॉनी बताता है कि उसने लॉरेन की आत्मा को देखा था, जो कि लोथार को अपनी ओर बुला रही थी।

अभी ये लोग डेक पर खड़े ही होते हैं, कि तभी इन्हें पानी पर दौड़ता हुआ एक सुनहरा मानव दिखाई देता है जो कि एक दिशा की ओर इशारा करके गायब हो जाता है। सुयश जहाज को उसी दिशा में मोड़ लेता है।

सन राइजिंग के डेक पर खड़े ऐलेक्स को, एक पहाड़ी तोता ऐमू दिखाई देता है, जो कि जाने क्यों सुयश को अपना दोस्त बताने लगता है। सुयश इस बार सन राइजिंग को ऐमू के आने वाली दिशा में मोड़ देता है।

थॉमस अपनी लैब में बैठा, लॉरेन के कत्ल के समय जमा किये, सभी रुमाल चेक कर रहा था। अचानक उसे लॉरेन के कातिल का पता चल जाता है। तभी लॉरेन का कातिल वहां पहुंचकर, थॉमस को भी मार देता है और लैब से सारे सबूत मिटाने के लिये लैब में आग लगा देता है।

उधर शैफाली को इस बार खुली आँखों से सपने दिखाई देते हैं, जिसके बारे में सुनकर असलम घबरा जाता है। शैफाली असलम से ऐसे सवाल करती है, कि सुयश को असलम पर शक हो जाता है। सुयश ड्रेजलर से इस बात की पुष्टि भी कर लेता है, कि न्यू ईयर की रात असलम ने ही सबको शराब पिलाई थी।

तभी पानी पर एक बार फिर से वही रहस्यमयी द्वीप दिखाई देता है। तभी सुयश को पता चलता है कि सन राइजिंग का सारा फ्यूल किसी ने बिखेर दिया है। सुयश तब भी सन राइजिंग को उस द्वीप की ओर नहीं मुड़वाता है।

आगे बढ़ने पर सन राइजिंग को एक भयानक तूफान 3 तरफ से घेर लेता है, तूफान से बचने के लिये, सुयश सन राइजिंग को द्वीप की ओर मुड़वा देता है। द्वीप की ओर जाता हुआ जहाज एक झटके से रुक जाता है। सुयश पानी के नीचे 2 गोताखोरों को जहाज के रुकने का कारण पता लगाने के लिये भेजता है, पर कुछ ही देर में दोनों गोताखोरों की लाशें पानी में नजर आती हैं। सुयश इस कारण का पता लगाने के लिये स्वयं पानी के नीचे जाने की बात करता है। मगर जैसे ही सुयश मोटरबोट को उतारकर, पानी में जाने वाला होता है, अचानक किसी अंजान कारणों से सन राइजिंग पानी में धंसना शुरु हो जाता है। यह देखकर जहाज पर खड़े कुछ यात्री पानी में कूदकर उस बोट पर चढ़ जाते हैं और सन राइजिंग पानी में डूब जाता है।

कुछ बचे यात्रियों को ढूंढने के लिये जब बोट को वापस उस क्षेत्र में लाया जाता है तो शैफाली और ब्रूनो को छोड़कर कोई जिंदा यात्री उन्हें नहीं मिलता। तभी अचानक आश्चर्यजनक तरीके से, पानी पर तैर रही लाशें पानी के अंदर समाने लगती हैं। सुयश सहित कुल 12 लोग ही इस खतरनाक हादसे में जिंदा बचकर, उस रहस्यमय द्वीप पर पहुचने में कामयाब हो पाते हैं। रात होने की वजह से कोई भी द्वीप के अंदर दाखिल नहीं होता और सभी वहीं समुद्र किनारे सो जाते है।

द्वितीय भाग ‘अटलांटिस’ का सारांशः

वेगा अपनी दोस्त वीनस के साथ लाइब्रेरी में जाकर एक 500 वर्ष पुरानी किताब ‘अटलांटिस का इतिहास’ पढ़ता है, जिसमें अटलांटिस का इतिहास और एक कृत्रिम द्वीप ‘अराका’ का वर्णन था। किताब पढ़ने के बाद वेगा लाइब्रेरियन को सम्मोहित करके वह किताब अपने घर लेता जाता है

उधर द्वीप पर बचे हुए लोग सुयश को ही अपना लीडर घोषित कर उस रहस्यमयी जंगल में दाखिल हो जाते हैं। जंगल में शैफाली के द्वारा सीटी बजाने पर, पोसाईडन पर्वत पर मौजूद मूर्ति की आँखें लाल हो जाती हैं और शैफाली को एक फुसफुसाहट के रुप में एक शब्द ‘अराका’ सुनाई देता है। आगे बढ़ने पर उन्हें नीले रंग के फलों वाला एक पेड़ दिखाई देता है, जो जैक द्वारा फल तोड़ने पर उसे ना देकर, वह सारे फल शैफाली के लिये तोड़कर नीचे गिरा देता है।

दूसरी ओर अंटार्कटिका की धरती पर जेम्स और विल्मर को बर्फ की खुदाई के दौरान एक सुनहरी ढाल दिखाई देती है, जो कि एक सुनहरी दीवार से चिपकी होती है। वह सुनहरी दीवार जमीन के अंदर 1

किलोमीटर के क्षेत्र में फैली थी। जेम्स और विल्मर अगले दिन ढाल को काटकर निकालने का प्लान करके वहां से चले जाते हैं।

उधर जेनिथ एक जादुई बर्फ के तालाब में फंस जाती है, जहां पर एक मगरमच्छ मानव जेनिथ को मारने की कोशिश करता है, पर शैफाली के 'जलोथा' कहते ही वह मगरमच्छ मानव डरकर वापस तालाब में समा जाता है।

वहीं दूसरी ओर जब वेगा 'अटलांटिस का इतिहास' किताब के साथ अपने घर पहुंचता है तो कार पार्किंग एरिया में एक रहस्यमयी बाज वेगा पर हमला करके उसकी किताब छीनने की कोशिश करता है, पर बाद एक सिक्योरिटी गार्ड द्वारा मारा जाता है। वेगा के जाने के बाद वह बाज धुंआ बनकर गायब हो जाता है। वेगा जब अपने कमरे में पहुंचता है तो उसे न्यूज चैनल पर सन राइजिंग के गायब होने के बारे में पता चलता है, तभी वेगा के पास उसके भाई युगाका का फोन आता है, जहां वेगा अपने भाई से अटलांटिस की किताब का जिक्र करता है।

सुयश की टीम को जंगल में कुछ अजीब सी आकृतियों वाले पत्थर मिलते हैं, जहां शैफाली उन्हें बताती है कि उन पत्थरों को, उसने अपने सपने में देखा था और वह पत्थर सभी का भविष्य बता रहे हैं। तभी ड्रेजलर के ऊपर एक अनाकोंडा सरीखा बड़ा सा अजगर हमला कर देता है। सभी ड्रेजलर को बचाने की बहुत कोशिश करते हैं, पर आखिर में ड्रेजलर मारा जाता है।

उधर वेगा की बात सुनकर युगाका परेशान हो जाता है, इस परेशानी से बचने के लिये युगाका, अपने बाबा कलाट से मिलता है। कलाट अपने तीन वैज्ञानिक 'किरीट-रिंजो-शिंजो' से कहकर युगाका को वेगा के लिये एक 'जोडियाक वॉच' दिलवा देता है, जिसमें 12 राशियों की शक्तियां थीं, जो वेगा को मुसीबत के समय छिप कर उसे बचातीं।

उधर सुयश की टीम शाम होने के बाद एक छोटे से तालाब के पास जाकर रुक जाते हैं, जहां शैफाली रात में सबसे उनके डार्क सीक्रेट बताने को कहती है। जैक अपने सीक्रेट के तौर पर एक बैंक डकैती का राज खोल देता है, जिसमें बैंक डकैती के दौरान जैक और जॉनी ने मिलकर, एक व्यक्ति को गोली मार दी होती है। ब्रैंडन बताता है कि जैक और जॉनी ही वह अपराधी थे, जिनके लिये सन राइजिंग पर फोन आया था।

आधी रात को जब जेनिथ जागती है, तो उसे एक लड़की क्रिस्टी बनकर, बहका कर एक दिशा में ले जाने की कोशिश करती है, पर असली क्रिस्टी के जाग जाने पर, वह इस कार्य में सफल नहीं हो पाती है।

जेम्स और विल्मर दूसरे दिन उस सुनहरी ढाल को काटने की कोशिश करते हैं, पर वह इस कार्य में सफल नहीं हो पाते, तभी जेम्स के छूने से वह ढाल जमीन में समा जाती है। जेम्स और विल्मर को वहां से जमीन में जाती हुई सीढ़ियां दिखाई देती हैं। कुछ अजीब से तिलिस्मी रास्तों को पार करने के बाद, जेम्स और विल्मर वहां मौजूद देवी शलाका और उनके 7 भाईयों को जगा देते हैं, जो कि 5000 वर्ष से वहां शीतनिद्रा में सो रहे थे। देवी शलाका जेम्स और विल्मर से बाद में बात करने को कह, उन्हें एक कमरे में रुकने को कहती हैं, उस कमरे में बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं होता।

उधर जंगल में सबको किसी के रोने की आवाज सुनाई देती है, तभी सबको अपने पास से शैफाली गायब दिखाई देती है। ढूंढने पर शैफाली उन्हें एक पेड़ के पास दिखाई देती है। वह नयनतारा पेड़ शैफाली को पकड़ कर, उसकी आँख में अपने एक फल का रस निचोड़ देता है, जिसकी वजह से आश्चर्यजनक तरीके से, जन्म से अंधी शैफाली की आँखें आ जाती हैं।

उधर युगाका, वेगा के जन्मदिन के एक दिन पहले, उसे जोडियाक वॉच गिफ्ट कर देता है।

जंगल में सभी को शलाका मंदिर दिखाई देता है, जो भारतीय कला के हिसाब से बना दिखाई देता है, जहां पर एक छोटे से तिलिस्म को पार कर, सुयश देवी शलाका की मूर्ति को छू लेता है। तभी सुयश के शरीर पर बने टैटू से सतरंगी किरणें आकर टकराती हैं और सुयश के टैटू में एक अंजानी शक्ति प्रवेश कर जाती है।

उधर जब रोजर का हेलीकॉप्टर धुंध में फंसकर अराका द्वीप पर गिरता है, तो रोजर को पायलेट की लाश, एक शेर ले जाता दिखाई देता है, जो पायलेट की लाश को जंगल में बने, एक पिरामिड के बाहर रख कर, एक दिशा की ओर चला जाता है। रोजर उस शेर का पीछा करता है, एक झरने के पास जाकर वह शेर एक इंसानी आकृति में बदल जाता है और उस झरने के पीछे छिपे रास्ते में प्रवेश कर जाता है। रोजर उस व्यक्ति का पीछा करते हुए, एक ऐसे कमरे में पहुंचता है, जहां पर एक लड़की आकृति को, एक तांत्रिक कुछ समझा रहा होता है। आकृति का चेहरा देवी शलाका से मिलता है। तांत्रिक के जाने के बाद आकृति रोजर को, अराका के कई रहस्यों के बारे में बताती है। जहां आकृति रोजर से सन राइजिंग को भटकाने की बात करती है और रोजर को एक कमरे में बंद कर देती है।

उधर सुयश को जंगल में फिर ऐमू मिल जाता है। तभी सुयश को एक आदमखोर पेड़ पकड़ लेता है, इस मुसीबत से सुयश को, उसके शरीर पर बना टैटू बचाता है। आदमखोर पेड़ सुयश के टैटू से निकली सुनहरी रोशनी से जल जाता है।

दूसरी ओर कुछ दिन पहले आकृति, रोजर को सुनहरा मानव बनाकर, सन राइजिंग को भटकाने के लिये भेजती है। रास्ते में रोजर पानी में बेहोश हुए व्योम को बचाकर, अराका द्वीप के किनारे रख देता है और स्वयं सन राइजिंग की ओर चल पड़ता है। परंतु सन राइजिंग के पास पहुंचकर, रोजर सुयश को सही राह दिखाता है।

सुयश और उसकी टीम को रास्ते में कुछ खंडहर दिखाई देते हैं, जहां रात गुजारने के लिये वो लोग रुकने की सोचते हैं, तभी एक घंटा बजाने पर, जमीन से एक सोने का सिंहासन निकलता है, जिस पर बैठते ही सुयश, समय के चक्र को तोड़ 5,020 वर्ष, पहले के काल में हिमालय पर पहुच जाता है। हिमालय पर उसे अपनी ही शक्ल का एक इंसान, आर्यन दिखाई देता है, जो शलाका और अन्य 11 लोगों के साथ एक रहस्यमयी विद्यालय 'वेदालय' में पढ़ रहा होता है। वहां सुयश को 15 अद्भुत लोक के बारे में पता चलता है। जहां पर एक प्रतियोगिता के दौरान, आर्यन और शलाका को दूसरे लोगों से प्रतिस्पर्धा करते हुए, किसी धेनुका नाम की गाय से स्वर्णदुग्ध लाना रहता है। इस पूरी प्रतियोगिता में सुयश भी आर्यन और शलाका के साथ, ऊर्जा के रुप में रहता है। सुयश को उस समयकाल में ऐमू भी दिखाई देता है, जिसकी जान आर्यन ही बचाता है। अपने बुद्धिकौशल से आर्यन यह प्रतियोगिता जीत जाता है। सुयश को उस विद्यालय में आकृति नाम की एक लड़की भी दिखाई देती है, जो आर्यन को शलाका के साथ देखकर जलती है।

सुयश उस समयचक्र से वापस आकर, सभी को अपनी कहानी के बारे में सुना देता है। जहां सुयश को से महसूस होता है कि आर्यन उसका ही पिछले जन्म का नाम है। सबके सो जाने के बाद युगाका, ब्रैंडन को बहुत ही खौफनाक सपना दिखाकर डरा देता है, उस सपने में ब्रैंडन को सभी लोग मरे दिखाई देते हैं।

वहीं दूसरी ओर लुफासा, सीनोर की सेनापति सनूरा के साथ मकोटा से मिलने, उसके महल जाता है, जहां मकोटा उसे हर रोज एक लाश लाकर, पिरामिड में रखने को कहता है।

लुफासा अपनी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग कर, छिपकर पिरामिड में जाकर देखता है तो उसे पता चलता है कि अंधेरे का देवता जैगन पिरामिड

में बेहोश पड़ा है और मकोटा वहां लाशों के साथ कोई प्रयोग कर रहा है। तभी मकोटा का सेवक वुल्फा मच्छर बने लुफासा को मार देता है।

बाद में लुफासा से पता चलता है कि सन राइजिंग से लॉरेन और गार्ड की लाश लुफासा ही लेकर भागा था। लुफासा ने ही व्हेल बनकर व्योम की बोट को डुबाया था और उसी ने ऑक्टोपस बनकर लोथार और लारा को मारा था।

अगले दिन जंगल में सबके कहने पर, ब्रूनो को आगे-आगे चलाया जाता है, जहां युगाका के एक इशारे पर, एक पेड़ से एक बेर के समान फल टूटकर, ब्रूनो के सिर पर गिरता है। फल के सिर पर गिरने से ब्रूनो के पंख निकल आते हैं और ब्रूनो उड़कर गायब हो जाता है। यह देख शैफाली रोने लगती है, पर ऐमू के चिढ़ाने पर गुस्सा होकर ऐमू को देखती है। ऐमू को घूरने की वजह से शैफाली की आँखों में, ऐमू की तस्वीर छप जाती है, जो कुछ देर बाद अपने आप सही हो जाती है।

उधर अगले दिन वेगा अपने जन्मदिन पर वीनस को लेकर पोटोमैक नदी के किनारे, कायक चला रहा होता है, तभी उस पर बारी-बारी से टुंड्रा हंस और बुल शार्क हमला करती है। लेकिन वेगा के हाथ में बंधी जोडियाक वॉच से 2 राशियां कर्क और मीन निकलकर वेगा की रक्षा करती हैं।

उधर व्योम को जब होश आता है, तो वह अपने आप को अराका द्वीप के किनारे पर पड़ा हुआ पाता है। व्योम रहस्य का पता लगाने के लिये जंगल में जाने की कोशिश करता है, पर जंगल के चारो ओर किसी अदृश्य दीवार के होने की वजह से, वह जंगल में प्रवेश नहीं कर पाता। कुछ दिन उसी तट पर बीत जाने के बाद, एक दिन व्योम को द्वीप के किनारे एक ब्लू व्हेल तैरती हुई दिखाई देती है, व्योम पानी में घुसकर उस व्हेल का पीछा करते हुए, द्वीप के एक ऐसे अंजान हिस्से में पहुंच जाता है जहां एक कम्प्यूटर प्रोग्राम कैस्पर द्वारा, एक तिलिस्म का निर्माण हो रहा होता है। व्योम को वहां बहुत सी अनोखी चीजें दिखाई देती हैं। व्योम उस स्थान के एक कमरे में रखी ट्रांसमिट मशीन से ट्रांसमिट होकर, सामरा द्वीप के अंदर पहुंच जाता है।

जंगल में जा रहे सुयश की टीम का सामना, एक जंगली सुअर से होता है, सुअर असलम को दौड़ा लेता है, असलम सुअर से बचने की कोशिश में एक दलदल में गिर जाता है। मरने से पहले असलम सभी को बताता है, कि उसका नाम सिलेस्टर डिकोस्टा है। वह असलम को मारकर असलम का भेष बनाकर, सन राइजिंग पर आ गया था। सिलेस्टर कहता

है कि सन राइजिंग को उसी ने जानबूझकर गलत दिशा में मोड़ा था। सिलेस्टर अपना काला बैग देकर मर जाता है। सिलेस्टर के काले बैग से सभी को एक नक्शा, एक लॉकेट और सिलेस्टर के पिता विलियम डिकोस्टा की डायरी मिलती है। जब जेनिथ उस काले बैग से निकले लॉकेट को देख रही होती है, तभी आश्चर्यजनक ढंग से वह लॉकेट, अपने आप जेनिथ के गले में बंध जाता है। विलियम डिकोस्टा की डायरी पढ़ने पर सबको पता चलता है कि 16 साल पहले विलियम डिकोस्टा का जहाज भी भटककर, उस द्वीप पर आया था। जहाज के सारे लोग मर जाते हैं। सिर्फ विलियम अपने दोस्त गिल्फोर्ड के साथ बचता है। अनेक परेशानियों का पारकर विलियम द्वीप के अंदर की ओर पहुंच जाता है, जहां कुछ जंगली विलियम और गिल्फोर्ड को अपने देवी के मंदिर में बांध देते हैं। देवी की मूर्ति के पास विलियम को एक खजाना बिखरा हुआ दिखाई देता है। विलियम वहां पड़े एक हीरे की मदद से, अपनी और गिल्फोर्ड के हाथ की रस्सियां काटकर, वहां से भाग जाते हैं। गिल्फोर्ड देवी के पैर के पास रखी एक लाल किताब को उठा ले जाता है और विलियम देवी के गले में पड़े लॉकेट को उतार लेता है। जंगली लगातार उन दोनों का पीछा करते हैं। जंगलियों से बचने के लिये गिल्फोर्ड लाल किताब को लेकर, एक पेड़ पर चढ़कर छिप जाता है, जबकि विलियम एक गुफा में छिप जाता है। गुफा एक भालू की होती है, परंतु जब भालू विलियम पर आक्रमण करता है, तो विलियम के गले में मौजूद लॉकेट विलियम की जान बचाता है। विलियम गुफा के दूसरी तरफ से बाहर निकलता है। द्वीप के उस तरफ किसी भी प्रकार का कोई खतरा नहीं होता। विलियम कुछ दिन वहां गुजारकर एक नाव का निर्माण करता है और उसी नाव से उस द्वीप से बचकर भाग निकलता है। बाद मे एक दूसरे जहाज के लोग विलियम को बचा लेते हैं। विलियम मरने से पहले अपनी डायरी, द्वीप का नक्शा और देवी का लॉकेट, सिलेस्टर को देकर मर जाता है। यह कहानी पढ़कर सुयश को द्वीप के काफी राज पता चल जाते हैं।

उधर युगाका कुछ समय पहले अपनी बहन त्रिकाली के साथ, एक आधुनिक ड्रोन में बैठकर सन राइजिंग को बचाने की कोशिश करता है, पर लुफासा विकराल ऑक्टोपस बन कर सन राइजिंग को डुबा देता है। उसी स्थान पर हरे कीड़ों से बचने के प्रयास में, त्रिकाली की बर्फ की शक्तियां जाग जाती हैं। इन शक्तियों के बारे में त्रिकाली को भी नहीं पता होता है।

उधर जंगल में युगाका ऐलेक्स को बेहोश करके, ऐलेक्स बनकर सुयश की टीम में शामिल हो जाता है, ऐलेक्स बना युगाका सबको भ्रमित करने के लिये एक फल को खाकर, अपनी आवाज जाने का नाटक करता है, पर शैफाली युगाका को पहचान जाती है। वह युगाका के सिर पर एक

डंडा मारकर उसे बेहोश कर देती है। होश में आने के बाद युगाका खतरनाक तरीके से, सब पर आक्रमण कर, उन्हें अपनी वृक्ष शक्ति से जकड़ लेता है। यह देख शैफाली युगाका से कुछ क्षणों के लिये, उसकी वृक्ष शक्ति छीन लेती है। यह देख युगाका घबरा कर शैफाली से माफी मांगता है और उनकी मदद करने का वचन देता है। तभी युगाका के पास एक इमर्जेंसी सिग्नल आता है, जिसकी वजह से युगाका इन्हें बाद में मिलने को कह, वहां से सामरा द्वीप की ओर चला जाता है। ऐलेक्स के गायब होने वाले स्थान पर किसी को ऐलेक्स दिखाई नहीं देता।

दूसरी ओर देवी शलाका के कमरे में बंद जेम्स को दीवार में एक रहस्यमयी द्वार दिखाई देता है, उस द्वार से होते हुए जेम्स हिमालय के पास पहुंच जाता है। उसी समय हिमालय पर बर्फबारी शुरु हो जाती है, जिससे बचने के लिये जेम्स एक गुफा में शरण लेता है। उस गुफा में एक विशालकाय यति था जो जेम्स को पकड़कर शिवन्या और रुद्राक्ष की जेल में बंद कर देता है।

व्योम ट्रांसमिट होकर सामरा द्वीप पहुंच जाता है, जहां व्योम, एक हाथी को विचित्र फल खाते देखता है। उस विचित्र फल को खाकर, हाथी का आकार एक चूहे के बराबर हो जाता है। व्योम कुछ फलों को अपने पास रख लेता है। फिर व्योम एक पहाड़ी पर चढ़कर, एक विशालकाय वृक्ष के पास पहुंच जाता है। उस वृक्ष से कुछ किरणें निकलकर व्योम के शरीर में प्रवेश कर जाती हैं।

उधर युगाका कलाट के पास पहुंचता है, जहां कलाट उसे बताता है कि कोई बाहरी व्यक्ति सामरा द्वीप में घुस आया है। उस व्यक्ति के बारे में जानने के लिये कलाट, युगाका को लेकर महावृक्ष के पास आता है और महावृक्ष से जलतत्व से बनी पुस्तक 'सागरिका' को खोलने की बात करता है। महावृक्ष अपनी चमत्कारी शक्तियों से, कलाट और युगाका को समुद्र के अंदर मौजूद अटलांटिस की धरती पर भेज देता है। जहां पर सागरिका एक पहेली के माध्यम से कलाट को एक मैसेज देती है।

सुयश और उसकी टीम को जंगल में एक साफ स्थान पर एक खूबसूरत पार्क बना दिखाई देता है। पार्क में 'मेडूसा', जलपरी और एक ड्रैगन की मूर्ति बनी होती है। जलपरी की मूर्ति से निकलती शराब को पीकर जॉनी एक बंदर में परिवर्तित हो जाता है और उछलकर जंगलों में भाग जाता है। रात में वहां सोते समय मेडूसा की मूर्ति सजीव हो जाती है और शैफाली को एक महाशक्ति मैग्ना के सपने दिखाती है, जिसमें मैग्ना एक ड्रैंगो पर सवार होकर, समुद्र की तली में मौजूद, एक स्वर्ण महल से, तिलिस्म तोड़कर एक शक्तिशाली पंचशूल प्राप्त करती है।

वहां रात में सो रही जेनिथ को एक रहस्यमयी आवाज सुनाई देती है, यह आवाज उसके गले में पड़े देवी के लॉकेट से आ रही होती है। जेनिथ को पता चलता है कि उस लॉकेट में एक महाशक्तिशाली शक्ति का वास है, जो कि दूसरी आकाशगंगा से आयी है। वह शक्ति समय को नियंत्रित करना जानती थी, इसलिये जेनिथ उस शक्ति का नाम 'नक्षत्रा' रख देती है और उसे अपना दोस्त बना लेती है। नक्षत्रा दोस्त बनने के बाद जेनिथ को तौफीक की बहुत सी सच्चाई के बारे में बता देता है, जिससे जेनिथ जान जाती है कि सन राइजिंग पर होने वाले कुछ कत्ल को तौफीक ने किया था। जिसे वह अपना सबसे प्यारा दोस्त मान रही थी, वही इस कहानी का सबसे बड़ा विलेन था। नक्षत्रा यह रहस्य सभी को बताने को मना कर देता है।

इधर शलाका जब अपने कमरे में पहुंचती है तो उसे जेम्स कहीं दिखाई नहीं देता। शलाका जेम्स को बचाने के लिये 5,000 वर्ष बाद हिमालय पर पहुंचती है। उसे रुद्राक्ष और शिवन्या से जेम्स के बारे में पता चल जाता है, पर रुद्राक्ष और शिवन्या शलाका को एक दिन वहीं रुकने के लिये कहते हैं।

उधर रास्ते में जंगल में ब्रैंडन को एक भौंरा परेशान करता है, ब्रैंडन उस भौंरे को हाथ से मारकर जमीन में गिरा देता है। वह भौंरा गिरने के बाद एक विशालकाय चक्रवात में परिवर्तित हो जाता है और ब्रैंडन को अपने में लपेटकर हवा में गायब हो जाता है।

दूसरी ओर मकोटा अंधेरे के देवता जैगन को जगाने के लिये, लुफासा को हिमालय पर मौजूद एक शिव मंदिर से 'गुरुत्व शक्ति' लाने के लिये भेजता है। लुफासा गरुण का रुप धरकर, हिमालय से गुरुत्व शक्ति लाने की कोशिश करता है, पर रुद्राक्ष और शिवन्या अपनी मानसिक तरंगों से, लुफासा के एक रुप को नष्ट कर देते हैं, मगर लुफासा ड्रैगन का रुप धरकर गुरुत्व शक्ति ले जाने में सफल हो जाता है।

रुद्राक्ष और शिवन्या के परेशान होने पर, गुरु नीमा महाशक्तिशाली यति हनुका को, लुफासा से गुरुत्व शक्ति छीनकर लाने को कहते हैं।

तृतीय भाग 'मायावन' का सारांशः

क्षीर सागर में हो रहे समुद्र मंथन से कालकूट विष निकलता है, जिसकी तीक्ष्ण गंध और धुंए से सभी देवताओं और दैत्यों का दम घुटने लगता है। सभी मिलकर महादेव का स्मरण करते हैं। महादेव इस हलाहल को पी जाते हैं। उनके पीते समय इस कालकूट विष की एक बूंद पृथ्वी पर जा गिरती है। जहां पर यह बूंद गिरती है, वहां पर एक अद्भुत पुरुष उत्पन्न

होता है, जिसका नाम महादेव, नीलाभ रखते हैं। महादेव, नीलाभ को हिमालय पर जाकर, लोगों को वेदों की शिक्षा देने के लिये कहते हैं।

दूसरी ओर एक जलमानव नोफोआ, पोसाईडन को जाकर समुद्र की लहरों पर तैर रहे एक अद्भुत महल के बारे में बताता है। पोसाईडन उस अद्भुत महल में जाकर, उसके निर्माता मैग्ना और कैस्पर से मिलता है और उन्हें समुद्र के अंदर वैसा ही एक महल बनाने का प्रस्ताव देता है।

हिमालय पर नन्हा बाल गणेश अपने हाथ में मोदक लेकर, अपने मूषक को चिढ़ाते हुए जा रहा था कि स्वर्ग की अप्सरा मणिका गणेश को अपशब्द बोल देती है। गणेश मणिका को श्राप देकर कोयल में बदल देते हैं और कहते हैं कि मणिका के विवाह के 20,000 वर्ष बाद ही उसे पुत्र की प्राप्ति होगी।

उधर जीयूष के पुत्र मेरोन और हेडिस की पुत्री सोफिया अपने पिताओं की इच्छा के विरुद्ध भागकर शादी कर लेते हैं, जिससे कुपित होकर जीयूष, पोसाईडन को उन्हें मारने के लिये कह देते हैं। इस घटना के 1 वर्ष बाद, जब सोफिया और मेरोन नाइट ओशन नामक जहाज से, अपने पुत्र कैस्पर के साथ जा रहे होते हैं, तो जीयूष कैस्पर पर थंडरबोल्ट से प्रहार करता है, पर एक अदृष्य कवच कैस्पर को बचा लेता है। क्रुद्ध होकर पोसाईडन उस जहाज को समुद्र में डुबो देता है। सोफिया और मेरोन कैस्पर को बचाने के लिये समुद्र की गहराई में चले जाते हैं, जहां नोफोआ उन पर हमला कर देता है, तभी एक ब्लू व्हेल सोफिया, मेरोन और कैस्पर को अपने मुंह में दबा कर वहां से चली जाती है। परंतु आश्चर्यजनक तरीके से तीनों ही ब्लू व्हेल के मुंह में सुरक्षित होते हैं। ब्लू व्हेल उन्हें लेकर ब्लू होल की समुद्री गुफा में ले जाती है, जहां इनकी मुलाकात, एक स्त्री माया से होती है। माया बताती है कि उसी ने कैस्पर को थंडरबोल्ट से बचाया था। सोफिया और मेरोन, कैस्पर को माया के पास सुरक्षित कर, हैडिस से क्षमा मांगने अंडरवर्ल्ड चले जाते हैं।

दूसरी ओर सुयश अपनी बची हुई टीम के साथ, जब एक घास के मैदान को पार कर रहा होता है तो वहां की घास में आग लग जाती है, जिससे अलबर्ट अपनी सूझ-बूझ से सभी को बचा लेता है, पर आखिर में क्रिस्टी, जैक को उस आग में धक्का दे देती है। वह बताती है कि बैंक डकैती के दौरान जिस आदमी को, जैक ने गोली मारी थी, वह उसके पापा थे और वह उसी का बदला लेने के लिये सन राइजिंग पर आयी थी।

उधर महाबली हनुका, लुफासा का पीछा करते हुए उसे अराका द्वीप के ऊपर घेर लेता है। लुफासा कई रुप बदलकर हनुका को भ्रमित करने

की कोशिश करता है, पर आखिर में हनुका, लुफासा को हरा देता है, परंतु इस युद्ध में गुरुत्व शक्ति की डिबिया अराका द्वीप में गिर जाती है। हनुका उस डिबिया को पकड़ने की कोशिश में, एक अदृश्य दीवार से टकरा जाता है, वह दीवार उसकी माता, माया की शक्तियों से ही निर्मित थी, इसलिये हनुका उस दीवार को नहीं तोड़ता और वह खाली डिबिया लेकर हिमालय की ओर वापस चल देता है।

उधर मैग्ना और कैस्पर माया के पास पहुंच उसे मायामहल में रहने को कहते हैं। तब माया उन्हें अपनी कहानी सुनाती है कि किस प्रकार गणेश के श्राप से, कोयल बनी मणिका एक कुंए में शरण ले लेती है। उसी कुंए में दैत्यराज मयासुर भगवान शिव की तपस्या कर रहा था। तपस्या के बाद वह मणिका को पुनः स्त्री में बदलकर उसका नाम माया रख देता है और उसे अपनी पुत्री के रुप में स्वीकार कर लेता है। बाद में मयासुर माया का विवाह नीलाभ से कर देता है। विवाह के कुछ समय बाद माया को पता चलता है कि नीलाभ के शरीर में विष भरा है, वह उससे विवाहोपरांत सम्बन्ध नहीं स्थापित कर सकती। यह सुन माया निराश हो जाती है। तभी नीलाभ उसे 15 लोकों का निर्माण करने को कहता है, जिसके द्वारा एक अद्भुत विद्यालय वेदालय की स्थापना की जा सके। माया अगले 5 वर्षों में 15 लोकों का निर्माण कर देती है। निर्माण के बाद माया नीलाभ से छिपकर, भगवान गणेश की साधना के लिये घर छोड़ कर चली जाती है। 800 वर्षों के अथक तप के बाद भगवान गणेश माया को 20,000 वर्ष तक समुद्र के अंदर छिपकर एक गुप्त साधना करने के लिये कहते हैं। इस गुप्त साधना में माया को रोज, इस पृथ्वी के सबसे जहरीले नाग और नागिन के जहर का सेवन करना था। तक्षक का विष तो माया को आसानी से मिल जाता है, पर स्थेनो अपने जहर के बदले, उसे एक बच्ची को पालने और शिक्षा देने के लिये कहती है। माया मान जाती है और उस बच्ची का नाम मैग्ना रखकर उसे अपने पास रख लेती है। वहीं से माया, एक नयी सभ्यता का निर्माण भी करती है, जिसे बाद में माया सभ्यता के नाम से जाना गया। बाद में जब कैस्पर माया से पोसाईडन के महल के निर्माण के बारे में पूछता है, तो वह कहती है कि कुछ भी बनाओ, पर वहां कुछ गुप्त शक्तियों को अवश्य छोड़ देना, जिससे समय आने पर वहां का नियंत्रण अपने हाथ में ले सको।

उधर सुयश जब पहाड़ के दूसरी ओर देख रहा होता है, तो उसके पैर से एक छोटा पत्थर, वहां सो रहे एक स्पाइनोसोरस के ऊपर गिर जाता है, जिससे वह स्पाइनासोरस जागकर, उन पर आक्रमण कर देता है। यहां जेनिथ नक्षत्रा की शक्तियों का प्रयोग कर उस स्पाइनासोरस को मार देती

है। यहां जेनिथ को नक्षत्रा की एक नयी शक्ति के बारे में पता चलता है, जिसके द्वारा नक्षत्रा जेनिथ के चोट खाए शरीर को सही कर देता है।

दूसरी ओर व्योम अपने जेब में रखे उस फल को खाकर, चींटी से भी छोटा हो जाता है। एक चींटी उसे खाना समझ उस पर हमला करती है, पर व्योम अपने को बचाने में कामयाब हो जाता है। तभी व्योम को पेड़ के नीचे से जा रहे रिंजो-शिंजो दिखाई देते हैं, जो एक यंत्र के द्वारा किसी महाशक्ति की तलाश कर रहे होते हैं। व्योम रिंजो की टोपी पर बैठ जाता है। रिंजो-शिंजो वहां से किसी झील के पास पहुंचते हैं। महाशक्ति झील के ही अंदर थी, पर अपने पानी के डर के कारण रिंजो-शिंजो वहां से बिना शक्ति लिये हुए ही चले जाते हैं। उनके जाने के बाद व्योम झील में कूद जाता है, जहां एक समुद्री घोड़ा उसे बंदी बनाकर झील में स्थित एक पंचशूल के पास छोड़ देता है। व्योम जैसे ही उस त्रिशूल को छूता है, पंचशूल से निकली तेज ऊर्जा व्योम का पूरा शरीर जला देती है। व्योम मरणासन्न हालत में झील के बाहर गिरता है। तभी आसमान से गुरुत्व शक्ति की आखिरी बूंद व्योम के मुंह में आकर गिर जाती है, गुरुत्व शक्ति के माध्यम से व्योम ठीक होकर, उस पंचशूल को भी प्राप्त कर लेता है। पंचशूल को उठाने के बाद व्योम की कलाई पर, एक सुनहरे रंग का सूर्य का टैटू बन जाता है।

उधर रुद्राक्ष, और शिवन्या हनुका का इंतजार कर रहे होते हैं, कि तभी उन्हें आसमान से हनुका आता हुआ दिखाई देता है। हनुका डरते-डरते गुरुत्व शक्ति की डिबिया रुद्राक्ष को दे देता है। रुद्राक्ष जब डिबिया खोलता है तो उसमें गुरुत्व शक्ति मौजूद होती है, जिसे देखकर हनुका समझ जाता है कि गुरुत्व शक्ति अवश्य ही किसी सही व्यक्ति को मिली है। हनुका गुरुत्व शक्ति को वापस शिव मंदिर में रख देता है। इसके बाद शलाका रुद्राक्ष और शिवन्या से आज्ञा ले, जेम्स को लेकर वापस अंटार्कटिका आ जाती है।

दूसरी ओर सुयश जब बचे हुए लोगों के साथ एक दर्रे से निकल रहा होता है, तो उसे वहां उड़ने वाले डायनासोर टेरोसोर के अंडे दिखाई देते हैं। वहां 2 नन्हें टेरोसोर तौफीक पर हमला कर देते हैं। अलबर्ट जब तौफीक को बचाने जाता है, तभी एक विशाल टेरोसोर अलबर्ट को लेकर उड़ जाता है।

उधर जब वेगा अपने स्वीमिंग क्लब में जाता है तो पानी में उस पर एक ईल मछली हमला कर देती है, वेगा किसी प्रकार उससे बचकर बाहर आ जाता है, तो उस पर एक 10 फुट लंबा काला नाग हमला कर देता है, जहां पर जोडियाक वॉच से निकलकर कुम्भ राशि उसे बचा लेती है। वेगा क्लब से वापस अपने घर की ओर चल देता है, रास्ते में धरा और मयूर

उसका पीछा करते हैं। एक स्थान पर फल खरीदते समय जब धरा, वेगा की ओर जाती है, तभी एक खतरनाक सांड की टक्कर से धरा बेहोश हो जाती है। वेगा मयूर और धरा को अपने घर ले जाता है।

उधर ऐलेक्स को जब जंगल में होश आता है तो उसे एक पेड़ से निकलकर जाती हुई, विषकन्या स्थेनो दिखाई देती है। स्थेनो के जाने के बाद ऐलेक्स उस पेड़ के पास पहुंचकर देखता है। वहां पेड़ में एक कोटर बनी थी। ऐलेक्स उस कोटर से होते हुए एक 20 फुट गहरे कमरे में गिर जाता है। जहां पर उसे एक 3 सिर वाला सर्प विषाका बेवकूफ बनाकर, अपनी मणि और सुनहरी बोतल लेकर भाग जाता है। ऐलेक्स अब उस अंधेरे कमरे में फंस गया था।

दूसरी ओर सुयश अपनी टीम के साथ एक सूखी नदी के पास रुक जाता है, जहां क्रिस्टी द्वारा रेत पर ऐलेक्स की तस्वीर बनाने पर, एक रेत मानव व कुछ अन्य रेत से बनी आकृतियां, सभी पर हमला कर देती हैं, पर क्रिस्टी अपनी फुर्ति और तेज दिमाग से सभी को खत्म कर देती है। बाद में क्रिस्टी को नदी से एक सुनहरी रेत भरी पेंसिल मिलती है, जिसे वो अपने पास रख लेती है।

उधर व्योम को जंगल में एक खूबसूरत लड़की दिखाई देती है, जो महाकाली की मूर्ति के पास पूजा कर रही होती है कि तभी उस पर पीछे से गोंजालो नाम का एक विचित्र जीव हमला कर देता है। व्योम गुरुत्व शक्ति और पंचशूल की मदद से गोंजालो को घायल कर देता है। वह लड़की बताती है कि उसका नाम त्रिकाली है और वह सामरा राज्य की राजकुमारी है। त्रिकाली व्योम की शक्तियां देख उस पर मोहित हो जाती है और व्योम की बिना जानकारी के उससे रक्षासूत्र बंधवा कर शादी कर लेती है। व्योम, त्रिकाली के साथ उसके महल चला जाता है।

वहीं दूसरी ओर सुयश की टीम को 2 पहाड़ों के बीच एक आर्क दिखाई देता है, इस आर्क के बीच से एक नदी निकलकर जा रही होती है। बाद में पता चलता है कि यह मैग्ना के द्वारा बनाया गया आर्क है, जिसे मैग्नार्क कहते हैं। यहां एक प्रकार का छोटा तिलिस्म था, जिसे सभी मिलकर अपनी बुद्धि से पार कर लेते हैं।

उधर रुपकुण्ड झील के रास्ते कालीगढ़ की रानी कलिका प्रकाश शक्ति पाने के लिये एक तिलिस्म में प्रवेश करती है। उस तिलिस्म का रक्षक एक यक्ष युवान था, जो कलिका से, अपनी यक्षावली से अलग-अलग प्रकार के 5 प्रश्न पूछता है, कलिका एक-एक कर सभी द्वार को पार कर, प्रकाश शक्ति पा जाती है। अंत में खुश होकर युवान, कलिका की पुत्री को,

हिम शक्ति दे देता है, जिसका प्रयोग वह 20 वर्ष की हो जाने के बाद कर सकती थी।

दूसरी ओर सुयश की टीम का सामना इस बार रेड आंट और खून की बारिश से होता है। इस बारिश की बूंद शरीर के जिस हिस्से पर गिरती, उसे जला देती, पर जेनिथ की वजह से यह मुसीबत भी पार हो जाती है।

उधर कैस्पर को मैग्ना की बहुत याद आती है, तो वह अपनी यादों को ताजा करने, कैस्पर क्लाउड में बने श्वेत महल आ जाता है, जो उसने मैग्ना के लिये ही बनाया होता है, पर श्वेत महल के बाहर कैस्पर की मुलाकात, विक्रम और वारुणी से होती है, जो नक्षत्रलोक के बच्चों को श्वेत महल दिखाने लाये थे। कैस्पर, विक्रम और वारुणी से बात करने के लिये, सभी को लेकर श्वेत महल के अंदर आ जाता है।

उधर खूनी बारिश को पार करने के बाद सभी बर्फ की घाटी में पहुंच जाते हैं, जहां एक छोटा सा पेंग्विन शैफाली को लेकर एक बर्फ की झील में चला जाता है। बर्फ की झील में शैफाली को एक डॉल्फिन एक सीप तक लेकर जाती है। उस सीप के अंदर मैग्ना की ड्रेस होती है, जो स्वयं ही शैफाली के शरीर पर पहन जाती है, पर उस ड्रेस को पहनने के बाद शैफाली उस सीप के अंदर फंस जाती है, जहां से डॉल्फिन की मदद से वह बाहर आ जाती है।

वहीं दूसरी ओर वेगा के घर में जब धरा को होश आता है, तो वह मयूर से बात करती है कि वेगा चोर नहीं हो सकता, उसे तो जोडियाक वॉच किसी और ने दी है। धीरे-धीरे धरा और वेगा में अच्छी ताल-मेल हो जाती है। वेगा, वीनस से प्यार का इजहार करने के लिये धरा के साथ मिलकर वीनस को परेशान करता है, जहां वीनस अपने प्यार का इजहार करते हुए वेगा को अपना रहस्य बता देती है। वह बताती है कि वह सीनोर राज्य की राजकुमारी है और उसके पीछे उसे उसके भाई लुफासा ने भेजा था। वह बताती है कि लुफासा ही अलग-अलग रुप में अभी तक वेगा पर हमला कर रहा था। यहां वेगा बताता है कि वह वीनस ही नहीं बल्कि धरा और मयूर का रहस्य भी जानता है। वह धरा को अपनी बहन के रुप में मान लेता है। तभी भूकंप का एक जोरदार झटका आता है जिससे बचने के लिये सभी अपने घरों से बाहर निकल आते हैं। बाहर आने पर पता चलता है कि वह भूकंप नहीं बल्कि एक उल्का पिंड के गिरने की आहट है। वह उल्का पिंड वांशिगटन डी.सी. से कुछ किलोमीटर दूर समुद्र में गिर जाता है। यह देख धरा और मयूर, वेगा और वीनस से विदा ले वहां से चले जाते हैं।

उधर कैस्पर, विक्रम व वारुणि को श्वेत महल के अंदर ले जाता है, जहां बच्चों के खेलने के लिये बहुत सारी चीजें थीं। कैस्पर, वारुणि को अपनी कहानी सुनाकर, श्वेत महल का नियंत्रण वारुणि के हाथ में दे देता है। वारुणि, कैस्पर को कुछ दिनों के लिये नक्षत्रलोक का मेहमान बनाकर अपने साथ ले जाती है।

दूसरी ओर सुयश की टीम जब बर्फ की घाटी में आगे बढ़ती है तो इन्हें घाटी में कलाट की विभिन्न प्रकार की मूर्तियां दिखाई देती हैं। वहीं एक मूर्ति के पास रखे एक लकड़ी के यंत्र को, हाथ लगाने पर एक बर्फ का ड्रैगन जाग जाता है, जो इन सभी पर हमला कर देता है। जेनिथ एक बार फिर से नक्षत्रा की शक्ति का उपयोग करके, उस बर्फ के ड्रैगन को हरा देती है। इसके बाद सभी के जोर देने पर जेनिथ नक्षत्रा के बारे में एक झूठी कहानी सबको सुना देती है।

वहीं एक ओर हिमावत का राजा त्रिशाल, ध्वनि शक्ति प्राप्त करने के लिये मानसरोवर झील के अंदर से होकर शक्तिलोक पहुंच जाता है, जहां एक-एक कर, वह भगवान विष्णु के 5 अस्त्रों की सहायता से, एक मायाजाल को पार करके ध्वनि शक्ति प्राप्त कर लेता है। वहीं एक स्थान पर त्रिशाल को जादुई पुस्तक ध्वनिका के द्वारा, एक पंचशूल वाली महाशक्ति दिखाई देती है, त्रिशाल उस व्यक्ति की वीरता देखकर, उसका विवाह अपनी पुत्री से होने की कल्पना करता है। उसके ऐसा सोचते ही ध्वनिका से एक प्रकाश की किरण निकलकर, सामरा राज्य में स्थित अटलांटिस वृक्ष में समा जाती है।

उधर तौफीक जब रात में सो रहा होता है तो उसे ऊपर पेड़ से एक विचित्र सी आवाज सुनाई देती है, आवाज का पीछा करते हुए तौफीक पेड़ की कोटर में मौजूद एक लाल किताब तक पहुंच जाता है। लाल किताब के सबसे पीछे के पन्ने पर 2 आँखें बनी होती हैं, तौफीक जैसे ही उन आँखों को छूता है, वह किताब के अंदर समा जाता है। तौफीक की तेज आवाज सुनकर सभी जाग जाते हैं, तो उन्हें वहां पड़ी वह लाल किताब दिखाई दे जाती है, जिस पर संस्कृत भाषा में वेदान्त रहस्यम लिखा था। सुयश जब वेदान्त रहस्यम को देखता है, तो उसमें सुयश को, अष्टकोण में बंद एक नन्हा बालक दिखाई देता है, जिसे देखने के बाद सुयश को कुछ आवाजें सुनाई देती हैं और उसके सिर में तेज दर्द होने लगता है। तभी वहां पर शलाका, तौफीक को लेकर आ जाती है। शलाका सुयश से वह किताब मांगती है, पर जैसे ही सुयश वेदान्त रहस्यम शलाका को देने जा रहा होता है, एक दूसरी शलाका उसे ऐसा करने से रोक देती है। सुयश अपनी बुद्धि से असली शलाका को पहचान जाता है। नकली शलाका वहां से भाग जाती है। असली शलाका वहां सुयश के सामने एक-एक कर अनगिनत

रहस्य खोलती है। वह बताती है कि दूसरी शलाका आकृति थी और सुयश के पूर्वजन्म में जब उसका नाम आर्यन था तो आर्यन की शादी शलाका से हो चुकी थी। वह बताती है कि वेदान्त रहस्यम आर्यन ने ही लिखी थी और इस पुस्तक में वेदालय से निकलने के बाद के रहस्य हैं। सुयश के मांगने पर शलाका उसे वह पुस्तक नहीं देती। वह कहती है कि वह स्वयं पहले इसे पढ़ेगी, फिर इसके बारे में सुयश को बताएगी।

उधर आकृति लैडन नदी के किनारे जाकर एक सुनहरी हिरनी का अपहरण कर लेती है, जो कि देवी आर्टेमिस को सबसे प्रिय थी। वहां उसे लैडन नदी में सोया हुआ मैग्ना का ड्रैंगो भी दिखाई देता है।

दूसरी ओर सुयश की टीम एक ज्वालामुखी के जाल में फंसकर, एक गहरे कुएं में गिर जाते हैं, जहां से सुयश के दिमाग से वह निकल तो जाते हैं, परंतु इस बार वह सभी ज्वालामुखी के लावे में गिर जाते हैं। ज्वालामुखी के लावे से सभी को शैफाली का बुलबुला बचा लेता है। उस बुलबुले के द्वारा वह ज्वालामुखी के और अंदर पहुंच जाते हैं, जहां शैफाली को एक ड्रैगन का सोने का सिर मिलता है। शैफाली के आँसुओं से वह ड्रैगन का सिर पिघलकर, ज्वालामुखी के लावे में मिल जाता है। शैफाली कहती है कि उसे यह सिर कुछ अपना सा लग रहा था।

उधर त्रिशाल और कलिका दोनों मिलकर, राक्षस कालबाहु को पकड़ने राक्षसलोक जाते हैं, तभी उन्हें वहां पर राक्षसमाता विद्युम्ना मिलती है। विद्युम्ना कई गुप्त शक्तियों की स्वामिनी होती है, जो अलग-अलग ढंग से परीक्षा लेने के बाद त्रिशाल और कलिका को अपने मायाजाल भ्रमन्तिका में फंसा देती है, परंतु भ्रमन्तिका में फंसने के पहले, त्रिशाल और कलिका वहां रावण की मूर्ति में मौजूद, एक स्त्री के कंकाल को अपनी शक्तियों से मुक्ति दे देते हैं।

वहीं दूसरी ओर उस अंधेरे कमरे में बंद ऐलेक्स को मेडूसा की बहन स्थेनो आकर मिलती है, वह बताती है कि शैफाली ही पिछले जन्म में मैग्ना थी। वह कहती है कि विषाका जो बोतल लेकर भागा था, उसमें मैग्ना की स्मृतियां थीं और बिना स्मृतियों के शैफाली उस तिलिस्मा में मारी जायेगी। स्थेनो, ऐलेक्स को माया का दिया हुआ, वशीन्द्रिय शक्ति का घोल पिलाती है, जिससे ऐलेक्स की पांचो इन्द्रियां अत्यन्त शक्तिशाली हो जाती हैं। स्थेनो, ऐलेक्स को वहां से नागलोक में स्थित त्रिआयाम में जाकर मैग्ना की स्मृतियां वापस लाने को कहती है।

उधर ज्वालामुखी से बचने के बाद सुयश और उसकी टीम एक खोखले पहाड़ में फंस जाते हैं। उस खोखले पहाड़ में हेफेस्टस और

हरमीस की मूर्तियां लगी होती हैं। यहां भी एक प्रकार का तिलिस्म होता है, जिसे सभी मिलकर अपने दिमाग से पार कर लेते हैं।

उधर ऐलेक्स त्रिआयाम में पहुंचकर नागफनी और राक्षस प्रमाली को आसानी से हरा देता है। अंत में पिनाक, ऐलेक्स को अपने नागपाश से बांध देता है। ऐलेक्स नागपाश से भी आसानी से छूट जाता है और त्रिआयाम से मैग्ना की स्मृतियां लाने में सफल हो जाता है।

दूसरी ओर सुयश और उसकी टीम, रात बिताने के लिये एक हरे भरे बाग में शरण लेते हैं। वहां सुयश को एक घायल मादा खरगोश दिखाई देती है, उस मादा खरगोश का एक छोटा बच्चा, मादा खरगोश के आस-पास घूम रहा होता है। सुयश उस मादा खरगोश की मरहम पट्टी कर, उसे उसके घर में छोड़ देता है, जिससे खुश होकर वह नन्हा खरगोश सुयश को एक अंगूठी देता है। वह अंगूठी शैफाली के हाथ में बिल्कुल फिट हो जाती है, इसलिये वह अंगूठी शैफाली रख लेती है।

उधर त्रिकाली व्योम को युगाका और कलाट से मिलाती है, जहां व्योम के सामने अपनी और त्रिकाली की शादी का राज खुल जाता है। वहां कलाट सभी को बताता है कि त्रिकाली, त्रिशाल और कलिका की पुत्री है, जिसे नीमा ने उसे पालने को दिया था। वह त्रिकाली को त्रिशाल और कलिका के भ्रमन्तिका में फंसने की बात भी बताता है। त्रिकाली अपने माता-पिता को छुड़ाने की बात करती है, तो कलाट उसे एक बार विद्युम्ना की शक्ति जानने के लिये महावृक्ष से मिलने को कहता है।

वहीं दूसरी ओर ऐलेक्स, सुयश की टीम के पास वापस पहुंचने में कामयाब हो जाता है। वह मैग्ना की स्मृतियां बोतल से निकाल शैफाली को दे देता है, जिससे शैफाली को पूर्वजन्म की सारी बातें याद आ जाती हैं।

उधर वारुणी कैस्पर को नक्षत्रशाला में ले जाती है, जहां वह बताती है कि पृथ्वी के ऊपर की ओजोन लेयर एक जगह से क्षतिग्रस्त हो गयी थी, जिसे जब वह ठीक करने गई तो उसे एक अजीब जीव मिला, जो वहां से दूर अंतरिक्ष में किसी को सिग्नल भेज रहा था। वारुणी कैस्पर को उस जीव को दिखाती है। कैस्पर जब अपनी शक्तियों से उस जीव के बारे में पता करता है, तो वह हैरान रह जाता है क्योंकि यह जीव स्वयं उसकी शक्तियों से बनाया गया था। वह वारुणि को बताता है कि पृथ्वी पर कोई बड़ा संकट आने वाला है।

दूसरी ओर सुयश की टीम को एक नहर मिलती है, जिसे पार करना अत्यंत ही मुश्किल था, पर सभी के सम्मिलित प्रयास से वह नहर के जलकवच को पार कर लेते हैं।

उधर शलाका जेम्स और विल्मर से कुछ मांगने को कहती है। विल्मर शलाका से सुनहरी ढाल मांग लेता है। शलाका विल्मर को सुनहरी ढाल दे देती है, परंतु बदले में वह विल्मर की उस स्थान की स्मृति छीन लेती है। जेम्स शलाका से वहां रहने की आज्ञा मांगता है। शलाका जेम्स को वहां रहने की इजाजत दे देती है।

वहीं दूसरी ओर आकृति की कैद में बंद, रोजर को सनूरा छुड़ा देती है। रोजर भागते समय, सुनहरी हिरनी बनी मेलाइट को भी अपने साथ ले जाता है। भागते समय रोजर को एक जादुई दर्पण में बंद सुर्वया मिलती है। रोजर वहां टंगी तलवार से, दर्पण को तोड़ सुर्वया को भी आजाद कर देता है और सभी को लेकर सनूरा के साथ वहां से भाग जाता है। सनूरा जब लुफासा के पास पहुंचती है, तो सभी को मेलाइट और सुर्वया के बारे में पता चलता है। जहां मेलाइट एक पानी में रहने वाली अप्सरा और देवी आर्टेमिस की सबसे प्रिय निकलती है, वहीं सुर्वया, सिंहलोक की राजकुमारी निकलती है। सुर्वया बताती है कि आकृति ने उसकी दिव्यदृष्टि के लिये, उसे अपना बंधक बना रखा था। तभी लुफासा के पास मकोटा का बुलावा आ जाता है और वह मकोटा से मिलने के लिये वहां से चला जाता है।

उधर सुयश अपनी टीम के साथ उड़ने वाली झोपड़ी में प्रवेश कर जाता है, जहां पर एक विचित्र तिलिस्म था। सुयश अपन बुद्धि के बल पर उस तिलिस्म को तोड़, सभी को ले तिलिस्मा में प्रवेश कर जाता है। जहां तिलिस्मा उन सभी के आने का इंतजार कर रहा होता है।

अब आगे पढ़िये ....

◆ ◆ ◆

तिलिस्मा की जानकारी

दोस्तों, अब यहां से तिलिस्मा की कहानी की शुरुआत होने जा रही है। इसलिये आगे बढ़ने से पहले तिलिस्मा के बारे में जान लेना अत्यंत आवश्यक है। तिलिस्मा कुल 7 भागों में बंटा है। इसके पहले भाग में 1 द्वार है, दूसरे में 2, तीसरे में 3, चौथे में 4, पांचवें में 5, छठे में 6 और सातवें भाग में 7 द्वार हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर, तिलिस्मा 28 द्वार वाला एक मायाजाल है।

इसके प्रथम भाग में 1 द्वार है, जिसे हम 1.1 कहते हैं। इस प्रथम द्वार में सभी को एक नीलकमल का सामना करना पड़ेगा।

इसके दूसरे भाग में 2 द्वार हैं, जिन्हें हम क्रमशः 2.1 और 2.2 कहते हैं। 2.1 में सभी का सामना 'द्विशक्ति' से होगा, जो कि एक ऑक्टोपस और नेवला हैं। 2.2 में सभी को 'जलदर्पण' का सामना करना पड़ेगा।

तिलिस्मा के तीसरे भाग में कुल 3 द्वार हैं, जिन्हें हम क्रमशः 3.1, 3.2 और 3.3 कहते हैं। 3.1 में सभी का सामना 'चींटीयों के अद्भुत संसार' से होगा। 3.2 में 'स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी' से इनका सामना होगा। 3.3 में सभी 'सपनों के संसार' में प्रविष्ठ हो जायेंगे। जहां पर 5 देवताओं के द्वारा इनकी परीक्षा ली जाएगी।

तिलिस्मा के चौथे भाग में कुल 4 द्वार हैं, जिन्हें हम क्रमशः 4.1, 4.2, 4.3 व 4.4 कहते हैं। इस भाग के प्रत्येक द्वार में 4 अलग-अलग ऋतुएं हैं। 4.1 में सभी का सामना शरद ऋतु से होगा। 4.2 में ग्रीष्म ऋतु सभी की परीक्षा लेगी। 4.3 में शीत ऋतु एक मायाजाल का निर्माण करेगी, जिसमें इनका सामना 'सेन्टौर' से होगा, जो कि एक अश्वमानव योद्धा है। 4.4 में सभी वसंत ऋतु से मुकाबला करेंगे।

तिलिस्मा के पांचवे भाग में कुल 5 द्वार हैं, जिन्हें हम 5.1, 5.2, 5.3, 5.4 व 5.5 कहते हैं। इस भाग में यह सभी सूक्ष्म रुप धरकर, एक मानव शरीर में प्रवेश कर जाते हैं, जहां हर द्वार में इनका सामना एक इन्द्रिय से होता है। इस प्रकार आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा एक मायाजाल रचकर सभी को मारने की कोशिश करती हैं।

तिलिस्मा के छठे भाग में कुल 6 द्वार हैं, जिन्हें हम 6.1, 6.2, 6.3, 6.4, 6.5 व 6.6 कहते हैं। इस भाग में 12 राशियां छिपी हैं। यानि की हर

एक द्वार में, 2 राशियां छिपी हैं। इस प्रकार हर राशि एक मायाजाल बुनकर सभी को फंसाने की कोशिश करती हैं।

तिलिस्मा के सातवें व आखिरी भाग में कुल 7 द्वार हैं, जिन्हें हम क्रमशः 7.1, 7.2, 7.3, 7.4, 7.5, 7.6 व 7.7 कहते हैं। तिलिस्मा के इस भाग में, सभी का सामना, आकाशगंगा में विचरते ग्रहों से होगा। 7.1 में सभी का सामना चन्द्रमा से होगा, जहां भौतिक विज्ञान की 7 शक्तियां बल, ऊर्जा, ध्वनि, द्रव्यमान, कार्य, गति और समय मौजूद हैं। 7.2 में मंगल ग्रह पर उपस्थित 7 सिर वाला योद्धा, 7 अलग भावनाओं के द्वारा, सभी की परीक्षा लेगा। 7.3 में सभी बुध ग्रह पर पहुंच जायेंगे, जहां रसायन विज्ञान के 7 तत्वों से सभी का सामना होगा। 7.4 में बृहस्पति ग्रह पर, ओलंपस पर्वत के 7 ग्रीक देवी-देवताओं से इनका सामना होगा। 7.5 में शुक्र ग्रह पर सप्ततत्वों से सभी का सामना होगा। 7.6 में शनि ग्रह पर विश्व के 7 आश्चर्य एक मायाजाल बनाकर सभी को रोकने की कोशिश करेंगे। 7.7 में सूर्य की 7 रंग की किरणें एक विचित्र मायाजाल बुनेंगी।

नीचे आपकी सुविधा के लिये तिलिस्मा का एक मानचित्र दिया गया है, जिससे आपको तिलिस्मा को समझने में थोड़ी और आसानी होगी।

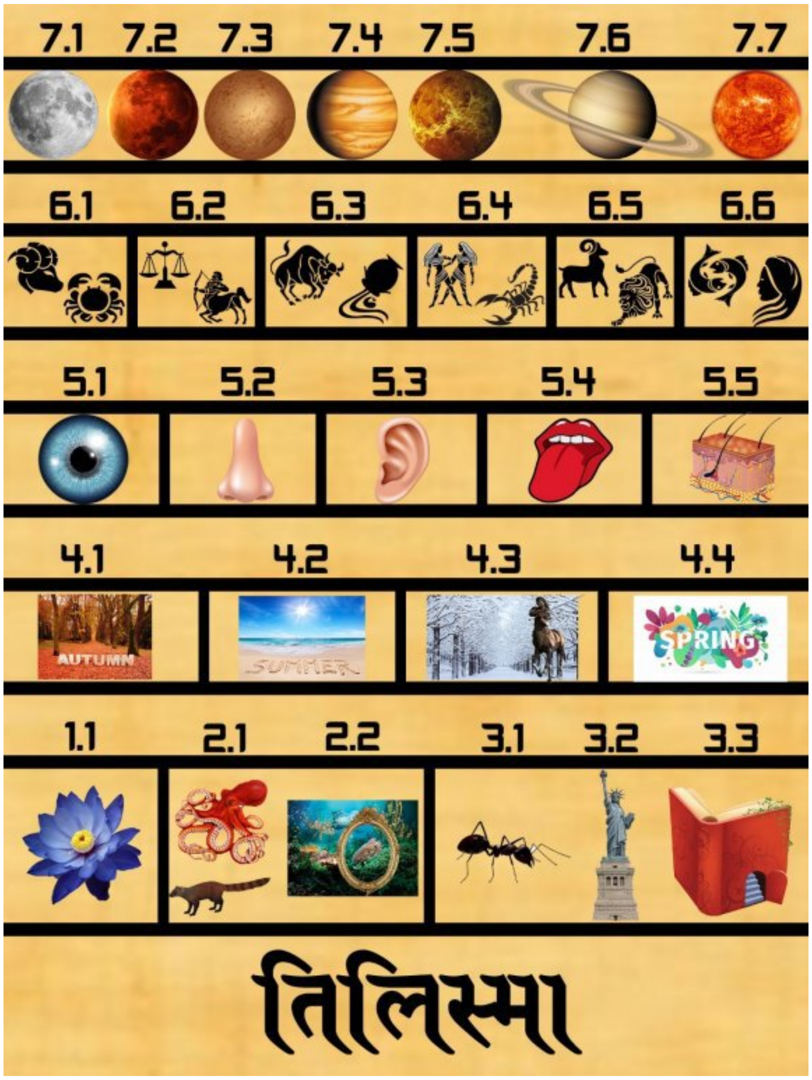

तो दोस्तों क्या आप तैयार हैं, विश्व के सबसे अनोखे और अविश्वसनीय मायाजाल से टकराने के लिये। तो आइये चलते हैं प्रथम द्वार की ओर ....

◆ ◆ ◆

चैपटर-2

नीलकमल

तिलिस्मा 1.1

सुयश, शैफाली, तौफीक, जेनिथ, ऐलेक्स और क्रिस्टी ने जैसे ही पोसाईडन के पैर में बने दरवाजे में प्रवेश किया, दरवाजा अपने आप ही ‘धड़ाक’ की आवाज करता हुआ बंद हो गया।

दरवाजे की जगह अब दीवार नजर आ रही थी, यानि की निकलने का रास्ता पूरी तरह से बंद हो चुका था।

सुयश के गले में अब भी झोपड़ी वाली, खोपड़ी की माला टंगी थी, जिसे पहनकर वह झोपड़ी से बाहर निकला था।

सभी की निगाहें अब सामने की ओर थीं।

सभी के सामने अब किसी थियेटर की तरह का, एक विशाल गोलाकार कमरा दिखाई दे रहा था, जिसमें से निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

उस कमरे की जमीन काँच की बनी थी, जिसके नीचे कोई पानी के समान, परंतु गाढ़ा द्रव्य भरा हुआ था।

उस गाढ़े द्रव्य में 6 डॉल्फिन की तरह दिखने वालीं, 1 फुट के आकार की नीले रंग की मछलियां घूम रहीं थीं।

कमरे के बीचोबीच एक छोटा सा नीले रंग का कमल रखा था, जिसमें असंख्य पंखुड़ियां थीं।

नीलकमल के नीचे की डंडी एक सुराख के द्वारा, काँच की जमीन के नीचे स्थित, जल के अंदर जा रही थी।

गोलाकार कमरे की दीवारों से तेज प्रकाश फूट रहा था।

“कैप्टेन, यह तो वही नीलकमल और नीली मछलियां हैं, जो अभी बाहर झोपड़ी में थे।” जेनिथ ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “यहां तक

कि जमीन के नीचे भी, वही गाढ़ा द्रव्य भरा है।”

“तुम सही कह रही हो जेनिथ, यह सारी चीजें वही हैं, जो बाहर झोपड़ी में थे, बस इनका आकार अब पहले से ज्यादा बड़ा हो गया है।” सुयश ने कहा- “फिर तो हो सकता है कि यह खोपड़ी भी यहां काम आ जाये?”

लेकिन इससे पहले कि कोई और कुछ बोल पाता, वातावरण में एक तेज आवाज गूंजी- “तिलिस्मा के प्रथम द्वार 1.1 में कैश्वर आप सभी का स्वागत करता है।”

“कैश्वर?” शैफाली ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा- “पर तुम्हारा नाम तो कैस्पर था ना?”

“नहीं ... कैस्पर मेरे निर्माता का नाम है .... मैं उनकी एक रचना हूं ... मैंने अपना नाम कैश्वर, स्वयं रखा है।” कैश्वर ने कहा- “कैश्वर का मतलब होता है, कई ईश्वर ... यानि अब मैं कई ईश्वर के बराबर हो गया हूं, इसलिये मैंने अपना नाम कैश्वर रख लिया।”

“तुम्हारे निर्माता कहां गये?” शैफाली ने गुस्से से कैश्वर से पूछा।

“मुझ पर मेरे निर्माता का अब कोई नियंत्रण नहीं है .... इसलिये तुम्हारा यह सब पूछना बेकार है मैग्ना .... मेरा मतलब है कि शैफाली।” कैश्वर ने कहा- “और मुझसे तुम किसी प्रकार की, मदद की आशा भी मत करना। अब मैं जो कह रहा हूं, उसे ध्यान से सुनो, तुम्हारे लिये यही उचित रहेगा।”

यह सुन शैफाली को गुस्सा तो बहुत आया, परंतु सुयश के धीरे से हाथ दबाने की वजह से, शैफाली शांत होकर कैश्वर की बात सुनने लगी।

“हां तो मैं कह रहा था कि अब तुम लोग इस तिलिस्मा के अंदर आ गये हो, तो कुछ बातों को ध्यान से सुन लो। मैं तुम लोगों पर मायावन से पूरी नजर रखे था, इसलिये मैंने तिलिस्मा के हर द्वार का निर्माण, तुम सभी की विशेषताओं को ध्यान में रखकर किया है। इस तिलिस्मा में कोई देवताओं की शक्ति काम नहीं करेगी, यहां सिर्फ और सिर्फ तुम्हारी शारीरिक और बौद्धिक क्षमताएं ही काम करेंगी। इसलिये किसी भी प्रकार के मायावन जैसे चमत्कार के उम्मीद मत करना। इस तिलिस्मा में कुल 7 भाग और 28 द्वार हैं। इन सभी को पार करके ही, तुम काला मोती तक पहुंच सकते हो। अगर तुम में से कोई भी, किसी भी द्वार में फंस गया तो तिलिस्मा को तोड़ा नहीं जा सकेगा। इस तिलिस्मा पर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, यानि जब तक तुम लोग यहां पर हो, तुम्हें ना तो भूख

और प्यास लगेगी और ना ही तुम्हें किसी भी प्रकार से फ्रेश होने की जरुरत महसूस होगी। यहां तक कि, यहां तुम्हारे बाल व नाखून भी नहीं बढ़ेंगे। परंतु यहां का समय बाहर के समय से बहुत ज्यादा धीमा होगा, यानि की यहां का 1 दिन बाहर के 7 दिनों के बराबर होगा। यहां जो भी तुम्हें दिन या रात महसूस होंगे, वह वास्तविक नहीं होंगे, परंतु वास्तविक जैसा ही महसूस करायेंगे। यहां पर अब मैं तुम्हें, इस पहले द्वार नीलकमल के बारे में बता दूं। इस द्वार में तुम्हें सामने मौजूद नीलकमल की पंखुड़ियों को बारी-बारी तोड़ते जाना है, जैसे ही तुम उस नीलकमल की सारी पंखुड़ियां तोड़ दोगे, यह द्वार पार हो जायेगा। मगर शर्त यह है कि तुम्हें उसकी पहली पंखुड़ी सबसे अंत में तोड़नी है और वह भी इस प्रकार से कि उस पंखुड़ी से, किसी प्रकार का द्रव बाहर ना निकले। अगर तुमने उसकी पहली पंखुड़ी पहले तोड़ दी, तो तुम सभी इस द्वार से कभी भी बाहर नहीं निकल पाओगे।”

इतना कहकर कैश्वर की आवाज आनी बंद हो गयी।

“लगता है इस कैश्वर ने किसी प्रकार से, इस तिलिस्मा का सारा नियंत्रण, कैस्पर से अपने हाथों में ले लिया है।” शैफाली ने दाँत पीसते हुए कहा- “और यह अब स्वयं से रचनाएं कर, अपने आप को ईश्वर समझने लगा है।”

“कोई बात नहीं शैफाली, परेशान मत हो।” सुयश ने शैफाली को समझाते हुए कहा- “अगर परेशान होगी, तो सही से किसी भी द्वार के बारे में समझ नहीं पाओगी। अभी तुम अपना सारा ध्यान फिलहाल इस द्वार पर लगाओ। हम जब इस तिलिस्मा को पार कर लेंगे, तो इस कैश्वर से भी निपट लेंगे।”

शैफाली, सुयश की बात सुन थोड़ा नार्मल दिखने लगी।

शैफाली को शांत होते देख सुयश फिर बोल उठा- “कैश्वर ने हमें कहा कि तिलिस्मा में बाहर की कोई शक्ति काम नहीं करेगी, तो सभी लोग पहले एक बार अपनी शक्तियों को चेक कर लें, जिससे हमें पता रहे कि आखिर हमारे पास क्या है और क्या नहीं?”

सुयश की बात सुन जेनिथ ने मन ही मन नक्षत्रा को पुकारा- “नक्षत्रा क्या तुम ठीक हो और मेरी आवाज सुन रहे हो?”

“हां, जेनिथ मैं ठीक हूं और तुम्हारी आवाज भी सुन पा रहा हूं।” नक्षत्रा ने जवाब दिया।

“नक्षत्रा, क्या तुम्हारी शक्तियां यहां पर ठीक तरह से काम कर रहीं हैं या नहीं?” जेनिथ ने पूछा।

“मैं वैसे तो इस आकाशगंगा का नहीं हूं, इसलिये मुझ पर कैश्वर की शक्तियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परंतु मेरी मुख्य शक्ति समय को रोकना है और यहां पर असली समय है ही नहीं ... यह कैश्वर का बनाया कृत्रिम समय है, इसलिये मैं यहां के समय पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता। हां परंतु मेरी हीलींग पावर अभी भी यहां काम कर रही है। इसलिये यदि तुम्हें किसी भी प्रकार की चोट लगी, तो मैं उसे ठीक कर दूंगा और मैं तुम्हें अपने मस्तिष्क के हिसाब से सुझाव दे सकता हूं। इससे ज्यादा मैं यहां कुछ भी नहीं कर सकता।”

यह सुनकर जेनिथ के चेहरे पर चिंता की लकीरें गहरा गईं, क्योंकि इतने खतरनाक तिलिस्मा में नक्षत्रा की शक्ति का काम ना करना वाकई चिंता का विषय था।

कुछ देर बाद सुयश ने एक-एक कर सबसे पूछना शुरु कर दिया।

“कैप्टेन मेरे साथ मौजूद नक्षत्रा की शक्तियां यहां काम नहीं कर रहीं हैं, वह सिर्फ मेरी चोट को सही कर सकता है बस, इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकता।” जेनिथ ने कहा।

“कैप्टेन अंकल, मेरे ड्रेस में मौजूद शक्तियां भी यहां काम नहीं कर रहीं हैं।” शैफाली ने कहा- “अब यह सिर्फ एक साधारण ड्रेस है।”

“कैप्टेन यहां मेरी भी वशीन्द्रिय शक्ति की सभी सुपर पावर्स बेकार हो गईं हैं, परंतु मेरी सभी इंद्रियां एक साधारण मनुष्य से बेहतर महसूस हो रहीं हैं।” ऐलेक्स ने कहा।

“मेरी टैटू की शक्तियां तो मुसीबत पर ही काम आती हैं।” सुयश ने कहा- “पर मुझे लगता है कि वह भी यहां काम नहीं करेंगी। अब रही बात क्रिस्टी और तौफीक की, तो इन्हें मायावन में किसी प्रकार की शक्ति मिली ही नहीं।”

सुयश की बात सुन, क्रिस्टी ने अपनी जेब से निकालकर, सुनहरी पेंसिल को एक बार देखा और फिर एक गहरी साँस लेकर, उसे वापस अपनी जेब में रख लिया।

“तो चलो दोस्तों, एक बार फिर साधारण मनुष्य बनकर तिलिस्मा से टकराते हैं।” सुयश ने अपने शब्दों में थोड़ा जोश भरकर, तेज आवाज में कहा- “और कैश्वर को साधारण मनुष्य की शक्तियां दिखाते हैं।”

यह कहकर सुयश उस कमरे के बीचोबीच मौजूद नीलकमल की ओर बढ़ गया।

सभी सुयश के पीछे-पीछे चल पड़े।

सुयश ने उस 1 फुट ऊंचे नीलकमल को ध्यान से देखा। उस नीलकमल में असंख्य पंखुड़ियां मौजूद थीं।

“क्या कोई कमल के फूल के बारे में कोई जानकारी रखता है?” सुयश ने सभी की ओर देखते हुए पूछा।

“यस कैप्टेन।” जेनिथ ने कहा- “मैंने विश्व की बहुत सी नृत्यकलाएं सीखीं हैं। आपके ही देश भारतवर्ष में कमल को सृष्टि का सृजनकर्ता माना गया है, इसलिये उसके एक नाट्य के प्रकार, भरतनाट्यम शैली की एक मुद्रा का नाम ‘अलापद्मा’ है। इस मुद्रा में कमल के फूल के खिलने के अलग-अलग प्रकार को दर्शाया गया है। जब मैं यह मुद्रा सीख रही थी, तो मैंने कमल के फूल के बारे में काफी कुछ पढ़ा था, जो कि मुझे अब भी याद है। इसलिये मैं इस नीलकमल के बारे में आपको बता सकती हूं।”

जेनिथ एक पल को रुकी और फिर बोलना शुरु कर दिया- “कमल की पंखुड़ियों के समूह को ‘दलपुंज’ और पंखुड़ियों को सपोर्ट देने वाली, हरी पत्तियों के समूह को ‘वाहृदलपुंज’ कहते हैं। इसके बीच के पीले भाग को पुंकेसर कहते हैं। ...... वृक्ष से एक द्रव्य निकलकर तने के माध्यम से, इसकी पंखुड़ियों में पहुंचता है। यही द्रव्य इसके रंग और खुशबू के लिये कारक होता है। जब फूल पूर्ण विकसित हो जाता है, तो तना इस द्रव्य की आपूर्ति फूल को बंद कर देता है।”

इतना कहकर जेनिथ चुप हो गई।

“जेनिथ, तुमने यह नहीं बताया कि इसकी पहली पंखुड़ी कैसे बनती है? इसको जाने बिना इस द्वार को पार नहीं किया जा सकता।” क्रिस्टी ने कहा।

“इसकी पहली पंखुड़ी कैसे बनती है? यह तो मुझे भी नहीं पता।” जेनिथ ने अफसोस प्रकट करते हुए कहा।

“कैप्टेन अंकल!” शैफाली ने कहा- “फूल की सभी पंखुड़ियां बराबर नहीं होती हैं, पर सभी बढ़ती समान तरीके से ही हैं, तो मुझे लगता है कि शायद हर पंखुड़ी के निकलने के बीच में कुछ समय अंतराल होता होगा। और अगर ऐसा होता होगा तो जो पंखुड़ी सबसे बड़ी होगी, वही पहली पंखुड़ी होगी? अब अगर ध्यान से देखें तो सबसे बड़ी पंखुड़ी नीलकमल की

बाहरी कक्षा में ही होगी। यानि की हम अंदर की कक्षा की पंखुड़ियां बिना किसी परेशानी के तोड़ सकते हैं, बस बाहर की कक्षा की पंखुड़ियां तोड़ते समय, हमें यह ध्यान रखना होगा कि उसमें से सबसे बड़ी पंखुड़ी कौन सी है?"

शैफाली का तर्क सभी को सही लगा।

"तो फिर ठीक है, हम बाहर की कक्षा की सबसे बड़ी पंखुड़ी को सबसे अंत में तोड़ेंगे।" सुयश ने सभी को देखते हुए कहा- "परंतु कैश्वर के कहे अनुसार पहली पंखुड़ी को तोड़ते समय द्रव नहीं निकलना चाहिये, तो हम पहले बाकी की पंखुड़ी को तोडते समय देखेंगे, कि पंखुड़ी से द्रव किस प्रकार से निकल रहा है? फिर उसी के हिसाब से आखिरी पंखुड़ी के बारे में सोचेंगे।"

"कैप्टेन, पंखुड़ी से निकलने वाले द्रव को सही से देखने के लिये, हमें फूल के बीच उपस्थित पुंकेसर को पहले ही तोड़ देना चाहिये, जिससे कि ज्यादा से ज्यादा गहराई तक पंखुड़ी को देखा जा सके।" तौफीक ने अपने विचार व्यक्त किये।

तौफीक का विचार सही था, इसलिये सुयश ने आगे बढ़कर नीलकमल के बीच उपस्थित सभी पुंकेसर को तोड़ दिया।

पर जैसे ही सुयश ने पुंकेसर को तोड़ा, वह नीलकमल किसी लट्टू की भांति अपनी धुरी पर तेजी से नाचने लगा।

यह देख सभी डरकर थोड़ा पीछे हट गये।

अब नीलकमल के नाचने की स्पीड इतनी तेज हो गई थी कि उसके स्थान पर एक बवंडर सा नजर आ रहा था।

धीरे-धीरे नीलकमल का आकार भी बढ़ने लगा।

कुछ ही देर में नीलकमल का नाचना रुक गया, परंतु अब वह नीलकमल लगभग 12 फुट ऊंचा हो चुका था।

"लो हो गया काम।" ऐलेक्स ने मुस्कुराते हुए कहा- "मैं सोच ही रहा था कि तिलिस्मा का पहला द्वार इतना आसान क्यों है?"

"कैप्टेन, यह तो लगभग 12 फुट ऊंचा हो गया।" जेनिथ ने परेशान होते हुए कहा- "अब हम इस पर चढ़े बिना इसकी आंतरिक कक्षाओं की पंखुड़ियां कैसे तोड़ेंगे? .... और इस पर चढ़ने के लिये यहां ऐसा कुछ है भी नहीं।"

“और सबसे बड़ी बात यह है कि यदि हम उछलकर इस पर चढ़ने की कोशिश करेंगे, तो इसके लिये हमें इस नीलकमल की बाहरी पंखुड़ियों का सहारा लेना ही पड़ेगा और ऐसे में यदि, कहीं पहली पंखुड़ी पहले ही टूट गयी तो क्या होगा?”

समस्या विकट थी। सभी की निगाह चारो ओर दौड़ी, पर वहां पर उस फूल पर चढ़ने के लिये कुछ भी नहीं था।

तभी क्रिस्टी ने सभी को आश्चर्यचकित करते हुए कहा- “मैं इस पर चढ़ सकती हूं। पर मुझे इसके लिये कैप्टेन और तौफीक की मदद चाहिये होगी।”

“बताओ क्रिस्टी, हमें क्या करना होगा?” सुयश ने क्रिस्टी से पूछा।

“वैसे तो मैं ‘पोल वॉल्ट’ करना जानती हूं। अगर यहां कोई पोल होता, तो मैं यह कार्य बड़ी ही आसानी से कर लेती, पर अब मुझे पोल की जगह पर 2 लोगों की जरुरत होगी। हम सभी नीलकमल से 15 मीटर दूर जायेंगे, जहां पर कैप्टेन और तौफीक मेरे आगे-आगे दौड़ना शुरु करेंगे, मैं उनके पीछे रहूंगी, जब इस नीलकमल की दूरी 1 मीटर बचेगी, तो मैं आप दोनों को रुकने के लिये बोल दूंगी। मेरे रुकने का कहते ही, आप दोंनो अपने शरीर को कड़ा करके रुक जाना, तब मैं आपके शरीर को पोल की जगह प्रयोग करके इस नीलकमल पर पहुंच जाऊंगी।”

क्रिस्टी का प्लान सभी को अच्छा लगा, पर सभी के दिल तेजी से धड़क रहे थे।

क्रिस्टी के बताए अनुसार सुयश और तौफीक, नीलकमल से 15 मीटर दूर आ गये।

क्रिस्टी के इशारा करते ही, सुयश और तौफीक ने दौड़ना शुरु कर दिया। दौड़ने से पहले सुयश ने खोपड़ी की माला को उतारकर ऐलेक्स को पकड़ा दिया, नहीं तो वह दौड़ने में बाधक बनती।

उन दोनों से 3 सेकेण्ड का अंतराल लेकर, क्रिस्टी ने भी उनके पीछे दौड़ना शुरु कर दिया।

जैसे ही नीलकमल की दूरी लगभग 1 मीटर बची, क्रिस्टी ने दोनों को रुकने के लिये कहा।

सुयश और तौफीक, अपने शरीर को कड़ा करते हुए, नीलकमल से 1 मीटर की दूरी पर रुक गये।

पीछे से भागकर आती क्रिस्टी ने उछलकर, अपना एक पैर तौफीक के कंधे पर व दूसरा पैर सुयश के कंधे पर रखा और अपने शरीर का बैलेंस बनाते हुए ऊपर की ओर उछल गई।

किसी सफल कलाबाज की तरह क्रिस्टी का शरीर हवा में गोल-गोल नाचा और वह जाकर नीलकमल पर सीधी खड़ी हो गई।

यह देख ऐलेक्स खुशी के मारे सीटी बजाकर नाचने लगा।

क्रिस्टी ने ऐलेक्स को देखा और धीरे से मुस्कुरा दी।

सभी के चेहरे पर अब खुशी के भाव थे।

क्रिस्टी के नीलकमल पर खड़े होते ही क्रिस्टी के भार से, नीलकमल लगभग 2 फुट नीचे आ गया। अब उसकी ऊंचाई मात्र 10 फुट की बची थी।

नीलकमल के बीच लगभग 1 मीटर व्यास का क्षेत्र खाली था, इसलिये क्रिस्टी को वहां खड़े होने में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं हो रही थी।

क्रिस्टी ने अब सुयश की ओर देखा और सुयश का इशारा मिलते ही आंतरिक कक्षा की सबसे छोटी पंखुड़ी को तोड़ दिया।

उस पंखुड़ी को तोड़ते ही, पंखुड़ी के निचले सिरे से सफेद रंग का द्रव निकला और इसके साथ ही नीलकमल बहुत ही धीरे, गोल-गोल नाचने लगा।

यह देख क्रिस्टी ने एक और पंखुड़ी तोड़ दी, नीलकमल की स्पीड थोड़ी सी और बढ़ गई।

यह देख सुयश ने नीचे से चीखकर कहा- “क्रिस्टी, नीलकमल घूमने लगा है, तुम्हें तेजी से इसकी आंतरिक पंखुड़ियों को तोड़ना होगा।

“कैप्टेन, मैं जैसे-जैसे पंखुड़ियां तोड़ रहीं हूं, वैसे-वैसे इस नीलकमल की स्पीड बढ़ती जा रही है। मैं कोशिश कर रही हूं इसे तेज तोड़ने की।” क्रिस्टी ने कहा।

कुछ ही देर में क्रिस्टी ने आंतरिक कक्षा की सभी पंखुड़ियों को तोड़ दिया।

अब मध्य और वाह्‌ कक्षा की पंखुड़ियां ही बचीं थीं। परंतु अब नीलकमल की स्पीड थोड़ी बढ़ गयी थी और उस पर क्रिस्टी के लिये खड़े

रहना थोड़ा मुश्किल हो रहा था।

क्रिस्टी को अब चक्कर आने लगे थे।

किसी प्रकार से क्रिस्टी ने मध्य कक्षा की भी आधी पंखुड़ियां तोड़ दीं और कूद कर नीचे आ गई।

जमीन पर आते ही क्रिस्टी ने उल्टी दिशा में घूमकर स्वयं को नियंत्रित किया और दुख भरे भाव से सुयश को देखने लगी।

“कोई बात नहीं क्रिस्टी, तुमने अपनी ओर से अच्छी कोशिश की।” सुयश ने क्रिस्टी का उत्साह बढ़ाते हुए कहा।

“मैं इसके आगे की पंखुड़ियां तोड़ सकती हूं।” जेनिथ ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “मैं एक डांसर हूं, आप लोगों ने सन राइजिंग पर देखा था कि मैं एक डांस ‘फुएट’ करती हूं, जिसमें तेजी से अपने पंजों पर गोल-गोल नाचना रहता है। इसलिये मुझे गोल-गोल नाचने की प्रेक्टिस है और इससे मुझे चक्कर नहीं आते। पर मुश्किल यह है कि मैं क्रिस्टी की तरह कूदकर वहां जा नहीं सकती।”

“कैप्टेन, मेरे भार से वह नीलकमल 2 फुट नीचे आ गया है, अगर हम सम्मिलित कोशिश करें, तो जेनिथ को नीलकमल के ऊपर भेज सकते हैं।” क्रिस्टी ने कहा।

सभी ना समझने वाले भाव से क्रिस्टी की ओर देखने लगे।

“अब नीलकमल सिर्फ 10 फुट की ऊंचाई पर है। हममें से अधिकतर लोगों की ऊंचाई 6 फुट है। अगर हम सब गोला बनाकर, अपने हाथों को जोड़कर, अपनी सम्मिलित शक्ति से जेनिथ को नीलकमल पर फेंकने की कोशिश करें, तो उसे ऊपर पहुंचा सकते हैं।” क्रिस्टी ने कहा।

क्रिस्टी का प्लान ठीक था।

सभी ने गोला बनाकर अपने हाथों को जोड़कर जेनिथ को उस पर खड़ा कर दिया और फिर 3 तक गिनती गिन कर, उसे ऊपर की ओर उछाल दिया।

जेनिथ सकुशल नीलकमल के ऊपर पहुंच गई और उसने मध्य कक्षा की पंखुड़ियों को तोड़ना शुरु कर दिया।

जेनिथ ने आसानी से मध्य कक्षा की पंखुड़ियों को तोड़ दिया, मगर अब सबसे मुश्किल कार्य था, क्योंकि पंखुड़ी के आकार को भी पहचानना था और आखिरी पंखुड़ी के द्रव को भी रोकना था।

“कैप्टेन मैं वाह्रकक्षा की भी सभी पंखुड़ियां तोड़ दूंगी, परंतु उस द्रव को कैसे रोकना है? जो इस पंखुड़ी से निकल रहा है।” जेनिथ ने सुयश से पूछा।

“आप ध्यान से देखिये जेनिथ दीदी, पंखुड़ियां जहां से डंडी से जुड़ी होंगी, वहां का रंग थोड़ा गाढ़ा होगा, आपको उस गाढ़े रंग के पास से ही आखिरी पंखुड़ी को तोड़ना होगा। वह गाढ़ा स्थान तभी बनता है, जब वृक्ष, द्रव की आपूर्ति को फूल तक जाने से रोक देता है।” शैफाली ने कहा।

जेनिथ ने ध्यान से देखा तो उसे शैफाली की बात समझ में आ गई।

अब जेनिथ ने फुएट की तरह, एक ही स्थान पर गोल-गोल नाचना शुरु कर दिया, जिससे उसको पंखुड़ियों के आकार की पहचान में कोई परेशानी नहीं आ रही थी।

अंत में जब 2 पंखुड़ियां बचीं तो जेनिथ थोड़ा परेशान नजर आने लगी।

“कैप्टेन, इन दोनों पंखुड़ियों का आकार मुझे एक जैसा ही लग रहा है, मैं समझ नहीं पा रही कि किसे पहले तोड़ूं।” जेनिथ ने उलझे-उलझे भावों से कहा।

लेकिन इससे पहले कि सुयश कुछ जवाब देता, ऐलेक्स बोल पड़ा- “जेनिथ तुम्हारे दाहिने हाथ वाली पंखुड़ी का आकार थोड़ा छोटा है, तुम उसे पहले तोड़ो।”

जेनिथ ने कांपते हाथों से ऐलेक्स के द्वारा बताई पंखुड़ी को तोड़ दिया।

ऐलेक्स का अंदाजा सही था। अब नीलकमल पर सिर्फ आखिरी पंखुड़ी बची थी।

नीलकमल के नाचने की गति भी अब धीमी होती जा रही थी।

सुयश ने अब खोपड़ी की माला को वापस अपने गले में पहन लिया।

कुछ ही देर में नीलकमल का नाचना बंद हो गया, पर जैसे ही नीलकमल रुका, पूरे कमरे की काँच की जमीन अपनी जगह से गायब हो गई और सभी के सभी, जमीन के नीचे मौजूद उस जेल जैसे द्रव में गिर गये।

किसी को भी इस प्रकार कुछ घटित होने का अंदाजा नहीं था, इसलिये सभी ने पानी में एक गोता लगा लिया।

नीलकमल अब जेनिथ की पहुंच से दूर चला गया था।

वह द्रव पानी से थोड़ा ही गाढ़ा था, इसलिये किसी को उसमें तैरने में कोई ज्यादा परेशानी नहीं हो रही थी।

एक गोता खाने के बाद सभी ने अपना सिर पानी के बाहर निकाला।

“जिसे भी पानी के अंदर नीलकमल कहीं भी दिखाई दे, वह ध्यान से उसकी पहली पंखुड़ी को तोड़ देना।” सुयश ने सभी की ओर देखते हुए चीख कर कहा- “क्योंकि उसी के द्वारा अब हम इस मुसीबत को पार कर सकते हैं।”

सुयश की बात सुन सभी ने वापस पानी में गोता लगा दिया।

तभी पानी में मौजूद सभी 6 डॉल्फिन जैसी मछलियों का रंग बदलकर नीले से पारदर्शी हो गया और वह सभी एक-एक व्यक्ति के पीठ से आकर चिपक गईं।

पानी के अंदर ऐलेक्स को छोड़कर, किसी को भी अपनी पीठ से मछलियों के चिपकने का अहसास भी नहीं हुआ।

ऐलेक्स ने अपना हाथ पीछे करके, उस मछली को पकड़कर खींचा, परंतु मछली उसकी पीठ से नहीं छूटी।

उधर पानी के अंदर नीलकमल ढूंढ रही जेनिथ को, पानी के अंदर एक साया नजर आया, जो कि निरंतर उसकी ओर बढ़ रहा था।

जेनिथ ने एक बार अपनी आँखों को मिचमिचाकर, ध्यान से उस साये की ओर देखा।

साये को देखते ही जेनिथ बहुत ज्यादा घबरा गई, वह साया लॉरेन का था, जो कि पानी के अंदर खड़ी उसे ही घूर रही थी।

घबराहट की वजह से थोड़ा पानी जेनिथ की नाक में चला गया, जिसकी वजह से वह सतह पर आ गई।

“यह लॉरेन पानी के अंदर कैसे आ गई?” जेनिथ ने नक्षत्रा से पूछा।

“मुझे तो लॉरेन कहीं नहीं दिखाई दी।” नक्षत्रा ने आश्चर्य से कहा।

“पानी के अंदर लॉरेन बिल्कुल मेरे सामने ही थी।” जेनिथ के शब्दों में आश्चर्य झलक रहा था- “पर .... पर वह तुम्हें क्यों नहीं दिखी नक्षत्रा?”

तभी तौफीक ने भी पानी की सतह पर घबराकर अपना सिर निकाला।

“क्या तुम्हें भी पानी में लॉरेन दिखाई दी तौफीक?” जेनिथ ने तौफीक से पूछा।

“नहीं .... पर मुझे पानी में डूब रहा लोथार दिखाई दिया।” तौफीक ने हैरानी से कहा।

तभी क्रिस्टी ने भी पानी के ऊपर अपना सिर निकाला, वह भी काफी डरी हुई दिख रही थी।

“तुम्हें पानी के अंदर क्या दिखाई दिया क्रिस्टी?” जेनिथ ने क्रिस्टी से भी पूछ लिया।

“मुझे पानी में बहुत से हरे कीड़े तैरते हुए दिखाई दिये।” क्रिस्टी ने कहा।

अब सुयश, शैफाली और ऐलेक्स भी पानी से बाहर आ गये। जेनिथ ने सारी बातें सुयश को बता दीं।

“मुझे भी पानी में डूबता हुआ सन राइजिंग दिखाई दिया .... पर .... पर ये सब हो कैसे रहा है?” सुयश ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

“मैं बताता हूं कैप्टेन।” ऐलेक्स ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचते हुए कहा- “कैप्टेन जब हम लोग तिलिस्मा के इस द्वार के अंदर आये, तो जमीन के नीचे कुछ नीले रंग की मछलियां भी थीं। क्या कोई बता सकता है कि मछलियां इस समय कहां पर हैं?”

ऐलेक्स की बात पर सभी का ध्यान मछलियों की ओर गया, पर किसी को भी मछलियां पानी के अंदर दिखाई नहीं दी थी।

इसलिये सभी ने ऐलेक्स के सामने ‘ना’ में सिर हिला दिया।

“वह सभी नीली मछलियां पारदर्शी बनकर, हम सभी की पीठ से चिपकी हुईं हैं, पारदर्शी होने की वजह से वह हमें दिखाई नहीं दे रहीं हैं। वही मछलियां हमें ‘लुसिड ड्रीम्स’ की भांति, हमारे दिमाग में मौजूद डर को हमारे सामने प्रकट कर रहीं हैं।” ऐलेक्स ने कहा।

“मतलब तुम्हारा यह कहना है ऐलेक्स, कि वह चीजें जो हमें दिखाई दीं, वह असली नही थीं, बल्कि एक प्रकार का भ्रम थीं।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स से पूछा।

"हां, वह बस एक प्रकार का भ्रम हैं, जो उस मछली की वजह से हमारे सामने महसूस हो रहा है।" ऐलेक्स ने कहा।

यह सुनकर सुयश ने अपनी पीठ पर हाथ फेरा। पीठ पर हाथ फेरते ही सुयश को अपनी पीठ से किसी चीज के चिपके होने का अहसास हुआ।

सुयश ने भी उस मछली को अपनी पीठ से हटाने की कोशिश की, पर वह भी सफल नहीं हुआ।

"ऐलेक्स सही कह रहा है।" सुयश ने कहा- "हमारी पीठ पर वह मछली चिपकी है, पर वह छूट नहीं रही है। ..... ऐलेक्स क्या अब तुम यह बता सकते हो कि इस मुसीबत से कैसे छुटकारा मिलेगा?"

"मैं बताती हूं कैप्टेन अंकल।" शैफाली ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- "वह मछली हमारे दिमाग से खेलकर भ्रम की स्थिति उत्पन्न कर रही है और ऐसी स्थिति में, हमारे दिमाग का डर हमारे सामने दिख रहा है। तो अगर हम अपने दिमाग को यह विश्वास दिलायें कि हमारा सबसे बड़ा डर वह मछली ही है, तो वह मछली भी हमें हमारे सामने नजर आने लगेगी। ऐसी स्थिति में हम अपने सामने मौजूद मछली को मारकर अपने डर पर काबू पा सकते हैं। अब हममें से जो भी सबसे पहले ये करने में सफल हो गया, वह नीलकमल को ढूंढ कर उसकी आखिरी पंखुड़ी को तोड़ देगा। आखिरी पंखुड़ी के टूटते ही यह मायाजाल ही समाप्त हो जायेगा।"

"यह कैसे हो सकता है?" जेनिथ ने कहा- "क्योंकि ऐलेक्स तो कह रहा था कि हमारे सामने जो चीजें दिख रहीं हैं, वह सब एक भ्रम है, तो फिर हमारे सामने जो मछली दिखाई देगी, वह भी तो एक भ्रम ही होगी, असली मछली नहीं। तो फिर हम उस भ्रम को मार कैसे सकते हैं?"

"हर भ्रम को सिर्फ विश्वास की शक्ति ही तोड़ सकती है।" शैफाली ने कहा- "अगर वह भ्रम सच ना होकर भी हमारी जान ले सकता है, तो हम भी सच ना होते हुए भी, उस भ्रम को अपने विश्वास से मार सकते हैं और वैसे भी वह मछली हमारे दिमाग से खेल रही है, ऐसे में अगर हम अपने दिमाग को स्वयं से नियंत्रित करने लगे, तो वह मछली स्वयं ही हार जायेगी।"

शैफाली के तर्क बहुत ही सटीक थे, इसलिये फिर से किसी ने कोई सवाल नहीं किया और सभी ने पानी के अंदर एक बार फिर डुबकी लगा दी।

सभी के पानी में डुबकी लगाते ही, एक बार फिर सभी को अपने-अपने डर नजर आने लगे।

पर इस बार कोई भी अपने सामने मौजूद डर से नहीं डरा, बल्कि डर के रुप में उस मछली के बारे में सोचने लगा।

सभी के डर अलग-अलग रुप धरकर उन्हें डराने की कोशिश कर रहे थे, पर सभी बिना डरे मछली के बारे में सोच रहे थे।

तभी ऐलेक्स को अपने सामने वही नीली मछली दिखाई दी।

मछली के दिखते ही ऐलेक्स ने झपटकर उस नीली मछली को अपने हाथों से पकड़ लिया और अपने हाथ की उंगलियों से उस मछली की आँखें फोड़ दीं।

आँखों के फूटते ही ऐलेक्स की पीठ पर मौजूद मछली ऐलेक्स के शरीर से छूट गई।

मछली के पीठ से हटते ही ऐलेक्स को सामने, कुछ दूरी पर वह नीलकमल दिखाई दिया।

नीलकमल नजर आते ही ऐलेक्स उसकी ओर झपटा। कुछ ही देर में नीलकमल ऐलेक्स के हाथ में था।

चूंकि ऐलेक्स की वशीन्द्रिय शक्ति अभी भी थोड़ा काम कर रही थी, इसलिये ऐलेक्स ने नीलकमल की पंखुड़ी के उस भाग को पानी के अंदर भी आसानी से देख लिया, जो हल्का गाढ़ा था।

ऐलेक्स ने बिना देर किये पंखुड़ी को उस स्थान से तोड़ दिया।

पंखुड़ी के टूटते ही तिलिस्मा का वह द्वार भी टूट गया।

अब सभी के शरीर से मछलियां छूट गईं और उस जगह का सारा पानी वहीं जमीन में समा गया।

कुछ ही देर में सभी नार्मल से दिखने लगे, तो ऐलेक्स ने उन्हें बता दिया कि किस प्रकार उसने मछली को मारा था।

“अरे वाह .... मेरा ब्वायफ्रेंड तो कमाल का निकला।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स के गले से लगते हुए कहा।

“गलत कहा, मैं कमाल का नहीं, क्रिस्टी का हूं।” ऐलेक्स ने मासूमियत से जवाब दिया।

सभी ऐलेक्स का जवाब सुन हंस दिये।

सभी अब सामने मौजूद तिलिस्मा के दूसरे द्वार की ओर बढ़ गये।

एण्ड्रोवर्स आकाशगंगा

आज से 3 दिन पहले ....

13.01.02, रविवार, 16:30, फेरोना ग्रह, एण्ड्रोवर्स आकाशगंगा

पृथ्वी से 2.5 मिलियन प्रकाशवर्ष दूर, एण्ड्रोवर्स आकाशगंगा।

फेरोना, एण्ड्रोवर्स आकाशगंगा का सबसे शक्तिशाली ग्रह था। यहां का विज्ञान यहां के 5 गुरुओं की वजह से बहुत ज्यादा उन्नत था।

इन 5 गुरुओं के समूह को 'पेन्टाक्स' कहते थे। यहां के लोगों का मानना है कि पेन्टाक्स, आकाशगंगा के जन्म के समय से ही जीवित हैं, ये कौन हैं? कहां से आये हैं? कोई नहीं जानता?

यहां के रहने वाले लोग देखने में लगभग पृथ्वी के ही लोगों के समान हैं, परंतु इनकी औसत आयु 10,000 वर्ष की होती है।

यहां के लोगों का शरीर हल्के नीले रंग का होता है।

यहां का राजा 'एलान्का' अपने महल में बैठा, अपनी खिड़की से अपनी आकाशगंगा की खूबसूरती को निहार रहा था, कि तभी एक सेवक ने आकर एलान्का का ध्यान भंग कर दिया।

"क्षमा चाहता हूं ग्रेट एलान्का, पर कमांडर 'प्रीटेक्स' आपसे इसी वक्त मिलना चाहते हैं।" सेवक ने कहा।

एलान्का ने हाथ हिलाकर सेवक को इजाजत दे दी।

कुछ ही देर में कमांडर प्रीटेक्स उनके कमरे में हाथ बांधे खड़ा था।

एलान्का के इशारा करते ही प्रीटेक्स ने बोलना शुरु कर दिया- "ग्रेट एलान्का, आप पिछले 4 दिन से बहुत व्यस्त थे, इसलिये मैं आपसे बता नहीं पाया, पर आज मैं आपका सपना साकार करने के बहुत करीब पहुंच गया हूं।"

"तुम्हारा मतलब ..... तुम्हारा मतलब 'ओरस' मिल गया?" एलान्का ने खुशी व्यक्त करते हुए पूछा।

"हां ग्रेट एलान्का, पिछले 20 वर्षों से जिस युवराज ओरस की हमें तलाश थी, वो हमें यहां से 2.5 मिलियन प्रकाशवर्ष दूर एक हरे ग्रह पर मिल गया है।" प्रीटेक्स ने एलान्का की ओर देखते हुए कहा- "आप तो

जानते हैं कि जब से उसका ग्रह डेल्फानो तबाह हुआ है, तब से हम अपनी मशीनों के द्वारा उसे ढूंढने का प्रयास कर रहे थे, पर पिछले 20 वर्षों से उसका कहीं पता नहीं चल रहा था, पर अचानक 3 दिन पहले, उसने अपनी समय शक्ति का प्रयोग किया, जिसके सिग्नल हमें बहुत दूर से प्राप्त हुए, पर हमें उसके ग्रह का पता नहीं चल पाया था। इसलिये हमने 'एण्ड्रोनिका' स्पेश शिप को उस दिशा में भेज दिया था। एक दिन बाद ओरस ने फिर अपनी शक्तियों का प्रयोग किया, जिससे हम उसकी आकाशगंगा तक पहुंच गये और जब आज उसने फिर अपनी शक्तियों का प्रयोग किया, तो हमें उसके ग्रह का पता चल गया, जिससे मैंने एण्ड्रोनिका को उस ग्रह पर उतार दिया। अब वह जैसे ही अगली बार अपनी शक्तियों का प्रयोग करेगा, हमें उसकी वास्तविक स्थिति का पता चल जायेगा और हम उसे दबोच लेंगे। अब वह दिन ज्यादा दूर नहीं, जब समयचक्र आपके हाथ में होगा और फिर आप सभी मल्टीवर्स के अजेय सम्राट कहलायेंगे।"

"यह तो बहुत अच्छी खबर सुनाई तुमने प्रीटेक्स।" एलान्का ने खुश होते हुए कहा- "अच्छा ये बताओ कि 'एण्ड्रोवर्स पावर' इस समय कहां हैं? मुझे उनसे अभी मिलना है। मैं उनसे भविष्य के बारे में कुछ बात करना चाहता हूं?"

"जी .... एण्ड्रोवर्स पावर तो एण्ड्रोनिका में ही हैं, मैंने ही उन्हें वहां पर भेजा है।" प्रीटेक्स ने डरते-डरते कहा- "वो ओरस को कंट्रोल करने में उनकी जरुरत पड़ सकती है, इसीलिये मैंने उन्हें वहां भेजा है।"

"क्या?" एलान्का ने गुस्सा दिखाते हुए कहा- "तुमने एण्ड्रोवर्स पावर को उस हरे ग्रह पर भेज दिया, जबकि तुम्हें पता भी नहीं है कि उस हरे ग्रह पर किस प्रकार के खतरे हैं?"

"पर एण्ड्रोवर्स पावर तो हर खतरे से निपटने में सक्षम हैं ग्रेट एलान्का।" प्रीटेक्स ने बीच में टोकते हुए कहा।

"तुम मूर्ख हो प्रीटेक्स।" एलान्का अब हद से ज्यादा गुस्से में दिखाई दे रहा था- "अरे, मैं उन शक्तियों का उपयोग समय से पहले नहीं करना चाहता था, नहीं तो एरियन आकाशगंगा के लोग उसकी भी काट ढूंढ लेंगे, फिर हम महायुद्ध में किसका उपयोग करेंगे?"

"क्षमा चाहता हूं ग्रेट एलान्का, पर आपसे बात ना हो पाने के कारण मैंने एण्ड्रोवर्स पावर को उस हरे ग्रह पर भेज दिया है, पर आप चिंता ना करें, मैं उन्हें आज ही संदेश भेज देता हूं कि वह बिना बात के, कहीं भी अपना शक्ति प्रदर्शन ना करें और चुपचाप युवराज ओरस को लेकर वहां से

निकल जाएं।” प्रीटेक्स, एलान्का का गुस्सा जानता था, इसलिये सावधानी से एक-एक शब्द नाप तौल कर बोल रहा था।

“ठीक है। तुम उन्हें ये संदेश भेज दो।” एलान्का ने कहा- “और ये बताओ कि एण्ड्रोवर्स पावर का प्रतिनिधित्व इस समय कौन कर रहा है?”

“ओरेना! एण्ड्रोवर्स पावर का प्रतिनिधित्व, इस मिशन के लिये मैंने ओरेना के हाथ में दिया है।” प्रीटेक्स ने जवाब दिया।

“नहीं ..... एण्ड्रोवर्स पावर का प्रतिनिधित्व तुरंत ‘रेने’ के हाथ में दे दो। ओरेना बहुत एग्रेसिव है, वह उस हरे ग्रह पर अपनी मनमानी करने लगेगी।” एलान्का ने अपना आदेश सुनाते हुए कहा- “और तुरंत चलकर मुझे उस हरे ग्रह की सारी जानकारी दो, जितनी तुम्हारे पास है।”

प्रीटेक्स के विचार एलान्का से मैच नहीं खा रहे थे, पर राजा का आदेश तो मानना ही था, इसलिये प्रीटेक्स चुप रहा और एलान्का को ले आकाशगंगा के रिकार्ड रुम की ओर बढ़ गया।

◆ ◆ ◆

त्रिशक्ति

आज से 6,000 वर्ष पहले, उत्तर भारत के एक भयानक जंगल की गुफा

जंगल में एक अजीब सा सन्नाटा बिखरा हुआ था, पर उस सन्नाटे का चीरती एक आवाज वातावरण में गूंज रही थी- “ऊँ नमः शिवाय् ...... ऊँ नमः शिवाय् .....।”

ऐसे बियाबान जंगल की एक गुफा में, एक स्त्री महादेव के मंत्रों का जाप कर रही थी।

वैसे तो वह स्त्री बहुत सुंदर थी, पर वर्षों से जंगल में साधना करने की वजह से, उसके चेहरे के खूबसूरती थोड़ी मलिन हो गई थी।

उसके शरीर के निचले हिस्से में चींटियों ने अपनी बांबियां बना ली थीं, शरीर के ऊपरी हिस्से पर मकड़ियों ने जाले लगा लिये थे, पर उस स्त्री की साधना अनवरत् जारी थी।

आज उसे तपस्या करते हुए 10 वर्ष बीत चुके थे, इन बीते 10 वर्षों में उसने कुछ भी अन्न-जल ग्रहण नहीं किया था।

अब उस स्त्री के चेहरे के आसपास एक अजीब सा तेज आ चुका था।

उस स्त्री ने भारतीय वेषभूषा धारण करते हुए एक सफेद रंग की साड़ी पहन रखी थी।

आखिर उस स्त्री की कठिन तपस्या से महादेव खुश हो गये।

उस स्त्री के सम्मुख एक श्वेत प्रकाश सा जगमगाने लगा, उस श्वेत प्रकाश में महादेव का छाया शरीर भी था।

“मैं तुम्हारे कठोर तप से प्रसन्न हुआ पुत्री विद्युम्ना। अब तुम आँखें खोलकर मुझसे अपना इच्छित वर मांग सकती हो।” महादेव की आवाज वातावरण में गूंजी।

महादेव की आवाज सुन विद्युम्ना ने अपनी आँखें खोल दीं।

महादेव को सामने देख विद्युम्ना ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और बोली- “हे महादेव मेरे पिता एक दैत्य हैं और मेरी माता एक मनुष्य। दोनों के बीच इतना बड़ा अंतर होने के बाद भी दोनों में बहुत प्रेम है, पर उनके

प्रेम को ना तो कोई दैत्य समझ पाता है और ना ही कोई मनुष्य, उनके प्रेम को स्वीकार करता है। मैंने अपना पूरा बचपन इन्हीं संघर्षों के बीच गुजारा है। अतः मैंने दैत्यगुरु शुक्राचार्य से इसका समाधान मांगा, तो दैत्यगुरु शुक्राचार्य ने मुझे आपसे त्रिशक्ति का वरदान मांगने को कहा। उन्होंने कहा कि इसी त्रिशक्ति से मैं दैत्यों, राक्षसों और मनुष्यों के बीच संघर्ष विराम कर सम्पूर्ण पृथ्वी पर संतुलन स्थापित कर सकती हूं। तो हे महादेव मुझे त्रिशक्ति प्रदान करें।"

"क्या तुम्हें पता भी है विद्युम्ना कि त्रिशक्ति क्या है?" महादेव ने विद्युम्ना से पूछा।

"हां महादेव, त्रिशक्ति, जल, बल और छल की शक्तियों से निर्मित एक त्रिसर्पमुखी दंड है, यह दंड जिसके पास रहता है, उसे कोई भी हरा नहीं सकता। इस सर्पदंड को छीना भी नहीं जा सकता और इसके पास रहते हुए इसके स्वामी को मारा भी नहीं जा सकता। मैं इसी महाशक्ति से इस समूची पृथ्वी पर संतुलन स्थापित करुंगी।" विद्युम्ना ने कहा।

"क्या शक्ति के प्रदर्शन से कभी पृथ्वी पर संतुलन स्थापित हो सकता है विद्युम्ना?" महादेव ने कहा- "या तुम ये समझती हो कि तुम स्वयं कभी पथ भ्रमित नहीं हो सकती?"

महादेव के शब्दों में एक सार छिपा था, जिसे विद्युम्ना ने एक क्षण में ही महसूस कर लिया।

"महादेव मैं आपके कथनों का अर्थ समझ गई।" विद्युम्ना ने हाथ जोड़कर कहा- "तो फिर मुझे ये भी आशीर्वाद दीजिये कि यदि भविष्य में मैं कभी पथभ्रमित हो भी गई, तो आपकी महाशक्ति के पंचभूत मुझे मार्ग दिखायेंगे।"

"तथास्तु।" महादेव, विद्युम्ना के कथन सुन मुस्कुरा उठे और विद्युम्ना को वरदान दे वहां से अंतर्ध्यान हो गये।

विद्युम्ना के हाथों में अब एक त्रिसर्पमुखी दंड था, जिसका ऊपरी सिरे पर 3 सर्पों के मुख बने थे।

विद्युम्ना ने वह सर्पदंड हवा में उठाकर, उसे गायब कर दिया और वापस जंगल से अपने घर की ओर चल दी।

महादेव के प्रभाव से विद्युम्ना के वस्त्र और शरीर साफ हो गये थे, अब वह फिर से बहुत सुंदर नजर आने लगी थी।

विद्युम्ना अब जंगल में आगे बढ़ रही थी कि तभी विद्युम्ना को जंगल में एक स्थान पर सफेद रंग का एक बहुत ही खूबसूरत मोर दिखाई दिया, जो कि अपने पंख फैलाकर एक स्थान पर नृत्य कर रहा था।

इतना खूबसूरत नजारा देखकर विद्युम्ना मंत्रमुग्ध होकर उस दृश्य को देखने लगी।

विद्युम्ना झाड़ियों की ओट से इस दृश्य को निहार रही थी।

अभी तक उस मोर की निगाह विद्युम्ना पर नहीं पड़ी थी।

वह मोर ना जाने कितनी देर तक ऐसे ही नृत्य करता रहा, फिर अचानक उस मोर ने एक इंसानी शरीर धारण कर लिया।

अब वह मोर किसी देवता की भांति प्रतीत हो रहा था, परंतु उस मोर ने नृत्य अभी भी नहीं रोका था।

तभी आसमान से बारिश की नन्हीं बूंदें गिरने लगीं, अब वह इंसान उस बारिश के जल में पूरी तरह सराबोर हो गया था।

बारिश में सराबोर होने के बाद, शायद उस व्यक्ति की प्यास अब बुझ गई थी।

अब उसने नाचना बंद कर दिया और फिर एक दिशा की ओर जाने लगा।

यह देख विद्युम्ना ने भागकर उस व्यक्ति का रास्ता रोक लिया और बोली- “तुम तो देवताओं के समान नृत्य करते हो। हे मनुष्य तुम कौन हो?”

अचानक से सामने एक स्त्री को देख वह व्यक्ति पहले तो घबरा गया, फिर उसने ध्यान से विद्युम्ना के सौंदर्य को देखा और फिर बोल उठा- “मैं मनुष्य नहीं, मैं राक्षसराज बाणकेतु हूं। मुझे प्रकृति और जीवों से बहुत लगाव है, इसलिये कभी-कभी मैं छिपकर इस जंगल में आता हूं और कुछ देर के लिये प्रकृति के इन रंगों और इस वातावरण में खो जाता हूं। पर आप कौन हो देवी? और आप इस भयानक जंगल में अकेले क्या कर रही हो?”

“अगर आप राक्षस हो, तो आप इतना सौंदर्यवान कैसे हो?” विद्युम्ना ने बाणकेतु के प्रश्न का उत्तर देने की जगह स्वयं उससे सवाल कर लिया।

“मैं एक मायावी राक्षस हूं, मैं कोई भी रुप धारण कर सकता हूं, असल में मैं ऐसा नहीं दिखता, यह रुप तो मैंने प्रकृति में खोने के लिये चुना

था।” बाणकेतु ने कहा- “पर आप वास्तव में बहुत सुंदर हो। क्या मैं आपका परिचय जान सकता हूं?”

“मेरा नाम विद्युम्ना है। मैं दैत्यराज इरवान की पुत्री हूं। मैं इस जंगल में महादेव की तपस्या करने आयी थी।” विद्युम्ना ने कहा।

“क्या वरदान मांगा आपने महादेव से?” बाणकेतु ने विद्युम्ना से पूछा।

“मैंने मांगा कि कोई प्रकृति से प्रेम करने वाला, सुंदर सजीला नौजवान कल मेरे पिता के पास आकर मेरा हाथ मांगे और मुझसे विवाह कर मुझे अपने घर ले जाये।” विद्युम्ना ने यह शब्द मुस्कुरा कर कहे और पलटकर वापस जंगल के दूसरी ओर चल दी।

विद्युम्ना के कुछ आगे बढ़ने के बाद विद्युम्ना के कानों में बाणकेतु की आवाज सुनाई दी- “मैं कल तुम्हारे पिता के पास तुम्हारा हाथ मांगने आ रहा हूं विद्युम्ना। मेरा इंतजार करना।”

यह सुन विद्युम्ना के चेहरे पर मुस्कान खिल गई, पर विद्युम्ना ने पीछे पलटकर नहीं देखा और आगे जाकर बाणकेतु की नजरों से ओझल हो गई।

अजीब प्रणय निवेदन था, पर जो भी हो बाणकेतु को विद्युम्ना भा गई थी।

बाणकेतु भी मुस्कुराकर अब एक दिशा की ओर चला दिया।

◆ ◆ ◆

चैपटर-3

रहस्यमय नेवला

तिलिस्मा 2.11

सुयश सहित सभी अब तिलिस्मा के दूसरे द्वार पर खड़े थे।

दूसरे द्वार में सभी को एक बड़े से कमरे में 2 विशाल गोल क्षेत्र बने दिखाई दिये, जो कि आकार में लगभग 40 फुट व्यास के बने थे।

उन दोनों गोल क्षेत्रों के बीच 1-1 वर्गाकार पत्थर रखा था।

एक पत्थर पर नेवले की मूर्ति और दूसरे पत्थर पर एक ऑक्टोपस की मूर्ति रखी थी।

नेवले की मूर्ति के आगे लगी नेम प्लेट पर 1 और ऑक्टोपस की मूर्ति के आगे लगी नेम प्लेट पर 2 लिखा था।

दोनों ही गोल क्षेत्रों की जमीन 1 वर्ग मीटर के संगमरमर के पत्थरों से बनी थी।

“नेवले की मूर्ति के नीचे 1 लिखा है, हमें पहले उस क्षेत्र में ही चलना होगा।” सुयश ने सभी की ओर देखते हुए कहा।

सभी ने सिर हिलाया और नेवले की मूर्ति के पास पहुंच गये।

अब सभी संगमरमर के पत्थरों पर खड़े थे।

नेम प्लेट पर, जहां 1 नंबर लिखा था, उसके नीचे 2 लाइन की एक कविता भी लिखी थी-

“जीवनचक्र का है इक सार,
लगाओ परिक्रमा खोलो द्वार”

“इन पंक्तियों का क्या मतलब हुआ कैप्टेन?” जेनिथ ने सुयश की ओर देखते हुए पूछा- “यहां तो कोई भी द्वार नहीं है, यह नेवला हमें कौन से द्वार को खोलने की बात कर रहा है?”

सुयश ने जेनिथ की बात का कोई जवाब नहीं दिया। वह तेजी से कुछ सोच रहा था।

कुछ देर के बाद सुयश ने अपना पैर संगमरमर के पत्थरों से बाहर निकालने की कोशिश की, परंतु जैसे ही उसका पैर उस गोल क्षेत्र के बाहर निकला, उसे करंट का बहुत तेज झटका महसूस हुआ।

“अब हम इस संगमरमर के क्षेत्र से बाहर नहीं निकल सकते, अगर किसी ने कोशिश की तो उसे करंट का तेज झटका लगेगा।” सुयश ने अब जेनिथ का उत्तर देते हुए कहा- “समझ गई जेनिथ? यानि कि अब हम इस नेवले की पहेली को सुलझाए बिना इस स्थान से बाहर नहीं जा सकते और कविता की पंक्तियां पढ़कर ऐसा लग रहा है कि हमें इस नेवले की मूर्ति का 1 चक्कर लगाना होगा।”

“पर नेवले की मूर्ति का चक्कर लगाना तो बहुत आसान कार्य है।” ऐलेक्स ने सुयश को देखते हुए कहा।

“ब्वॉयफ्रेंड जी, इस तिलिस्मा में कुछ भी आसान नहीं है।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स से मजा लेते हुए कहा- “अवश्य ही इन बातों में कोई ना कोई पेंच है?”

“अच्छा जी, तो तुम्हीं बता दो कि क्या पेंच है, इन पंक्तियों में?” ऐलेक्स ने क्रिस्टी को देखकर हंसते हुए कहा।

“कैप्टेन क्या मैं नेवले का एक चक्कर लगाकर देखूं।” ऐलेक्स ने सुयश से इजाजत मांगते हुए कहा- “क्योंकि बिना कुछ किये तो हमें कुछ भी समझ में नहीं आयेगा?”

ऐलेक्स की बात में दम था, इसलिये सुयश ने ऐलेक्स को इजाजत दे दी।

ऐलेक्स ने मूर्ति का एक चक्कर लगाना शुरु कर दिया।

सभी की नजरें ध्यान से वहां घटने वाली हर एक घटना पर थीं।

पर जैसे ही ऐलेक्स का चक्कर पूरा हुआ, वह धड़ाम से जमीन पर गिर गया। ऐलेक्स को ऐसा महसूस हुआ कि जैसे उसके पूरे बदन की शक्ति ही खत्म हो गई हो।

उसे गिरते देख सभी भागकर ऐलेक्स के पास आ गये।

“क्या हुआ ऐलेक्स? तुम ठीक तो हो ना?” क्रिस्टी ने घबराते हुए पूछा।

“ऐसा लग रहा है कि जैसे मेरे बदन की पूरी शक्ति खत्म हो गई है।” ऐलेक्स ने पड़े-पड़े ही जवाब दिया- “मैं सबकुछ देख और महसूस कर पा रहा हूं, बस उठ नहीं पा रहा।”

“इसका मतलब तुमने गलत तरीके से चक्कर लगाया है।” सुयश ने चारो ओर देखते हुए कहा- “हमें फिर से इन पंक्तियों का मतलब समझना पड़ेगा और तुम परेशान मत हो क्रिस्टी, मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे ही हम इस द्वार की पहेली को सुलझा लेंगे, ऐलेक्स फिर से ठीक हो जायेगा। याद करो मैग्नार्क द्वार में ऐसा तौफीक के साथ भी हो गया था।”

सुयश के शब्द सुन, क्रिस्टी थोड़ा निश्चिंत हो गई।

“कैप्टेन, मुझे लगता है कि ऐलेक्स ने ‘एंटी क्लाक वाइज’ (घड़ी के चलने की विपरीत दिशा) चक्कर लगाया था और इन पंक्तियों में जीवनचक्र की बात की गई है। अब जीवनचक्र तो समय के हिसाब से ही चलता है, तो इसके हिसाब से एंटी क्लाक वाइज तो परिक्रमा लगाई ही नहीं जा सकती।” क्रिस्टी ने कहा।

“क्रिस्टी सहीं कह रही है, यह स्थान किसी मंदिर की भांति बना है और किसी भी मंदिर में एंटी क्लाक वाइज चक्कर नहीं लगाया जाता।” सुयश ने कहा।

“तो क्या मैं क्लाक वाइज चक्कर लगाकर देखूं, हो सकता है कि ऐसा करने से द्वार खुल जाये।” क्रिस्टी ने कहा।

सुयश ने क्रिस्टी की बात सुनकर एक बार फिर ध्यान से उन पंक्तियों को पढ़ा और फिर क्रिस्टी को चक्कर लगाने की इजाजत दे दी।

क्रिस्टी ने क्लाक वाइज चक्कर लगाना शुरु कर दिया, पर इस बार भी चक्कर के पूरा होते ही क्रिस्टी लहराकर ऐलेक्स जैसी हालत में जमीन पर गिर गई।

“जमीन पर गिरने की आपको ढेरों बधाइयां गर्लफ्रेंड जी, हमारे परिवार में आपका स्वागत है।” ऐलेक्स ने ऐसी स्थिति में भी सबको हंसा दिया।

“मैं तो बस तुम्हारा साथ देने को आयी हूं, वरना मुझे जमीन पर गिरने का शौक नहीं।” क्रिस्टी ने मुंह बनाते हुए कहा।

“कैप्टेन अब हम 4 लोग ही बचे हैं, अब हमें बहुत सोच समझ कर निर्णय लेना होगा।” जेनिथ ने कहा।

“मुझे लगता है कि यहां पर जीवनचक्र की बात हो रही है, तो पहले हमें इस नेवले को जिंदा करना होगा, तभी हम इसका चक्कर लगा सकेंगे।” शैफाली ने काफी देर के बाद कुछ कहा।

अब सबकी निगाह फिर से उस पूरे क्षेत्र में दौड़ गई।

“वैसे शैफाली, तुम यह बताओ कि नेवले का प्रिय भोजन है क्या? इससे हमें कुछ ढूंढने में आसानी हो जायेगी।” जेनिथ ने शैफाली से पूछा।

“वैसे तो नेवला सर्वाहारी होता है, वह मांसाहार और शाकाहार दोनों ही करता है, पर जब भी नेवले की बात आती है, तो उसे सांप से लड़ने के लिये ही याद किया जाता है।” शैफाली ने जेनिथ से कहा- “पर यह जानने का कोई फायदा नहीं है जेनिथ दीदी ... आप यहां आसपास देखिये, यहां पर कुछ भी ऐसा नहीं है, जिससे कि इस नेवले को जिंदा किया जा सके।”

तभी ऐलेक्स की आवाज ने सभी को चौंका दिया- “कैप्टेन जरा एक मिनट मेरे पास आइये।”

सुयश सहित सभी ऐलेक्स और क्रिस्टी के पास पहुंच गये- “कैप्टेन मेरे कानों में किसी चीज के रेंगने की आवाज सुनाई दे रही है और वह आवाज इस पत्थर से आ रही है, जिस पर यह नेवला बैठा हुआ है।

ऐलेक्स की बात सुनकर सभी का ध्यान अब उस पत्थर की ओर चला गया।

पत्थर में कहीं कोई छेद नहीं था। तभी ऐलेक्स का ध्यान पत्थर के ऊपर लगी नेम प्लेट पर चला गया।

“तौफीक जरा अपना चाकू मुझे देना।” सुयश ने तौफीक से चाकू मांगा।

तौफीक ने अपनी जेब से चाकू निकालकर सुयश के हवाले कर दिया।

सुयश ने चाकू की नोंक से उस धातु के स्टीकर को पत्थर से निकाल दिया।

उस धातु के स्टीकर के पीछे एक गोल सुराख था, जैसे ही सुयश ने उस नेम प्लेट को पत्थर से निकाला, उस छेद से एक काले रंग का 5 फुट का नाग निकलकर बाहर आ गया।

सभी उस नाग को देखकर पीछे हट गए।

वह नाग अब उस पत्थर पर चढ़कर नेवले के सामने जा पहुंचा।

जैसे ही नाग ने नेवले की आँखों में देखा, नेवला जीवित होकर नाग पर टूट पड़ा।

थोड़ी ही देर के बाद नेवले ने नाग के शरीर को काटकर उसे मार डाला। नाग के मरते ही उसका शरीर गायब हो गया।

अब पत्थर पर जिंदा नेवला बैठा था, जो कि इन लोगों को ही घूर रहा था।

“मेरे हिसाब से अब हमें इसका चक्कर लगाना होगा।” सुयश ने कहा।

“आप रुकिये कैप्टेन, इस बार मैं ट्राई करती हूं, आपका अभी सही रहना ज्यादा जरुरी है।” जेनिथ ने कहा।

“नहीं-नहीं ... अब मुझे ही चक्कर लगाने दो। मेरे हिसाब से अब कोई परेशानी नहीं होगी।” सुयश यह कहकर क्लाक वाइज नेवले का चक्कर लगाने लगा।

पर सुयश जिस ओर भी जा रहा था, नेवला अपना चेहरा उस ओर कर ले रहा था।

सुयश के 1 चक्कर पूरा करने के बाद भी कोई दरवाजा नहीं खुला।

“अब क्या परेशानी हो सकती है?” सुयश ने कहा।

“जेनिथ।” तभी नक्षत्रा ने जेनिथ को पुकारा।

“हां बोलो नक्षत्रा।” जेनिथ ने अपना ध्यान अपने दिमाग पर लगाते हुए कहा।

“सुयश को बताओ कि भौतिक विज्ञान का नियम यह कहता है कि किसी भी चीज का एक चक्कर तब पूर्ण माना जाता है जब कि चक्कर लगाने वाला या फिर जिसके परितः वह चक्कर लगा रहा है, दोनों में से कोई एक स्थिर रहे। यहां जब भी सुयश नेवले का चक्कर लगा रहा है, वह अपना चेहरा सुयश की ओर कर ले रहा है, ऐसे में यह चक्कर पूर्ण नहीं माना जायेगा। साधारण शब्दों में सुयश को नेवले का चक्कर लगाने के लिये उसकी पीठ देखनी होगी।”

नक्षत्रा ने भौतिक विज्ञान का एक जटिल नियम आसान शब्दों में जेनिथ को समझाया, पर जेनिथ के लिये विज्ञान किसी भैंस के समान ही

था, उसे नक्षत्रा की आधी बातें समझ ही नहीं आयीं।

इसलिये जेनिथ ने सुयश को सिर्फ इतना कहा- “कैप्टेन, नक्षत्रा कह रहा है कि आपको नेवले का चक्कर पूरा करने के लिये नेवले की पीठ देखनी होगी।”

सुयश नक्षत्रा की कही बात को समझ गया।

अब सुयश ने चलने की जगह दौड़कर नेवले का चक्कर लगाया, परंतु नेवले ने अपनी गति को सुयश के समान कर लिया।

“यह तो मुसीबत है।” सुयश ने कहा- “मैं अपनी गति में जितना भी परिवर्तन करुंगा, यह नेवला भी उसी गति में अपना चेहरा मेरे सामने कर ले रहा है, इस तरह तो कभी भी इसका एक चक्कर पूरा नहीं होगा।”

कुछ देर सोचने के बाद सुयश ने तौफीक की ओर देखते हुए कहा- “तौफीक तुम भी आ जाओ, अब मैं थोड़ा तेज चक्कर लगाऊंगा, नेवले का चेहरा हमेशा मेरे सामने ही रहेगा, तुम भी इस पत्थर के चारो ओर धीमे-धीमे चक्कर लगाओ, इस प्रकार मेरा नहीं, बल्कि नेवले के चारो ओर तुम्हारा 1 चक्कर पूरा हो जायेगा और यह द्वार पार हो जायेगा।”

आइडिया बुरा नहीं था। सभी को अब इस द्वार के पार होने की पूरी उम्मीद हो गई थी।

परंतु जैसे ही तौफीक ने परिक्रमा स्थल पर अपना कदम रखा, नेवले ने घूरकर तौफीक को देखा।

नेवले के घूरते ही नेवले के शरीर से एक और नेवला निकलकर उस पत्थर पर दिखाई देने लगा।

अब एक का चेहरा सुयश की ओर था और दूसरे का चेहरा तौफीक की ओर था।

“बेड़ा गर्क।” शैफाली ने अपना सिर पीटते हुए कहा- “कुछ और सोचिये कैप्टेन अंकल, हम तिलिस्मा से बेइमानी नहीं कर सकते।”

सुयश अब फिर से सोच में पड़ गया। काफी देर तक सोचने के बाद सुयश के दिमाग में एक और प्लान आया।

“तौफीक, हममें से एक को एंटी क्लाक वाइज और दूसरे को क्लाक वाइज चक्कर लगाना होगा, इस प्रकार से हममें से दोनों ही एक-एक नेवले का चक्कर पूरा कर लेंगे। अब परेशानी यह है कि जो भी एंटी क्लाक वाइज चक्कर लगायेगा, उसका हाल भी ऐलेक्स और क्रिस्टी जैसा हो

जायेगा, परंतु उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि तब तक तो यह द्वार भी पार हो जायेगा।” सुयश ने तौफीक की ओर देखते हुए कहा।

तौफीक ने जरा देर तक सुयश का प्लान समझा और फिर मुस्कुरा कर तैयार हो गया। अब सुयश क्लाक वाइज और तौफीक एंटी क्लाक वाइज चक्कर लगाने लगा।

जैसे ही दोनों का 1 चक्कर पूरा हुआ, वह नेवला वहां से गायब हो गया और ऐलेक्स व क्रिस्टी भी ठीक होकर खड़े हो गये।

जेनिथ ने संगमरमर के क्षेत्र से अपना हाथ बाहर निकाल कर देखा, अब वहां कोई करंट उपस्थित नहीं था।

यह देख सभी ऑक्टोपस की मूर्ति की ओर चल दिये।

◆ ◆ ◆

वेदांत रहस्यम्

15 जनवरी 2002, मंगलवार, 15:00, ट्रांस अंटार्कटिक माउन्टेन, अंटार्कटिका

विल्मर को सुनहरी ढाल देने के बाद शलाका ने जेम्स को वापस उसी कमरे में रुकाया और स्वयं अपने शयनकक्ष में आ गई।

शलाका ने अपने भाईयों पर नजर मारी जो कि दूसरे कमरे में थे। शलाका ने अब अपने कमरे का द्वार अंदर से बंद कर लिया, वह नहीं चाहती थी कि वेदांत रहस्यम् पढ़ते समय कोई भी उसे डिस्टर्ब करे।

कक्ष में मौजूद अलमारी से शलाका ने वेदांत रहस्यम् निकाल ली और उसे ले अपने बिस्तर पर आ गई।

लाल रंग के जिल्द वाली, 300 पृष्ठ वाली, 5,000 वर्ष पुरानी, आर्यन के द्वारा लिखी किताब अब उसके सामने थी।

शलाका जानती थी कि इसी किताब में वह रहस्य भी दफन है कि आर्यन ने क्यों अपनी इच्छा से अपनी मौत का वरण किया?

यह पुस्तक अपने अंदर सैकड़ों राज दबाये थी, इसलिये उसे खोलते समय शलाका के हाथ कांपने लगे।

शलाका ने वेदांत रहस्यम् का पहला पृष्ठ खोला।

पहले पृष्ठ पर वेदालय की फोटो बनी थी। जिसे आर्यन ने अपनी स्मृति से रेखाचित्रों के माध्यम से बनाया था।

उसे देखकर एक पल में ही शलाका 5,000 वर्ष पहले की यादें अपने दिल में महसूस करने लगी।

शलाका जानती थी, कि यह किताब जादुई है, अगर उसने वेदालय की फोटो को छुआ, तो वह उस स्थान पर पहुंच जायेगी, इसलिये इच्छा होने के बाद भी शलाका ने वेदालय की फोटो को स्पर्श नहीं किया।

शलाका ने अब दूसरा पृष्ठ पलटा। उस पृष्ठ पर वेदालय की वह तस्वीर थी, जब पहली बार सभी वेदालय में प्रविष्ठ हुए थे।

उस तस्वीर में आकृति, आर्यन से चिपक कर खड़ी थी और शलाका उनसे थोड़ा दूर खड़ी थी।

कुछ देर के लिये ही सही पर यह तस्वीर देखते ही शलाका के मन में आकृति के लिये गुस्सा भर गया।

शलाका ने अब एक-एक कर पन्ने पलटने शुरु कर दिये। आगे के लगभग 30 पेज वेदालय की अलग-अलग यादों से भरे हुए थे।

पर एक पेज पलटते ही शलाका से रहा नहीं गया, उसने उस तस्वीर को छू लिया।

एक पल में ही शलाका उस तस्वीर में समाकर उस काल में पहुंच गई, जहां वह एक नदी के किनारे आर्यन के साथ अकेली थी।

आर्यन और शलाका दोनों ही इस समय 11 वर्ष के थे।

तो आइये दोस्तों देखते हैं कि ऐसा क्या था उस फोटो में कि शलाका अपने आप को उसे छूने से रोक नहीं पायी।

वेदालय से कुछ दूरी पर एक सुंदर सी झील थी, जहां इस मौसम में बहुत से पंछी और चिड़िया उड़कर, उस स्थान पर आते थे।

इस समय जिधर नजर जा रही थी, उधर चारो ओर रंग-बिरंगे फूल, तितलियां और पंछी दिखाई दे रहे थे।

ऐसे मौसम में आर्यन और शलाका उस स्थान पर बैठे थे।

“आज तो छुट्टी का दिन था फिर तुम मुझे यहां पर क्यों लाये आर्यन?” शलाका ने अपनी नन्हीं आँखों से आर्यन को देखते हुए पूछा।

“क्योंकि तुम मुझसे एक छोटी सी शर्त हार गई थी और शर्त के अनुसार एक दिन के लिये मैं जो कहूं, वो तुम्हें मानना पड़ता, तो फिर मैंने सोचा कि क्यों ना मैं तुम्हें अपनी सबसे फेवरेट जगह दिखाऊं, बस यही

सोच मैं तुम्हें यहां ले आया। मुझे पता है कि अगर शर्त नहीं होती तो तुम कभी मेरे साथ नहीं आती। पर सच कहूं तो मैं तुम्हें ऐसे अकेले कमरे में बंद पड़े नहीं देख सकता। तुम पता नहीं कमरे से बाहर क्यों नहीं निकलती?”

“वो .... वो मैं तुमसे बात करना चाहती हूं, तुम्हारे साथ घूमना भी चाहती हूं, पर वो आकृति हमेशा तुम्हारे साथ रहती है और वह मुझसे बहुत चिढ़ती है, बस इसीलिये मैं तुम्हारे साथ बाहर कहीं नहीं जाती।” शलाका ने धीरे से कहा।

“कोई बात नहीं, पर आज तो आकृति मेरे साथ नहीं है ... आज तुम यहां मेरे साथ खेल सकती हो।” आर्यन ने भोला सा चेहरा बनाते हुए कहा।

“ठीक है, पर तुम यहां पर आकर कौन सा खेल खेलते हो?” शलाका ने आर्यन की बातों में रुचि लेते हुए कहा।

“मैं यहां पर प्रकृति को महसूस करने वाला खेल खेलता हूं। क्या यह खेल तुम मेरे साथ खेलोगी?” आर्यन ने कहा।

“पर मुझे तो ये खेल नहीं आता। इसे कैसे खेलते हैं आर्यन?” शलाका ने कहा।

“यह खेलना बहुत आसान है ... सबसे पहले हम कोई चिड़िया ले लेते हैं और उसे महसूस करते हैं।”

“चिड़िया?” शलाका को कुछ भी समझ में नहीं आया- “चिड़िया में महसूस करने वाला क्या होता है आर्यन?”

“रुको, मैं तुम्हें यह करके दिखाता हूं।” यह कहकर आर्यन ने इधर-उधर देखा।

आर्यन को कुछ दूरी पर एक नन्ही सी लाल रंग की चिड़िया उड़ती हुई दिखाई दी, आर्यन उस चिड़िया की ओर दौड़ा।

चिड़िया एक नन्हें बच्चे को अपनी ओर भागते देख, चीं-चीं कर तेजी से उड़ने लगी।

आर्यन ने कुछ देर तक चिड़िया को देखा और फिर वह चिड़िया के समान ही आवाज निकालता उस चिड़िया से अलग दिशा में दौड़ा।

चिड़िया उस नन्हें बालक को अपनी तरह बोलता देख, आर्यन के पीछे-पीछे उड़ने लगी।

अब नजारा उल्टा था, पहले चिड़िया के पीछे आर्यन था, पर अब आर्यन के पीछे चिड़िया। सच कहें तो शलाका को कुछ समझ में नहीं आ रहा था, पर आर्यन के पीछे चिड़िया का भागना उसे अच्छा लग रहा था।

अब आर्यन एक जगह पर रुक गया, और अपने दोनों हाथों को फैलाकर, फिर चिड़िया की तरह बोलने लगा।

कुछ ही देर में चिड़िया आकर आर्यन के हाथ पर बैठ गयी, आर्यन ने धीरे से चिड़िया के पंखों को सहलाया।

चिड़िया को आर्यन का सहलाना बहुत अच्छा लगा, वह फिर चीं-चीं कर मानो आर्यन को और ऐसा करने को कह रही थी।

आर्यन ने अब उसे कई बार सहलाया और फिर उसे लेकर शलाका के पास आ गया।

“अब अपना हाथ आगे करो शलाका।” आर्यन ने शलाका से कहा।

शलाका ने डरते-डरते अपना हाथ आगे कर दिया। आर्यन ने नन्हीं चिड़िया को शलाका के हाथों पर रख दिया।

नन्हीं चिड़िया शलाका के हाथ पर फुदक कर चीं-चीं कर रही थी।

कुछ ही देर में शलाका का डर खत्म हो गया और वह भी चिड़िया के साथ खेलने लगी।

शलाका चिड़िया से खेलने में इतना खो गई कि वह भूल गई कि आर्यन भी उसके साथ है।

“क्या अब तुम इस चिड़िया को महसूस कर पा रही हो शलाका?” आर्यन ने शलाका से पूछा।

“हां .... इस चिड़िया का धड़कता दिल, इसके खुशी से फुदकने का अहसास, इसका पंख पसार कर उड़ना, इसका मेरे हाथों पर चोंच मारना, मुझे सबकुछ महसूस हो रहा है आर्यन। सच कहूं तो यह बहुत अच्छी फीलिंग है, मैंने ऐसा पहले कभी नहीं महसूस किया।”

“यही प्रकृति है शलाका, अगर हम अपने आसपास की चीजों को दिल से महसूस करने लगें तो हम कभी स्वयं को अकेला महसूस नहीं करेंगे। अकेले होकर भी कभी हम दुखी नहीं होंगे।” आर्यन ने अब उस नन्हीं चिड़िया को चीं-चीं कर कुछ कहा और फिर उसे आसमान में उड़ा दिया।

“क्या तुम्हें पंछियों की भाषा आती है आर्यन?” शलाका ने आर्यन की आँखों में देखते हुए पूछा।

“नहीं!”

“तो फिर तुम उस चिड़िया से बात कैसे कर रहे थे?” शलाका ने हैरानी से कहा।

“किसने कहा कि मैं उससे बात कर रहा था। मैं तो बस उसे महसूस कर रहा था, पर महसूस करते-करते, वह मेरी भावनाओं को स्वयं समझ जा रही थी।” आर्यन ने मुस्कुराते हुए कहा।

तभी शलाका को एक फूल पर बैठी बहुत ही खूबसूरत तितली दिखाई दी, जो नीले और काले रंग की थी।

उसे देख शलाका ने उसे पकड़ लिया। वह तितली अब शलाका की पकड़ से छूटने का प्रयास करने लगी।

यह देख आर्यन ने शलाका का हाथ थाम लिया और बोला- “किसी को दुख पहुंचाकर हमें खुशी कभी नहीं मिल सकती शलाका।”

आर्यन के शब्द सुन शलाका ने अपनी चुटकी खोलकर उस तितली को उड़ा दिया।

यह देख आर्यन ने अपने हाथ पसार कर अपने मुंह से एक विचित्र सी ध्वनि निकाली, ऐसा करते ही पता नहीं कहां से सैकड़ों तितलियां आकर आर्यन के हाथ पर बैठ गईं।

“एक बार तितली को तुम छूकर के देख लो,

हर पंख उसका छाप दिल पर छोड़ जायेगा।”

आर्यन के शब्द समझ शलाका ने अपने हाथों की ओर देखा, जिस पर तितली का नीला और काला रंग अब भी लगा था।

तितली का रंग शलाका के हाथ पर एक छाप छोड़ गया था, पर आर्यन का रंग शलाका के दिल पर एक अमिट छाप छोड़ रहा था, वह अब महसूस कर रही थी, इस पूरे जहान को, नीले से आसमान को .... और कुछ अलग सा महसूस कराने वाले उस आर्यन को ....।”

शलाका अब वापस अपने कमरे में आ गई थी, पर उन कुछ पलों ने शलाका के दिमाग में एक हलचल सी मचा दी थी।

कुछ पलों तक शलाका यूं ही बैठी रही फिर उसने एक गहरी साँस भरी और वेदांत रहस्यम् के आगे के पन्नों को पलटने लगी।

धीरे-धीरे वेदालय की सभी घटनाएं निकल गईं। इसके बाद कुछ और चित्र नजर आये, पर वह शलाका के लिये जरुरी नहीं थे, उसे तो बस अब रहस्य जानना था, इसलिये शलाका ने जल्दी-जल्दी बहुत से पृष्ठ पलट दिये।

अब शलाका की नजर एक ऐसे पृष्ठ पर थी, जिसमें आर्यन शलाका के साथ उसके कमरे में था, पर बहुत याद करने के बाद भी शलाका को कोई ऐसी स्मृति याद नहीं आयी, यह सोच शलाका ने उस फोटो को भी छू लिया।

....

....

“शलाका-शलाका कहां हो तुम?” आर्यन, शलाका को आवाज देते हुए अपने घर में प्रविष्ठ हुआ- “देखो मैं वापस आ गया।”

आर्यन यह कहते हुए धड़धड़ाकर अपने कमरे में प्रविष्ठ हो गया।

कमरे में शलाका एक अलमारी के पास खड़ी थी, आर्यन ने उसे देखते ही गोद में उठा लिया और उसे पूरे कमरे में नचाने लगा- “आज मेरा सपना पूरा हो गया, आज मैंने वो हासिल कर लिया, जिसकी वजह से अब हम सदियों तक साथ रह सकते हैं। अब मुझे तुमसे कोई अलग नहीं कर सकता, यहां तक कि मौत भी नहीं।”

यह कहकर आर्यन ने शलाका को नीचे उतार दिया।

“तुमने .... तुमने ऐसा क्या प्राप्त कर लिया आर्यन? जिससे अब तुम सदियों तक मेरे साथ रहोगे।” शलाका ने अपना चेहरा आर्यन की ओर से दूसरी ओर घुमाते हुए कहा।

“ये लो कितनी भुलक्कड़ हो यार तुम। अरे मैंने तुम्हें जाने से पहले बताया तो था कि मैं, हम दोनों के लिये ब्रह्मकलश से अमृत लेने जा रहा हूं।” आर्यन ने कहा।

“तो क्या .... तो क्या तुम्हें अमृत प्राप्त हो गया?” शलाका के शब्द कांप रहे थे।

“ऐसा हो सकता है क्या कि मैं कोई चीज चाहूं और मुझे ना मिले?” आर्यन ने मुस्कुराते हुए कहा- “अरे हां यार ... मैंने अमृत की 2 बूंदें प्राप्त

कर लीं। अब हम शादीशुदा जिंदगी बिताते हुए भी अमरत्व प्राप्त कर सकते हैं।”

यह कहते हुए आर्यन ने 2 नन्हीं सुनहरी धातु की बनी शीशियां शलाका के सामने रख दीं।

“और अब हम कल सुबह नहाकर, पूजा करके इस अमृत को धारण करेंगे।” आर्यन के शब्दों में खुशी साफ झलक रही थी- “और ये तुम अपना मुंह घुमाकर क्या बात कर रही हो? मैं 3 महीने के बाद वापस आया हूं और तुम अजीब सी हरकतें कर रही हो।”

“क्या हम इसे अभी नहीं पी सकते?” शलाका ने पलटते हुए कहा- “सुबह का इंतजार करने से क्या फायदा?”

“नहीं हम इसे सुबह ही पीयेंगे।” आर्यन ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा।

“तो फिर हम अभी क्या करेंगे?” शलाका ने आर्यन की ओर देखते हुए पूछा।

“ये लो ये भी कोई पूछने की बात है?” आर्यन ने हंसकर शलाका को पकड़ लिया- “अभी हम सिर्फ और सिर्फ प्यार करेंगे।”

यह कहकर आर्यन ने वहां जल रही शमा को बुझा दिया।

कमरे में अब पूरा अंधेरा छा गया था।

इसी के साथ शलाका वापस वेदांत रहस्यम् के पास आ गई।

पर इस समय शलाका की आँखें, उसका चेहरा और यहां तक कि उसके बाल भी अग्नि के समान प्रतीत हो रहे थे क्योंकि जिस शलाका को वह अभी आर्यन के साथ देखकर आ रही थी, वह वो नहीं थी।

शलाका ने तुरंत अपनी भावानाओं को नियंत्रण में किया, नहीं तो उसकी अग्नि शक्ति से अभी वेदांत रहस्यम् भी जल जाती।

“काश .... काश इस वेदांत रहस्यम् से भूतकाल को बदला जा सकता।” शलाका ने गुर्राकर कहा और जल्दी से वेदांत रहस्यम् का अगला पन्ना खोल दिया।

....

“शलाका-शलाका, तुम अभी तक तैयार नहीं हुई क्या? जल्दी से बाहर मंदिर के पास वापस आ जाओ। पूजा का समय निकला जा रहा

है।” आर्यन ने शलाका को आवाज देते हुए कहा।

तभी शलाका कमरे से निकलकर मंदिर के पास पहुंच गई। इस समय वह बहुत खूबसूरत लग रही थी, पर उसके चेहरे पर उदासी सी छाई थी।

“क्या हुआ शलाका, आज तो इतनी खुशी का दिन है, तुम फिर भी क्यों उदास हो?” आर्यन ने शलाका से पूछा।

“नहीं ... नहीं ऐसी कोई बात नहीं ... मैं बिल्कुल ठीक हूं और खुश भी हूं .... और आज भी खुश नहीं होऊंगी, तो कब होऊंगी, आज तो मुझे वो मिला, जिसकी मैं हमेशा से हकदार थी।” शलाका ने कहा- “लाओ कहां है अमृत ...?”

यह कहकर शलाका ने सामने रखी एक शीशी को उठाकर बिना आर्यन से पूछे पी लिया।

आर्यन हक्का-बक्का सा शलाका को देख रहा था।

अचानक आर्यन का चेहरा गुस्से से धधकने लगा- “कौन हो तुम? तुम शलाका नहीं हो सकती।”

अचानक से आर्यन का बदला रुप देख शलाका डर गई- “यह तुम एकदम से क्या कहने लगे आर्यन? मैं शलाका हूं, तुम्हारी शलाका। तुम मुझ पर ऐसे अविश्वास क्यों प्रकट कर रहे हो?”

“क्योंकि मेरे और शलाका के बीच एक बार इस बात पर काफी विवाद हुआ था कि अगर अमृत मिले, तो उसे पहले कौन पीयेगा? वो चाहती थी कि पहले मैं पीयूं और मैं चाहता था कि पहले वो पिये? और इस विवाद में वह जीत गई थी, जिसकी वजह से यह तय हो चुका था कि पहले अमृत मैं पीयूंगा। ... पर तुम्हारे इस व्यवहार ने यह साबित कर दिया कि तुम शलाका हो ही नहीं सकती, वो इतनी महत्वाकांक्षी नहीं थी। .... अब तुम सीधी तरह से बता दो कि कौन हो तुम? नहीं तो तुम मेरी शक्तियों के बारे में तो जानती ही होगी।”

इतना कहते ही सुयश की दोनों मुठ्ठियां सूर्य सी रोशनी बिखेरने लगीं।

आर्यन अपने शब्दों को चबा-चबाकर कह रहा था। गुस्से की अधिकता से उसके होंठ फूल-पिचक रहे थे।

आर्यन का यह रुप देख, शलाका बनी आकृति बहुत ज्यादा घबरा गई- “मैं ... मैं आकृति हूं .... मैं शलाका बनकर यहां बस कुछ ढूंढने आयी

थी .... मैं ... मैं तुम्हारे साथ वो सब भी नहीं करना चाहती थी .... पर तुमने मुझे कुछ बोलने और समझाने का समय ही नहीं दिया .... मैं क्या करती? और आर्यन तुम तो जानते हो कि मैं तुम्हें पागलों के समान प्यार करती थी ... करती हूं ... और अमरत्व पीने के बाद सदियों तक करती रहूंगी। चाहे तुम मुझे प्यार करो या ना करो .... मुझे जो चाहिये था, मुझे मिल गया .... अब मैं कभी तुम्हारी जिंदगी में नहीं आऊंगी।"

"अब तुम मेरी जिंदगी में तब आओगी ना, जब तुम यहां से जिंदा वापस जाओगी।" यह कहकर आर्यन गुर्राते हुए आकृति पर झपटा, परंतु तभी एक रोशनी का गोला चमका और आकृति अपनी जगह से गायब हो गई।

आर्यन अब अपने सिर पर हाथ रखकर जोर-जोर से रो रहा था। उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि एक रात में उसकी पूरी जिंदगी बदल गई।

"मैं अब शलाका को क्या जवाब दूंगा? .... वो पूछेगी कि अमृत की 1 बूंद क्यों लाये, तो मैं उससे क्या कहूंगा और कहीं .... और कहीं शलाका को इस रात का पता चल गया तो वो मेरे बारे में क्या सोचेगी? कि प्रकृति को महसूस करने वाला आर्यन ... अपनी पत्नि को ही महसूस नहीं कर पाया। .... अब मैं क्या करुं? ..... नहीं-नहीं .... अब सब कुछ खत्म हो गया है ... अब मैं और शलाका एक साथ नहीं रह सकते ... और वैसे भी अमृत की एक बूंद से कोई एक ही सदियों तक जिंदा रह पायेगा और ब्रह्मदेव के अनुसार एक व्यक्ति दोबारा कभी जिंदगी में अमृत प्राप्त नहीं कर सकता .... मैं .... मैं शलाका के आने के पहले ही यहां से भाग जाता हूं ..... वो जान ही नहीं पायेगी कि मैं वापस भी आया था। ... हां ... हां यही ठीक रहेगा।"

तभी आर्यन के पीछे से आवाज उभरी- "अरे वाह आर्यन, तुम वापस आ गये। कितनी खुशी की बात है।"

यह आवाज असली शलाका की थी। शलाका पीछे से आकर आर्यन से लिपट गई।

उसे ऐसा करते देख आर्यन ने धीरे से दूसरी अमृत की शीशी चुपचाप छिपाकर अपनी जेब में डाल ली।

"आर्यन क्या तुमने अमृत प्राप्त कर लिया?" शलाका ने आर्यन के बालों को सहलाते हुए पूछा।

"नही, मैं उसे नहीं ला पाया।" आर्यन ने जवाब दिया।

“चलो अच्छा ही हुआ। अरे जो मजा साधारण इंसान की तरह से जिंदगी जीने में है, वह मजा अमरत्व में कहां।” शलाका ने खुश होते हुए कहा- “और वैसे भी अमरत्व ढूंढने में अगर तुम अपनी आधी जिंदगी लगा देते और अमरत्व भी ना मिलता, तो हम साधारण इंसान की जिंदगी भी नहीं जी पाते। इसलिये तुमने लौटकर बहुत अच्छा किया।”

आर्यन, आकृति और शलाका के बीच का अंतर बहुत स्पष्ट महसूस कर रहा था।

आर्यन ने धीरे से शलाका को स्वयं से अलग कर दिया और बेड पर जाकर बैठ गया। शलाका ने आर्यन के इस बदलाव को तुरंत महसूस कर लिया।

“क्या हुआ आर्यन, तुम मुझसे दूर क्यों भाग रहे हो?” शलाका ने ध्यान से आर्यन को देखते हुए कहा- “सब कुछ ठीक तो है ना आर्यन? पता नहीं क्यों अचानक मुझे बहुत घबराहट होने लगी है।”

“सबकुछ ठीक है शलाका। तुम परेशान मत हो, वो दरअसल अमृत प्राप्त करने के लिये 1 वर्ष तक, मुझे ब्रह्मदेव को खुश करने के लिये, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना पड़ेगा। इसीलिये मैंने तुम्हें हटाया और कोई खास बात नहीं है।” आर्यन ने साफ झूठ बोलते हुए कहा।

“चलो, फिर तो कोई परेशानी की बात नहीं है ... पर ये बताओ कि 1 वर्ष के बाद तो मुझे प्यार करोगे ना?” शलाका ने आर्यन की आँखों में झांकते हुए कहा।

पर आर्यन ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया और वहां से उठकर अंदर वाले कमरे की ओर बढ़ गया।

इसके बाद शलाका वापस वेदांत रहस्यम् किताब के पास लौट आयी, पर रोते-रोते उसकी आँखें अब सूज गईं थीं।

इस समय शलाका को ऐसा महसूस हो रहा था कि जैसे उसकी किसी ने जान ही निकाल ली हो।

शलाका ने जल्दी-जल्दी कुछ पन्ने पलटे और फिर एक पन्ने पर जाकर उसकी आँखें टिक गईं।

उस पन्ने पर आर्यन के हाथों में एक बालक था, यह देख शलाका ने तुरंत उस पन्ने पर मौजूद चित्र को छूकर, उस काल में चली गई।

....

“रुक जाओ आर्यन, मुझे मेरा बालक वापस कर दो, मैंने कहा था कि मैं तुम्हारे सामने अब कभी नहीं आऊंगी। मुझे बस मेरा बालक दे दो .... मैंने तुम्हारे साथ कुछ भी गलत नहीं किया ... सबकुछ अंजाने में हुआ है। मुझे बस एक बार प्रायश्चित का मौका दो ... मैं फिर से सब कुछ सहीं कर दूंगी।” शलाका बनी आकृति आर्यन के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ा रही थी।

पर आर्यन उस बालक को अपने हाथ में लिये आकृति को अपने पास नहीं आने दे रहा था। बालक की आँखों में बहुत तेज विद्यमान था।

“अब तुम कुछ भी ठीक नहीं कर सकती आकृति।” आर्यन ने गुर्राते हुए कहा- “तुमने मेरी शलाका को मुझसे दूर किया है, अब मैं तुम्हारे बच्चे को तुमसे दूर कर दूंगा। मैं इस बालक को ऐसी जगह छिपाऊंगा, जहां तुम कभी भी नहीं पहुंच सकती। यही तुम्हारी करनी का उचित दंड होगा।”

“नहीं-नहीं आर्यन, मुझे क्षमा कर दो ... मैंने जो कुछ भी किया, तुम्हारे प्रेम की खातिर किया, अब जब अंजाने में ही मुझे मेरे जीने का मकसद मिल गया है, तो तुम मुझे उससे ऐसे अलग मत करो। तुम जो कहोगे, मैं वह करने को तैयार हूं, बस मुझे मेरा बालक दे दो।” आकृति की आँखों से आँसू झर-झर बहते जा रहे थे, पर आर्यन के सिर पर तो जैसे कोई भूत सवार हो, वह आकृति की बात सुन ही नहीं रहा था।

शलाका ने भी आर्यन का यह रुप कभी नहीं देखा था, जो आर्यन एक तितली के दर्द को भी महसूस कर लेता था, वह आज इतना निष्ठुर कैसे बन गया कि उसे एक माँ की गिड़गिड़ाहट भी नजर नहीं आ रही थी।

“आकृति तुम मुझसे प्रेम करती हो ना .... इसी के लिये तुमने अमृत का भी पान किया था, पर जाओ आज से यही अमृत और यही जिंदगी तुम्हारे लिये अभिशाप बन जायेगी, तुम मरने की इच्छा तो करोगी, पर मर नहीं पाओगी और ये जान लो कि मैं इस बालक को मारुंगा नहीं, पर मैं इसे ऐसी जगह छिपाऊंगा कि तुम सदियों तक उस जगह को ढूंढ नहीं पाओगी।”

यह कहकर आर्यन आकृति को रोता छोड़कर उस बालक को ले बाहर निकल गया।

यह देख शलाका ने तुरंत वेदांत रहस्यम् का अगला पृष्ठ खोल दिया, उस पृष्ठ में आर्यन उसी नन्हें बालक को एक अष्टकोण में रखकर एक स्थान पर छिपा रहा था, यह देख शलाका तुरंत उस चित्र को छूकर उस समयकाल में पहुंच गई।

....

उस स्थान पर आर्यन एक लकड़ी के छोटे से मकान में था।

आर्यन ने उस मकान की जमीन के नीचे एक बड़ा सा गड्ढा खोद रखा था।

वह नन्हा बालक जिसके मुख पर सूर्य के समान तेज था, वह तो बेचारा जानता तक नहीं था कि उसके साथ क्या हो रहा है? वह एक अष्टकोण में बंद, अपनी भोली सी मुस्कान बिखेर रहा था। उसके अष्टकोण में अमरत्व की दूसरी शीशी भी रखी थी।

उसे देख पता नहीं क्यों अचानक शलाका का मातृत्व प्रेम उमड़ आया। एक पल को शलाका भूल गई कि वह आकृति का बेटा है, उसे तो वह बालक बस आर्यन की नन्हीं छवि सा नजर आ रहा था।

तभी आर्यन ने उस नन्हें बालक को अष्टकोण सहित उस गड्ढे में डाल दिया।

“मुझे क्षमा कर देना नन्हें बालक, मैं तुम्हें मार नहीं रहा, लेकिन मैं तुम्हें इस अष्टकोण में बंद कर इस गडढे में सदियों के लिये बंद कर रहा हूं। मेरे गड्ढे को बंद करते ही तुम सदियों के लिये इसमें सो जाओगे। इसके बाद जब भी कोई तुम्हें इस गड्ढे से निकालेगा, तो तुम आज की ही भांति, सूर्य के समान चमकते इस गड्ढे से बाहर आओगे। इन बीते वर्षों में इस अष्टकोण के कारण तुम पर आयु या समय का कोई प्रभाव नहीं होगा, मैं तुम्हारे साथ यह अमरत्व की शीशी भी रख रहा हूं, जब तुम बड़े हो जाना, तो इसे अपने पिता का आशीर्वाद मान पी लेना और सदा के लिये अमर हो जाना।”

यह कहकर आर्यन ने उस गड्ढे को मिट्टी से भरना शुरु कर दिया।

शलाका का मन कर रहा था कि वह उस गड्ढे को खोल, उस बालक को निकाल ले, पर वह वेदांत रहस्यम् के समय में कोई बदलाव नहीं कर सकती थी, इसलिये मन मसोस कर रह गई।

जैसे ही आर्यन ने उस गड्ढे को पूरा मिट्टी से भरा, शलाका वेदांत रहस्यम् के पन्ने से निकलकर वापस अपने कमरे में आ गई।

पर शलाका का मन अचानक से बहुत बेचैन होने लगा।

“यह मैंने क्या किया, कम से कम मुझे उस स्थान के बारे में पता तो लगाना चाहिये, हो सकता है कि 5000 वर्ष के बाद भी वह बालक अभी

भी वहीं हो?”

मन में यह विचार आते ही शलाका ने उस चित्र को दोबारा से छुआ और उस समयकाल में वापस चली गई, पर इस बार शलाका उस कमरे में नहीं रुकी, जहां आर्यन उस बालक को गड्ढे में दबा रहा था, वह तुरंत उस घर से बाहर आ गई।

शलाका अब तेजी से आसपास के क्षेत्र में लिखे किसी भी बोर्ड को पढ़ने की कोशिश कर रही थी।

तभी शलाका को मंदिर के घंटे की ध्वनि सुनाई दी। शलाका तुरंत भागकर उस दिशा में पहुंच गई।

वह मंदिर उस लकड़ी के घर से मात्र 100 कदम ही दूर था।

वह मंदिर काफी भव्य दिख रहा था। शलाका ने मंदिर के सामने जाकर देखा, वह एक विशाल शिव मंदिर था, जिसके बाहर संस्कृत भाषा में एक बोर्ड लगा था- “महाकालेश्वर मंडपम्, उज्जैनी, अवन्ती राज्य।”

यह देख शलाका ने बाहर से महादेव को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और वापस उस लकड़ी के घर की ओर भागी।

शलाका ने अब घर से मंदिर के कोण और दूरी को ध्यान से देखा, तभी उसका शरीर वापस वेदांत रहस्यम् से निकलकर बाहर आ गया।

पर शलाका के चेहरे पर इस बार संतोष के चिंह साफ नजर आ रहे थे।

“यहां तक की कहानी तो समझ में आ गयी। पर अब ये देखना बाकी रह गया है कि आर्यन ने मृत्यु का वरण क्यों और कैसे किया?”

यह सोचकर शलाका ने वेदांत रहस्यम् का अगला पन्ना पलट दिया।

अगले पन्ने पर आर्यन वेदांत रहस्यम् को हाथ में पकड़े अराका द्वीप पर स्थित शलाका मंदिर में खड़ा था।

यह देख शलाका ने उस चित्र को भी छू लिया। अब वह उस समय में आ गयी।

इस समय आर्यन के हाथ में वेदांत रहस्यम् थी और वह शलाका मंदिर के एक प्रांगण में बैठा हुआ था।

“आज 3 महीने बीत गये, पर शलाका का कहीं पता नहीं चला, शायद वह भी मुझे छोड़कर कहीं चली गई है .... अब मेरे जीने का कोई

मतलब और मकसद बचा नहीं है, इसलिये मुझे अपने प्राण अब त्यागने ही होंगे, पर महादेव के वरदान स्वरुप मुझे एक बार पूरी जिंदगी में भविष्य देखने की अनुमति है, तो हे महादेव, मुझे भविष्य को देखने की दिव्य दृष्टि प्रदान करें, मैं जानना चाहता हूं कि क्या किसी भी जन्म में मैं शलाका से मिल पाऊंगा या नहीं।"

आर्यन के इतना कहते ही आसमान से एक तीव्र रोशनी आकर आर्यन पर गिरी। वह रोशनी मात्र 5 सेकेण्ड तक ही आर्यन पर रही।

उस रोशनी के हटते ही आर्यन के चेहरे पर अब संतुष्टि के भाव दिख रहे थे।

अचानक वह ऊर्जा रुप में खड़ी शलाका के पास आकर खड़ा हो गया और बोला- "मुझे पता था कि तुम एक दिन यह किताब अवश्य ढूंढकर मेरे पास आओगी। अब तक तुमने सब कुछ जान लिया होगा अतः मैं उम्मीद करता हूं कि तुम अपने आर्यन को अब क्षमा कर दोगी। मैंने महादेव के वरदान स्वरुप इन 5 सेकेण्ड में पूरी दुनिया के 5,000 वर्षों का भविष्य देख लिया है। मैं तुमसे फिर मिलूंगा शलाका .... आर्यन के नाम से ना सही, पर मेरी पहचान वही होगी। हम फिर से एक नयी दुनिया शुरु करेंगे और इस बार मुझे तुमसे कोई अलग नहीं कर पायेगा। अब मैं अपनी सूर्य शक्ति को इस मंदिर में स्थित तुम्हारी मूर्ति में स्थानांतरित करता हूं। अगर मैं किसी भी जन्म में इस स्थान पर वापस आया, तो तुम मुझे अपने इस जन्म के अहसास के साथ, मेरी सूर्य शक्ति को मुझे वापस कर देना। अब मैं अपनी इच्छा से मृत्यु का वरण करने जा रहा हूं। मेरी लिखी यह पुस्तक वेदांत रहस्यम् मेरे साथ है, यह जब तक मेरे सीने से चिपकी रहेगी, मैं नया जन्म नहीं लूंगा, जिस दिन कोई इस किताब को मेरे शरीर से अलग करेगा, उसी दिन इस पृथ्वी पर कहीं ना कहीं मैं फिर से जन्म लूंगा। ...... अलविदा शलाका ..... तुम मरते दम तक मेरी यादों में थी और रहोगी ....।"

यह कहकर आर्यन ने वहीं शलाका की मूर्ति के सामने अपने प्राण त्याग दिये। आर्यन के शरीर से सूर्य शक्ति निकलकर, शलाका की मूर्ति में प्रवेश कर गई।

वेदांत रहस्यम् को अभी भी आर्यन ने किसी रहस्य की भांति अपने सीने से चिपका रखा था।

इसी के साथ शलाका एक बार फिर वेदांत रहस्यम् के पास वापस आ गई।

शलाका की नजर अब उस पुस्तक के आखिरी पेज पर गई, जिस पर आकृति की आँखें बनी थीं, जो शलाका के भेष में एक धोके के कहानी कह रहीं थीं।

शलाका ने अब वेदांत रहस्यम् को बंद कर दिया। आज उसके सामने लगभग सभी राज खुल गये थे।

अब वह घंटों बैठकर रोती रही।

इस समय शलाका को यही नहीं समझ में आ रहा था कि वह गलती किसकी माने, आकृति की जिसने आर्यन को धोखा दिया, आर्यन की .... जिसने एक माँ को उसके बालक से जुदा कर दिया या फिर स्वयं की .... जो उस समय आर्यन को बिना बताए, अपनी माँ का पार्थिव शरीर ले, अपने भाइयों के साथ एरियन आकाशगंगा चली गई थी, जिसकी वजह से आर्यन ने मृत्यु का वरण किया।

शलाका अपने ही ख्यालों के झंझावात में उलझी नजर आ रही थी .... कभी उसे सब गलत दिख रहे थे, तो कभी सब सही।

काफी देर तक सोचने के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुंची, कि किसी का नहीं बस समय का दोष था, पर इस समय ने एक ऐसे बालक को भी दंड दिया था, जिसे उस समय दुनिया की किसी चीज का मतलब ही नहीं पता था।

अतः अब शलाका ने सोच लिया था कि यदि वह बालक जिंदा है, तो वह उसे प्राप्त करके ही रहेगी, चाहे इसके लिये उसे ब्रह्मांड का कोना-कोना ही क्यों ना छानना पड़े।

◆ ◆ ◆

चैपटर-4

ऑक्टोपस की आँख

तिलिस्मा 2.12

सुयश के साथ अब सभी ऑक्टोपस के क्षेत्र की ओर बढ़ गये।

ऑक्टोपस वाले क्षेत्र की भी जमीन वैसे ही संगमरमर के पत्थरों से बनी थी, जैसे पत्थर नेवले के क्षेत्र में लगे थे।

ऑक्टोपस की मूर्ति एक वर्गाकार पत्थर पर रखी थी।

उधर जैसे ही सभी संगमरमर वाले गोल क्षेत्र में पहुंचे, अचानक जमीन के नीचे से, उस गोल क्षेत्र की परिधि में, संगमरमर के पत्थरों की दीवार निकलने लगी।

सबके देखते ही देखते वह पूरा गोल क्षेत्र दीवारों की वजह से बंद हो गया।

कहीं भी कोई भी दरवाजा दिखाई नहीं दे रहा था।

“वहां करंट फैला दिया था और यहां पूरा कमरा ही बंद कर दिया।” ऐलेक्स ने कहा- “ये कैश्वर भी ना ... भगवान बनने के चक्कर में हमें भगवान के पास भेज देगा।”

सभी ऐलेक्स की बात सुनकर मुस्कुरा दिये।

तभी शैफाली की निगाह नीचे जमीन पर लगे, एक संगमरमर के पत्थर के टुकड़े की ओर गयी, वह पत्थर का टुकड़ा थोड़ा सा जमीन में दबा था।

“कैप्टेन अंकल, यह पत्थर का टुकड़ा थोड़ा सा जमीन में दबा है, यह एक साधारण बात है कि इसमें कोई रहस्य है?” शैफाली ने सुयश को पत्थर का वह टुकड़ा दिखाते हुए कहा।

अब सुयश भी झुककर उस पत्थर के टुकड़े को देखने लगा।

सुयश ने उस टुकड़े को अंदर की ओर दबा कर भी देखा, पर कुछ नहीं हुआ। यह देख सुयश उसे एक साधारण घटना समझ उठकर खड़ा हो गया।

दीवारें खड़ी होने के बाद अब वह स्थान एक मंदिर के समान लगने लगा था।

लेकिन उस मंदिर में ना तो कोई खिड़की थी और ना ही कोई दरवाजा।

अब सभी धीरे-धीरे चलते हुए ऑक्टोपस के पास पहुंच गये।

ऑक्टोपस की नेम प्लेट के नीचे यहां भी 2 पंक्तियां लिखी थीं-

"ऑक्टोपस की आँख से निकली, विचित्र अश्रुधारा,
आँखों का यह भ्रम है, या आँखों का खेल सारा।"

"यह कैश्वर तो कोई कविताकार लगता है, जहां देखो कविताएं लिख रखीं हैं।" ऐलेक्स ने हंसते हुए कहा।

"अरे भला मानो कि कविताएं लिख रखीं है। कम से कम इन्हीं कविताओं को पढ़कर कुछ तो समझ में आता है कि करना क्या है?" क्रिस्टी ने ऐलेक्स को देखते हुए कहा- "सोचो अगर ये कविताएं न होतीं तो समझते कैसे? वैसे कैप्टेन आपको इस कविता को पढ़कर क्या लगता है?"

"मुझे तो बस इतना समझ में आ रहा है कि इस ऑक्टोपस की आँखों में कुछ तो गड़बड़ है।" सुयश ने ऑक्टोपस की आँखों को देखते हुए कहा।

"कैप्टेन अंकल यह ऑक्टोपस पूरा पत्थर का है, पर मुझे इसकी आँख असली लग रही है।" शैफाली ने कहा- "मैंने अभी उसे हिलते हुए देखा था।"

शैफाली की बात सुन सभी ध्यान से ऑक्टोपस की आँख को देखने लगे। तभी ऑक्टोपस के आँखों की पुतली हिली।

"कविता की पंक्तियों में अश्रुधारा की बात हुई है, मुझे लगता है कि ऑक्टोपस के रोने से कोई नया दरवाजा खुलेगा।" तौफीक ने कहा।

"पर ये ऑक्टोपस रोएगा कैसे?" जेनिथ ने कहा- "कैप्टेन क्यों ना यहां कि भी नेम प्लेट हटाकर देखें। हो सकता है कि यहां भी कुछ ना कुछ उसके पीछे छिपा हो?"

“बहुत ही मुश्किल है जेनिथ, कैश्वर कभी भी तिलिस्मा के 2 द्वार एक जैसे नहीं रखेगा।” सुयश ने कहा- “पर फिर भी अगर तुम देखना चाहती हो तो मैं नेम प्लेट हटाकर देख लेता हूं।”

यह कहकर सुयश ने फिर से तौफीक से चाकू लिया और ऑक्टोपस के पत्थर की नेम प्लेट भी हटा दी।

पर सुयश का सोचना गलत था, यहां भी नेम प्लेट के पीछे एक छेद था, यह देख सुयश ने उसमें झांककर देखा, पर अंदर इतना अंधेरा था कि कुछ नजर नहीं आया।

“कैप्टेन अंकल अंदर हाथ मत डालियेगा, हो सकता है कि यहां भी कोई विषैला जीव बैठा हो।” शैफाली ने सुयश को टोकते हुए कहा।

पर सुयश ने कुछ देर तक इंतजार करने के बाद उस छेद में हाथ डाल ही दिया।

सुयश का हाथ किसी गोल चीज से टकराया, सुयश ने उस चीज को बाहर निकाल लिया।

“यह तो एक छोटी सी गेंद है, जिसमें हवा भरी हुई है।” क्रिस्टी ने आश्चर्य से देखते हुए कहा- “अब इस गेंद का क्या मतलब है? मुझे तो यह बिल्कुल साधारण गेंद लग रही है।”

“लगता है कि कैश्वर का दिमाग खराब हो गया है, इतनी छोटी सी चीज को कोई भला ऐसे छिपाकर रखता है क्या?” ऐलेक्स ने गेंद को हाथ में लेते हुए कहा।

तभी गेंद को देख ऑक्टोपस की आँखों में बहुत तेज हरकत होने लगी, पर यह बात शैफाली की नजरों से छिपी ना रह सकी।

“ऐलेक्स भैया, लगता है कि यह गेंद इस ऑक्टोपस की ही है, उसकी आँखों को देखिये, वह आपके हाथों में गेंद देखकर एकाएक बहुत परेशान सा लगने लगा है।” शैफाली ने ऐलेक्स से कहा।

यह देख ऐलेक्स को जाने क्या सूझा, उसने सुयश के हाथ में थमा चाकू भी ले लिया और उस चाकू को हाथ में लहराता हुआ ऑक्टोपस की ओर देखने लगा।

ऑक्टोपस की बेचैनी अब और बढ़ गई थी।

ऐलेक्स ने ऑक्टोपस की बेचैनी को महसूस कर लिया और तेज-तेज आवाज में बोला- “अगर मैं इस चाकू से इस गेंद को फोड़ दूं तो कैसा

रहेगा।”

ऐसा लग रहा था कि वह ऑक्टोपस ऐलेक्स के शब्दों को भली-भांति समझ रहा है, क्योंकि अब उसकी आँखों में डर भी दिखने लगा।

सुयश को भी यह सब कुछ विचित्र सा लग रहा था, इसलिये उसने भी ऐलेक्स से कुछ नहीं कहा।

तभी ऐलेक्स ने सच में चाकू के वार से उस गेंद को फोड़ दिया।

गेंद के फूटते ही वह ऑक्टोपस किसी नन्हें बच्चे की तरह रोने लगा।

सुयश के चेहरे पर यह देखकर मुस्कान आ गई। वह ऐलेक्स की बुद्धिमानी से खुश हो गया, होता भी क्यों ना ... आखिर ऐलेक्स की वजह से उस ऑक्टोपस की अश्रुधारा बह निकली थी।

सुयश सहित अब सभी की निगाहें ऑक्टोपस की आँखों से निकले आँसुओं पर थीं।

ऑक्टोपस की आँखों से निकले आँसू बहते हुए उसी पत्थर के पास जाकर एकत्रित होने लगे, जो थोड़ा सा जमीन में दबा हुआ था।

यह देख सुयश की आँखें सोचने के अंदाज में सिकुड़ गईं। अब वह पक्का समझ गया कि इस दबे हुए पत्थर में अवश्य ही कोई ना कोई राज छिपा है।

जैसे ही ऑक्टोपस के आँसुओं ने उस पूरे पत्थर को घेरा, वह पत्थर थोड़ा और नीचे दब गया।

इसी के साथ ऑक्टोपस की आँखों से निकलने वाले आँसुओं की गति बढ़ गई।

अब उसकी दोनों आँखों से किसी नल की भांति तेज धार निकलने लगी और उन आँसुओं से मंदिर के अंदर पानी भरने लगा।

“अब समझे आँसुओं में क्या मुसीबत थी।” सुयश ने कहा- “अब हमें तुरंत इस मंदिर से बचकर बाहर निकलने का रास्ता ढूंढना होगा, नहीं तो हम इस ऑक्टोपस के आँसुओं में ही डूब कर मर जायेंगे।”

“कैप्टेन अंकल, अब इस कविता की पहली पंक्तियों का अर्थ तो पूरा हो गया, पर मुझे लगता है कि इसकी दूसरी पंक्तियों में अवश्य ही बचाव का कोई उपाय छिपा है।” शैफाली ने सुयश को देखते हुए कहा- “और

अगर दूसरी पंक्तियों पर ध्यान दें, तो इसका मतलब है कि ऑक्टोपस की आँख में ही हमारे बचाव का उपाय भी छिपा है।”

सभी एक बार फिर ऑक्टोपस की आँख को ध्यान से देखने लगे, पर ऐलेक्स की निगाह अभी भी उस दबे हुए पत्थर की ओर थी।

ऐलेक्स ने बैठकर उस पत्थर को और दबाने की कोशिश की, पर कुछ नहीं हुआ, तभी ऐलेक्स की निगाह उस पत्थर पर पड़ रही हल्की गुलाबी रंग की रोशनी पर पड़ी, जो कि पहले तो नजर नहीं आ रही थी, पर अब उस पत्थर पर 6 इंच पानी भर जाने की वजह से ऐलेक्स को साफ दिखाई दे रही थी।

ऐलक्स ने उस गुलाबी रोशनी का पीछा करके, उसके स्रोत को जानने की कोशिश की।

वह गुलाबी रोशनी ऑक्टोपस के माथे से आ रही थी।

पानी अब सभी के पंजों के ऊपर तक आ गया था।

ऐलेक्स चलता हुआ ऑक्टोपस के चेहरे तक पहुंच गया, उसकी तेज निगाहें ऑक्टोपस के माथे से निकल रही गुलाबी किरणों पर थीं।

ऐलेक्स ने धीरे से उस ऑक्टोपस के माथे को छुआ, पर माथे के छूते ही वह ऑक्टोपस जिंदा हो गया और उसने अपने 2 हाथों से ऐलेक्स को जोर का धक्का दिया।

ऐलेक्स उस धक्के की वजह से दूर छिटक कर गिर गया।

कोई भी ऑक्टोपस के जिंदा होने का कारण नहीं जान पाया, वह सभी तो बस गिरे पड़े ऐलेक्स को देख रहे थे।

ऑक्टोपस अभी भी पत्थर पर ही बैठा था, पर अब उसके रोने की स्पीड और तेज हो गई थी।

“कैप्टेन उस दबे हुए पत्थर पर एक गुलाबी रोशनी पड़ रही है, जो कि इस ऑक्टोपस के माथे पर मौजूद एक तीसरी आँख से निकल रही है। वह तीसरी आँख इस ऑक्टोपस की त्वचा के अंदर है, इसलिये हमें दिखाई नहीं दे रही है। मैंने उसी को देखने के लिये जैसे ही इस ऑक्टोपस को छुआ, यह स्वतः ही जिंदा हो गया। मुझे लगता है कि उसी तीसरी आँख के द्वारा ही बाहर निकलने का मार्ग खुलेगा।” ऐलेक्स ने तेज आवाज में सुयश को आगाह करते हुए कहा।

तब तक पानी सभी के घुटनों तक पहुंच गया था।

ऐलेक्स की बात सुनकर सुयश उस ऑक्टोपस की ओर तेजी से बढ़ा, पर सुयश को अपनी ओर बढ़ते देखकर उस ऑक्टोपस ने अपने 8 हाथों को चक्र की तरह से चलाना शुरु कर दिया।

अब सुयश के लिये उस ऑक्टोपस के पास पहुंचना बहुत मुश्किल हो गया।

यह देख क्रिस्टी आगे बढ़ी और क्रिस्टी ने ऑक्टोपस के हाथों को पकड़ने की कोशिश की, पर ऑक्टोपस के हाथों की गति बहुत तेज थी, क्रिस्टी भी एक तेज झटके से दूर पानी में जा गिरी।

पानी अब धीरे-धीरे ऑक्टोपस की मूर्ति के पत्थर के ऊपर तक पहुंच गया था और सभी कमर तक पानी में डूब गये।

अब सभी एक साथ उस ऑक्टोपस की ओर बढ़े, पर यह भी व्यर्थ ऑक्टोपस के हाथों ने सबको ही दूर उछाल दिया।

“कैप्टेन अंकल हमें जल्दी ही कुछ नया सोचना होगा, नहीं तो यह ऑक्टोपस अपने आँसुओं से हम सभी को डुबाकर मार देगा।” शैफाली ने कहा।

तौफीक ने अब अपनी जेब से चाकू निकालकर उस ऑक्टोपस के माथे की ओर निशाना लगाकर मार दिया।

निशाना बिल्कुल सही था, चाकू ऑक्टोपस के माथे पर जाकर घुस गया।

ऑक्टोपस के माथे की त्वचा कट गई, पर ऑक्टोपस ने अपने एक हाथ से चाकू निकालकर दूर फेंक दिया। अब वह और जोर से रोने लगा।

मगर अब ऑक्टोपस की तीसरी आँख बिल्कुल साफ नजर आने लगी थी।

पानी अब कुछ लोगों के कंधों तक आ गया था।

तभी क्रिस्टी के दिमाग में एक आइडिया आया, उसने पानी के नीचे एक डुबकी लगाई और नीचे ही नीचे ऑक्टोपस तक पहुंच गई।

क्रिस्टी पानी के नीचे से थोड़ी देर ऑक्टोपस के हाथ देखती रही और फिर उसने फुर्ति से उसके 2 हाथों को पकड़ लिया।

ऐसा करते ही ऑक्टोपस के हाथ चलना बंद हो गये। यह देख क्रिस्टी ने पानी से अपना सिर निकाला और चीखकर सुयश से कहा- “कैप्टेन मैंने

इसके हाथों को पकड़ लिया है, अब आप जल्दी से इसके माथे वाली आँख को निकाल लीजिये।”

क्रिस्टी के इतना बोलते ही सुयश तेजी से ऑक्टोपस की ओर झपटा और उसके माथे में अपनी उंगलियां घुसा कर ऑक्टोपस की उस तीसरी आँख को बाहर निकाल लिया।

जैसे ही सुयश ने ऑक्टोपस की आँख निकाली, क्रिस्टी ने उस ऑक्टोपस को छोड़ दिया।

वह ऑक्टोपस अब रोता हुआ छोटा होने लगा और इससे पहले कि कोई कुछ समझता, वह ऑक्टोपस नेम प्लेट वाले छेद में घुसकर कहीं गायब हो गया।

पानी कुछ लोगों की गर्दन के ऊपर तक आ गया था, पर अब ऑक्टोपस के जाते ही पानी भी उस छेद से बाहर निकलने लगा।

कुछ ही देर में काफी पानी उस छेद से बाहर निकल गया।

“लगता है वह ऑक्टोपस का बच्चा अपने पापा से हमारी शिकायत करने गया है?” ऐलेक्स ने भोला सा मुंह बनाते हुए कहा।

“उसकी छोड़ो, वह तो चला गया, पर हमारा यह द्वार अभी भी पार नहीं हुआ है, हमें पहले यहां से निकलने के बारे में सोचना चाहिये।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स का कान पकड़ते हुए कहा।

सुयश के हाथ में अभी भी ऑक्टोपस की तीसरी आँख थी, उसने उस आँख को उस दबे हुए पत्थर से टच कराके देखा, पर कुछ भी नहीं हुआ। यह देख सुयश ने जोर से उस आँख को उस दबे हुए पत्थर पर मार दिया।

आँख के मारते ही एक जोर की आवाज हुई और वह पूरा संगमरमर का गोल क्षेत्र तेजी से किसी लिफ्ट के समान नीचे की ओर जाने लगा।

सभी पहले तो लड़खड़ा गये, पर जल्दी ही वह सभी संभल गये।

सुयश ने उस ऑक्टोपस की आँख को जमीन से उठाकर अपनी जेब में डाल लिया

“मुझे लग रहा है कि ये द्वार पार हो गया और अब हम अगले द्वार की ओर जा रहे हैं।” जेनिथ ने कहा।

“भगवान करे कि ऐसा ही हो।” क्रिस्टी ने ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा- “जितनी जल्दी यह तिलिस्मा पार हो, उतनी जल्दी हमें घर जाने को मिलेगा।”

लेकिन इससे पहले कि कोई और कुछ कह पाता, वह लिफ्टनुमा जमीन एक स्थान पर रुक गई।

सभी को सामने की ओर एक सुरंग सी दिखाई दी।

सभी उस सुरंग के रास्ते से दूसरी ओर चल दिये। वह रास्ता एक बड़ी सी जगह में जाकर खुला।

उस जगह को देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कोई सुंदर सी घाटी है। घाटी के बीचोबीच में एक बहुत ही सुंदर गोल सरोवर बना था।

उस सरोवर से कुछ दूरी पर एक कंकाल खड़ा था, जिसका सिर नहीं था, पर उसके एक हाथ में एक सुनहरी धातु की दुधारी तलवार थी।

कंकाल के पीछे की दीवार पर कंकाल के ही कुछ चित्र बने थे, जिसमें उस कंकाल को एक विशाल ऑक्टोपस से लड़ते दिखाया गया था।

“मुझे नहीं लगता कि यह द्वार अभी पार हुआ है।” सुयश ने दीवार पर बने हुए चित्र को देखते हुए कहा।

अभी सुयश ने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी, कि तभी सरोवर से एक विशाल 50 फुट ऊंचा ऑक्टोपस निकलकर पानी के बाहर आ गया।

“अरे बाप रे, लगता है मैंने सच कहा था, उस छोटे ऑक्टोपस ने अपने पापा को सब कुछ बता दिया। अब हमारी खैर नहीं।” ऐलेक्स ने चिल्लाते हुए कहा।

पर इस समय किसी का भी ध्यान ऐलेक्स की बात पर नहीं गया, अब सभी सिर्फ उस ऑक्टोपस को ही देख रहे थे।

ऑक्टोपस अपनी लाल-लाल आँखों से सभी को घूर रहा था।

“कैप्टेन अंकल, दीवार पर बने चित्र साफ बता रहे हैं कि यह कंकाल ही अब हमें इस ऑक्टोपस से मुक्ति दिला सकता है, पर मुझे लगता है कि पहले आपको अपने गले से उतारकर यह खोपड़ी इस कंकाल के सिर पर जोड़नी होगी। शायद इसी लिये यह खोपड़ी अभी तक आपके पास थी।” शैफाली ने जोर से चीखकर सुयश से कहा।

सुयश भी दीवार पर बने चित्रों को देख, बिल्कुल शैफाली की तरह ही सोच रहा था, उसने बिना देर किये, अपने गले में टंगी उस खोपड़ी की माला से धागे को अलग किया और उसे कंकाल के सिर पर फिट कर दिया।

खोपड़ी कंकाल के सिर में फिट तो हो गई, पर वह कंकाल अभी भी जिंदा नहीं हुआ।

यह देख सुयश सोच में पड़ गया।

तभी ऑक्टोपस ने सब पर हमला करना शुरु कर दिया।

"सभी लोग ऑक्टोपस से जितनी देर तक बच सकते हो, बचने की कोशिश करो, मैं जब तक कंकाल को जिंदा करने के बारे में सोचता हूं।" सुयश ने सभी से चीखकर कहा और स्वयं ऑक्टोपस की पकड़ से दूर भागा।

"कैप्टेन, आप उस ऑक्टोपस की आँख को कंकाल के सिर में लगा दीजिये, वह जिंदा हो जायेगा।" ऐलेक्स ने चीखकर कहा- "क्योंकि उस कंकाल के सिर से भी वैसी ही गुलाबी रोशनी निकल रही है, जैसी उस ऑक्टोपस के माथे से निकल रही थी और इस कंकाल के माथे पर, उस आँख के बराबर की जगह भी खाली है।"

ऐलेक्स की बात सुनकर सुयश ने कंकाल के माथे की ओर ध्यान से देखा।

ऐलेक्स सही कह रहा था, कंकाल के माथे में बिल्कुल उतनी ही जगह थी, जितनी बड़ी वह ऑक्टोपस की आँख थी।

सुयश ने बिना देर किये अपनी जेब से निकालकर उस ऑक्टोपस की आँख को कंकाल के माथे में फिट कर दिया।

माथे में तीसरी आँख के फिट होते ही वह कंकाल जीवित होकर ऑक्टोपस पर टूट पड़ा।

अब सभी दूर हटकर इस युद्ध को देख रहे थे।

थोड़ी ही देर में एक-एक कर कंकाल ने ऑक्टोपस के हाथ काटने शुरु कर दिये। बामुश्किल 5 मिनट में ही कंकाल ने ऑक्टोपस को मार दिया।

ऑक्टोपस के मरते ही रोशनी का एक तेज झमाका हुआ और सबकी आँख बंद हो गई।

जब सबकी आँखें खुलीं तो उनके सामने एक दरवाजा था, जिस पर 2.2 लिखा था, सभी उस दरवाजे से अंदर की ओर प्रवेश कर गए।

◆ ◆ ◆

एण्ड्रोनिका

आज से 3 दिन पहले ....

13.01.02, रविवार, 17:00, वाशिंगटन डी.सी से कुछ दूर, अटलांटिक महासागर

शाम ढलने वाली थी, समुद्र की लहरों में उछाल बढ़ता जा रहा था।

इन्हीं लहरों के बीच 2 साये समुद्र में तेजी से तैरते किसी दिशा की ओर बढ़ रहे थे।

यह दोनों साये और कोई नहीं बल्कि धरा और मयूर थे, जो कि आसमान से उल्का पिंड को गिरता देख वेगा और वीनस को छोड़ समुद्र की ओर आ गये थे।

“क्या तुम्हारा फैसला इस समय सही है धरा?” मयूर ने धरा को देखते हुए कहा- “क्या हमारा इस समय उल्का पिंड देखने जाना ठीक है? वैसे भी समुद्र का क्षेत्र हमारा नहीं है और तुमने कौस्तुभ और धनुषा को खबर भी कर दी है, और ... और अभी तो शाम भी ढलने वाली है। एक बार फिर सोच लो धरा, क्योंकि पानी में हमारी शक्तियां काम नहीं करती हैं। अगर हम किसी मुसीबत में पड़ गये तो?”

धरा और मयूर पानी में मानसिक तरंगों के द्वारा बात कर रहे थे।

“क्या मयूर, तुम भी इस समय शाम, समुद्र और क्षेत्र की बात करने लगे। क्या तुम्हें पता भी है? कि कुछ ही देर में अमेरिकन नेवी इस स्थान को चारो ओर से घेर लेगी, फिर उन सबके बीच किसी का भी छिपकर अंदर घुस पाना मुश्किल हो जायेगा। इसीलिये मैं कौस्तुभ और धनुषा के आने का इंतजार नहीं कर सकती। हमें तुरंत उस उल्का पिंड का निरीक्षण करना ही होगा। हमें भी तो पता चले कि आखिर ऐसा कौन सा उल्का पिंड है? जो बिना किसी पूर्व निर्धारित सूचना के हमारे वैज्ञानिकों की आँखों में धूल झोंक कर, पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में आ गया। अवश्य ही इसमें कोई ना कोई रहस्य छिपा है? और पृथ्वी के रक्षक होने के नाते ये हमारा कर्तव्य बनता है कि हम क्षेत्र और दायरे को छोड़कर, एक दूसरे की मदद करें।”

“अच्छा ठीक है ... ठीक है यार, ये भाषण मत सुनाओ, अब मैं तुम्हारे साथ चल तो रहा हूं।” मयूर ने हथियार डालते हुए कहा- “तुम्हीं सही हो, मैं गलत सोच रहा था।”

उल्का पिंड को आसमान से गिरे अभी ज्यादा देर नहीं हुआ था।

धरा और मयूर पानी के अंदर ही अंदर, तेजी से उस दिशा की ओर तैर रहे थे।

तभी धरा को बहुत से समुद्री जीव-जंतु उल्का पिंड की दिशा से भाग कर आते हुए दिखाई दिये, इनमें छोटे और बड़े दोनों ही प्रकार के जीव थे।

"ये सारे जीव-जंतु उस दिशा से भागकर क्यों आ रहें हैं?" धरा ने कहा- "और इनके चेहरे पर भय भी दिख रहा है।"

"अब तुमने उनके चेहरे के भाव इतने गहरे पानी में कैसे पढ़ लिये, जरा मुझे भी बताओगी?" मयूर ने धरा से पूछा।

"अरे बुद्धू मैंने उनके चेहरे के भाव नहीं पढ़े, पर तुमने ये नहीं देखा कि उन सभी जीवों में छोटे-बड़े हर प्रकार के जीव थे और बड़े जीव हमेशा से छोटे जीवों को खा जाते है। अब अगर सभी साथ भाग रहे हैं और कोई एक-दूसरे पर हमला नहीं कर रहा, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इन सबको एक समान ही कोई बड़ा खतरा नजर आया है, जिसकी वजह से यह शिकार करना छोड़ अपनी जान बचाने की सोच रहे हैं। ये तो कॉमन सेंस की बात है।" धरा ने मुस्कुराकर कहा।

"कॉमन सेंस ... हुंह .... अपना कॉमन सेंस अपने ही पास रखो।" मयूर ने धरा को चिढ़ाते हुए कहा- "मैं तो पहले ही समझ गया था, मैं तुम्हें चेक कर रहा था, कि तुम्हें समझ में आया कि नहीं?"

"वाह मयूर जी .... आप कितने महान हैं।" धरा ने कटाक्ष करते हुए कहा- "अब जरा रास्ते पर भी ध्यान दीजिये, कहीं ऐसा ना हो कि कोई बड़ी मछली आपको भी गपक कर चली जाये?"

मयूर ने मुस्कुराकर धरा की ओर देखा और फिर सामने देखकर तैरने लगा।

लगभग आधे घंटे के तैरने के बाद धरा और मयूर को पानी में गिरा वह उल्का पिंड दिखाई देने लगा। वह उल्का पिंड लगभग 100 मीटर बड़ा दिख रहा था।

"यह तो काफी विशालकाय है, तभी शायद यह पृथ्वी के घर्षण से बचकर जमीन पर आने में सफल हो गया।" धरा ने उल्का पिंड को देखते हुए कहा।

अब दोनों उल्का पिंड के पास पहुंच गये। वह कोई गोल आकार का बड़ा सा पत्थर लग रहा था, उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे वह ज्वालामुखी से निकले लावे से निर्मित हो।

“इसका आकार तो बिल्कुल गोल है, इसे देखकर लग रहा है कि यह किसी जीव द्वारा निर्मित है।” मयूर ने कहा।

अब धरा छूकर उस विचित्र उल्का पिंड को देखने लगी।

तभी उसे उल्का पिंड पर बनी हुई कुछ रेखाएं दिखाई दीं, जिसे देखकर कोई भी बता देता कि यह रेखाएं स्वयं से नहीं बन सकतीं।

अब धरा ने अपने हाथ में पहने कड़े से, उस उल्का पिंड पर धीरे से चोट मारी।

एक हल्की सी, अजीब सी आवाज उभरी।

“यह पत्थर नहीं है मयूर, यह कोई धातु की चट्टान है, बल्कि अब तो इसे चट्टान कहना भी सही नहीं होगा, मुझे तो ये कोई अंतरिक्ष यान लग रहा है, जो कि शायद भटककर यहां आ गिरा है।” धरा के चेहरे पर बोलते हुए पूरी गंभीरता दिख रही थी- “अब इसके बारे में जानना और जरुरी हो गया है। कहीं ऐसा ना हो कि ये पृथ्वी पर आने वाले किसी संकट की शुरुआत हो?”

अब धरा ने समुद्र की मिट्टी को धीरे से थपथपाया और इसी के साथ समुद्र की मिट्टी एक बड़ी सी ड्रिल मशीन का आकार लेने लगी।

अब धरा ने उस ड्रिल मशीन से उस उल्का पिंड में सुराख करना शुरु कर दिया, पर कुछ देर के बाद ड्रिल मशीन का अगला भाग टूटकर समुद्र की तली में बिखर गया, परंतु उस उल्का पिंड पर एक खरोंच भी ना आयी।

अब मयूर ने समुद्र की चट्टानों को छूकर एक बड़े से हथौड़े का रुप दे दिया और उस हथौड़े की एक भीषण चोट उस उल्का पिंड पर कराई, पर फिर वही अंजाम हुआ जो कि ड्रिल मशीन का हुआ था।

हथौड़ा भी टूटकर बिखर गया, पर उस उल्का पिंड का कुछ नहीं हुआ।

“लगता है कि ये किसी दूसरे ग्रह की धातु से बना है और यह ऐसे नहीं टूटेगा .... हमें कोई और उपाय सोचना होगा मयूर?” धरा ने कहा।

लेकिन इससे पहले कि धरा और मयूर कोई और उपाय सोच पाते, कि तभी उस उल्का पिंड में एक स्थान पर एक छोटा सा दरवाजा खुला और उसमें से 2 मनुष्य की तरह दिखने वाले जीव निकलकर बाहर आ गये।

उनके शरीर हल्के नीले रंग के थे। उन दोनों ने एक सी दिखने वाली नेवी ब्लू रंग की चुस्त सी पोशाक पहन रखी थी।

उनकी पोशाक के बीच में एक सुनहरे रंग का गोला बना था। एक गोले में A1 और एक के गोले में A7 लिखा था।

उन्हें देख धरा और मयूर तुरंत एक समुद्री चट्टान के पीछे छिप गये।

“यह अवश्य ही एलियन हैं।” मयूर ने कहा- “इनके शरीर का रंग तो देखो हमसे कितना अलग है।”

“रंग को छोड़ो, पहले ये देखो कि ये अंग्रेजी भाषा जानते हैं।” धरा ने दोनों की ओर देखते हुए कहा- “तभी तो इनकी पोशाक पर अंग्रेजी भाषा के अक्षर अंकों के साथ लिखे हुए हैं।”

बाहर निकले वह दोनों जीव पानी में भी आसानी से साँस ले रहे थे और आपस में कुछ बात कर रहे थे, जो कि दूर होने की वजह से धरा और मयूर को सुनाई नहीं दे रही थी।

तभी जिस द्वार से वह दोनों निकले थे, उसमें से कुछ धातु का कबाड़ आकर बाहर गिरा, जिसे देख वह दोनों खुश हो गये।

“क्या इन दोनों पर हमें हमला करना चाहिये?” मयूर ने धरा से पूछा।

“अभी नहीं .... अभी तो हमें ये भी पता नहीं है कि ये दोनों हमारे दुश्मन हैं या फिर दोस्त? और ना ही हमें इनकी शक्तियां पता हैं .... और वैसे भी समुद्र में हमारी शक्तियां सीमित हैं, पता नहीं यहां हम इनसे मुकाबला कर भी पायेंगे या नहीं?” धरा के शब्दों में लॉजिक था इसलिये मयूर चुपचाप चट्टान के पीछे छिपा उन दोनों को देखता रहा।

तभी उनमें से A1 वाले ने अंतरिक्ष यान से निकले कबाड़ की ओर ध्यान से देखा। उसके घूरकर देखते ही वह कबाड़ आपस में स्वयं जुड़ना शुरु हो गया।

कुछ देर में ही उस कबाड़ ने एक 2 मुंह वाले भाले का रुप ले लिया। अब A1 ने उस भाले को उठाकर अपने हाथ में ले लिया।

“अब तुम दोनों उस चट्टान से निकलकर सामने आ जाओ, नहीं तो हम तुम्हें स्वयं निकाल लेंगे।” A7 ने उस चट्टान की ओर देखते हुए कहा, जिस चट्टान के पीछे धरा और मयूर छिपे थे।

“धत् तेरे की .... उन्हें पहले से ही हमारे बारे में पता है।” मयूर ने खीझते हुए कहा- “अब तो बाहर निकलना ही पड़ेगा। पर सावधान रहना

धरा, जिस प्रकार से उस जीव ने, उस कबाड़ से हथियार बनाया है, वह अवश्य ही खतरनाक होगा।"

मयूर और धरा निकलकर उनके सामने आ गये।

"कौन हो तुम दोनों? और हमारी पृथ्वी पर क्या करने आये हो?" धरा ने उन दोनों की ओर देखते हुए पूछा।

"अच्छा तो तुम अपने ग्रह को पृथ्वी कहते हो।" A7 ने कहा- "हम पृथ्वी से 2.5 मिलियन प्रकाशवर्ष दूर, एण्ड्रोवर्स आकाशगंगा के फेरोना ग्रह से आये हैं। A1 का नाम 'एलनिको' है और मेरा नाम 'एनम' है। तुम लोगों से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है। हम यहां बस अपने एक पुराने दुश्मन को ढूंढते हुए आये हैं और उसे लेकर वापस चले जायेंगे, पर अगर हमारे काम में किसी ने बाधा डाली, तो हम इस पृथ्वी को बर्बाद करने की भी ताकत रखते हैं।"

"अगर हमारी कोई दुश्मनी नहीं है, तो बर्बाद करने वाली बातें करना तो छोड़ ही दो।" मयूर ने कहा- "अब रही तुम्हारे दुश्मन की बात, तो तुम हमें उसके बारे में बता दो, हम तुम्हारे दुश्मन को ढूंढकर तुम्हारे पास पहुंचा देंगे और फिर तुम शांति से उसे लेकर पृथ्वी से चल जाओगे। बोलो क्या यह शर्त मंजूर है?"

"हम किसी शर्तों पर काम नहीं करते।" एलनिको ने कहा- "और हम अपने दुश्मन को स्वयं ढूंढने में सक्षम हैं। इसलिये हमें किसी की मदद की जरुरत नहीं है। अब रही बात तुम्हारी बकवास सुनने की .... तो वह हमनें काफी सुन ली। अब निकल जाओ यहां से।" यह कहकर एलनिको ने अपने हाथ में पकड़े दोमुंहे भाले को धरा की ओर घुमाया।

भाले से किसी प्रकार की शक्तिशाली तरंगें निकलीं और धरा के शरीर से जा टकराईं।

धरा का शरीर इस शक्तिशाली तरंगों की वजह से दूर जाकर एक चट्टान से जा टकराया।

यह देख मयूर ने गुस्से से पत्थरों का एक बड़ा सा चक्र बनाकर उसे एलनिको और एनम की ओर उछाल दिया।

चक्र पानी को काटता हुआ तेजी से एलनिको और एनम की ओर झपटा।

परंतु इससे पहले कि वह चक्र उन दोनों को कोई नुकसान पहुंचा पाता, एलनिको ने अपने हाथ में पकड़े भाले को उस चक्र की ओर कर

दिया।

चक्र से तरंगें निकलीं और भाले को उसने हवा में ही रोक दिया। अब एलनिको ने भाले को दांयी ओर, एक जोर का झटका दिया, इस झटके की वजह से, वह मयूर का बनाया चक्र दाहिनी ओर जाकर, वहां मौजूद समुद्री पत्थरों से जा टकराया और इसी के साथ टूटकर बिखर गया।

तभी एनम के शरीर से सैकड़ों छाया शरीर निकले। अब हर दिशा में एनम ही दिखाई दे रहा था।

यह देख मयूर घबरा गया, उसे समझ में नहीं आया कि उनमें से कौन सा एनम असली है और वह किस पर वार करे।

तभी एलनिको ने मयूर का ध्यान एनम की ओर देख, अपना भाला मयूर की ओर उछाल दिया। एलनिको का भाला आकर मयूर की गर्दन में फंस गया और उसे घसीटता हुआ समुद्र में जाकर धंस गया।

अब मयूर बिल्कुल भी हिल नहीं पा रहा था। यह देख मयूर ने धरा से मानसिक तरंगों के द्वारा बात करना शुरु कर दिया- “धरा, हम पानी में अपने शरीर को कणों में विभक्त नहीं कर सकते, पानी हमारी कमजोरी है, इसलिये हमें किसी तरह यहां से निकलना ही होगा, बाद में हम अपने साथियों के साथ दोबारा आ जायेंगे इनसे निपटने के लिये।”

यह सुन धरा उठी और एक बड़ी सी समुद्री चट्टान पर जाकर खड़ी हो गई।

धरा ने एक बार ध्यान से चारो ओर फैले सैकड़ों एनम को देखा और फिर अपने पैरों से उस समुद्री चट्टान को थपथपाया।

धरा के ऐसा करते ही वह समुद्री चट्टान सैकड़ों टुकड़ों में विभक्त हो गई और चट्टान का हर एक टुकड़ा नुकीली कीलों में परिवर्तित हो गया और इससे पहले कि एनम कुछ समझता, वह सारी कीलें अपने आसपास मौजूद सभी एनम के शरीर में जाकर धंस गई।

इसी के साथ एनम के सभी छाया शरीर गायब हो गये।

“मुझे नहीं पता था कि पृथ्वी के लोगों में इतनी शक्तियां हैं .... तुम्हारे पास तो कण शक्ति है लड़की .... पर चिंता ना करो, अब यह कण शक्ति मैं तुम्हारे मरने के बाद तुम्हारे शरीर से निकाल लूंगा।” एलनिको ने कहा और इसी के साथ उसने अपना बांया हाथ समुद्र की लहरों में गोल नचाया।

एलनिको के ऐसा करते ही अचानक बहुत ही महीन नन्हें काले रंग के कण धरा की नाक के पास मंडराने लगे।

धरा इस समय एलनिको के भाले से सावधान थी, उसे तो पता ही नहीं था कि एलनिको के पास और कौन सी शक्ति है, इसलिये वह धोखा खा गई।

उन काले नन्हे कणों ने धरा की नाक के इर्द-गिर्द जमा होकर उसकी श्वांस नली को अवरोधित कर दिया।

अब धरा को साँस आनी बंद हो गई थी, पर धरा अब भी अपने को कंट्रोल करने की कोशिश कर रही थी।

धरा ने खतरा भांप कर समुद्री चट्टान से एक बड़ा सा हाथ बनाया और उस हाथ ने मयूर के गले में फंसा भाला खींचकर निकाल दिया।

अब मयूर आजाद हो चुका था, वह एलनिको पर हमला करना छोड़, लड़खड़ाती हुई धरा की ओर लपका।

तभी एलनिको ने इन काले कणों का वार मयूर पर भी कर दिया।

अब मयूर का भी दम घुटना शुरु हो गया था।

“मुझे पता था कि तुम दोनों मेरी चुम्बकीय शक्ति को नहीं झेल पाओगे।” एलनिको ने मुस्कुराते हुए कहा।

कुछ ही देर में धरा और मयूर दोनों मूर्छित होकर, उसी समुद्र के धरातल पर गिर पड़े।

यह देख एलनिको और एनम ने धरा और मयूर को अपने कंधों पर उठाया और अपने यान एण्ड्रोनिका के उस खुले द्वार की ओर बढ़ गये।

◆ ◆ ◆

ऊर्जा द्वार

आज से 3 दिन पहले..................

13.01.02, रविवार, 14:00, दूसरा पिरामिड, सीनोर राज्य, अराका द्वीप

अराका द्वीप के सीनोर राज्य में मकोटा ने 4 पिरामिड का निर्माण कराया था। इन चारो पिरामिड में क्या होता था, यह मकोटा के अलावा राज्य का कोई व्यक्ति नहीं जानता था।

पहले पिरामिड में अंधेरे का देवता जैगन बेहोश पड़ा था, जिसे उठाकर मकोटा पूर्ण अराका द्वीप पर राज्य करना चाहता था।

दूसरे पिरामिड में मकोटा की वेधशाला थी, जहां से वुल्फा अंतरिक्ष पर नजर रखता था। यहां से वुल्फा हरे कीड़ों के द्वारा कुछ नये प्रयोग भी करता था।

तीसरे और चौथे पिरामिड में मकोटा के सिवा कोई नहीं जाता था। वहां क्या था? यह किसी को नहीं पता था।

वुल्फा- आधा भेड़िया और आधा मानव। वुल्फा, मकोटा का सबसे विश्वासपात्र और एकमात्र सेवक था।

वुल्फा के अलावा मकोटा ने अपने महल में सिर्फ भेड़ियों को रखा था, उसे किसी भी अटलांटियन पर विश्वास नहीं था।

वुल्फा हर रोज की भांति आज भी दूसरे पिरामिड में मशीनों के सामने बैठकर, अंतरिक्ष का अध्ययन कर रहा था। उसके सामने की स्क्रीन पर कुछ आड़ी-तिरछी लाइनें बन कर आ रही थीं।

वुल्फा के सामने की ओर कुछ विचित्र सी मशीनों पर हरे कीड़े काम कर रहे थे। उस वेधशाला में 2 हरे कीड़े मानव के आकार के भी थे।

वुल्फा की निगाहें स्क्रीन पर ही जमीं थीं। तभी वुल्फा को अपने सामने लगी मशीन पर एक अजीब सी हरकत होती दिखाई दी, जिसे देख वुल्फा आश्चर्य में पड़ गया।

“यह क्या? यह तो कोई अंजान सी ऊर्जा है, जो कि हमारे सीनोर द्वीप से ही निकल रही है।” वुल्फा ने ध्यान से देखते हुए कहा- “क्या हो सकता है यह?”

अब वुल्फा तेजी से एक स्क्रीन के पास पहुंच गया। इस स्क्रीन पर सीनोर द्वीप के बहुत से हिस्से दिखाई दे रहे थे।

वुल्फा के हाथ अब तेजी से उस मशीन के बटनों पर दौड़ रहे थे।

कुछ ही देर में वुल्फा को सीनोर द्वीप का वह हिस्सा दिखाई देने लगा, जहां पर दूसरी मशीन अभी कोई हलचल दिखा रही थी।

वह स्थान चौथे पिरमिड से कुछ दूर वाला ही भाग था। उसके आगे से पोसाईडन पर्वत का क्षेत्र शुरु हो जाता था, पर पोसाईडन पर्वत का वह भाग, सीनोर द्वीप की ओर से किसी अदृश्य दीवार से बंद था।

तभी उस स्थान पर वुल्फा को हवा में तैरती कुछ ऊर्जा दिखाई दी।

“यह तो ऊर्जा से बना कोई द्वार लग रहा है। क्या हो सकता है इस द्वार में? .... लगता है मुझे उस स्थान पर चलकर देखना होगा।”

यह सोच वुल्फा उस मशीन के आगे से हटा और उस वेधशाला से कुछ यंत्र ले पिरामिड के पीछे की ओर चल दिया।

कुछ ही देर में वुल्फा पिरामिड के पीछे की ओर था।

अब वुल्फा को हवा में मौजूद वह ऊर्जा द्वार धुंधला सा दिखाई देने लगा था।

वह ऊर्जा द्वार जमीन से 5 फुट की ऊंचाई पर था और वह बहुत ही हल्का दिखाई दे रहा था। अगर वुल्फा ने उस द्वार को मशीन पर नहीं देखा होता, तो उसे ढूंढ पाना लगभग असंभव था।

अब वुल्फा उस ऊर्जा द्वार के काफी पास पहुंच गया।

तभी वुल्फा को उस ऊर्जा द्वार से, किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी। यह आवाज सुन वुल्फा हैरान हो गया।

“क्या इस ऊर्जा द्वार में कोई जीव छिपा है?” यह सोच वुल्फा ने अपनी आँखें लगाकर उस ऊर्जा द्वार के अंदर झांका, पर उसे अंधेरे के सिवा कुछ नजर नहीं आया।

कुछ नजर ना आते देख वुल्फा ने अपना हाथ उस ऊर्जा द्वार के अंदर डाल दिया।

वुल्फा का हाथ किसी जीव से टकराया, जिसे वुल्फा ने अपने हाथों से पकड़कर बाहर की ओर खींच लिया।

‘धम्म’ की आवाज करता एक जीव का शरीर उस ऊर्जा द्वार से बाहर आ गिरा।

वुल्फा ने जैसे ही उस जीव पर नजर डाली, वह आश्चर्य से भर उठा- “गोंजालो! .... यह गोंजालो यहां पर कैसे आ गया? और .... और इसके शरीर पर तो बहुत से जख्म भी हैं। ऐसा कौन हो सकता है? जिसने गोंजालो को घायल कर दिया। .... मुझे इसे तुरंत पिरामिड में ले चलना चाहिये और मालिक को सारी बात बता देनी चाहिये .... हां यही ठीक रहेगा।”

यह कहकर वुल्फा ने गोंजालो के शरीर को किसी बोरे की भांति अपने शरीर पर लादा और पिरामिड की ओर चल दिया।

पर अभी वुल्फा 10 कदम भी नहीं चल पाया होगा कि उसे ऊर्जा द्वार की ओर से एक और आवाज सुनाई दी।

वुल्फा अब पलटकर पीछे की ओर देखने लगा।

तभी उस ऊर्जा द्वार से एक विचित्र सा जीव निकला, जो कि 8 फुट लंबा था, उसकी 3 आँखें थीं और 4 हाथ थे। उसकी पीठ पर कछुए के समान एक कवच लगा हुआ था। उसके पैर और हाथ के पंजे किसी स्पाइनासोरस की तरह बड़े थे। उसकी बलिष्ठ भुजाओ को देखकर साफ पता चल रहा था, कि उसमें असीम ताकत होगी। उसके हाथों में कोई अजीब सी, गन के समान मशीन थी।

वुल्फा ने कभी भी ऐसा जीव नहीं देखा था, इसलिये वह सावधानी से वहीं घास में बैठकर उसे देखने लगा।

अब उस जीव की नजर भी वुल्फा पर पड़ गई।

उस जीव ने वुल्फा को ध्यान से देखा। उसके ऐसा करते ही उस जीव की तीसरी आँख से लाल रंग की किरणे निकलकर वुल्फा पर ऐसे पड़ीं, मानो वह जीव उसे स्कैन करने की कोशिश कर रहा हो।

वुल्फा साँस रोके, वहीं घास में बैठा रहा।

वुल्फा को स्कैन करने के बाद उस जीव ने पास पड़े गोंजालो को भी स्कैन किया।

इसके बाद वह उन दोनों को वहीं छोड़ आसमान में उड़ चला।

“मुझे लगता है कि इसने मुझे भेड़िया और गोंजालो को बिल्ली समझ छोड़ दिया, अगर यह जान जाता कि हम भी इंसानों की तरह से ही काम

करते हैं, तो शायद इससे मेरा युद्ध हो रहा होता .... या फिर मैं मरा पड़ा होता .... क्योंकि वह जीव मुझसे तो ज्यादा ही ताकतवर दिख रहा था।”

यह सोच वुल्फा फिर से उठकर खड़ा हो गया और गोंजालो को अपनी पीठ पर लाद पिरामिड की ओर बढ़ गया।

◆ ◆ ◆

चैपटर-5

जलदर्पण

तिलिस्मा 2.2

ऑक्टोपस का तिलिस्म पार करने के बाद सभी एक दरवाजे के अंदर घुसे, पर जैसे ही सभी उस द्वार के अंदर आये, उन्हें सामने एक काँच की ट्यूब दिखाई दी।

“यह कैसा द्वार है? क्या हमें अब इस ट्यूब के अंदर जाना होगा?” क्रिस्टी ने आश्चर्य से ट्यूब को देखते हुए कहा।

“इस ट्यूब के अलावा यहां और कोई ऑप्शन भी नहीं है, इसलिये जाना तो इसी में पड़ेगा।” जेनिथ ने क्रिस्टी को देखते हुए कहा।

और कोई उपाय ना देख सभी उस काँच की ट्यूब में आगे बढ़ गये। ट्यूब बिल्कुल गोलाकार थी और धीरे-धीरे उसका झुकाव इस प्रकार नीचे की ओर हो रहा था, मानो वह एक ट्यूब ना होकर किसी वाटर पार्क की राइड हो।

उस ट्यूब में पकड़ने के लिये कुछ नहीं था और फिसलन भी थी।

सबसे पीछे तौफीक चल रहा था। अचानक तौफीक का पैर फिसला और वह अपने आगे चल रहे ऐलेक्स से जा टकराया।

जिसकी वजह से ऐलेक्स भी गिर गया। तभी उस ट्यूब में पीछे की ओर पानी के बहने की आवाज आयी।

इस आवाज को सुनकर सभी डर गये।

“कैप्टेन लगता है, पीछे से पानी आ रहा है और हमारे पास भागने के लिये भी कोई जगह नहीं है .... जल्दी बताइये कि अब हम क्या करें।” ऐलेक्स ने सुयश से पूछा।

“ऐसी स्थिति में कुछ नहीं कर सकते, बस जितनी ज्यादा से ज्यादा देर तक साँस रोक सकते हो रोक लो।” सुयश ने सभी को सुझाव दिया।

सभी ने जोर की साँस खींच ली, तभी उनके पीछे से एक जोर का प्रवाह आया और वह सभी इस बहाव में ट्यूब के अंदर बह गये।

ट्यूब लगातार उन्हें लेकर बहता जा रहा था, पानी आँखों में भी तेजी से जा रहा था इसलिये किसी की आँखें खुली नहीं रह पायीं।

कुछ देर ऐसे ही बहते रहने के बाद आखिरकार पानी की तेज आवाज थम गई।

सभी ने डरकर अपनी आँखें खोलीं, पर आँखें खोलते ही सभी भौचक्के से रह गये, ऐसा लग रहा था कि वह सभी समुद्र के अंदर हैं, पर आश्चर्यजनक तरीके से सभी साँस ले रहे थे।

“कैप्टेन, यह कैसा पानी है, हम इसमें साँस भी ले पा रहे हैं और आपस में बिना किसी अवरोध के बात भी कर पा रहे हैं।” जेनिथ ने सुयश से कहा।

“यही तो कमाल है तिलिस्मा का ... यह ऐसी तकनीक का प्रयोग कर रहा है, जिसे हम जरा सा भी नहीं जानते हैं।” सुयश ने भी आश्चर्यचकित होते हुए कहा।

“तिलिस्मा का नहीं ये मेरे कैस्पर का कमाल है।” शैफाली ने मुस्कुराते हुए कहा।

“अरे वाह, संकट में भी तुम अपने कैस्पर को नहीं भूली ... अरे जरा ध्यान लगाकर अपने चारो ओर देखो, हम इस समय किसी बड़े से पिंजरे में बंद हैं। अब जरा कुछ देर के लिये कैस्पर को भूल जाओ।” जेनिथ ने मुस्कुराते हुए शैफाली को आसपास की स्थिति का अवलोकन कराया।

अब शैफाली की नजर अपने चारो ओर गई, इस समय वह लोग एक बड़ी सी चट्टान पर रखे एक विशाल पिंजरे में थे।

उस पिंजरे के दरवाजे पर एक 4 डिजिट का नम्बर वाला ताला लगा था।

उस ताले के ऊपर लाल रंग की एल.ई.डी. से 3 लिखकर आ रहा था।

“कैप्टेन यह डिजिटल ताला तो समझ में आया, पर यहां 3 क्यों लिखा है?” क्रिस्टी ने सुयश से पूछा।

“मुझे लग रहा है कि शायद हम 3 बार ही इसके नम्बर को ट्राई कर सकते हैं।” शैफाली ने बीच में ही बोलते हुए कहा- “मतलब 3 बार में ही

हमें इस ताले को खोलना होगा और अगर नहीं खोल पाये तो हम यहीं फंसे रह जायेंगे।"

"दोस्तों पहले हमें सभी चीजों को एक बार ध्यान से देखना होगा, तभी हम उन चीजों का सही से उपयोग कर पायेंगे।" सुयश ने सभी को नियम याद दिलाते हुए कहा।

"आप सही कह रहे हैं कैप्टेन।" तौफीक ने कहा- "तो सबसे पहले पिंजरे पर ही ध्यान देते हैं .... पिंजरे के अंदर कुछ भी नहीं है और यह 6 तरफ से किसी वर्गाकार डिब्बे की तरह है ... यह किसी धातु की सुनहरी सलाखों से बना है ... इन सलाखों के बीच में इतना गैप नहीं है कि कोई यहां से बाहर निकल सके ... अब आते हैं बाहर की ओर .... बाहर हमारे दाहिनी ओर, हमें कुछ दूरी पर एक जलपरी की मूर्ति दिख रही है। हमारे बांई ओर एक दरवाजा बना है, जो कि बंद है। शायद यही हमारे निकलने का द्वार हो, मगर दरवाजे पर एक ताला लगा है, जिस पर एक चाबी लगने की जगह भी दिखाई दे रही है। हमारे पीछे की ओर दूर-दूर तक पानी है ... अब उसके आगे भी अगर कुछ हो तो कह नहीं सकते?"

इतना कहकर तौफीक चुप हो गया।

"कैप्टेन कुछ चीजें मैं भी इसमें जोड़ना चाहता हूं।" ऐलेक्स ने कहा- "हमारे सामने की ओर कुछ दूरी पर मौजूद एक पत्थर पर एक छोटा सा बॉक्स रखा है, पता नहीं उसमें क्या है? और मैंने अभी-अभी पानी में अल्ट्रासोनिक तरंगे महसूस कीं .... जो शायद किसी डॉल्फिन के यहां होने का इशारा कर रही है। और इस सामने वाले दरवाजे की चाबी, उस जलपरी वाली मूर्ति की मुठ्ठी में बंद है, उसका थोड़ा सा सिरा बाहर निकला है, जो कि मुझे यहां से दिख रहा है।"

"अरे वाह, ऐलेक्स ने तो कई गुत्थियों को सुलझा दिया।" क्रिस्टी ने खुश होते हुए कहा- "इसका मतलब हमें इस द्वार को पार करने के लिये पहले इस पिंजरे से निकलना होगा और पिंजरे से निकलने के लिये पहले हमें 4 अंकों का कोड चाहिये होगा। .... पर वह कोड हो कहां सकता है?"

क्रिस्टी यह कहकर चारो ओर देखने लगी, पर उसे कोड जैसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

"मुझे लगता है कि हमारे सामने की ओर पत्थर पर जो बॉक्स रखा है, अवश्य ही हमारे पिंजरे का कोड उसी में होगा?" शैफाली ने बॉक्स की ओर इशारा करते हुए कहा- "पर बिना पिंजरे से निकले तो हम उस बॉक्स

तक पहुंच भी नहीं सकते .... फिर ... फिर उस बॉक्स को कैसे खोला जा सकता है?"

"कुछ ना कुछ तो हमारे आस-पास जरुर है जो कि हम देख नहीं पा रहे हैं?" सुयश मन ही मन बुदबुदाया।

तभी जेनिथ को पिंजरे में एक जगह पर पतली डोरी लटकती दिखाई दी, जेनिथ ने सिर ऊपर उठाकर उस डोरी का स्रोत जानने के कोशिश की।

पर सिर ऊपर उठाते ही वह मुस्कुरा दी क्योंकि ऊपर पिंजरे की सलाखों से चिपका उसे 'फिशिंग रॉड' दिखाई दे गया।

जेनिथ ने सुयश को इशारा करके वह फिशिंग रॉड दिखाई। चूंकि वह फिशिंग रॉड पिंजरे की छत पर थी और पिंजरे के छत की ऊंचाई 10 फुट के पास थी, इसलिये सुयश ने शैफाली को अपने कंधों पर उठा लिया।

शैफाली ने उस फिशिंग रॉड को पिंजरे के ऊपर से खोल लिया।

फिशिंग रॉड के आगे वाले भाग में एक हुक बंधा था और डोरी के लिये एक चकरी लगी थी।

"हहममममम् फिशिंग रॉड तो हमें मिल गयी, पर इसमें मौजूद डोरी तो मात्र 10 मीटर ही है। जबकि वह बॉक्स हमसे कम से कम 20 मीटर की दूरी पर है। यानि कि हम अब भी इस फिशिंग रॉड के द्वारा उस बॉक्स तक नहीं पहुंच सकते। हमें कोई और ही तरीका ढूंढना पड़ेगा।" सुयश ने लंबी साँस भरते हुए कहा।

तभी शैफाली की नजर अपने दाहिनी ओर जमीन पर लगी हरे रंग की घास की ओर गई।

उस घास को देखकर शैफाली को एक झटका लगा, अब वह तेजी से अपने चारो ओर देखने लगी।

उसे ऐसा करते देख सुयश ने हैरानी से कहा- "क्या हुआ शैफाली? तुम क्या ढूंढने की कोशिश कर रही हो?"

"यह जो घास सामने मौजूद है, इसे 'टर्टल ग्रास' कहते हैं, यह घास वयस्क समुद्री कछुए खाते हैं। अब उस घास के बीच में कटी हुई घास का एक छोटा सा गठ्ठर रखा है, जो कि ध्यान से देखने पर ही दिख रहा है। अब बात ये है कि ये जगह प्राकृतिक नहीं है, बल्कि कैश्वर द्वारा बनायी गयी है, अब कैश्वर ऐसे किसी चीज का तो निर्माण नहीं करेगा, जिसका

कोई मतलब ना हो। यानि कि हमारे आस-पास जरुर कोई कछुआ भी है। मैं उसी कछुए को ढूंढ रही थी।”

शैफाली की बात सुन ऐलेक्स ने अपनी आँखें बंद करके अपनी नाक पर जोर देना शुरु कर दिया। शायद वह कछुए की गंध सूंघने की कोशिश कर रहा था।

कुछ ही देर में ऐलेक्स ने अपनी आँखें खोल दीं, मगर अब उसके चेहरे पर मुस्कुराहट थी।

“शैफाली सही कह रही है कैप्टेन ... हमारे पास एक कछुआ है।” ऐलेक्स के चेहरे पर अभी भी मुस्कान बिखरी थी।

ऐलेक्स की बात सुन सभी उसकी ओर देखने लगे।

“कैप्टेन, हमारा पिंजरा जिस पत्थर पर रखा है, वह पत्थर नहीं बल्कि एक विशाल कछुआ ही है। मैंने उसकी गंध पहचान ली है।” ऐलेक्स ने सस्पेंस खोलते हुए कहा।

अब सबका ध्यान उस विशाल कछुए की ओर गया।

“अगर यह कछुआ है तो अब हम उस बॉक्स तक पहुंच सकते हैं।” शैफाली ने कहा और सुयश के हाथ में पकड़ा फिशिंग रॉड तौफीक को देते हुए कहा- “तौफीक अंकल, जरा अपने निशाने का कमाल दिखा कर इस फिशिंग रॉड से उस घास के गठ्ठर को उठाइये।”

घास का वह गठ्ठर पिंजरे से मात्र 8 मीटर की ही दूरी पर था और इतनी कम दूरी से घास को उठाना तौफीक के बाएं हाथ का खेल था।

बामुश्किल 5 मिनट में ही वह घास का गठ्ठर तौफीक के हाथों में था।

तौफीक ने वह घास का गठ्ठर शैफाली को पकड़ा दिया।

शैफाली ने उस घास के गठ्ठर को अच्छी तरह से फिशिंग रॉड के आगे वाले हुक में बांध दिया और अपना एक हाथ बाहर निकालकर, उस घास के गठ्ठर को कछुए के मुंह के सामने लहराया।

घास का गठ्ठर देख कछुए ने अपना सिर गर्दन से बाहर निकाल लिया।

अब वह आगे बढ़कर घास को खाने की कोशिश करने लगा, पर जैसे ही वह कछुआ आगे बढ़ता उसके आगे लटक रहा घास का गठ्ठर स्वतः ही और आगे बढ़ जाता।

और इस प्रकार से शैफाली उस कछुए को लेकर पत्थर के पास वाले बॉक्स तक पहुंच गई।

अब शैफाली ने फिशिंग रॉड को वापस पिंजरे में खींच लिया। फिशिंग रॉड के खींचते ही कछुआ फिर से पत्थर बनकर वहीं बैठ गया।

शैफाली ने फिशिंग रॉड के हुक से घास का गठ्ठर हटाकर फिशिंग रॉड एक बार फिर तौफीक के हाथों में दे दी।

“तौफीक अंकल अब आपको इस फिशिंग रॉड से उस बॉक्स को उठाना है, ध्यान से देख लीजिये उस बॉक्स के ऊपर एक छोटा सा रिंग जुड़ा हुआ है, आपको फिशिंग रॉड का हुक उस रिंग में ही फंसाना है।” शैफाली ने तौफीक से कहा।

तौफीक ने धीरे से सिर हिलाया और एक बार फिर नयी कोशिश में जुट गया।

यह कार्य पहले वाले कार्य से थोड़ा मुश्किल था, पर तौफीक ने इस कार्य को भी आसान बना दिया।

बॉक्स का आकार, पिंजरे में लगे सरियों के गैप से ज्यादा था, इसलिये वह बॉक्स अंदर नहीं आ सकता था।

अतः शैफाली ने उसे पिंजरे के बाहर ही खोल लिया।

उस बॉक्स में एक छोटा सा रोल किया हुआ सुनहरी धातु का एक पतला कागज सा था, जिस पर ताले का कोड नहीं बल्कि एक कविता की पंक्तियां लिखीं थीं, जो कि इस प्रकार थी-

“जीव, अंक सब तुमको अर्पण,
जब देखोगे जल में दर्पण।”

“हे भगवान, ये कैश्वर भी ना ... हम लोगों की जान लेकर ही मानेगा।” ऐलेक्स ने झुंझलाते हुए कहा- “अब ये एक नयी पहेली आ गई।”

“मुझे लगता है कि यहीं कहीं पानी में कोई दर्पण रखा है, जिस पर इस ताले का कोड लिखा होगा?” शैफाली ने कहा- “पर मुश्किल यह है कि अब उस दर्पण को इतने बड़े सागर में कहां ढूंढे?”

“यहां हम अपने आस-पास की सारी चीजें देख चुके हैं।” जेनिथ ने शैफाली को समझाते हुए कहा- “हमारे दाहिनी, बांयी और सामने की ओर

पत्थर ही हैं, मुझे लगता है कि हमें इस कछुए को पीछे की ओर ले चलना पड़ेगा, शायद उस दिशा में ही कहीं इस ताले का कोड हो?"

"शैफाली, जेनिथ सही कह रही है, तुम्हें इस कछुए को पीछे की ओर लेकर चलना होगा।" सुयश ने शैफाली से कहा।

शैफाली ने एक बार फिर फिशिंग रॉड को घास के गठ्ठर के साथ बाहर निकाला और कछुए को लेकर पीछे की ओर चल दी।

कुछ पीछे चलने के बाद सभी को एक ऊचे से पत्थर के पास कुछ चमकती हुई रोशनी सी दिखाई दी।

सुयश ने शैफाली को उस दिशा में चलने का इशारा किया।

शैफाली ने कछुए को उस दिशा में मोड़ लिया। पास पहुंचने पर सभी खुश हो गये, क्योंकि सामने एक संकरे से रास्ते के बाद, पत्थर पर सुनहरे रंग के 4 अंक चमक रहे थे और वह अंक थे '8018'

"मिल गयाऽऽऽऽऽ! हमें ताले का कोड मिल गया।" ऐलेक्स ने खुशी भरे स्वर में चिल्लाकर कहा।

"रुक जाओ।" सुयश ने चिल्लाकर कहा- "पहले इस कोड को ठीक से देखने दो, क्योंकि हमारे पास केवल 3 चांस ही हैं।"

"पर कैप्टेन, कोड तो बिल्कुल साफ दिख रहा है, अब इसमें इतना सोचने वाली क्या बात है?" ऐलेक्स ने उत्साहित शब्दों में कहा।

"साफ तो दिख रहा है, पर ध्यान से देखों इस कोड के अंको को। इस पर लिखे अंक साधारणतया 'कर्शिव' (घुमावदार) राइटिंग में होने चाहिये थे, पर यह सारे अंक सीधी लाइनों से बनाये गये हैं और ऐसा हमें सिर्फ डिजिटल चीजों में ही दिखता है। दूसरी बात मुझे यह भी विश्वास नहीं हो रहा कि यह कोड इतनी आसानी से हमें कैसे मिल गया? सुयश ने शंकित स्वर में कहा।

"कैप्टेन, क्या मैं इस कोड को ताले पर लगाकर देखूं?" जेनिथ ने सुयश से पूछते हुए कहा।

कुछ देर सोचने के बाद सुयश ने हां कर दी।

जेनिथ ने ताले पर 8018 लगा दिया .....पर ..... पर ताला नहीं खुला, बल्कि अब उसके ऊपर 2 लिखकर आने लगा, यानि की अब बस 2 चांस और बचे थे।

"आई न्यू इट ..... तभी मैं कह रहा था कि कुछ तो गड़बड़ है।" सुयश ने झुंझलाते हुए कहा- "हमें कविता की पंक्तियों पर फिर से ध्यान देना होगा। उसकी पहली पंक्ति तो पूरी हो चुकी है, मतलब जीव यानि कि कछुआ और अंक यानि की यह अंक हमें मिल चुके हैं, अब बची दूसरी पंक्ति 'जब देखोगे जल में दर्पण' .... मतलब हमें जो अंक पत्थर पर चमकते दिखाई दे रहे हैं, वह किसी दर्पण से परावर्तित होकर आ रहे हैं, यानि कि असली अक्षर 8018 नहीं बल्कि 8108 होना चाहिये।"

"क्या इस नम्बर को भी कोशिश करके देखें कैप्टेन?" जेनिथ ने सुयश की ओर देखते हुए कहा।

"जरा रुक जाओ जेनिथ।" सुयश ने जेनिथ को रोकते हुए कहा- "शैफाली क्या तुम्हारा कछुआ और आगे नहीं जा सकता, क्योंकि हमारे सामने दिख रहे अंक कहीं से तो परावर्तित होकर आ रहे हैं ... तो अगर हमें असली अंक दिख जाएं, तो सारी मुश्किल ही खत्म हो जायेगी।"

"नहीं कैप्टेन अंकल, आगे का रास्ता बहुत संकरा है और इस कछुए का आकार बड़ा ... इसलिये यह कछुआ इससे आगे नहीं जा सकता और अगर हमने इस कछुए को पत्थर पर चढ़ाने की कोशिश की तो हमारा पिंजरा इसकी पीठ से गिर भी सकता है, और वो स्थिति हमारे लिये और खतरनाक होगी।" शैफाली ने सुयश से कहा।

शैफाली का तर्क सही था, इसलिये सुयश ने कुछ कहा नहीं और वह फिर से सोचने लगा।

"अगर कोई अंक दर्पण में दिखाई देता है, तो वह 2 प्रकार का ही हो सकता है, यानि कि या तो उल्टा या फिर सीधा।" तौफीक ने अपना तर्क देते हुए कहा- "अब एक तरीका तो हम लोग अपना ही चुके है, तो दूसरा तरीका ही सही होगा। .... मुझे नहीं लगता कि बहुत ज्यादा सोचने की जरुरत है कैप्टेन।"

तौफीक की बात सुन सुयश ने फिर अपना सिर हिला दिया।

सुयश के सिर हिलाते ही जेनिथ फिर दरवाजे के लॉक की ओर बढ़ गई।

जेनिथ ने इस बार 8108 लगाया, पर फिर यह कोड गलत था। अब उस ताले के ऊपर 1 लिखकर आने लगा।

अब तो सबकी साँसें सूख गईं।

“अब हम फंस गयें हैं कैप्टेन।” क्रिस्टी ने कहा- “क्योंकि हमने कोड को दोनो तरीके से लगाकर देख लिया है .... अब तो कोई ऑप्शन नहीं बचा। ..... मुझे तो लग रहा है कि पत्थर पर दिख रहा यह कोड किसी और चीज का है? जो कि कैश्वर ने हमें भ्रमित करने के लिये रखा था। असली कोड कहीं और छिपा है?”

“नहीं! ऐसा नहीं हो सकता .... हमें किसी चीज निर्माण करते समय चीटिंग करना नहीं सिखाया गया था .... हमारे दरवाजे का कोड तो यही है, पर हम कहीं गलती कर रहे हैं?” शैफाली के शब्दों में दृढ़ता नजर आ रही थी।

ऐलेक्स को शैफाली के शब्दों पर पूरा भरोसा था, अब वह ध्यान से पत्थर पर मौजूद उन अंको को फिर से देखने लगा।

ऐलेक्स लगातार 2 मिनट तक उस पत्थर पर लिखी संख्या को देखता रहा और फिर उसके चेहरे पर मुस्कान बिखर गई।

क्रिस्टी ऐलेक्स के चेहरे की मुस्कान देखकर समझ गई कि ऐलेक्स ने फिर कोई रहस्य जान लिया है।

ऐलेक्स बिना किसी से बोले, पिंजरे के लॉक तक पहुंचा और फिर एक कोड लगाने लगा।

इससे पहले कि कोई ऐलेक्स को रोक पाता, ऐलेक्स ने वह लॉक खोल दिया था।

लॉक को खुलते देख, सभी आश्चर्य से ऐलेक्स को देखने लगे।

क्रिस्टी तो दौड़कर ऐलेक्स के गले ही लग गई और ऐलेक्स का माथा चूमते हुए बोली- “मैं तो पहले ही कहती थी कि मेरे ब्वॉयफ्रेंड का दिमाग सबसे तेज है।”

“ये कब कहा तुमने?” ऐलेक्स ने नकली आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा- “मैंने तो ऐसे शब्द पहले कभी नहीं सुने।”

“अरे ये पप्पियां-झप्पियां बाद में कर लेना।” जेनिथ ने बीच में घुसते हुए कहा- “पहले हमें ये बताओ कि असली कोड था क्या?”

“असली कोड था- 8010” ऐलेक्स ने जेनिथ की ओर देखते हुए कहा- “और वह दर्पण का परावर्तन नहीं था, बल्कि काँच के पारदर्शी टुकड़े के पार आयी परछाई थी।”

“तो इससे अंक कैसे बदल गया?” सुयश ने ऐलेक्स को बीच में ही टोकते हुए कहा।

“आसान शब्दों में बताता हूं कैप्टेन।” ऐलेक्स ने कहा- “असल में हमने सबसे पहले पत्थर पर ‘8018’ लिखा देखा, पर जब वह संख्या सही नहीं निकली, तो हमने ये समझा कि शायद वह संख्या कहीं दर्पण पर लिखी है और उस दर्पण पर पड़ने वाली रोशनी की वजह से, हमें उसका उल्टा प्रतिबिम्ब दिख रहा है, यह सोच हमने ‘8108’ ट्राई किया। पर वह संख्या भी गलत निकली। अब इन 2 संख्याओं के अलावा और कोई संख्या संभव नहीं थी। तब मैंने ध्यान से उस अंक को कुछ देर तक देखा, तो मुझे उस संख्या के आखिरी अंक पर एक समुद्री कीड़ा बैठा दिखाई दिया। जो कि मेरे ध्यान से देखने पर, एक बार हिलता नजर आया। तब मुझे पता चला कि असल में सही अंक ‘8010’ है, पर समुद्री कीड़े के बैठ जाने की वजह से, वह हमें ‘8018’ दिखने लगी थी। अब मैंने और ध्यान से उस अंक को देखा, तो मुझे पता चला कि वह संख्या उसी पत्थर के ऊपर रखे एक काँच के टुकड़े पर लिखी थी, जिस पर ऊपर से रोशनी पड़ने की वजह से उसका प्रतिबिम्ब हमें नीचे दिखाई दे रहा था। अब मैं आपको साधारण शीशे और दर्पण के परावर्तन का अंतर बताता हूं। अगर किसी दर्पण पर कुछ लिखकर उस पर प्रकाश मारा जाये, तो जहां भी उस दर्पण का परावर्तित प्रकाश गिरेगा, वह उस लिखे हुए अंक को उल्टा दिखायेगा। परंतु अगर हम किसी पारदर्शी शीशे पर कुछ लिखकर उस पर प्रकाश मारें, तो उसके पार जाने वाला प्रकाश उन लिखे हुए अंकों को सीधा ही दिखायेगा।”

“अब मैं समझ गया कि यहां लिखे अंक सीधी लाइनों से क्यों बनाये गये थे? क्योंकि सीधी लाइन से बने ‘0’ को आसानी से ‘8’ में बदला जा सकता था।” सुयश ने मुस्कुराते हुए कहा- “चलो ... अच्छी बात है कि कम से कम दरवाजा तो खुल गया।

यह कहकर सुयश पिंजरे का दरवाजा खोलकर बाहर आ गया।

सुयश के पीछे-पीछे बाकी लोग भी बाहर आ गये।

सभी के बाहर आते ही कछुआ, फिशिंग रॉड और पिंजरे के साथ कहीं गायब हो गया।

“लगता है कि कछुए का काम पूरा हो गया।” सुयश ने कहा- “अब हमें सबसे पहले इस द्वार को पार करने के लिये जलपरी के हाथ में पकड़ी चाबी चाहिये।”

यह कहकर सुयश जलपरी की मूर्ति की ओर बढ़ गया।

जलपरी की वह मूर्ति एक पत्थर पर बैठी थी।

जलपरी के हाथ की मुठ्ठी बंद थी और उसके मुठ्ठी के एक किनारे से चाबी की थोड़ी सी दिख रही थी।

सुयश ने जलपरी के हाथ से उस चाबी को निकालने का बहुत प्रयत्न किया, पर सब बेकार गया। चाबी जलपरी के हाथ से ना निकली।

“लगता है कि अभी कोई और पेंच भी बाकी है?” शैफाली ने कहा- “मुझे नहीं लगता कि हम ऐसे मूर्ति के हाथ से चाबी निकाल पायेंगे। मुझे लगता है कि या तो इस जलपरी को जिंदा करके, इसके हाथ से चाबी निकालना है? या फिर यहां पर अवश्य ही कोई ऐसा यंत्र छिपा होगा, जिसके द्वारा मूर्ति के हाथ से चाबी निकालना होगा?”

“शैफाली सही कह रही है, हमें थोड़ा आगे घूमकर आना चाहिये, अवश्य ही इसका उपाय कहीं ना कहीं होगा?” जेनिथ ने कहा।

जेनिथ की बात से सभी सहमत थे, इसलिये सभी उठकर आगे की ओर चल दिये।

कुछ आगे जाने पर सभी को पानी में, एक नीले रंग का 15 फुट का, गोल गुब्बारा दिखाई दिया, जिसमें हवा भरी थी और वह इसकी वजह से पानी की लहरों पर इधर-उधर तैर रहा था।

“इस गुब्बारे में कुछ ना कुछ तो है?” सुयश ने कहा- “पर पहले और आगे देख लें, फिर इस गुब्बारे के बारे में सोचेंगे।”

सुयश की बात सुन सभी और आगे बढ़ गये।

कुछ आगे जाने पर सभी को एक बड़ी सी काँच की नकली व्हेल मछली दिखाई दी, जिसके अंदर की हर चीज बाहर से साफ दिखाई दे रही थी।

उस व्हेल का मुंह पूरा गोल था और उसके बड़े-बड़े तलवार जैसे दाँत दूर से ही चमक रहे थे।

वह व्हेल अपना मुंह 1 सेकेण्ड के लिये खोलती और फिर तेजी से बंद कर लेती। यह क्रम बार-बार चल रहा था। व्हेल जब भी अपना मुंह बंद करती, पानी में एक जोर की आवाज गूंज रही थी।

“यह क्या आफत है?” तौफीक ने व्हेल को देखते हुए कहा- “अब ये ना हो कि इस व्हेल के पेट में कोई चीज हो और हमें उसे लेने जाना पड़े?”

“आपका सोचना बिल्कुल सही है तौफीक भाई।” ऐलेक्स ने मुस्कुराते हुए कहा- “मुझे इस व्हेल के पेट में एक काँच की बोतल रखी दिखाई दे रही है, जिसमें कोई द्रव भरा है और उस बोतल पर एक जलपरी की तस्वीर भी बनी है।”

“फिर तो पक्का उसी द्रव को पिलाने से वह जलपरी जीवित होगी।” शैफाली ने कहा- “पर उस बोतल को लाना तो बहुत ही मुश्किल है, यह व्हेल तो मात्र 1 सेकेण्ड के लिये अपना मुंह खोल रही है और इतने कम समय में हममें से कोई भी तैर कर इस व्हेल के मुंह में नहीं जा सकता।”

“पर डॉल्फिन तो जा सकती है।” ऐलेक्स ने शैफाली से पूछा- “जो कि इस समय उस गुब्बारे के अंदर है।”

“हां डॉल्फिन चाहे तो इतनी स्पीड से अंदर जा सकती है, पर वह बोतल कैसे उठायेगी?” शैफाली ने सोचते हुए कहा।

“चलो पहले गुब्बारे से डॉल्फिन को निकाल तो लें, फिर सोचेंगे कि करना क्या है?” सुयश ने कहा और उस गुब्बारे की ओर चल दिया।

गुब्बारे के पास पहुंचकर सुयश ने तौफीक को गुब्बारा फोड़ने का इशारा किया।

तौफीक ने अपने हाथ में पकड़े चाकू से गुब्बारे को फोड़ दिया।

ऐलेक्स का कहना बिल्कुल सही था, उस गुब्बारे में एक 8 फुट की नीले रंग की सुंदर सी डॉल्फिन थी।

डॉल्फिन बाहर निकलते ही सभी के चारो ओर घूमने लगी, फिर डॉल्फिन ने एक जोर का चक्कर लगाया और सीधे व्हेल के खुले मुंह से अंदर जा घुसी।

डॉल्फिन की स्पीड देखकर सभी खुश हो गये।

“डॉल्फिन की स्पीड तो बहुत अच्छी है, पर उससे बोतल मंगाना कैसे है?” क्रिस्टी ने सभी की ओर देखते हुए कहा।

“यह काम मैं करुंगी।” जेनिथ ने अपना हाथ ऊपर उठाते हुए कहा।

सभी आश्चर्य से जेनिथ की ओर देखने लगे।

उन्हें अपनी ओर देखते पाकर जेनिथ बोल उठी- “मैं इस डॉल्फिन के शरीर से चिपककर इस व्हेल के मुंह को पार करुंगी। अगर मुझे कहीं चोट लग भी गई तो नक्षत्रा मुझे ठीक कर देगा।”

“वो तो ठीक है जेनिथ दीदी, पर इस डॉल्फिन के शरीर से चिपककर बैठे रहना बहुत मुश्किल है, यह सिर्फ वही इंसान कर सकता है जो कि पहले भी डॉल्फिन की सैकड़ों बार सवारी कर चुका हो।” शैफाली ने जेनिथ की ओर देखते हुए कहा।

“ऐसा कौन है अपने पास?” ऐलेक्स ने चारो ओर देखते हुए कहा।

“क्या ऐलेक्स भैया, आप सिर्फ शैफाली को ही याद करते हैं ... कभी-कभी मैग्ना को भी याद कर लिया कीजिये।” शैफाली ने मुस्कुराते हुए कहा।

शैफाली की बात सुन अब सबके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई।

शैफाली ने अब अपने मुंह गोल करके ना जाने क्या किया कि डॉल्फिन सीधा व्हेल के मुंह से निकलकर उसके पास आ गई।

शैफाली ने धीरे से डॉल्फिन की पीठ थपथपाई और एक झटके से उसकी पीठ पर सवार हो गई।

शैफाली थोड़ी देर तक पानी में इधर-उधर तैरती रही और फिर उसने अपना शरीर डॉल्फिन के शरीर से बिल्कुल चिपका लिया और एक झटके से व्हेल के मुंह में प्रवेश कर गई।

शैफाली की गति इतनी तेज थी कि यदि वह व्हेल आधे सेकेण्ड में भी अपना मुंह बंद करती, तब भी शैफाली सुरक्षित उसके मुंह में चली जाती।

कुछ ही देर में शैफाली उस द्रव्य की बोतल लेकर बाहर आ गई।

सभी अब वह बोतल ले जलपरी की ओर चल दिये।

जलपरी के पास पहुंच कर शैफाली ने उस द्रव्य की बोतल को खोलकर उसे जलपरी के मुंह से लगा दिया।

आश्चर्यजनक तरीके से बोतल का पूरा द्रव्य उस जलपरी ने खाली कर दिया। पूरा द्रव्य पीने के बाद वह जलपरी अब जीवित हो गई।

उसने एक बार अपने सामने मौजूद सभी को देखा और अपनी मुट्ठी में बंद चाबी को शैफाली के हवाले कर दिया।

चाबी देने के बाद वह जलपरी उछलकर डॉल्फिन पर बैठी और वहां से गायब हो गई।

“भगवान का शुक्र है कि इस जलपरी ने हम पर हमला नहीं किया।” ऐलेक्स ने क्रिस्टी को चिकोटी काटते हुए कहा।

“उफ् ... तुमने मुझे चिकोटी काटी, मैं तुम्हारा मुंह नोंच लूंगी।” यह कहकर क्रिस्टी, ऐलेक्स की ओर झपटी, पर ऐलेक्स पहले से ही तैयार था, वह अपनी जान छुड़ाकर वहां से भागा।

इधर क्रिस्टी और ऐलेक्स की मस्ती चल रही थी, उधर शैफाली ने उस चाबी से तिलिस्मा का अगला द्वार खोल दिया।

द्वार खुलते देख ऐलेक्स भागकर सबसे पहले द्वार में घुस गया।

क्रिस्टी मुंह बनाकर सबके साथ उस द्वार में प्रवेश कर गई।

◆ ◆ ◆

युद्धनीति

15.01.02, मंगलवार, 16:15, नक्षत्रलोक, कैस्पर क्लाउड

कैस्पर उस विचित्र जीव को देखने के बाद वारुणि को लेकर अपने कमरे में आ गया था।

वारुणि पिछले 3 घंटे से कैस्पर के सामने एक कुर्सी पर बैठी, कैस्पर की हरकतें देख रही थी। कैस्पर कमरे की जमीन पर बैठा, आँख बंदकर ध्यानमग्न था।

कैस्पर अपने होंठों ही होंठों में कुछ बुदबुदा रहा था।

वारुणि के दिमाग में कैस्पर के कहे शब्द अभी भी गूंज रहे थे- “तुम्हें इस युद्ध में एक निर्णायक भूमिका निभानी होगी वारुणि।”

वारुणि का मस्तिष्क अनेको झंझावातों से गुजर रहा था- “अटलांटिक महासागर में गिरने वाला वह उल्का पिंड कैसा है? जिससे निकल रही तेज ऊर्जा ने पृथ्वी की ओजोन लेयर को नुकसान पहुंचाना शुरु कर दिया था। वह 3 आँख और 4 हाथ वाला विचित्र जीव कौन है? जिसे किसी ने बिना कैस्पर से पूछे, उसकी शक्तियों का प्रयोग कर बनाया था? वह जीव ‘सिग्नल माडुलेटर’ के द्वारा 2 दिन पहले किसे अंतरिक्ष में सिग्नल भेज रहा था? कैस्पर पृथ्वी पर आने वाले किस संकट की बात कर रहा था? और .... और उस महायुद्ध में क्या होनी थी वारुणि की निर्णायक भूमिका? जिसका जिक्र कैस्पर ने उससे किया था।”

ऐसे ही ना जाने कितने अंजाने सवाल वारुणि के दिमाग में चल रहे थे और ऐसे खतरनाक समय में, विक्रम भी ना जाने 2 दिन से कहां गायब था?

अभी वारुणि यह सब सोच ही रही थी कि तभी कैस्पर ने अपनी आँखें खोल दीं।

“महाप्रभु की जय।” वारुणि ने हाथ जोड़कर कैस्पर को अभिवादन करते हुए कहा- “महाप्रभु ने आखिरकार 3 घंटे के बाद अपनी आँखें खोल ही दीं।”

कैस्पर, ने वारुणि के कटाक्ष को महसूस कर लिया, पर उसे कुछ कहा नहीं .... सच ही तो था, 3 घंटे का इंतजार कम नहीं होता।

“क्षमा करना वारुणि, इस समस्या की जड़ इतनी गहरी थी, कि उसे समझने में बहुत ज्यादा वक्त लग गया।” कैस्पर ने कान पकड़ते हुए वारुणि से कहा।

“हे देव, अब अगर आप सब कुछ समझ गये हैं, तो अब हम जैसे निरीह जीवों पर दया कर, हमें भी कुछ समझाने का कष्ट करें।” वारुणि के चेहरे पर अब शैतानी साफ नजर आ रही थी।

वारुणि का यह तरीका देख कैस्पर के चेहरे पर मुस्कान आ गई। अब उसने बोलना शुरु कर दिया- “वारुणि पहले मैं तुम्हें अपनी निर्माण शक्ति के बारे में समझाता हूं .... मेरी निर्माण शक्ति, कल्पना शक्ति से चलती है। इस शक्ति के द्वारा मैं किसी भी भवन, महल, नगर या फिर ग्रह का निर्माण कर सकता हूं। मैंने अपने कार्य को सरल बनाने के लिये अपनी निर्माण शक्ति को आधुनिक विज्ञान के द्वारा, उसे एक ऐसे कंप्यूटर से जोड़ दिया, जिसे मैंने स्वयं बनाया था। मैंने उस आधुनिक कंप्यूटर का नाम कैस्पर 2.0 रखा। मैंने कैस्पर 2.0 को इस प्रकार बनाया कि उसका स्वयं का मस्तिष्क हो और वह छोटे-छोटे निर्णय स्वयं से ले सके। पर मैग्ना के जाने के बाद, मैं ज्यादा से ज्यादा कंप्यूटर पर निर्भर करता चला गया। यही निर्भरता कैस्पर 2.0 को लगातार शक्तिशाली बनाती गई। हजारों वर्षों के बाद कैस्पर 2.0 मेरे द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों को बिना किसी त्रुटि के करने लगा। यह मेरे लिये बहुत अच्छी खबर थी। अब मेरे पास एक ऐसा कंप्यूटर था, जिससे मैं अपने दुख-सुख, अपनी बातें, अपने अहसास सबकुछ शेयर करने लगा, जिसके कारण कैस्पर 2.0 को इंसानी भावनाओं को भी सीखने का समय मिल गया। उधर हजारों वर्ष पहले ग्रीक देवता पोसाईडन ने मुझे एक छोटे से द्वीप अराका की सुरक्षा का कार्य-भार सौंपा। अराका पर एक महाशक्ति को सुरक्षित करने के लिये मैंने एक ऐसे तिलिस्म का निर्माण किया, जिसमें मनुष्यों के सिवा कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता था। मैंने इस तिलिस्म का नाम तिलिस्मा रखा। इस तिलिस्मा के पहले मैग्ना ने एक मायावन का निर्माण किया। इस मायावन का निर्माण, तिलिस्मा में प्रवेश करने वाले मनुष्यों की शक्तियों को समझना था। मेरा बनाया तिलिस्मा इसीलिये अजेय था, क्योंकि उसमें कोई भी द्वार पहले से नहीं बना होता था, मैं उन मनुष्यों की शक्तियों को देखकर, तिलिस्मा के दरवाजों का निर्माण करता था। धीरे-धीरे मैंने नये प्रयोग के द्वारा, अपनी निर्माणशक्ति से तिलिस्मा के लिये, नये जीवों का निर्माण करना शुरु कर दिया। पर हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा था कि तिलिस्मा के निर्माण के लिये बनाये गये जीव कभी तिलिस्मा से बाहर ना आ सकें और जैसे-जैसे तिलिस्मा के सभी द्वार टूटते जायें, वह सभी जीव व निर्माण, स्वयं ही वायुमंडल में विलीन होते जाएं। हजारों वर्षों तक हजारों लोगों ने तिलिस्मा

को तोड़ने की कोशिश की, पर कुछ तिलिस्मा में और कुछ तिलिस्मा के पहले ही मारे गये। यह देख मैंने तिलिस्मा सहित, अराका की सुरक्षा भी धीरे-धीरे कैस्पर 2.0 के हवाले कर दी। अब कैस्पर 2.0 ही तिलिस्मा के द्वार का नवनिर्माण भी करने लगा। सभी मशीनों का नियंत्रण मेरे हाथ में था ..... पर जब 10 दिन पहले मैं, मैग्ना की याद में विचलित होकर अराका द्वीप से कुछ दिनों के लिये बाहर निकला, तो मैंने अराका का सम्पूर्ण नियंत्रण कैस्पर 2.0 को दे दिया।"

"और कैस्पर 2.0 ने तुम्हारी सभी मशीनों और तकनीक पर नियंत्रण करके, सब कुछ अपने हाथ में ले लिया।" वारुणि ने बीच में ही कैस्पर की बात को काटते हुए कहा।

वारुणि की बात सुन कैस्पर ने धीरे से अपना सिर हिला दिया।

"मैं तुम्हारी परेशानी समझ गई कैस्पर।" वारुणि ने कैस्पर से कहा- "अब तुम्हारे लिये ही नहीं, बल्कि तिलिस्मा में जाने वाले हर मनुष्य के लिये खतरा है, क्योंकि कैस्पर अब किसी भी नियम में बदलाव करके, तिलिस्मा में घुसे उन लोगों को भी मार सकता है, जो कि वास्तव में उस तिलिस्मा को तोड़ने की शक्ति रखते हैं।"

"नहीं, कैस्पर 2.0 तिलिस्मा के नियमों में बदलाव नहीं कर सकता, उन नियमों को बदलने वाला कंप्यूटर सिर्फ और सिर्फ मेरे रक्त की एक बूंद से ही खुल सकता है, और कैस्पर 2.0 कितने भी निर्माण कर ले, परंतु मेरे रक्त की बूंद की नकल नहीं बना सकता।" कैस्पर के शब्दों में विश्वास झलक रहा था।

"अगर वह तुम्हारे नियमों में कोई बदलाव नहीं कर सकता, तो यह जीव तिलिस्मा से निकलकर पृथ्वी की आउटर कोर में कैसे पहुंच गया? तुमने तो कहा था कि तिलिस्मा के नियमों के हिसाब से, तिलिस्मा का कोई भी जीव बाहर के वातावरण में नहीं आ सकता।" वारुणि के शब्दों में लॉजिक था।

"यह भी मेरी गलती है।" कैस्पर ने कहा- "मुझे मेरी माँ ने कहा था कि कभी भी किसी के लिये कोई भी निर्माण मैं कर सकता हूं, पर मुझे उसका निर्माण इस प्रकार करना होगा, कि मैं जब चाहे उसका नियंत्रण अपने हाथों में वापस ले सकूं। शायद मेरी माँ ने मेरा भविष्य देख लिया था और ऐसे ही किसी समय के लिये उन्होंने मुझसे यह कहा था।" कैस्पर की आँखों में एकाएक माया का चेहरा उभर आया- "अपनी माँ की कही इसी बात को ध्यान में रखते हुए मैंने तिलिस्मा में प्रवेश करने का एक गुप्त द्वार बनाया, जो कि एक विशेष प्रकार की ऊर्जा से निर्मित था, उस द्वार के

माध्यम से मैं कभी भी छिपकर तिलिस्मा में दाखिल हो सकता था और तिलिस्मा का नियंत्रण अपने हाथ में भी ले सकता था। इस गुप्त द्वार की जानकारी मेरे सिवा किसी को भी नहीं थी। पर जाने कैसे, किसी दूसरी विचित्र ऊर्जा से टकराने की वजह से, वह गुप्त द्वार खुल गया और कैस्पर 2.0 को यह बात पता चल गई। कैस्पर 2.0 अब अपने आपको कैश्वर कहने लगा है। वह अपनी तुलना अब स्वयं ईश्वर से करने लगा है। उसी गुप्त द्वार के माध्यम से कैश्वर ने, उस जीव को बाहर निकाला और अंतरिक्ष में किसी को सिग्नल भी भेजा? मैं अभी तक पता नहीं कर पा रहा हूं कि वह सिग्नल कैश्वर ने किसे और क्यों भेजा? परंतु कैश्वर ने अब उस गुप्त द्वार की फ्रीक्वेंसी बदल दी है, जिससे मैं अब उस गुप्त द्वार का प्रयोग नहीं कर सकता। मुझे उस फीक्वेंसी को समझने के लिये भी समय चाहिये होगा, परंतु मैं यह जान गया हूं कि कैश्वर अंतरिक्ष से किसी को बुलाना चाहता है? पर किसे? यह मुझे नहीं पता।”

“मैं तुम्हें यह बता सकती हूं कि उस जीव ने सिग्नल माडुलेटर से वह सिग्नल किस ग्रह को भेजें हैं।” वारुणि ने कैस्पर को देखते हुए कहा- “पर मैं यह नहीं बता पाऊंगी किवह ग्रह किसका है? या फिर वहां कौन रहते हैं?”

“कैसे? ... यह तुम कैसे कर पाओगी?” कैस्पर के चेहरे पर वारुणि की बात सुनकर आश्चर्य उभर आया।

“मेरे पास उस जीव के सिग्नल भेजते समय का एक वीडियो है। हमने उस जीव को सिग्नल भेजते ही पकड़ लिया था, इसलिये उसके सिग्नल माडुलेटर में उस समय कि सिग्नल फ्रीक्वेंसी अभी तक सुरक्षित है। हमें बस वह वीडियो देखकर, उस जीव के उस समय के शरीर के कोण को ध्यान से देखना होगा, फिर उसके सिग्नल माडुलेटर से सिग्नल की फ्रीक्वेंसी निकालकर उससे दूरी पता करनी होगी। अब जब दूरी और दिशा हमें मिल जायेगी तो हम उसे आकाशगंगा के मानचित्र में फिट करके, यह पता लगा लेंगे कि उस जीव ने किस ग्रह पर सिग्नल भेजे थे?”

वारुणि की बातें सुनकर कैस्पर हैरान रह गया।

“वाह! क्या बात है .... मेरा दोस्त तो वैज्ञानिक भी है और अंतरिक्ष की जानकारियां भी रखता है।” कैस्पर ने वारुणि की तारीफ करते हुए कहा- “अच्छा हां, तुम उस उल्का पिंड की भी बात कर रही थी। क्या मुझे उस उल्का पिंड की कोई तस्वीर मिल सकती है?”

“समुद्र हमारा कार्यक्षेत्र नहीं है, हमने अपने कुछ दोस्तों से यह जानकारी साझा कर ली है, वह जैसे ही हमें कुछ भेजेंगे, मैं तुम्हें बता

दूंगी।" वारुणि ने कहा- "अब तुम मुझे ये बताओ कि तुम किस महायुद्ध और निर्णायक भूमिका की बात कर रहे थे?"

"वारुणि, मेरी माँ भविष्य को देख सकने में सक्षम हैं, यह बात और है कि वह भविष्य की बातें, किसी को सीधे तौर पर बताती नहीं हैं। पर जब मैंने उस जीव को देखा, तो अचानक मुझे अपनी माँ की कही एक बात याद आ गई। एक बार मैंने उनसे पूछा था कि पृथ्वी का अंत कब संभव हो सकता है? तो उन्होंने कहा था कि "जब नियम तुम्हारे विरुद्ध दिखनें लगें, जब तुम्हारी ही रचना तुमसे बगावत करने लगे, जब सृष्टि के नियम के विरुद्ध कोई जीव अंतरिक्ष के सपने देखने लगे, तो समझना कि यह एक महाविनाश का संकेत है। फिर दूसरे ब्रह्मांड से वह लोग आयेंगे, जो हमसे हमारी शक्ति, हमारा अस्तित्व छीनने की कोशिश करेंगे, लेकिन कैस्पर अगर तुम ब्रह्मांड रक्षक बनना चाहते हो तो तुम्हें महाविनाश को पहले से ही महसूस कर कुछ तैयारियां करनी होंगी?"

"माँ ने किस प्रकार की तैयारियां करने की बात की थी कैस्पर?" वारुणी अब काफी व्यग्र दिख रही थी।

यह सुन कैस्पर ने इधर-उधर देखा और फिर धीरे-धीरे वारुणी को कुछ समझाने लगा, पर कैस्पर के हर शब्द से वारुणि के चेहरे का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था, जो कि इस बात का द्योतक था कि कुछ अलग होने जा रहा है .... कुछ ऐसा जो पृथ्वी का भविष्य बदलने वाला था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-6

चींटीयों का संसार-1

तिलिस्मा 3.11

सुयश सहित सभी तिलिस्मा के द्वार संख्या 3.1 में पहुंच गये, पर वहां का नजारा देख सभी के हाथ पैर कांप गये।

वह एक बहुत बड़ा खोखले पहाड़ का हिस्सा था, जिसमें चींटीयों का एक अद्भुत संसार बहुत दूर तक फैला हुआ था।

“बाप रे बाप! ये तो चींटीयों की दुनिया लग रही है।” ऐलेक्स ने आश्चर्य से भरकर, चारों ओर नजरें दौड़ाते हुए कहा- ”पर भलाई यही है कि यहां सभी कुछ अभी तक निष्क्रिय है।”

“यहां पर बहुत सी अनोखी चीजें हैं, इसलिये बिना समझे कोई भी, कुछ भी नहीं छुएगा।” सुयश ने कहा- “पहले सारी चीजों को ध्यान से देखना जरुरी है, तभी हम सही दिमाग लगा कर सही चीजों का चयन कर पायेंगे।”

सुयश की बात सुन सभी ने सहमति से सिर हिलाया।

अब सभी घूमकर पहले सारी चीजें देखने लगे।

सबसे पहले सबकी निगाह, पहाड़ के बीचोबीच स्थित एक 15 फुट ऊंची चींटी की मूर्ति पर गई। वह चींटी लाल रंग की थी। उसके पंख भी थे। उसके एक हाथ में एक बड़ा सा सुनहरा भाला और दूसरे हाथ में एक छोटा सा लकड़ी का यंत्र था।

वह लकड़ी का यंत्र किसी रिमोट की भांति प्रतीत हो रहा था।

उस लकड़ी के यंत्र पर एक छोटा सा हैण्डिल लगा था, जो किसी जॉय स्टिक की भांति प्रतीत हो रहा था। उस लकड़ी के यंत्र पर 1 नारंगी रंग का बटन लगा था।

(जॉय स्टिक एक प्रकार का हैंडल होता है, जिसे किसी भी दिशा में घुमा कर, गेम को नियंत्रित किया जाता है)

उस लकड़ी के यंत्र पर एक छोटी सी काँच की स्क्रीन भी लगी थी।

“यह कोई योद्धा चींटी लग रही है?” तौफीक ने कहा- “पर इस मायाजाल से बचने के लिये, हममें से किसी के पास चींटीयों की जानकारी होना बहुत जरुरी है।”

“मुझे चींटीयों की सारी जानकारी है तौफीक अंकल” शैफाली ने कहा- “मुझे तो लगता है कि कैश्वर ने हम सभी के लिये इन दरवाजों का निर्माण किया है। जिस प्रकार पहला द्वार जेनिथ दीदी की विशेषताओं को देखकर बनाया गया था, ठीक उसी प्रकार यह द्वार मेरी विशेषताओं को देखकर बनाया गया है। क्योंकि मुझे चींटीयों के बारे में लगभग सभी कुछ पता है। जैसे कि यह रानी चींटी है। यह दूसरी सभी चींटीयों में सबसे बड़ी होती है। यही चींटीयों की इस कॉलोनी का प्रतिनिधित्व करती है। अंडे सिर्फ रानी चींटी ही देती है और यह एक अविश्वसनीय योद्धा होती है, रानी चींटी अपने मरने तक युद्ध करती है और इसके मरने के कुछ दिनों के बाद इसकी कॉलोनी भी खत्म हो जाती है।”

“पर इसके हाथ में यह रिमोट कैसा है?” क्रिस्टी ने पूछा।

“शायद इस रिमोट के माध्यम से यह बाकी की चींटीयों को नियंत्रित करती हो?” जेनिथ ने कहा।

“चलो आगे देखते हैं कि और क्या है, फिर आगे के बारे में सोचेंगे।” सुयश यह कहकर आगे बढ़ गया।

आगे इन्हें 3 बड़े आयताकार कंटेनर रखे दिखाई दिये, जिनका आकार लगभग 20 फुट के आसपास था।

पहले कंटेनर में कोई दरवाजा नहीं था, वह पूरी तरह से बंद था।

यह देख सभी दूसरे कंटेनर की ओर बढ़ गये।

दूसरे कंटेनर का दरवाजा खोलने पर उसमें बहुत सी लाल और नीली गेंद रखी हुई दिखाई दीं।

लाल गेंदें थोड़ी चिपचिपी थीं और नीली गेंद से बहुत अच्छी खुशबू आ रही थी।

तीसरे कंटेनर में बहुत सी नारंगी रंग की चीटींयां भरीं थीं। सभी चींटीयों का आकार 4 से 5 फुट के बीच था।

सभी चींटीयां निष्क्रिय थीं। उनमें कोई गति नहीं थी। लग रहा था कि जैसे वह सभी सो रही हों।

“यह सभी नारंगी रंग की चींटीयां ‘रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयां’ हैं। यह श्रृमिक चींटीयां होती हैं।” शैफाली ने फिर सबको बताते हुए कहा- “इनका कार्य सभी चींटीयों का काम आसान करना होता है।

सभी को देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे सभी लोग कोई म्यूजियम देखने आये हैं और शैफाली उस म्यूजियम की गाइड हो।

बहरहाल अभी म्यूजियम खत्म नहीं हुआ था, इसलिये सभी फिर से शैफाली के साथ आगे बढ़ गये।

आगे एक 20 फुट ऊंचा दरवाजा बना था, जिस पर 4 ‘की-होल’ बने थे।

“मुझे लगता है कि यह दरवाजा ही इस मायाजाल से बाहर निकलने का रास्ता है और इस पर बने यह 4 की-होल बताते हैं कि यहां पर कहीं ना कहीं 4 चाबियां छिपी हुई हैं। हमें उन चाबियों को प्राप्त कर, इस द्वार के द्वारा बाहर निकलना होगा।” सुयश ने कहा।

सभी को सुयश का तर्क सही लगा।

“यानि कि हमारा पहला कार्य उन 4 चाबियों को ढूंढना है।” जेनिथ ने कहा।

अब सभी की नजर आगे की ओर गई।

आगे सभी को एक 25 फुट चौड़ी नदी दिखाई दी, जिसके दूसरी ओर एक 20 फुट ऊंची चाबी की मूर्ति बनी थी।

उस चाबी की मूर्ति के बगल में, एक 10 फुट ऊंची लाल रंग की चींटी घूम रही थी।

“1 चाबी तो नदी के उस पार दिख रही है, पर उसकी रक्षा कोई चींटी कर रही है।” सुयश ने कहा।

“पर कैप्टेन, वह तो चाबी की 20 फुट ऊंची मूर्ति है, वह थोड़ी ना लगेगी इस दरवाजे में।” क्रिस्टी ने कहा।

“वह मूर्ति ऐसे ही तो नहीं बनायी गयी होगी, अगर वह दरवाजे में लगने वाली चाबी नहीं है, तो भी मैं दावे के कह सकता हूं कि एक चाबी वहीं है, नहीं तो वह चींटी वहां किस चीज की रक्षा कर रही है?” सुयश ने अपने दाहिने हाथ का मुक्का बनाकर, बांये हाथ के पंजे पर मारते हुए कहा।

“कैप्टेन अंकल सही कह रहे हैं।” शैफाली ने सुयश की बात पर अपनी सहमति जताते हुए कहा- “पर अब तो नदी पार करने के बाद ही पता चलेगा कि वहां पर कोई चाबी है कि नहीं? ... पर शायद आप लोग नदी के उस पार मौजूद चींटी की गति को नहीं देख रहे, वह ‘ब्लैक गार्डन चींटी’ है, जो काफी ज्यादा फुर्तीली होती है। अगर हममें से कोई उस पार पहुंच भी गया, तो उस चींटी से नहीं बच पायेगा।”

“मैं उससे बच सकती हूं।” क्रिस्टी ने कहा- “पर उसे मारे बिना चाबी को नहीं ढूंढा जा सकता और उस चींटी को मारने के लिये मेरे पास कोई हथियार नहीं है।”

“हथियार है।” तौफीक ने कहा- “रानी चींटी के हाथ में मौजूद भाले से उस चींटी को मारा जा सकता है। पर पता नहीं भाले को छूते ही कहीं रानी चींटी ना जिंदा हो जाये?”

“यह रिस्क तो लेना ही पड़ेगा।” सुयश ने कहा और चलते हुए रानी चींटी के पास पहुंच गया।

सुयश ने हाथ आगे बढ़ाकर रानी चींटी का भाला पकड़ लिया। सभी पूरी तरह से किसी भी नयी घटना के लिये सावधान थे।

सुयश ने एक झटके से रानी चींटी के हाथ से वह भाला खींच लिया, पर किसी प्रकार की कोई घटना नहीं घटी।

यह देख सबने राहत की साँस ली।

सुयश ने वह भाला क्रिस्टी को पकड़ा दिया।

क्रिस्टी हाथ में भाला ले नदी की ओर बढ़ गयी, पर क्रिस्टी ने जैसे ही नदी के पानी की ओर, अपने कदम को बढाया, वह हैरान हो गई।

“कैप्टेन, मैं नदी के उस पार नहीं जा पा रही, इस नदी पर कोई अदृश्य दीवार है।” क्रिस्टी ने सुयश को देखते हुए कहा।

क्रिस्टी की बात सुन सभी ने एक-एक कर उस नदी के दूसरी ओर जाने की कोशिश की, पर सब व्यर्थ। अदृश्य दीवार के कारण उस पार जाना संभव नहीं था।

“अब तो 2 ही बातें हो सकती हैं।” जेनिथ ने कहा- “या तो इस अदृश्य दीवार को हटाने के लिये यहां पर कुछ होगा? या फिर नदी पार की चाबी प्राप्त करने का कोई और तरीका होगा?”

“हमें एक बार फिर यहां की सारी चीजों पर ध्यान देना होगा।” सुयश ने कहा।

“नहीं रुक जाइये कैप्टेन अंकल।” तभी शैफाली ने सुयश को रोक दिया।

सुयश प्रश्न भरी नजरों से शैफाली को देखने लगा, पर शैफाली ने सुयश को कोई जवाब नहीं दिया, वह तेजी से कुछ सोच रही थी।

सुयश समझ गया कि शैफाली कुछ सोच रही है, इसलिये वह शांत होकर शैफाली के अगले शब्दों का इंतजार करने लगा।

कुछ देर सोचने के बाद शैफाली बोल उठी- “कैप्टेन अंकल, अगर हमने रानी चींटी का भाला निकाला और कुछ भी नहीं हुआ, तो इससे ये बात तो साबित हो गयी कि रानी चींटी के हाथ में पकड़ा रिमोट जैसा यंत्र भी हमारे लिये ही बना है। अब बात यह है कि हम उस रिमोट से क्या कर सकते हैं? तो अगर वह रिमोट है और हम इस समय चींटीयों के संसार में खड़े हैं, तो जरुर हम उससे चींटीयों को ही नियंत्रित कर सकते होंगे? .... अब आते हैं तीसरे कंटेनर में मौजूद उन निष्क्रिय चींटीयों पर .... उनमें से नारंगी रंग वाली ‘रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयां’ दुनिया में सिर्फ अमेजन के जंगलों में ही पायी जाती है। उस चींटी की खास बात उनकी एकता है। वह चींटींयां नदी को पार करने के लिये आपस में जुड़कर एक शक्तिशाली बेड़ा बनाती हैं, जिससे होकर सभी चींटींयां आसानी से नदी पार कर जाती हैं। तो मुझे लग रहा है कि हमें नदी के उस पार जाने के लिये उन्हीं चींटीयों से नदी पर एक पुल बनवाना होगा।”

शैफाली की बात सुन सभी की आँखें चमक उठीं।

ऐलेक्स ने सुयश से इजाजत ले रानी चींटी के हाथ से वह रिमोट निकाल लिया।

“चूंकि तीसरे कंटेनर में भी नारंगी चींटीयां हैं और इस रिमोट पर भी नारंगी रंग का बटन है, इसलिये मुझे लगता है कि यह रिमोट उन्हीं रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों को नियंत्रित करने के लिये बनाया गया है।” ऐलेक्स ने कहा- “क्या मैं इसका नारंगी बटन दबाऊं कैप्टेन?”

ऐलेक्स की बात सुन सुयश ने इजाजत दे दी।

ऐलेक्स ने नारंगी रंग के बटन को दबाया, पर बटन दबाने से रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों पर कोई असर नहीं हुआ।

यह देख ऐलेक्स, शैफाली की ओर देखने लगा।

“मुझे लगता है कि इस रिमोट से उन चींटीयों को नियंत्रित करने से पहले उन चींटीयों को सक्रिय करना जरुरी है।” शैफाली ने कहा और फिर सोच में पड़ गयी।

कुछ सोचने के बाद शैफाली फिर बोल उठी- “कैप्टेन अंकल हो ना हो अब दूसरे कंटेनर में रखी उन लाल और नीली गेंद का भी कहीं प्रयोग अवश्य होगा? तौफीक अंकल आप जरा उस कंटेनर से दोनों रंग की एक-एक गेंद बाहर ले आइये।”

शैफाली की बात सुनकर, तौफीक दूसरे कंटेनर से, दोनों रंग की एक-एक गेंद उठा लाया और शैफाली के हवाले कर दिया।

शैफाली ने पहले दोनों गेंद को ध्यान से देखा और फिर उसमें से निकलती खुशबू को सूंघने लगी।

कुछ देर के बाद शैफाली बोल उठी- “मुझे इस नीली गेंद से कुछ खाने जैसी खुशबू आ रही है .... मुझे लगता है कि यह अवश्य ही चींटीयों का खाना है। .... कैप्टेन अंकल एक बार हमें इस नीली गेंद को रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों के पास रखकर देखना चाहिये, शायद इसको खाने के लिये वह सक्रिय हो जायें?”

सुयश ने शैफाली के हाथ से उस नीली गेंद को लिया और दूसरे कंटेनर में मौजूद एक रेन फॉरेस्ट फायर चींटी के सामने रख दिया।

शैफाली का सोचना बिल्कुल सही था। नीली गेंद के सामने रखते ही वह रेन फॉरेस्ट फायर चींटी सजीव होकर उसे खाने लगी और इसी के साथ रिमोट का नारंगी रंग का बटन जलने लगा।

“कैप्टेन इस रिमोट का नारंगी बटन ऑन हो गया।” ऐलेक्स ने खुशी से चीखते हुए कहा।

यह सुनकर सुयश के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी।

अब सुयश ने तौफीक की ओर इशारा किया। सुयश का इशारा पाकर तौफीक भी सुयश के साथ दूसरे कंटेनर में घुस गया और अपने हाथों से नीली गेंदें निकालकर जेनिथ और क्रिस्टी को पकड़ाने लगा।

जेनिथ और क्रिस्टी ने उन नीली गेंदों को, सभी रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों को खिला दिया।

अब सभी रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयां सक्रिय हो गईं।

ऐलेक्स ने रिमोट पर मौजूद हैण्डिल को इधर-उधर घुमाकर देखा।

अब ऐलेक्स हैण्डिल को जिस दिशा में घुमा रहा था, सभी रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयां उस दिशा की ओर जा रहीं थीं और ऐलेक्स को वह सभी चींटीयां रिमोट पर मौजूद स्क्रीन पर नजर आ रहीं थीं।

यह देख ऐलेक्स सभी रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों को नदी के पास ले गया और फिर उसने नारंगी बटन को दबा दिया।

नारंगी बटन को दबाते ही, सभी चींटीयों ने नदी पर पुल बनाना शुरु कर दिया।

पुल बनते देख सभी खुश हो गये। आखिरकार शैफाली ने अपने दिमाग का लोहा एक बार फिर सबको मनवा दिया था।

कुछ ही देर में रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों ने नदी पर पुल बना दिया।

यह देख क्रिस्टी ने भाले को अपने हाथों में पकड़ा और धीरे से उस पुल पर चढ़ गयी।

क्रिस्टी ने सबसे पहले पुल पर थोड़ा उछलकर उसकी मजबूती का जायजा लिया और फिर सधे कदमों से नदी के दूसरी ओर चल दी।

क्रिस्टी को नदी के उस पार आता देख, ब्लैक गार्डन चींटी और तेज-तेज चाबी की मूर्ति के आस-पास चक्कर लगाने लगी।

क्रिस्टी की नजरें भी सावधानीवश, ब्लैक गार्डन चींटी की ही ओर थी।

क्रिस्टी ने जैसे ही अपने कदम नदी के उस पार रखे, ब्लैक गार्डन चींटी ने उस पर हमला कर दिया, पर क्रिस्टी सावधान थी, उसने उछलकर स्वयं को बचाया और फिर ब्लैक गार्डन चींटी से कुछ दूर चली गई।

क्रिस्टी ब्लैक गार्डन चींटी पर हमला करने से पहले उसकी गति को ध्यान से देख रही थी।

ब्लैक गार्डन चींटी ने फिर से पलटकर क्रिस्टी पर हमला किया, क्रिस्टी ने फिर से स्वयं को बचाया, पर इस पर बार क्रिस्टी ने अपने भाले से ब्लैक गार्डन चींटी के शरीर पर एक जख्म बना दिया।

ब्लैक गार्डन चींटी दर्द से बिलबिला उठी, वह पलटकर और तेजी से क्रिस्टी पर हमलावर हो गई, पर वह क्रिस्टी थी, जिसने रेत मानव को भी मौका नहीं दिया था, फिर इस ब्लैक गार्डन चींटी की बिसात ही क्या थी।

कुछ ही देर के बाद क्रिस्टी ने चींटी को मार गिराया।

ऐलेक्स ने ब्लैक गार्डन चींटी को मरते देख नदी के इस पार से ही, जोर की सीटी बजाकर क्रिस्टी का उत्साह बढ़ाया।

क्रिस्टी ने मुस्कुराकर ऐलेक्स को एक बार देखा और फिर उस चाबी की मूर्ति के पास असली चाबी ढूंढने लगी।

कुछ ही देर में क्रिस्टी के तेज आँखों ने असली चाबी को उस मूर्ति के पीछे की ओर चिपके देख लिया।

क्रिस्टी ने उस चाबी को निकालकर खुशी से सबकी ओर हवा में लहराया।

क्रिस्टी के हाथ में चाबी देख सभी खुश हो गये।

क्रिस्टी वह चाबी लेकर नदी के इस पार वापस आ गयी।

क्रिस्टी के इस पार आते ही सभी रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयां अपने आप गायब हो गईं और इसी के साथ रिमोट पर मौजूद नारंगी बटन भी गायब हो गया।

"लगता है रेन फॉरेस्ट फायर चींटीयों का काम अब खत्म हो गया था, इसलिये वह सभी गायब हो गईं।" सुयश ने कहा।

क्रिस्टी ने आगे बढ़कर दरवाजे में पहली चाबी लगाकर घुमा दिया, वातावरण में एक जोर की गड़गड़ाहट उभरी, पर वह द्वार नहीं खुला।

"अब हमें दूसरी चाबी ढूंढनी पड़ेगी।" सुयश ने कहा- "वह भी यहीं कहीं होनी चाहिये?"

तभी ऐलेक्स की आवाज ने सभी का ध्यान, उसकी ओर आकृष्ट कर दिया।

"कैप्टेन अब इस रिमोट पर अपने आप नीले रंग का एक बटन नजर आने लगा है।" ऐलेक्स ने तेज आवाज में कहा।

"इसका मतलब अब कहीं दूसरी चींटीयां भी हैं और हमें इस रिमोट के द्वारा उन चींटीयों को भी नियंत्रित करना होगा।" शैफाली ने कहा।

शैफाली की बात सुन सभी अपने चारो ओर देखने लगे।

"कैप्टेन, तीसरे कंटेनर में अब नीली चींटीयां नजर आ रही हैं।" तौफीक की आवाज सुन सभी एक बार फिर उस तीसरे कंटेनर के पास आ गये।

“ये ‘लीफ कटर चींटीयां’ हैं, इनकी विशेषता पानी के अंदर ज्यादा सक्रिय होना है।” शैफाली ने उन नीली चींटीयों को देखते हुए कहा।

“कहीं दूसरी चाबी नदी के अंदर तो नहीं?” जेनिथ ने सबका ध्यान नदी की ओर किया।

“शायद जेनिथ सही कह रही है, क्योंकि हम पानी के अंदर नहीं जा सकते, इसलिये दूसरी चाबी अवश्य ही पानी के अंदर ही है।” शैफाली ने कहा- “मुझे लगता है कि इन लीफ कटर चींटीयों को भी वही नीली गेंदे खिलाकर सक्रिय करना होगा।”

सभी ने तुरंत नीली गेंदें खिलाकर लीफ कटर चींटीयों को भी सक्रिय कर दिया।

उन चींटीयों के सक्रिय होते ही ऐलेक्स के हाथ में मौजूद रिमोट का नीला बटन भी ऑन हो गया और उस पर लगी स्क्रीन पर सभी लीफ कटर चींटीयां दिखाई देने लगीं।

इसके आगे का काम ऐलेक्स को पता था, वह सभी लीफ कटर चींटीयों को नियंत्रित कर पानी के अंदर लेकर चला गया।

ऐलेक्स को पानी के अंदर का दृश्य स्क्रीन पर नजर आ रहा था।

तभी ऐलेक्स को पानी के अंदर दूसरी चाबी दिखाई दी, परंतु उस चाबी की रक्षा भी एक बड़ी सी लाल रंग की चींटी कर रही थी, जिसने लीफ कटर चींटीयों पर हमला कर, उन्हें मारना शुरु कर दिया।

यह देख ऐलेक्स ने बाकी बची लीफ कटर चींटीयों को वहां से हटा लिया।

“पानी के अंदर मौजूद चींटी ‘आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी’ है, वह लीफ कटर चींटीयों को आसानी से मार सकती है।” शैफाली ने रिमोट की स्क्रीन में देखते हुए कहा- “अब मुसीबत हो गयी। क्योंकि हममें से कोई भी पानी के अंदर जा नहीं सकता और लीफ कटर चींटीयां उस आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी को मार नहीं सकतीं। अब क्या किया जाये?”

यह सुनकर सभी के चेहरे मुर्झा गये।

सुयश ने सभी के मुर्झाये चेहरे को देख उनमें जोश भरते हुए कहा- “दोस्तों हमें हार नहीं माननी चाहिये, अगर यह मुश्किल हमारे सामने है, तो इसका हल भी यहीं पर मौजूद होगा। हमें सिर्फ शांत भाव से उस उपाय

को ढूंढने की जरुरत है और मुझे लगता है कि यह उपाय शैफाली हम सभी से ज्यादा बेहतर तरीके से ढूंढ सकती है।”

सुयश के शब्द सुन शैफाली में एक नयी ऊर्जा का संचार हो गया और वह शांत भाव से फिर से सारी चीजों के बारे में सोचने लगी।

◆ ◆ ◆

स्वप्नतरु

18 वर्ष पहले........

जनवरी 1977, सामरा राज्य की पर्वत श्रृंखला

"युगाका और वेगा! आज तुम दोनों को, सामरा राज्य की परंपरा के हिसाब से, पूरा दिन महावृक्ष के पास ही व्यतीत करना होगा।" कलाट ने वेगा और युगाका को देखते हुए कहा- "बच्चों, ये ध्यान रखना कि इस परंपरा की शुरुआत हमारे पूर्वजों ने की थी, इसीलिये हम आज भी इसे निभा रहे हैं, पर आज का यह दिन तुम्हारे पूरे भविष्य का निर्धारण करेगा। इसलिये आज के इस दिन का सदुपयोग करना और महावृक्ष से जो कुछ भी सीखने को मिले, उसे मन लगाकर सीखना।"

"क्या बाबा, आप भी हमें पूरे दिन के लिये एक वृक्ष के पास छोड़कर जा रहे हैं।" युगाका ने मुंह बनाते हुए कहा- "यहां पर तो कुछ भी खेलने को नहीं है ... अब हम क्या इस वृक्ष की पत्तियों के साथ खेलेंगे?"

"ऐसा नहीं कहते भाई, वृक्ष को बुरा लगेगा।" वेगा ने विशाल महावृक्ष को देखते हुए कहा।

"हाऽऽ हाऽऽ हाऽऽ! अरे बुद्धू, कहीं वृक्ष को भी बुरा लगता है।" युगाका ने वेगा पर हंसते हुए कहा- "तुम्हें तो बिल्कुल भी समझ नहीं है।"

कलाट ने मुस्कुराकर वेगा की ओर देखा और फिर महावृक्ष को प्रणाम कर उस स्थान से चला गया।

"बाबा तो गये, अब तू बता मेरे साथ खेलेगा कि नहीं?" युगाका ने वेगा को पकड़ते हुए कहा।

"पर भाई, हम तो यहां पर महावृक्ष से कुछ सीखने आये हैं, खेलने थोड़ी ना।" वेगा ने मासूमियत से जवाब दिया।

"सोच ले, अगर तू मेरे साथ नहीं खेलेगा, तो मैं तुझे पीटूंगा और देख ले आज तो यहां तुझे कोई बचाने वाला भी नहीं है?" युगाका ने वेगा को डराते हुए कहा।

युगाका की बात सुन नन्हा वेगा सच में बहुत डर गया- "हां ... हां खेलूंगा, पर यहां पर खेलने की कोई वस्तु तो है ही नहीं? फिर हम यहां कौन सा खेल खेलेंगे?" वेगा ने कहा।

"हम यहां पर लुका-छिपी खेलेंगे। उसके लिये हमें किसी चीज की जरुरत नहीं है और छिपने के लिये तो यहां पर बहुत से स्थान हैं।" युगाका ने वेगा को चारो ओर का क्षेत्र दिखाते हुए कहा।

"ठीक है भाई, पर पहली बार मैं छिपूंगा।" वेगा ने अपनी भोली जुबान से कहा।

"ठीक है, तो मैं 100 तक गिनती गिन कर आता हूं, तब तक तुम छिप जाओ, पर ध्यान रखना, यहां से दूर मत जाना।" युगाका ने अपने छोटे भाई के प्रति चिंता जताते हुए कहा।

युगाका की बात सुन वेगा ने हां में अपना सिर हिला दिया।

युगाका अब कुछ दूरी पर जाकर, अपना मुंह घुमा जोर-जोर से गिनती गिनने लगा, इधर वेगा की निगाह चारो ओर छिपने की जगह ढूंढने लगी।

तभी वेगा को महावृक्ष के तने में एक बड़ी सी कोटर दिखाई दी, वह जल्दी-जल्दी उस कोटर में घुस गया।

"यह कोटर अभी तो यहां पर नहीं थी, यह इतनी जल्दी कैसे उत्पन्न हो गई?" वेगा ने अपने मन में कहा- "पर जो भी हो भाई, मुझे यहां आसानी से ढूंढ नहीं पायेंगे।"

तभी वेगा के देखते ही देखते उस कोटर का मुंह अपने आप बंद हो गया।

यह देख नन्हा वेगा घबरा गया। अब कोटर में धुप्प अंधेरा छा गया था।

तभी वेगा को एक बड़ा सा जुगनू कोटर के अंदर उड़ता हुआ दिखाई दिया।

उत्सुकतावश वेगा उस टिमटिमाते जुगनू के पीछे-पीछे चल दिया। धीरे-धीरे वृक्ष का आकार अंदर से बड़ा होता जा रहा था।

तभी वेगा को वृक्ष के अंदर कुछ और जुगनू उड़ते हुए दिखाई दिये। उन सभी जुगनुओं से निकल रही रोशनी से, वह पूरा वृक्ष रोशन हो गया था।

उसी समय वेगा को वहां एक छोटा सा घोड़ों का रथ दिखाई दिया, जिस पर एक सैंटा क्लॉस की तरह का बूढ़ा बैठा था।

“मेरा नाम टोबो है बच्चे। क्या तुम मेरे साथ घूमने चलोगे?” टोबो ने कहा।

वेगा, टोबो की बातें सुनकर एक पल के लिये यह भी भूल गया कि उस वृक्ष में यह विचित्र दुनिया आयी कहां से?

“आप मुझे कहां घुमाओगे?” वेगा ने टोबो से पूछा।

“अरे यह महावृक्ष की दुनिया बहुत बड़ी है। मैं तुम्हें इसमें सितारों के पास ले जा सकता हूं, मैं तुम्हें इसमें बोलने वाली नदी दिखा सकता हूं, सतरंगा घोड़ा, जलपरी ... किताबों की दुनिया .... बहुत कुछ है इसमें दिखाने को। तुम बताओ बच्चे, तुम क्या देखना चाहते हो इसमें?” टोबो ने नन्हें बच्चे को सपने दिखाते हुए कहा।

“क्या बताया आपने किताबों की दुनिया? ... हां मुझे किताबों की दुनिया देखना है।” वेगा ने कहा।

इतनी सारी चीजों में वेगा ने उस चीज का चयन किया, जिसका चयन किसी भी बच्चे के लिये असंभव था।

“तो फिर ठीक है बच्चे, आओ मेरी घोड़ागाड़ी में बैठ जाओ, मैं तुम्हें दिखाता हूं, इस ब्रह्मांड की सबसे बड़ी किताबों की दुनिया।” टोबो यह कहकर घोड़ागाड़ी से उतरा और सहारा देकर वेगा को घोड़ागाड़ी में बैठा दिया।

घोड़ागाड़ी में एक नर्म सी सीट लगी थी, वेगा उसी पर आराम से बैठ गया।

वेगा को बैठते देख टोबो ने घोड़ागाड़ी को आगे बढ़ा दिया।

“तुम्हारा नाम क्या है बच्चे?” टोबो ने वेगा से पूछा।

“मेरा नाम वेगा है।” वेगा ने चारो ओर के दृश्यों को देखते हुए कहा।

“वेगा ..... वेगा का मतलब तेज होता है। तो फिर हम इतना धीमा क्यों जा रहे हैं?” यह कहकर टोबो ने घोड़ागाड़ी की गति और बढ़ा दी।

घोड़ागाड़ी अब किसी जंगल से होकर गुजर रही थी।

घोड़ागाड़ी की तेज गति के कारण वेगा को ठण्डी हवा के झोंके अपने चेहरे पर महसूस हो रहे थे।

वेगा जंगल में घूम रहे अनेक जीवों को ध्यान से देख रहा था।

कुछ देर के बाद वेगा को सामने समुद्र दिखाई दिया, यह देख वेगा ने चिल्लाकर कहा- "टोबो, सामने समुद्र है, घोड़ागाड़ी को रोक लो।"

"चिंता मत करो वेगा, यह समुद्र हमारी घोड़ागाड़ी को नहीं रोक सकता।" यह कहते हुए टोबो ने घोड़ागाड़ी को समुद्र के अंदर घुसा दिया।

समुद्र के अंदर पहुंचते ही घोड़ागाड़ी का वह भाग जिसमें वेगा बैठा था, उसके चारो ओर, एक काँच की एक पारदर्शी दीवार बन गई।

वेगा उस पारदर्शी दीवार से पानी में घूम रही मछलियों को तैरते हुए देख रहा था, यह सब उसके लिये एक सपने की तरह से था।

तभी 4 डॉल्फिन मछलियां घोड़ागाड़ी के साथ-साथ तैरने लगीं। बहुत ही अभूतपूर्व दृश्य था।

कुछ देर बाद घोड़ागाड़ी समुद्र से बाहर आ गई।

जिस जगह पर घोड़ागाड़ी समुद्र से बाहर आयी थी, उस जगह पर जमीन पर एक बड़ा सा इंद्रधनुष बना था।

समुद्र के बाहर आते ही घोड़ागाड़ी की काँच की दीवार स्वतः गायब हो गई।

घोड़ागाड़ी अब उस इंद्रधनुष पर चढ़ गई। वेगा ने देखा कि बहुत सी परियां इंद्रधनुध के रंगों को पेंट-ब्रश की कूची से रंग रहीं थीं।

परियों ने वेगा को देखकर इस प्रकार अपना हाथ हिलाया, जैसे कि वह उसे पहले से जानती हों।

कुछ देर बाद घोड़ागाड़ी इंद्रधनुष से उतरकर, एक बहुत ही खूबसूरत शहर में प्रविष्ठ हो गई। यह शहर पुराने जमाने के किसी बड़े शहर सा प्रतीत हो रहा था।

घोड़ागाड़ी अब साधारण तरीके से सड़क पर चल रही थी।

सड़क पर चारो ओर बहुत से आदमी घूम रहे थे।

चारो ओर फुटपाथ पर दुकानें सजी थीं और घूमते हुए लोग उन दुकानों से खरीदारी कर रहे थे।

कुछ देर ऐसे ही सड़कों पर घूमने के बाद टोबो ने घोड़ागाड़ी को एक बड़ी से भवन के बाहर रोक लिया।

उस भवन पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था- "किताब घर"

टोबो ने कोचवान की जगह से उतरकर, वेगा को पिछली सीट से उतारा- "वेगा, यह है किताबों की दुनिया ... तुम यहां अंदर जा सकते हो। याद रखना किताब को पढ़ने के बाद, तुम सीधे बाहर आ जाना, मैं बाहर ही तुम्हारा इंतजार करुंगा।"

"ठीक है टोबो।" यह कहकर वेगा किताब घर के द्वार की ओर चल दिया।

वेगा को देख दरबान ने किताब घर के विशाल द्वार को खोल दिया। वेगा उस खुले द्वार से अंदर प्रविष्ठ हो गया।

अंदर पहुंचते ही वेगा की आँखें फटी की फटी रह गई। अंदर से किताब घर बहुत बड़ा था।

वहां चारो ओर किताबें ही किताबें दिखाई दे रहीं थीं।

तभी एक लाइब्रेरियन वेगा के सामने आकर खड़ा हो गया- "मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूं छोटे मास्टर?"

पर लाइब्रेरियन पर नजर पड़ते ही वेगा हैरान हो गया, उस लाइब्रेरियन की शक्ल हूबहू टोबो से मिल रही थी।

"आप तो टोबो हो।" वेगा ने मुस्कुराते हुए कहा।

"नहीं, मैं टोबो नहीं हूं, बस मेरी शक्ल टोबो से मिलती है।" लाइब्रेरियन ने कहा।

"क्या आप दोनों जुड़वा भाई हो?" वेगा ने भोलेपन से पूछा।

"नहीं, ना तो हम जुड़वां है और ना ही एक दूसरे को जानते हैं .... छोटे मास्टर ... लगता है कि आप पहली बार 'स्वप्नतरु' की दुनिया में आये हैं?" लाइब्रेरियन ने कहा।

"ये स्वप्नतरु क्या है?" वेगा की उत्सुकता बढ़ती ही जा रही थी।

"स्वप्न का अर्थ होता है सपने और तरु का अर्थ होता है वृक्ष। अर्थात महावृक्ष हमें जो सपने दिखाता है, उस सपनों की दुनिया को स्वप्नतरु कहते हैं।" लाइब्रेरियन ने वेगा को समझाते हुए कहा।

"तो क्या महावृक्ष मुझे सपना दिखा रहे हैं?" वेगा के दिमाग में सवालों का पिटारा था, जो कि खुलता ही जा रहा था।

"नहीं, यह सपना नहीं है, पर महावृक्ष ने इस दुनिया को अपनी शक्ति से स्वप्न का आकार दिया है, इस दुनिया पर समय का कोई प्रभाव नहीं

पड़ता। महावृक्ष का कहना है कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती, इसलिये सीखते वक्त, समय का रुक जाना ही बेहतर है।” लाइब्रेरियन ने कहा- “पर यह सब तुम अभी नहीं समझोगे वेगा। अभी तुम बहुत छोटे हो। धीरे-धीरे तुम सारी चीजों को समझ जाओगे।”

लाइब्रेरियन के शब्द वेगा की समझ में नहीं आ रहे थे। इसलिये वेगा ने विषय को बदलते हुए पूछा- “यहां पर कौन-कौन सी किताबें हैं?”

“हां, यह हुई ना काम वाली बात। आओ मैं तुम्हें दिखाता हूं कि यहां पर क्या-क्या है?” यह कह लाइब्रेरियन एक दिशा की ओर चल दिया।

वेगा लाइब्रेरियन के पीछे-पीछे चल दिया।

लाइब्रेरियन वेगा को लेकर एक अजीब सी कुर्सी के पास पहुंचा, उस कुर्सी पर एक धातु का हेलमेट रखा था और उस हेलमेट से निकले कुछ तार कुर्सी के सामने मौजूद एक स्क्रीन के साथ जुड़े हुए थे।

लाइब्रेरियन ने वेगा को उस कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। वेगा के उस कुर्सी पर बैठते ही लाइब्रेरियन ने वेगा को हेलमेट पहना दिया।

अब वेगा के सामने वाली स्क्रीन पर कुछ अजीब सी सुनहरी लाइनें दिखाई देने लगीं। कुछ देर के बाद स्क्रीन से एक बीप की आवाज आई और स्क्रीन पर अंग्रजी भाषा का ‘K’ लिखकर आने लगा।

यह देख लाइब्रेरियन ने वेगा के सिर से हेलमेट निकाल लिया और फिर उसे ले एक दूसरी दिशा की ओर चल दिया।

अब वेगा से रहा ना गया, वह चलते-चलते बोल उठा- “पहले तो आप मुझे अपना नाम बताएं, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा कि आपको किस नाम से संबोधित करुं?”

“वाह! जो प्रश्न सबसे पहले पूछना चाहिये था, वो इतनी देर बाद पूछ रहे हो .... चलो कोई बात नहीं, फिर भी मैं बता देता हूं .... मेरा नाम ऑस्कर है।” ऑस्कर ने कहा।

“मिस्टर ऑस्कर मेरा नाम वेगा है ... और मैं आपसे बताना चाहता हूं कि आपने भी अभी तक मेरा नाम नहीं पूछा था, तो गलती सिर्फ अकेले मेरी नहीं हुई। और हां मिस्टर ऑस्कर, पहले मुझे ये बताइये कि आपने मेरे सिर पर हेलमेट क्यों लगाया? स्क्रीन पर आने वाले उस ‘K’ अक्षर का क्या मतलब था? और अब आप मुझे लेकर कहां जा रहे हैं?”

“तुम जितना छोटे दिखते हो, उतना छोटे हो नहीं, छोटे मास्टर।” ऑस्कर ने मुस्कुराते हुए कहा- “अच्छा चलो, तुम्हें बताता हूं ... इस किताब-घर को ‘A’ से ‘Z’ तक अलग-अलग भागों में विभक्त किया गया है, जो कि यहां आने वाले लोगों की समझने और सीखने की शक्ति पर निर्भर करता है। हम उस हेलमेट के द्वारा आने वाले लोगों के, सीखने की क्षमता की जांच करते हैं और फिर वह हेलमेट हमें उस व्यक्ति को जिस विभाग में ले जाने की इजाजत देता है, हम उसे वहां ले जाते हैं। उसके बाद वहां वो जो सीखना चाहे, वो सीख सकता है।”

“अच्छा तो मेरे दिमाग का ग्रेड उस मशीन ने ‘K’ बताया है और अब आप मुझे ‘K’ सेक्शन की किताब पढ़ाने के लिये ले जा रहे हैं।” वेगा ने कहा।

“आप बिल्कुल सही समझे छोटे मास्टर।” यह कहकर ऑस्कर ने एक कमरे का द्वार खोला, जो कि अंदर से बहुत विशालकाय था, पर वहां एक भी किताब मौजूद नहीं थीं, वह कमरा पूरी तरह से खाली था।

वेगा उस कमरे को हैरानी से देखने लगा।

तभी ऑस्कर ने कमरे में मौजूद एक बटन को प्रेस कर दिया, उस बटन को प्रेस करते ही हवा में एक किताबों का एक समूह नजर आने लगा, जो कि हवा में पूरे कमरे में नाच रहा था।

“अब आप इनमें से कोई भी किताब सेलेक्ट कर सकते हैं छोटे मास्टर।” ऑस्कर ने वेगा से कहा।

वेगा अब उन किताबों के समूह को घूम-घूम कर देखने लगा, तभी वेगा की निगाह एक किताब पर पड़ी, जिस पर 2 आँखें बनीं हुईं थीं।

उस किताब का नाम था- ‘सम्मोहनास्त्र’।

वेगा ने उस किताब को हवा से निकाल लिया।

वेगा के उस किताब को निकालते ही बाकी सारी किताबें गायब हो गईं।

“अच्छी पसंद है आपकी।” ऑस्कर ने वेगा की तारीफ करते हुए कहा।

वेगा ने अब किताब को खोलने की चेष्टा की, पर वह किताब को खोल नहीं पाया- “मिस्टर ऑस्कर, यह किताब खुल क्यों नहीं रही है?”

“क्योंकि अभी तक आपने इस किताब का मूल्य नहीं चुकाया है। इसीलिये यह किताब खुल नहीं रही है।” ऑस्कर ने अपने कंधे उचकाते हुए कहा।

“मूल्य? .... पर मेरे पास तो इस समय इसका मूल्य चुकाने के लिये धन है ही नहीं।” वेगा ने अफसोस प्रकट करते हुए कहा- “पर आप कहोगे तो मैं बाबा से कह कर, आपको बहुत सारा धन दिला दूंगा।”

“इस पुस्तक की कीमत धन नहीं है छोटे मास्टर ... स्वप्नतरु में धन का क्या काम? इस किताब की कीमत एक वचन है .... कोई भी वचन जो तुम मुझे देना चाहो?” ऑस्कर के चेहरे पर यह कहते हुए मुस्कान बिखर गई।

“वचन! ... बहुत अजीब सी कीमत है इस किताब की।” वेगा ने सोचते हुए कहा- “अच्छा ठीक है .... मैं आपको वचन देता हूं कि मैं कभी भविष्य में, इस किताब से सीखने वाली कला का राज, किसी को नहीं बताऊंगा।”

“बहुत अच्छे .... मैं यह वचन स्वीकार करता हूं।” ऑस्कर ने खुश होते हुए कहा- “अब तुम इस किताब को पढ़ सकते हो .... पर ये ध्यान रहे वेगा कि जिस दिन तुम इस वचन को तोड़ोगे, तुम इस किताब सहित, इस स्वप्नतरु की सभी स्मृतियों को भूल जाओगे।”

यह कहकर ऑस्कर उस कमरे से बाहर निकल गया।

अब वेगा ने उस किताब का पहला पन्ना खोल दिया, पहले पन्ने पर सफेद दाढ़ी वाले जादूगर सरीखे, एक बूढ़े का चित्र बना था, जिसके हाथ में एक जादू की छड़ी थी।

जैसे ही वेगा ने उस चित्र को छुआ, वह बूढ़ा उस चित्र से निकलकर बाहर आ गया।

“हां वेगा, क्या तुम सम्मोहन को सीखने के लिये तैयार हो?” बूढ़े ने कहा।

“आप कौन हो और मेरा नाम कैसे जानते हो?” वेगा ने उस बूढ़े से पूछा।

“मैं ही तो हूं महावृक्ष।” बूढ़े ने कहा- “तुम मेरे ही स्वप्नतरु में तो मौजूद हो। चलो अब देर मत करो और किताब को छोड़कर मेरे सामने आ जाओ।”

वेगा महावृक्ष का यह रुप देखकर हैरान हो गया, पर वह उनका आदेश मान उनके सामने पहुंच गया।

“देखो वेगा, सम्मोहन के द्वारा हम किसी भी व्यक्ति के मन की बात को जान सकते हैं और उससे कोई भी कार्य करा सकते हैं। सम्मोहन को 3 तरह से किया जा सकता है .... आँखों के द्वारा, आवाज के माध्यम से और किसी को छूकर। यह हमारी विद्या पर निर्भर करता है कि हम किसी व्यक्ति को कितनी देर तक सम्मोहित कर सकते हैं। सम्मोहन के दौरान उस व्यक्ति के मस्तिष्क का नियंत्रण, तुम्हारे हाथ में आ जायेगा, तुम उसके मस्तिष्क में झांककर, कोई भी बीती घटना को देख सकते हो, उसके विचारों को पढ़ सकते हो, यहां तक कि उसकी स्मृतियों में बदलाव भी कर सकते हो। जब सम्मोहन समाप्त होगा, तो उसे यह नहीं पता चलेगा कि कोई उसके मस्तिष्क में था, उसे वह नये विचार स्वयं के प्रतीत होंगे। तो क्या अब तुम तैयार हो सम्मोहन को सीखने के लिये?”

“क्या यह सम्मोहन सिर्फ मनुष्यों पर किया जा सकता है?” वेगा ने पूछा।

“हां, शुरु में यह प्रयोग तुम सिर्फ मनुष्यों पर ही कर सकते हो ... पर धीरे-धीरे तुम्हारी शक्तियां बढ़ती जायेंगी और फिर एक दिन तुम किसी भी जीवित प्राणी को सम्मोहित कर सकोगे।” महावृक्ष ने कहा।

“ठीक है, अब मैं तैयार हूं, सम्मोहन सीखने के लिये।”

वेगा के यह कहते ही महावृक्ष ने वेगा को सम्मोहन विद्या सिखाना शुरु कर दिया।

वेगा को पूर्ण सम्मोहन सीखने में, स्वप्नतरु के समय के हिसाब से 3 दिन का समय लगा।

आखिरकार वेगा पूरी तरह से सम्मोहन में पारंगत हो गया।

“अब तुम पूरी तरह से सम्मोहन की तीनो विधाओं में पारंगत हो चुके हो वेगा।” महावृक्ष ने कहा- “अब तुम इस दुनिया से, वापस अपनी दुनिया में लौट जाओ।”

“जो आज्ञा महावृक्ष।” यह कहकर वेगा, किताब घर से बाहर निकलकर टोबो के पास आ गया।

“मुझे ज्यादा देर तो नहीं हुई मिस्टर टोबो?” वेगा ने टोबो से कहा।

“नहीं-नहीं ... यह तो काफी कम समय था।” टोबो ने कहा- “चलिये मैं आपको वापस ले चलता हूं।”

यह कहकर टोबो ने वेगा को फिर से घोड़ागाड़ी पर बैठाया और वापस उसी रास्ते पर चल दिया, जिधर से आया था।

कुछ ही देर में टोबो ने वेगा को उसी जुगनू वाले स्थान पर छोड़ दिया।

“अब यहां से तुम्हें स्वयं वापस जाना होगा वेगा।” यह कहकर टोबो ने विदाई के अंदाज में वेगा को हाथ हिलाया और घोड़ागाड़ी लेकर एक दिशा की ओर चला गया।

वेगा जुगनुओं की रोशनी में वापस महावृक्ष की उसी कोटर के पास पहुंच गया, जहां से उसने यह यात्रा शुरु की थी।

कोटर का द्वार इस समय खुला हुआ था, वेगा ने डरते-डरते बाहर अपने कदम निकाले।

उसे लग रहा था कि बाहर बाबा और युगाका उसे 3 दिन से ढूंढ रहे होंगे।

पर जैसे ही वेगा बाहर निकला, उसे युगाका ने पकड़ लिया- “अरे बुद्धू, तू तो अभी तक छिप ही नहीं पाया, मैंने तो अपनी गिनती पूरी भी कर ली। .... चल रहने दे ... तेरे बस का यह खेल भी नहीं है। चल कुछ और खेलते हैं।”

यह कह युगाका, वेगा का हाथ पकड़ उसे एक दिशा की ओर लेकर चल दिया।

पर वेगा इस समय स्वप्नतरु के समयजाल में उलझा था क्योंकि स्वप्नतरु का 3 दिन बाहर के 3 मिनट से भी कम था।

बहरहाल जो भी हो वेगा अपने इस नये ज्ञान से खुश था।

युगाका, वेगा को महावृक्ष की छांव में लाकर, दौड़ -दौड़ कर पकड़ने वाला खेल खेलने लगा।

धीरे-धीरे वेगा को भी इस खेल में मजा आने लगा।

तभी दौड़ते समय एकाएक युगाका का पैर एक छोटे से वृक्ष से उलझ गया, जिसकी वजह से युगाका लड़खड़ा कर गिर गया।

तेज से गिरने की वजह से युगाका के एक हाथ की कोहनी छिल गई और उससे खून बहने लगा, यह देख युगाका गुस्से से उठा और उसने 2 पत्थरों की मदद से आग जलाकर, उस पेड़ को आग लगा दी।

“मुझे गिरायेगा ... अब देख तू कैसे जलेगा।” युगाका गुस्से में चिल्ला रहा था।

थोड़ी देर सुलगने के बाद अब वह छोटा पेड़ धू-धू कर जलने लगा।

“यह आपने क्या किया भाई? आपको तो थोड़ी सी ही चोट लगी थी, पर आपने तो पूरा पेड़ ही जला दिया ... उस पेड़ ने आपको जानबूझकर थोड़ी ना गिराया था, वह अपने स्थान पर लगा था, आपने ही उसे देखा नहीं ..... ये आपने सही नहीं किया भाई।” वेगा अपने भाई के इस कृत्य से बहुत नाराज हो गया।

पर युगाका अभी भी हंसते हुए उस पेड़ को देख रहा था।

तभी महावृक्ष की शाखाएं अपने आप हिलनें लगीं और इसी के साथ युगाका के मुंह से चीख निकल गई।

“आह बचाओ वेगा, मेरा शरीर जल रहा है।” युगाका ने दर्द भरी आवाज में वेगा को पुकारा।

वेगा, युगाका को चीखते देख घबरा गया। उसने बहुत ध्यान से युगाका के शरीर को देखा।

युगाका के शरीर पर आग कहीं दिखाई नहीं दे रही थी, पर जलने के निशान युगाका के शरीर पर स्पष्ट दिख रहे थे।

“यह कैसा चमत्कार है? युगाका का शरीर अपने आप कैसे जल रहा है?” वेगा मन ही मन बड़बड़ाया।

तभी वेगा की नजर उस जलते हुए पेड़ पर पड़ी, इसके बाद वेगा को महावृक्ष की शाखाएं हिलती हुईं दिखाई दीं।

एक पल में वेगा को समझ में आ गया कि युगाका को यह सजा महावृक्ष ने दी है।

“भाई ... महावृक्ष से क्षमा मांग लो, वो तुम्हें ठीक कर देंगे। उन्होंने ही तुम्हें इस पेड़ को आग लगाने की सजा दी है।” वेगा ने चीखते हुए युगाका से कहा।

वेगा की बात सुन युगाका चीखते हुए महावृक्ष के पास आकर बैठ गया।

युगाका ने महावृक्ष के सामने अपने हाथ जोड़े और गिड़गिड़ा कर कहा- "मुझे क्षमा कर दीजिये महावृक्ष, मुझसे अंजाने में ही गलती हो गई .... मेरे शरीर की जलन को खत्म करिये महावृक्ष, नहीं तो मैं इस जलन से मर जाऊंगा।"

तभी वातावरण में महावृक्ष की आवाज गूंजी- "युगाका, तुम्हें सबसे पहले ये समझना होगा कि वृक्षों में भी जान होती है, वह भी तुम्हारी तरह महसूस करते हैं ... उन्हें भी दर्द होता है। क्या तुम्हें पता है? कि अगर वृक्ष पृथ्वी पर ना होते, तो पृथ्वी पर जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। आज भी आकाशगंगा में जितने ग्रह उजाड़ पड़े हैं या जहां पर जीवन नहीं है, वह सभी वृक्षों के कारण है। ब्रह्मांड के हर जीव को जीने के लिये वृक्ष की जरुरत होती है। पृथ्वी का सारा ऑक्सीजन वृक्षों के कारण ही है, इसलिये जब तुमने उस छोटे से वृक्ष को जलाया तो मैंने सिर्फ उस वृक्ष की ऊर्जा को तुम्हारे शरीर के साथ जोड़ दिया, अब जितना दर्द उसे वृक्ष को होगा, उतना ही दर्द तुम स्वयं के शरीर पर भी महसूस करोगे।"

यह सुनकर युगाका ने तुरंत वहां रखी पानी से भरी एक मटकी का सारा पानी उस पेड़ पर डाल दिया।

ऐसा करते ही उस पेड़ पर लगी आग बुझ गई और इसी के साथ युगाका के शरीर की जलन भी खत्म हो गई।

युगाका अब महावृक्ष के कहे शब्दों का सार समझ गया था।

वह एक बार फिर महावृक्ष के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया- "हे महावृक्ष मैं आपके कथनों को भली-भांति समझ गया। अब मैं कभी भी वृक्षों को हानि नहीं पहुंचाऊंगा, बल्कि आज और अभी से ही मैं सभी वृक्षों को, अपने दोस्त के समान समझूंगा और उनकी सुरक्षा करुंगा। मैं ये आपको वचन देता हूं।"

"बहुत अच्छे युगाका, अच्छा हुआ कि तुमने स्वयं मेरे कथन का अभिप्राय समझ लिया। मैं आज से तुम्हें वृक्षशक्ति प्रदान करता हूं .... इस वृक्षशक्ति के माध्यम से तुम सभी वृक्षों के दर्द को समझ सकोगे, उनसे बातें कर सकोगे और उन्हें एक दोस्त की भांति महसूस कर सकोगे। पर अपने वचन का ध्यान रखना, अगर तुमने अपना वचन तोड़ा तो यह वृक्ष शक्ति भी तुम्हारे पास से चली जायेगी।"

इसी के साथ महावृक्ष के शरीर से हल्के हरे रंग की किरणें निकलीं और युगाका के शरीर में समा गईं।

युगाका अब महावृक्ष के सामने से उठा और उस नन्हें पेड़ के पास पहुंच गया।

युगाका ने उस नन्हें पेड़ को उठाया और अपने हाथ से जमीन में एक गड्ढा कर, उस पेड़ की जड़ों को गड्ढे में डालकर उसे फिर से रोपित कर दिया।

इसके बाद युगाका ने मटकी में बचे हुए जरा से पानी को उस पेड़ की जड़ में डाल दिया। अब वह पेड़ और युगाका दोनों ही बेहतर महसूस कर रहे थे।

इसी के साथ युगाका के शरीर पर जलने के निशान भी गायब हो गये।

युगाका ने पेड़ को धीरे से सहलाया और उठकर खड़ा हो गया।

तभी कलाट वहां पहुंच गया- “चलो बच्चों, तुम्हारा समय अब पूरा हो गया। उम्मीद करता हूं कि तुमने महावृक्ष से कुछ अच्छा अवश्य सीखा होगा।”

“मैंने तो बहुत कुछ सीखा, पर यह वेगा बस दिन भर खेलता रहा, इसने कुछ नहीं सीखा बाबा।” युगाका ने कलाट से वेगा की शिकायत करते हुए कहा।

“कोई बात नहीं युगाका, कभी-कभी किसी-किसी की सीखी चीजें दिखाई नहीं देतीं, वह बस जिंदगी में सही समय पर काम आतीं हैं।” कलाट के शब्दों का गूढ़ अर्थ था, जिसे युगाका तो नहीं समझ पाया, पर उन शब्दों को वेगा ने महसूस कर लिया था।

अब कलाट ने महावृक्ष को प्रणाम किया और दोनों बच्चों को वहां से लेकर महल की ओर चल दिया।

“बाबा, क्या आप भी अपने बचपन में ऐसे ही महावृक्ष के पास सीखने आये थे?” वेगा ने चलते-चलते कलाट से पूछा।

“हां बेटा, ये महावृक्ष हमारी सभी शक्तियों के स्रोत हैं। हम सभी ने इनसे कुछ ना कुछ सीखा है।” कलाट ने कहा।

“बाबा, आपने बचपन में इनसे क्या सीखा था?” वेगा ने कलाट से पूछा।

“उम्मीद करता हूं कि तुम वचन की कीमत आज समझ गये होगे।” यह कहकर कलाट ने घोड़ों का रथ आगे बढ़ा दिया।

पर कलाट की यह बात वेगा को स्वप्नतरु की याद दिला दी, उसने जाते हुए एक बार पलटकर महावृक्ष को देखा और फिर सम्मोहनास्त्र की यादों में खो गया।

◆ ◆ ◆

चैपटर-7

चींटीयों का संसार-2

तिलिस्मा 3.12

सुयश के जोश दिलाने के बाद शैफाली फिर से एक नये तरीके से समस्या को समझने की कोशिश करने लगी।

काफी देर सोचने के बाद अचानक शैफाली खड़ी हुई और दूसरे कंटेनर में जा घुसी।

शैफाली ने अब वहां पड़ी, लाल रंग की गेंद को हाथ में उठाकर देखा, वह काफी चिपचिपी थी। शैफाली एक लाल रंग की गेंद लेकर बाहर आ गई।

“ऐलेक्स भैया लीफ कटर चींटीयों को पानी से वापस बुला लो।” शैफाली ने कहा।

ऐलेक्स ने शैफाली की बात सुन कोई सवाल नहीं किया और सभी लीफ कटर चींटीयों को वापस वहां बुला लिया।

शैफाली ने एक लीफ कटर चींटी के सामने उस लाल रंग की गेंद को रखा।

उस लीफ कटर चींटी ने लाल रंग की गेंद को तुरंत उठा लिया, पर उसने उस गेंद का कुछ किया नहीं। यह देख शैफाली की आँखों की चमक बढ़ गई।

“कैप्टेन अंकल, सभी लाल रंग की गेंदो को आप लोग लीफ कटर चींटीयों को दे दीजिये, फिर मैं आगे बताती हूं।” शैफाली ने कहा।

शैफाली के कहे अनुसार सभी लाल गेंदों को लीफ कटर चींटीयों को दे दिया गया।

यह देख शैफाली ने ऐलेक्स को पुनः सभी लीफ कटर चींटीयों को नदी में मौजूद चाबी के पास भेजने को कहा।

ऐलेक्स ने रिमोट के द्वारा सभी लीफ कटर चींटीयों को वापस नदी में भेज दिया।

सभी चींटीयां धीरे-धीरे आगे बढ़ रहीं थीं, परंतु जैसे ही वह सभी चींटीयां नदी वाली चाबी के पास पहुंची, आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी ने फिर से, उन सभी पर आक्रमण कर दिया।

यह देख शैफाली ने ऐलेक्स को रिमोट पर लगा नीला बटन दबाने को कहा।

ऐलेक्स ने जैसे ही नीला बटन दबाया, हर लीफ कटर चींटी ने, अपने मुंह में पकड़ी लाल रंग की गेंद को, आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी के शरीर पर चिपकाने लगी।

कुछ ही देर में आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी पूरी तरह से लाल रंग की गेंद से ढक गई। अब वह ऐसे छटपटा रही थी, जैसे कि उसे साँस ही ना मिल रही हो।

कुछ ही देर में आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी का शरीर शिथिल पड़ गया।

यह देखकर लीफ कटर चींटीयों ने नदी में मौजूद चाबी को उठाया और वापस नदी से बाहर आ गईं।

शैफाली ने नदी वाली चाबी को लीफ कटर चींटीयों से ले लिया।

“दूसरी चाबी तो मिल गई, पर यह बताओ शैफाली की तुमने कैसे जाना कि आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी इस लाल रंग की गेंद से मारी जायेगी?” सुयश ने मुस्कुराते हुए शैफाली से पूछा।

“कैप्टेन अंकल, आपको पता नहीं होगा, पर चींटीयों के अंदर साँस लेने के लिये फेफड़े नहीं पाये जाते, इनके शरीर पर बहुत से छोटे-छोटे छिद्र होतें हैं, सभी चींटीयां उसी छिद्र से ही साँस लेती हैं। इसी विशेषता के कारण चींटीयां पूरा दिन पानी के अंदर रह सकती हैं। अब मैंने बहुत सोचा कि पानी के अंदर आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी को कैसे मारा जाये, तभी मुझे उस लाल रंग की चिपचिपी गेंद का ख्याल आया। एक तो उस लाल गेंद का अभी तक कोई प्रयोग भी नहीं हुआ था, इसलिये मुझे लगा कि अगर सभी लीफ कटर चींटीयां, उस लाल रंग की गेंद को आस्ट्रेलियन बुलडॉग चींटी के शरीर पर चिपका दें तो वह साँस नहीं ले पायेगी और मारी जायेगी।”

शैफाली की बात सुन सभी प्रभावित हो गये।

अब शैफाली ने इस चाबी को भी द्वार में लगाकर घुमा दिया।

दरवाजे का एक खटका और घूम गया।

उधर सभी लीफ कटर चींटीयां अपना कार्य खत्म करके पिघलने लगीं।

कुछ ही देर में वहां पर, अब एक नीले रंग का द्रव दिखाई दे रहा था, यह देख शैफाली की आँखें थोड़ी सिकुड़ सी गईं, पर उसने किसी से कुछ कहा नहीं।

“कैप्टेन, अब इस रिमोट से नीला बटन भी गायब हो गया है और उसकी जगह पर काले रंग का एक बटन दिखाई दे रहा है।” ऐलेक्स ने सुयश से कहा।

“तौफीक जरा देखना तीसरे कंटेनर में फिर से नयी चींटीयां आ गईं हैं क्या?” सुयश ने तौफीक से कहा।

तौफीक ने तीसरे कंटेनर में झांक कर देखा और फिर बोल उठा- “हां कैप्टेन .... इस बार काले रंग की चींटी हैं। पर यह एक ही है और इसके पंख भी हैं।”

तौफीक की बात सुन शैफाली ने भी कंटेनर में झांक कर देखा।

“यह नर चींटी हैं।” शैफाली ने फिर सबको बताते हुए कहा- “रानी चींटीयों के अलावा सिर्फ नर चींटी के ही पंख पाये जाते हैं।”

“इसका मतलब इस बार तीसरी चाबी कहीं हवा में है।” यह कहकर सुयश, सिर उठाकर आसमान की ओर देखने लगा।

आसमान तो नार्मल था, पर आसमान में मौजूद एक सफेद रंग का बादल अपनी जगह पर स्थिर था।

“मुझे लगता है कि तीसरी चाबी उस बादल में है?” सुयश ने बादल की ओर इशारा करते हुए कहा- “क्योंकि आसमान में और कुछ भी ऐसा नहीं है, जिसमें चाबी मौजूद हो और वह बादल बिल्कुल भी हिल नहीं रहा है। ऐलेक्स तुम इस नर चींटी को उस बादल में भेजकर देखो।”

सुयश की बात सुन तौफीक ने नीली रंग की गेंद को खिलाकर नर चींटी को सक्रिय कर दिया।

ऐलेक्स ने नर चींटी को आसमान में उड़ा दिया।

अब सबकी निगाह उस रिमोट की स्क्रीन पर थी।

ऐलेक्स ने सावधानीवश नर चींटी को अभी बादल पर नहीं उतारा, वह पहले एक बार बादल को चेक करना चाहता था।

ऐलेक्स को बादलों के बीच में एक पत्थर के टुकड़े पर रखी चाबी दिखाई दी, पर उसके आस-पास कोई भी खतरा नजर नहीं आया।

यह देख ऐलेक्स ने रिमोट पर मौजूद काला बटन दबा दिया, बटन के दबाते ही नर चींटी ने उड़ते हुए चाबी को उठा लिया और नीचे आकर ऐलेक्स के हवाले कर दिया।

“अरे वाह, यह चाबी तो बहुत आसानी से मिल गई, मुझे तो लगा था कि बादलों के ऊपर कोई बड़ा खतरा होगा?” जेनिथ ने मुस्कुराते हुए कहा।

सभी चाबी लेकर एक बार फिर द्वार की ओर बढ़ गये, पर किसी की नजर उस बादल से कूदने वाली एक बड़ी सी चींटी की ओर नहीं गई।

वह चींटी आकार में 10 फुट की थी। वह चींटी धीरे-धीरे सभी के पीछे बढने लगी।

ऐलेक्स ने तीसरी चाबी को जैसे ही द्वार में फंसाने की कोशिश की, तभी पीछे से आ रही चींटी ने तेजी से सबसे पीछे मौजूद क्रिस्टी के पैर में काट लिया।

चींटी ने क्रिस्टी को इतना तेजी से काटा कि क्रिस्टी के मुंह से चीख निकल गई।

क्रिस्टी की चीख सुन सभी पीछे पलट कर देखने लगे।

सभी की निगाह पीछे जमीन पर गिरकर तड़पती क्रिस्टी पर पड़ी। सुयश की नजर तेजी से चारो ओर घूमी, अब उसे क्रिस्टी के पीछे खड़ी, वह विशाल चींटी दिखाई दे गई।

“माई गॉड, ये तो बुलेट चींटी है।” शैफाली ने उस चींटी को देखते हुए कहा- “इसका डंक विश्व में सबसे ज्यादा दर्दनाक होता है, यह तो अगर टैरेन्टूला मकड़ी को भी काट ले, तो उसे भी पैरालाइज हो जाता है। इससे सभी को बचना होगा।”

ऐलेक्स ने तुरंत तीसरी चाबी को अपनी जेब के हवाले कर, मकड़ी की बिना परवाह किये भागकर, क्रिस्टी के पास पहुंच गया और क्रिस्टी का सिर अपनी गोद में रखकर, उसके पैर को अपनी टी शर्ट से कसकर बांध दिया।

क्रिस्टी का तड़पना अभी भी जारी था।

तौफीक ने अब पास पड़ा भाला उठा लिया और उस चींटी के सामने इस प्रकार खड़ा हो गया कि चींटी ऐलेक्स तक ना पहुंच पाये।

जेनिथ और शैफाली भी क्रिस्टी के पास पहुंच गईं और उसकी हिम्मत बढ़ाने लगीं।

तभी ऐलेक्स ने धीरे से क्रिस्टी का सिर जेनिथ की गोद में रखा और गुस्से से खड़ा होकर बुलेट चींटी को घूरने लगा।

तभी ऐलेक्स की नजर उस नर चींटी पर पड़ी, जो कि अभी भी वहीं उड़ रही थी।

एक पल के लिये ऐलेक्स ने इधर-उधर देखा। अब ऐलेक्स की नजर उस पहले वाले बंद कंटेनर पर गई।

ऐलेक्स जानता था कि चींटी अपने भार से 50 गुना से भी ज्यादा वनज उठा सकती है।

अब उसने रिमोट से नर चींटी को नियंत्रित करते हुए, उससे वह भारी सा कंटेनर उठवा लिया।

उधर तौफीक लगातार भाले से बुलेट चींटी को सभी से दूर रखे था।

तभी बुलेट चींटी ने अपने क्रिटर्स से भाले को पकड़ दूर फेंक दिया, अब वह खूनी नजरों से घूरती हुई तौफीक की ओर बढ़ने लगी।

तौफीक ने अब अपने पास रखा चाकू निकाल लिया था, पर जब इतने नुकीले भाले से बुलेट चींटी का कुछ नहीं हुआ तो भला वह छोटा सा चाकू क्या करता?

इस समय बुलेट चींटी का पूरा ध्यान तौफीक की ओर था, तभी ऐलेक्स ने मौके का फायदा उठा करके नर चींटी के द्वारा पकड़ा, भारी कंटेनर उस बुलेट चींटी के ऊपर गिरा दिया।

बुलेट चींटी उस भारी भरकम कंटेनर के नीचे बुरी तरह से दबकर मर गई। उसके शरीर से निकला हल्के पीले रंग का द्रव उस पूरी जगह पर फैल गया।

आखिरकार ऐलेक्स ने क्रिस्टी का बदला ले लिया।

बुलेट चींटी के मरते ही नर चींटी के साथ वह रिमोट भी ऐलेक्स के हाथ से गायब हो गया। शायद दोनों का ही काम अब पूरा हो गया था।

ऐलेक्स अब भागकर वापस क्रिस्टी के पास आ गया।

ऐलेक्स की आँखों से अब आँसू निकल रहे थे। यह देख क्रिस्टी ने कैसे भी करके अपने दर्द पर काबू पाते हुए कहा- "अरे पगले .... दर्द तो मुझे हो रहा है, तू क्यों रो रहा है?"

"तुम मुझे ऐसे छोड़कर नहीं जा सकती क्रिस्टी।" ऐलेक्स ने क्रिस्टी के चेहरे को अपने दोनों हाथों से छूते हुए कहा।

अब क्रिस्टी की भी आँखों से आँसू निकलने लगे थे।

शैफाली इस मर्मस्पर्शी दृश्य को देख नहीं पा रही थी, इसलिये वह वहां से उठकर कुछ दूर आ गई।

अब शैफाली की भी आँखों से क्रिस्टी के लिये आँसू बह निकले। उसे पता था कि क्रिस्टी अब नहीं बचेगी, क्योंकि उनके पास मौजूद फर्स्ट एड बॉक्स की दवाइयां भी खत्म हो गईं थीं।

तभी शैफाली की नजर उस ओर गई, जहां लीफ कटर चींटी पिघल गईं थीं।

उसे देख अचानक शैफाली को कुछ याद आया।

वह भागकर उस स्थान पर पहुंच गई। उस स्थान पर लीफ कटर चींटी के मरने के बाद नीले रंग का द्रव बिखरा हुआ था।

शैफाली ने अपनी दोनों अंजुली को एक कर उसमें वह नीला द्रव जितना भर सकता था, भर लिया और भागकर वह क्रिस्टी के पास पहुंच गई।

"अब तुम्हें कुछ नहीं होगा क्रिस्टी दीदी।" शैफाली ने यह कहकर क्रिस्टी के पैर में उस जगह वह पूरा द्रव लगा दिया, जिस जगह बुलेट चींटी ने क्रिस्टी को काटा था।

सभी आश्चर्य से शैफाली की ओर देखने लगे।

"यह लीफ कटर चींटी के शरीर में पाया जाने वाला 'एंटीबायोटिक' है, यह हर प्रकार के जहर को काटने में सक्षम है, शायद इसी वजह से लीफ कटर चींटीयों का काम खत्म हो जाने के बाद भी, वह गायब ना होकर पिघल गईं थीं। अब क्रिस्टी दीदी कुछ ही देर में सही हो जायेंगी।" शैफाली ने सभी को समझाते हुए कहा।

यह सुनकर ऐलेक्स ने शैफाली को गले से लगा लिया। यह बहुत ही भावनात्मक अंदाज था ऐलेक्स का।

थोड़ी ही देर में क्रिस्टी के शरीर का पूरा दर्द खत्म हो गया और वह उठकर बैठ गई।

“अब सबकुछ सही हो गया हो, तो कोई जरा उस तीसरी चाबी को भी द्वार में फिट कर दो।” सुयश ने मुस्कुराते हुए कहा।

ऐलेक्स ने अपनी जेब में रखी तीसरी चाबी को द्वार में फंसाकर घुमा दिया। तीसरी चाबी भी द्वार में फिट हो गई।

चाबी के फिट होते ही पुनः एक जोर की गड़गड़ाहट हुई, पर यह गड़गड़ाहट थी रानी चींटी के जिंदा होने की।

रानी चींटी को जिंदा होते देख सभी की साँस फूल गई।

“बेड़ा गर्क .... बुलेट चींटी ने ही इतना हंगामा कर दिया था और अब तो ये भी जाग गई, अब भगवान जाने क्या होगा?” ऐलेक्स ने रानी चींटी को घूरते हुए कहा।

“कुछ नहीं होगा ... आप लोग परेशान मत होइये।” शैफाली ने सभी को जोश दिलाते हुए कहा- “चींटीयों को दिखाई नहीं देता, वह सिर्फ अपने से 2 फुट तक की दूरी को महसूस कर सकती हैं, इस रानी चींटी का आकार साधारण चींटी से काफी बड़ा है, मतलब ये ज्यादा से ज्यादा 10 से 15 फुट तक ही महसूस कर सकती होगी। इसलिये सब लोग अलग-अलग होकर इससे दूर रहने की कोशिश करो, तब तक मैं इसका कोई उपाय सोचती हूं।”

तभी रानी चींटी ने अपने पंख फड़फड़ाये और एक जोर की उड़ान भरी।

“शैफाली लगता है कि तुम इसके उड़ने की क्षमता को भूल गई।” जेनिथ ने शैफाली से कहा- “उड़कर तो यह हमको कहीं से भी ढूंढ लेगी।”

“रुको पहले मैं इसके उड़ने की क्षमता का खत्म करता हूं।” यह कहकर तौफीक ने अपने हाथ में थमा भाला जोर से हवा में उछाला।

भाला रानी चींटी के पंखों को भेदता हुआ दूर जा गिरा और इसी के साथ रानी चींटी के दोनों पंख उसके शरीर से अलग हो गए।

“वाह! क्या बात है। मजा आ गया।” ऐलक्स ने तौफीक का निशाना देख, एक उत्साह भरी आवाज निकाली।

रानी चींटी अब जमीन पर आ गिरी थी और वह अब बहुत ज्यादा हिंसक नजर आ रही थी।

यह देख सभी रानी चींटी से दूरी बनाते हुए अलग-अलग दिशा में बिखर गये।

तौफीक धीरे-धीरे चलता हुआ वापस भाले तक जा पहुंचा और भाले से रानी चींटी के पंखों को अलग कर, दबे पाँव रानी चींटी की ओर बढ़ने लगा।

पर अभी तौफीक रानी चींटी से काफी दूर ही था कि तभी रानी चींटी को तौफीक की आहट लग गई और वह तेजी से उस दिशा में आगे बढ़कर तौफीक की ओर झपटी।

तौफीक ने किसी तरह से स्वयं को बचाया और रानी चींटी पर भाले का वार कर दिया, परंतु उस भाले का रानी चींटी पर कोई असर नहीं हुआ।

“तौफीक अंकल रानी चींटी से दूर रहिये।” शैफाली ने चीखकर तौफीक को चेतावनी दी- “एक तो उस की ऊपरी सतह पर भाले का कोई असर नहीं हो रहा और वह बहुत ज्यादा दूरी से आपको सूंघ ले रही है। ऐसे में आप उसे नहीं मार पायेंगे।”

शैफाली की बात सुनकर तौफीक रानी चींटी से दूर हट गया।

शैफाली की निगाह फिर से चारों ओर घूमी। अब उसकी निगाहें उस जगह जाकर रुकीं, जहां बुलेट चींटी मरी थी।

बुलेट चींटी के मरने के बाद, उससे निकला हल्के पीले रंग का द्रव अब भी वहां बिखरा हुआ था।

यह देख शैफाली ने चीखकर सुयश से कहा- “कैप्टेन अंकल इस रानी चींटी को मारने का तरीका तो मिल गया, पर वह तरीका बहुत ही खतरनाक है।”

“तुम तरीका बताओ शैफाली, हम देखते हैं कि उसे कैसे करना है?” सुयश ने भी रानी चींटी से बचते हुए चीखकर कहा।

“चींटीयों के मरने के बाद उनके शरीर से ‘ओलिक एसिड’ निकलता है। जिसे सूंघकर दूसरी चींटीयां जान जाती हैं कि वह चींटी मर गई। अब अगर यह ओलिक एसिड किसी जिन्दा चींटी पर भी गिर जाये तो सभी चींटीयां उसे भी मरा समझ लेती हैं। अब आते हैं इस रानी चींटी पर .... इसके शरीर की ऊपरी त्वचा बहुत ज्यादा कठोर है, इसलिये भाले का उस

पर कोई असर नहीं हो रहा। तो अगर कोई इसके शरीर के नीचे से इस पर भाले का प्रहार करे, तो यह अवश्य ही मर जायेगी, अब साधारण परिस्थितियों में इसके शरीर के निचले भाग के पास पहुंचना बहुत मुश्किल है, पर अगर हममें से कोई उस बुलेट चींटी के शरीर से निकले द्रव को अपने शरीर पर लगा ले, तो रानी चींटी उसे भी मरा समझेगी और उसे कुछ नहीं कहेगी, ऐसी स्थिति में वह इंसान रानी चींटी के शरीर के निचले हिस्से पर वार कर सकेगा।”

शैफाली का प्लान बहुत अच्छा था, पर सुयश अब किसी और को खतरे में नहीं डालना चाहता था, इसलिये इस काम को उसने स्वयं करने के लिये कहा।

अब पहले सभी ने रानी चींटी का ध्यान अपनी ओर किया, जिससे सुयश ने बुलेट चींटी के शरीर से निकले द्रव को अपने शरीर पर, पूरी तरह से लगा लिया और अपने हाथ में भाले को लेकर वहीं जमीन पर लेट गया।

अब तौफीक ने रानी चींटी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर सुयश की ओर तेजी से भागा।

रानी चींटी सुयश की ओर बढ़ी। सभी के दिल तेजी से धड़क रहे थे।

रानी चींटी ने पास पहुंचकर सुयश के शरीर को सूंघा, और फिर उसे छोड़कर जैसे ही आगे बढ़ने चली, सुयश ने अपनी पूरी ताकत से भाले को रानी चींटी के शरीर के निचले हिस्से में घुसाकर उसका पूरा पेट ही फाड़ दिया।

बहुत सारा गंदा द्रव सुयश के ऊपर आ गिरा।

रानी चींटी चिंघाड़ते हुए कुछ दूर जाकर गिर गई।

सुयश ने उठकर अपने कपड़ों को झटक कर साफ किया, तभी सुयश की निगाह सामने पड़ी, चौथी चाबी की ओर गई, जो कि रानी चींटी के पेट में थी और उसका पेट फट जाने की वजह से बाहर आकर गिर गई थी।

सुयश ने मुस्कुराकर सभी को चौथी चाबी दिखाई और आगे बढ़कर उस चाबी को भी द्वार में लगाकर घुमा दिया।

इस बार एक तेज गड़गड़ाहट के साथ तिलिस्मा का वह द्वार खुल गया।

सभी उस द्वार के अंदर प्रवेश कर गये।

बर्फ का गोला

16.01.02, बुधवार, 10:40, सनकिंग जहाज, अटलांटिक महासागर

सनकिंग वही जहाज था, जिस पर सुनहरी ढाल लेकर विल्मर यात्रा कर रहा था।

आकृति को सुर्वया के माध्यम से विल्मर की पूरी जानकारी मिल गई थी, इसलिये वह मकोटा के दिये नीलदंड की मदद से छिपकर सनकिंग पर आ गई थी।

आकृति चाहती तो तुरंत ही विल्मर के कमरे में घुसकर सुनहरी ढाल प्राप्त कर सकती थी, पर वह इतनी गलतियां कर चुकी थी, कि अब अपना कदम फूंक-फूक कर उठा रही थी।

आकृति को नहीं मालूम था कि विल्मर के पास यह सुनहरी ढाल आयी कहां से? क्योंकि सुर्वया बर्फ के नीचे, पानी के अंदर और हवा में रह रहे किसी भी जीव को नहीं ढूंढ सकती थी, इसलिये सुर्वया ने शलाका को विल्मर को सुनहरी ढाल देते हुए नहीं देखा था।

आकृति ने जहाज पर प्रवेश करते ही, एक अकेली लड़की क्राउली को नीलदंड की मदद से पक्षी बनाकर समुद्र में उड़ा दिया और उसी के कपड़े धारण कर वह जहाज में घूमने लगी।

यह जहाज बहुत बड़ा नहीं था, इसलिये आकृति को विल्मर को ढूंढने में ज्यादा मुश्किल नहीं आयी।

इस समय आकृति जहाज के रेस्टोरेंट में बैठी कॉफी का घूंट भर रही थी। विल्मर उससे कुछ दूरी पर एक दूसरी टेबल पर बैठा था।

आखिरकार आकृति अपनी टेबल से उठी और टहलती हुई विल्मर के पास जा पहुंची।

“क्या मैं यहां बैठ सकती हूं?” आकृति ने विल्मर की ओर देखते हुए पूछा।

विल्मर अपने सामने इतनी खूबसूरत लड़की को देख खुश होते हुए बोला- “हां-हां क्यों नहीं ....।”

आकृति विल्मर के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।

“मैं बहुत देर से आपके सामने बैठी आपको देख रही थी, मुझे आपका चेहरा कुछ जाना-पहचाना लगा, इसीलिये मैं आपसे पूछने चली आई। क्या हम पहले कहीं मिल चुके हैं?” आकृति ने विल्मर की आँखों में झांकते हुए कहा।

विल्मर ने आकृति को ध्यान से देखा और ना में सिर हिला दिया।

अगर शलाका ने विल्मर की स्मृतियां ना छीनी होतीं, तो विल्मर ने शलाका जैसे चेहरे वाली आकृति को, तुरंत पहचान लेना था, पर अभी उसे आकृति का चेहरा बिल्कुल ही अंजान लगा।

“ओह सॉरी, फिर तो मैं चलती हूं।” यह कहकर आकृति कुर्सी से उठने लगी, तभी विल्मर ने उसे रोकते हुए कहा- “इससे क्या फर्क पड़ता है कि मैं आपको नहीं जानता। अरे जान पहचान बनाने के लिये किसी को पहले से जानना जरुरी थोड़ी ना है ..... वैसे मेरा नाम विल्मर है।”

यह कहकर विल्मर ने अपना हाथ आकृति की ओर बढ़ा दिया, पर आकृति को विल्मर से हाथ मिलाने में कोई रुचि नहीं थी, इसलिये वह पहले के समान ही बैठी रही।

आकृति को हाथ ना मिलाते देख विल्मर ने अचकचाकर अपना हाथ पीछे कर लिया।

“मेरा नाम क्राउली है, मैं एक आर्कियोलॉजिस्ट हूं। मैं पुरानी से पुरानी चीज को देखकर, कार्बन डेटिंग के द्वारा किसी भी वस्तु का काल और उसकी कीमत का निर्धारण करती हूं।” आकृति ने अपना दाँव फेंकते हुए कहा।

आकृति की बात सुन विल्मर खुश हो गया, उसे ऐसे ही किसी इंसान की तो तलाश थी, जो कि उसकी सुनहरी ढाल का मूल्यांकन कर सके।

“ओह, आप तो बहुत अच्छा काम करती हैं मिस क्राउली।” विल्मर ने आकृति की ओर देखते हुए कहा- “सॉरी मैं बात करने में आपसे पूछना भूल गया। आप कुछ लेंगी क्या?”

“नहीं-नहीं, मैंने अभी कॉफी पी है और मुझे अभी किसी चीज की जरुरत नहीं है ... और वैसे भी मेरे मतलब की चीज इस जहाज पर कहां? मेरा मतलब है कि मेरी रुचि तो सिर्फ एंटीक चीजों में ही होती है। ... एक्चुली मैं अपने काम को इस समय बहुत मिस कर रहीं हूं।” आकृति ने फिर से विल्मर को फंसाते हुए कहा।

“मेरे पास आपके काम की एक चीज है .... क्या आप उसे देखना चाहेंगी?” विल्मर ने आकृति से पूछा।

“वाह! इससे अच्छा क्या हो सकता है। मैं जरुर देखना चाहूंगी।” आकृति खुश होते हुए अपनी सीट से खड़ी हो गई।

आकृति को तुरंत कुर्सी से खड़ा होता देख, विल्मर ने एक बार टेबल पर पड़े अपने आधे खाये हुए खाने को देखा और फिर वह उठकर वाश बेसिन की ओर बढ़ गया।

कुछ ही देर में विल्मर आकृति को लेकर अपने केबिन में पहुंच गया।

आकृति ने विल्मर के कमरे पर नजर मारी, पर उसे वह सुनहरी ढाल कहीं नजर नहीं आयी? आकृति कमरे में पड़ी एक सोफे पर बैठ गई।

तभी विल्मर ने दीवार पर लगी एक रंगीन पेंटिंग उतार ली, जो कि गोल आकार में थी और उभरी हुई थी।

आकृति ध्यान से उस पेटिंग को देखने लगी, तभी उसके आकार को देख आकृति को झटका लगा, यह वही सुनहरी ढाल थी, जिसे कि विल्मर ने चालाकी दिखाते हुए रंगों से पेंट कर दिया था।

विल्मर ने वह ढाल आकृति को पकड़ा दी।

“यह तो एक साधारण पेंटिंग है, जिसे शायद किसी ने अभी हाल में ही पेंट किया है, यह कोई एंटीक चीज नहीं है।” आकृति ने विल्मर को देखते हुए कहा।

तभी विल्मर ने आकृति के हाथ से वह ढाल ले, उस पर एक जगह कोई स्प्रे मार दिया, अब उस स्प्रे के नीचे से चमचमाती हुई सुनहरी ढाल नजर आने लगी थी।

“अब जरा देखिये।” विल्मर ने यह कहते हुए दोबारा से सुनहरी ढाल आकृति के हाथों में पकड़ा दी।

“यह तो काफी पौराणिक ढाल लग रही है, इसकी कीमत करोड़ों डॉलर है .... पर इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होने वाला।” आकृति ने कहा।

“क्यों? क्या मैं इसे एंटीक मार्केट में बेच नहीं सकता?” विल्मर ने सोचने वाले अंदाज में पूछा।

“नहीं .... क्योंकि यह तुम्हारे पास रहेगा नहीं।” यह कहते ही आकृति के हाथ में नीलदंड नजर आने लगा और इससे पहले कि विल्मर कुछ समझ पाता, नीलदंड से निकली किरणों ने, विल्मर को एक सीगल (समुद्री पक्षी) में बदल दिया।

इसी के साथ आकृति ने दरवाजा खोलकर सीगल को बाहर उड़ा दिया।

अब आकृति ने ढाल को अपने हाथ में उठाया और नीलदंड को सामने की ओर जोर से नचाया, पर नीलदंड उसी समय हवा में गायब हो गया।

“यह क्या नीलदंड कहां गया?” आकृति ने घबराकर दोबारा हाथ हिलाया, पर नीलदंड उसके हाथ में वापस नहीं आया।

अब आकृति पूरी तरह से घबरा गई- “ये क्या हुआ? क्या मकोटा ने अपना नीलदंड वापस ले लिया? .... क्या ... क्या वह मेरे बारे में सबकुछ जान गया? ... पर अगर नीलदंड चला गया तो मैं यहां से वापस अराका पर कैसे जाऊंगी? .... मेरे पास तो अभी इतनी शक्तियां भी नहीं है ... अब मैं क्या करुं? इस ढाल की तलवार भी सीनोर राज्य में ही है, उसके बिना मैं देवराज इंद्र से वरदान भी नहीं मांग सकती। और रोजर, मेलाइट और सुर्वया का क्या होगा? चलो सुर्वया तो जादुई दर्पण में बंद है, उसे कुछ नहीं होगा, पर रोजर और मेलाइट का क्या? .... रोजर तो मर भी जाये, तो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता ... पर अगर मेलाइट को कुछ हो गया, तो मैं कभी भी शलाका के चेहरे से मुक्ति नहीं पा पाऊंगी। .... और .... और ग्रीक देवता तो मुझे मार ही डालेंगे। .... मुझे कुछ भी करके और शक्तियां इकठ्ठा करके वापस अराका पर जाना ही होगा ... क्योंकि अब देवराज इंद्र का वरदान ही मुझे मेरे पुत्र के पास पहुंचा सकता है। ... पर ... पर पहले मुझे यहां से निकलना होगा। वैसे यह जहाज 7 से 8 घंटों के बाद न्यूयार्क पहुंच जायेगा। मुझे वहां पहुंचकर अपनी बची हुई शक्तियों के साथ, कुछ और ही प्लान करना होगा।”

यह सोच आकृति सुनहरी ढाल लेकर चुपचाप उस कमरे से निकल, क्राउली के कमरे की ओर बढ़ गई।

क्राउली के कमरे में पहुंच जैसे ही आकृति ने सुनहरी ढाल को बिस्तर पर रखा, तभी उसे बाहर से आती किसी शोर की आवाज सुनाई दी।

धड़कते दिल से आकृति केबिन के बाहर आ गई और उस ओर चल दी, जिधर से शोर की आवाज आ रही थी।

शोर की आवाजें डेक की ओर से आ रहीं थीं।

आकृति ने पास जाकर देखा, तो उसे जहाज के डेक पर 1 मीटर व्यास का एक बर्फ का गोला पड़ा दिखाई दिया।

उस गोले के पास एक छोटा सा जाल पड़ा था, जिसे देख कोई भी समझ सकता था कि इस बर्फ के गोले को, इसी जाल के द्वारा समुद्र से निकाला गया है।

बहुत से व्यक्ति उस गोले के चारो ओर खड़े उसे देख रहे थे।

तभी उनमें से एक व्यक्ति बोला- "इस बर्फ के गोले में कोई इंसान है?"

यह सुनकर सभी उस गोले के अंदर झांककर देखने लगे।

आकृति की नजर भी उस बर्फ के गोले के अंदर की ओर गई, सच में उस गोले में एक मानव शरीर था, पर उसके चेहरे पर नजर पड़ते ही आकृति हैरान हो गई क्योंकि वह व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि विक्रम था।

विक्रम .... वारुणि का सबसे करीबी।

"यह विक्रम इस बर्फ के गोले में कैसे आ गया?" आकृति यह देख समझ गई कि विक्रम अभी भी जिंदा हो सकता है।

अतः वह सभी को देखकर चिल्लाई- "बर्फ को तोड़ो, यह मेरा दोस्त है और यह अभी भी साँस ले रहा है।"

आकृति की बात सुन वहां खड़े व्यक्तियों का एक समूह उस बर्फ को तोड़ने लगा।

बर्फ को तोड़ने में ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी क्योंकि बर्फ की ऊपरी पर्त पहले से ही कमजोर थी, शायद यह बर्फ का गोला काफी समय से नमकीन समुद्री पानी में पड़ा हुआ था।

बर्फ टूटने के बाद विक्रम का शरीर बर्फ से बाहर आ गया।

यह देख जहाज का एक डॉक्टर विक्रम का चेकअप करने लगा। सभी उत्सुकता भरी निगाहों से उस डॉक्टर को देख रहे थे।

"यह व्यक्ति पूरी तरह से ठीक है, बस बर्फ में काफी देर तक दबे रहने से, इसके शरीर का तापमान गिर गया है, पर मुझे लगता है कि आधे से 1 घंटे के बीच यह होश में आ जायेगा।" डॉक्टर ने आकृति की ओर देखते हुए कहा- "आप इन्हें अपने कमरे में रख सकती हैं ... अगर कोई

परेशानी हो तो मुझे बता दीजियेगा। पर सच कहूं तो इनका इस प्रकार बर्फ में दबे रहने के बाद बचना किसी चमत्कार से कम नहीं।”

यह कहकर डॉक्टर चला गया।

आकृति ने कुछ लोगों की मदद ले विक्रम को क्राउली के कमरे में रख लिया।

जब सभी कमरे से चले गये, तो आकृति फिर से अपनी सोच में गुम हो गई।

लगभग 45 मिनट के बाद विक्रम ने कराह कर अपनी आँखें खोलीं।

आँखें खोलने के बाद विक्रम ने तुरंत ही अपना सिर पकड़ लिया। यह देख आकृति भागकर विक्रम के पास आ गई- “क्या हुआ विक्रम? तुम ठीक तो हो ना?”

“कौन हो आप?” विक्रम ने आश्चर्य से आकृति को देखते हुए पूछा।

“तुम्हें क्या हो गया विक्रम? तुम मुझे पहचान क्यों नहीं पा रहे हो?” आकृति के चेहरे पर उलझन के भाव आ गये।

“मैं ... मैं कौन हूं? तुम मुझे विक्रम क्यों बुला रही हो? मेरा नाम तो .... मेरा नाम? .... मेरा नाम मुझे याद क्यों नहीं आ रहा?” विक्रम के चेहरे पर उलझन के भाव साफ नजर आ रहे थे।

“लगता है चोट लगने के कारण विक्रम की स्मृति चली गई है।” आकृति ने मन में सोचा- “इस समय मेरे पास ज्यादा शक्तियां नहीं हैं .... अगर मैं विक्रम को कोई झूठी कहानी सुना दूं, तो मैं विक्रम की शक्तियों का इस्तेमाल स्वयं के लिये कर सकती हूं ... और अगर कभी विक्रम की स्मृति वापस भी आ गई, तो वह शलाका का दुश्मन बन जायेगा .... वाह क्या उपाय आया है मस्तिष्क में। पर ... पर अगर बीच में कभी वारुणी ने विक्रम से, मानसिक तरंगों के द्वारा सम्पर्क करने की कोशिश की तो वह सबकुछ जान जायेगा .... सबसे पहले इसे अपनी नीली अंगूठी पहना देती हूं, इससे वारुणि कभी मानसिक तरंगों के द्वारा विक्रम से सम्पर्क स्थापित नहीं कर पायेगी, वैसे भी इस अंगूठी का इस्तेमाल, मैं पहले भी कई बार आर्यन को शलाका से बचाने के लिये कर चुकी हूं और इस अंगूठी का रहस्य भी किसी को नहीं पता।”

“आप मुझे विक्रम पुकार रहीं हैं।” विक्रम ने कहा- “मेरा नाम विक्रम है क्या? ... पर मुझे कुछ भी याद क्यों नहीं आ रहा है?”

“मेरा नाम वारुणि है, तुम मेरे पति विक्रम हो, हम दोनों भारत में रहते हैं। तुम्हारे पास वायु की शक्तियां हैं, इन शक्तियों से तुम पृथ्वी की रक्षा करते हो। पर कुछ दिन पहले एक शक्तिशाली दुश्मन से लड़ते समय तुम्हारे सिर पर चोट आ गई, जिससे तुम्हारी स्मृतियां चलीं गईं हैं। डॉक्टर ने तुम्हें कुछ दिन आराम करने को बोला है, इसलिये हम इस जहाज से न्यूयार्क घूमने जा रहे हैं। मेरे पिता ने मुझे एक अभिमंत्रित अंगूठी दी है। उन्होंने कहा है कि अगर तुम अगले 10 दिनों तक इस अंगूठी को बिना उतारे अपनी उंगली में पहने रहोगे, तो तुम्हारी स्मृतियां वापस आ जायेंगी।”

आकृति ने कम समय में अच्छी खासी कहानी गढ़ दी।

यह कहकर आकृति ने अपने हाथ में पहनी नीली अंगूठी को विक्रम की ओर बढ़ा दिया।

आकृति की बात सुनकर विक्रम सोच में पड़ गया। उसे सोच में पड़ा देख आकृति पुनः बोल उठी- “तुम्हें डॉक्टर ने ज्यादा सोचने को मना किया है।”

अभी आकृति ने यह कहा ही था कि तभी उसके केबिन की घंटी बज उठी।

आकृति ने अंदर से ही तेज आवाज में पूछा- “कौन?”

“मैं जहाज का केबिन क्रू हूं, मुझे जहाज के डॉक्टर ने उस नौजवान की तबियत जानने के लिये भेजा है।” बाहर से एक आवाज उभरी।

“विक्रम की तबियत अब बिल्कुल ठीक है, उन्हें अब डॉक्टर की जरुरत नहीं है। मेरी तरफ से डॉक्टर को धन्यवाद कह देना।” आकृति ने बिना दरवाजा खोले ही तेज आवाज में कहा।

आकृति की बात सुन आगन्तुक चला गया, पर उसका इस प्रकार आना आकृति के लिये लाभकारी रहा।

अब विक्रम के चेहरे से चिंता के भाव हटते दिखाई दे रहे थे।

“अब तुम आराम से सो जाओ विक्रम, जब न्यूयार्क आयेगा, तो मैं तुम्हें उठा दूंगी।” आकृति ने कहा और विक्रम को सहारा देकर बिस्तर पर लिटा दिया।

विक्रम ने आकृति की दी हुई अंगूठी अपने दाहिने हाथ की सबसे छोटी उंगली में पहन ली थी।

ओरैकल की भविष्यवाणी

16.01.02, बुधवार, 12:30, ग्रीक देवताओं का महल, ग्रीस

आर्टेमिस इस समय बहुत क्रोध में दिख रही थी। वह इस समय खाने की टेबल पर थी, लेकिन उसका गुस्सा शांत होने का नाम ही नहीं ले रहा था।

तभी 'गैनीमेड' हाथ में एक ट्रे लिये हुए डाइनिंग रुम में दाखिल हुआ। गैनीमेड ग्रीक देवताओं का रसोइयां था, वही देवताओं को खाना बनाकर खिलाता था।

गैनीमेड ने ट्रे को टेबल पर रखा और आर्टेमिस को एम्ब्रोशिया और नेक्टर परोसने लगा।

(एम्ब्रोशिया- एक प्रकार का खाना, जो ग्रीक देवताओं को हमेशा जवान बनाए रखता है और नेक्टरः एक प्रकार का पेय पदार्थ, जो ग्रीक देवताओं को अमरत्व प्रदान करता है)

"क्या बात है आर्टेमिस, आप बहुत गुस्से में दिख रहीं हैं?" गैनीमेंड ने आर्टेमिस के गुस्से का कारण पूछते हुए कहा।

"चलो किसी ने तो पूछा कि मैं गुस्सा क्यों हूं?" आर्टेमिस ने गैनीमेड की ओर देखते हुए कहा- "आज 2 दिन बीत गये मेलाइट का अपहरण हुए .... मैं पिछले 2 दिन से सभी देवताओं से मिलने को कह रही हूं, पर कोई मिल ही नहीं रहा। यहां तक कि मेरा भाई अपोलो भी नहीं। अब तुम ही बताओ कि और कौन है इस ग्रीस में, जो मुझे मेलाइट का पता बता दे?"

"अगर आप आज्ञा दें तो मैं आपको एक पुरानी घटना, कहानी की तरह सुनाना चाहता हूं।" गैनीमेड ने आर्टेमिस की ओर देखते हुए कहा।

पहले तो यह सुनकर आर्टेमिस को बहुत गुस्सा आया कि वह अपना दुख बयान कर रही है और ये गैनीमेड उसको कहानी सुनाना चाह रहा है, पर फिर आर्टेमिस को गैनीमेड की समझदारी का ध्यान आया, इसलिये उसने बुझे मन से आज्ञा दे दी और एम्ब्रोशिया को खाना शुरु कर दिया।

आज्ञा मिलते ही गैनीमेड शुरु हो गया- "देवता जीयूष ने आपकी माँ 'लेटो' के साथ विवाह कर लिया, जिसके फलस्वरुप उनकी पहली पत्नि 'हेरा' को बहुत गुस्सा आया। जब आपकी माँ लेटो आपको जन्म देने वाली थीं, तो उस रात देवी हेरा ने एक ड्रैगन को आपकी माँ को मारने के लिये

भेजा। आपकी माँ ने आपको और आपके भाई अपोलो को एक साथ जन्म दिया। जब आपकी माँ को यह पता चला कि एक ड्रैगन उन्हें मारने आ रहा है, तो उन्होंने आपके भाई अपोलो को एक घंटे में ही छोटे से जवान कर दिया। फिर आपके भाई ने, अपने तीर से उस ड्रैगन को मार दिया। अपोलो ने उस ड्रैगन को ग्रीस के डेल्फी शहर में मारा। मरने के बाद उस ड्रैगन का शरीर जमीन में बनी एक बड़ी सी दरार में समा गया। चूंकि आपके भाई ने पैदा होते ही एक विशाल ड्रैगन को मारा, इसलिये सभी ने उन्हें देवता मान लिया। लेकिन जिस दरार में वह ड्रैगन मरकर गिरा था, उस दरार से एक अजीब सी गैस निकलने लगी, जिसके घेरे में डेल्फी शहर की एक पवित्र स्त्री ‘ओरैकल’ आ गई। कहते हैं तबसे ओरैकल में यह शक्ति आ गई कि वह किसी का भी भविष्य बता सकती थी। यानि ओरैकल की आत्मा किसी माध्यम से ईश्वर के साथ जुड़ गई। ओरैकल के मरने के सैकड़ों वर्षों के बाद भी, आज भी डेल्फी शहर में कोई ना कोई पवित्र स्त्री ओरैकल का वह धर्म निभा रही है। वह पवित्र पानी में नहाकर सभी को उनका भविष्य बताती है।”

यह कहकर गैनीमेड चुप हो गया और आर्टेमिस की ओर देखने लगा।

आर्टेमिस कुछ देर तक सोचती रही कि इस कहानी से उसको क्या फायदा हुआ। तभी अचानक वह जोर से उछली और खुश होते हुए बोली- “यही चीज तुम साधारण तरीके से नहीं बता सकते थे कि डेल्फी जाकर मैं ओरैकल से मिल लूं।”

“अरे! क्या आपको मेरी कहानी में आपकी समस्य हल मिल गया? ... मैं तो बस आपके भाई की बहादुरी की कहानी सुना रहा था।” यह कहकर गैनीमेड बर्तन उठाकर वापस अंदर की ओर बढ़ गया।

आर्टेमिस तेजी से महल से निकली और एक चुटकी बजाकर डेल्फी शहर पहुंच गई।

आर्टेमिस सीधा वहां से ओरैकल के मंदिर में पहुंच गई।

ओरैकल ने आर्टेमिस को देख उसका स्वागत किया। आर्टेमिस ने भी अपनी समस्या ज्यों की त्यों ओरैकल के सामने रख दी।

ओरैकल ने अपने धर्मानुसार आर्टेमिस से कुछ रीतियां करवाईं और स्वयं आँख बंद कर अपना सम्पर्क दूसरी दुनिया से जोड़ने में लग गई।

आर्टेमिस, ओरैकल के सामने बैठी उसे देख रही थी।

कुछ देर बाद ओरैकल के चेहरे पर, एक अजीब सी लाल रंग की रोशनी आकर पड़ने लगी, अब उसने आँखें खोल दीं और आर्टेमिस की ओर देखते हुए बोली- “तुम मेलाइट के बारे में जानना चाहती हो ना? .... मुझे मेलाइट इस समय दिखाई दे रही है ... पर वह खुश है .... उसे वह मिला है जिसकी उसे हजारों वर्षों से तलाश थी ... हरक्यूलिस का सोचना बिल्कुल ठीक था .... अब तुम्हें उसकी चिंता करने की कोई जरुरत नहीं है आर्टेमिस ..... अब उसका विचार अपने दिमाग से त्याग दो ... अब वह कभी तुम्हारे पास वापस नहीं आयेगी ... कभी नहीं।”

आर्टेमिस को ओरैकल की बातें समझ नहीं आ रहीं थीं।

“आप क्या कह रहीं हैं? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है? कौन मिल गया है मेलाइट को? और वह कौन है? जिसने उसका अपहरण किया था।” आर्टेमिस ने ओरैकल से पूछा।

“अगर हर कोई भविष्य को समझ ले, तो भविष्य का कोई मतलब ही नहीं रह जायेगा .... मेलाइट को उसका सोने का हिरण मिल गया है .... सुनहरी कस्तूरी वाला सोने का हिरण .... और जिसने उसका अपहरण किया ... वह वो नहीं है ... जो दिखती है ... वह एक धोखा है ... उसका चेहरा भी धोखा है .... मगर तुम चिंता मत करो ... उसको उसकी सजा मिल गई है .... ध्यान रखना आर्टेमिस .... बिना अपोलो उससे मिलने मत जाना कभी .... चाहे वह तुम्हारे सामने ही क्यों ना हो? नहीं तो हार जाओगी ... भूल जाओ मेलाइट को ... भूल जाओ... ।”

यह कहते ही ओरैकल के चेहरे की लाल चमक गायब हो गई और अब वह सामान्य नजर आने लगी।

“क्या आपको आपके सवालों का जवाब मिला?” ओरैकल ने आर्टेमिस से पूछा।

आर्टेमिस ने धीरे से अपना सिर हिलाया और उठकर मंदिर से बाहर निकल गई, परंतु यहां आने के बाद आर्टेमिस के चेहरे पर उलझन के भाव और बढ़ गये

◆ ◆ ◆

चैपटर-8

स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी

तिलिस्मा 3.2

चींटियों के संसार को पार करने के बाद सभी जिस दरवाजे में घुसे, उस दरवाजे ने सभी को अमेरिका के न्यूयार्क शहर में पहुंचा दिया।

जी नहीं, यह असली न्यूयार्क नहीं, बल्कि कैश्वर द्वारा बनाया नकली न्यूयार्क शहर था, क्योंकि यहां लिबर्टी द्वीप पर एक नहीं बल्कि 2 स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी खड़ी दिखाई दे रहीं थीं और सुयश सहित, सभी एक स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के समीप खड़े थे।

“यह तो न्यूयार्क शहर का वातावरण है।” जेनिथ ने मूर्तियों को देखते हुए कहा- “मगर यहां पर 2-2 स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी हैं। क्या मतलब हो सकता है इसका?”

“इन दोनों मूर्तियों में कुछ अंतर हैं।” सुयश ने कहा- “जैसे एक मूर्ति का रंग हल्का हरा है, जबकि दूसरी मूर्ति हल्के भूरे रंग की है, इसका मतलब एक असली है और एक नकली।”

“कहीं हमें दोनों मूर्तियों के बीच अंतर तो नहीं ढूंढना?” ऐलेक्स ने कहा।

“हो सकता है, पर हम इस समय भूरी मूर्ति वाले पत्थर पर खड़े हैं, जो कि मुझे नकली मूर्ति दिख रही है।” तौफीक ने कहा- “क्योंकि असली स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी का रंग हल्का हरा है।”

“क्या हममें से कोई स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के बारे में सबकुछ जानता है?” क्रिस्टी ने सबको देखते हुए कहा- “क्योंकि बिना सबकुछ जाने हमें दोनों के बीच अंतर नहीं कर पायेंगे।”

“मुझे इस स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के बारे में काफी कुछ पता है, क्योंकि मैं काफी समय से न्यूयार्क में ही रह रहा हूं।” सुयश ने आह भरते हुए कहा- “पर पता नहीं क्यों, आज प्रोफेसर अलबर्ट की बहुत याद आ रही है।”

अलबर्ट की बात सुन शैफाली की आँखों में भी, कुछ बूंदें तैरने लगीं, पर उसने तुरंत अपने को कंट्रोल कर लिया।

तभी सुयश ने स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के बारे में बताना शुरु कर दिया- “स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी अमेरिका के न्यूयार्क शहर से कुछ दूर ‘लिबर्टी द्वीप’ पर मौजूद है, यह पूरी तरह तांबे से निर्मित मूर्ति है। मूर्ति की ऊंचाई 151 फुट 11 इंच है और अगर इसके पत्थर की ऊंचाई को भी जोड़ लें, तो यह मूर्ति 305 फुट 6 इंच है। इस मूर्ति को फ्रांस और अमेरिका की दोस्ती के प्रतीक के तौर पर फ्रांस ने अमेरिका को दिया था। इस मूर्ति का अनावरण 28 अक्टूबर 1886 को तत्कालीन अमेरिकन राष्ट्रपति ‘ग्रोवर क्लीवलैंड’ ने किया था। इस मूर्ति का डिजाइन ‘फ्रेडरिक अगस्त बार्थोल्टी’ ने किया था। इसके मूर्तिकार का नाम ‘गुस्ताव एफिल’ था। यह मूर्ति रोमन देवी ‘लिबर्टस’ की है, जिन्हें स्वतंत्रता की देवी भी कहा जाता है। चूंकि अमेरिका 4 जुलाई 1776 को आजाद हुआ था, इसलिये इस मूर्ति के हाथ में पकड़ी किताब पर वही तारीख रोमन अंकों में लिखी है। 22 मंजिल इस मूर्ति के ऊपर तक पहुंचने के लिये 354 घुमावदार सीढ़ियां हैं। मूर्ति के सिर पर जो मुकुट लगा है, उस पर 7 किरणें बनी हैं, जो कि विश्व के 7 महाद्वीपों का प्रतिनिधित्व करती हैं। मुकुट पर 25 खिड़कियां भी बनी हैं, जो धरती के रत्नों को दर्शाती हैं। मूर्ति के हाथ में पकड़ी मशाल की फ्लेम पहले साधारण थी, परंतु बाद में इस पर 24 कैरेट सोने की पतली पर्त चढ़वा दी गई। इसी प्रकार पहले यह मूर्ति भूरे रंग की थी, पर बाद में समुद्र के पानी के द्वारा ऑक्सीकरण हो जाने की वजह से, यह हल्के हरे रंग में परिवर्तित हो गई।”

इतना कहकर सुयश चुप हो गया।

“अरे वाह कैप्टेन, आपकी जानकारी तो इस मूर्ति के बारे में बहुत अच्छी है।” जेनिथ ने मुस्कुराते हुए कहा।

“वो क्या है ना कि इतनी बार इस जगह पर गया हूं कि गाईड को सुनते-सुनते सब कुछ कंठस्थ हो गया है।” सुयश ने भी मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

“तो अब श्योर हो गया कि हम जिस मूर्ति के पास खड़े है, वह नकली है।” शैफाली ने कहा- “और हमें इस नकली मूर्ति को सुधार कर उस असली मूर्ति के समान करना है।”

“तो फिर हमें सबसे पहले मूर्ति के नीचे से ही शुरु करना होगा।” तौफीक ने कहा।

“नीचे मूर्ति की पहली गलती तो मुझे दिखाई दे रही है।” सुयश ने कहा- “नकली मूर्ति की पैरों में जंजीर बंधी है, जबकि असली मूर्ति के पैरों में वह जंजरी टूटी हुई पड़ी है। इसका मतलब हमें पहले इस जंजीर को तोड़ना होगा।”

“पर कैसे कैप्टेन अंकल?” शैफाली ने सुयश को देखते हुए कहा- “आप देखिये ये जंजीर तो धातु की बनी है और बहुत मोटी भी है, तोड़ना तो छोड़ो, हम तो इसे उठा भी नहीं सकते।”

“तो फिर पहले ऊपर की ओर चलते हैं, हो सकता है कि ऊपर कोई ऐसी चीज मौजूद हो, जिससे इन बेड़ियों को तोड़ा जा सके।” सुयश ने कहा।

सभी को सुयश का यह सुझाव सही लगा, इसलिये सभी स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी की सीढ़ियों की ओर बढ़ गये।

पर सीढ़ियों के पास पहुंचकर सभी ठिठककर रुक गये, क्योंकि सीढ़ियों पर एक दरवाजा था, जिस पर एक 3 डिजिट का लॉक लगा था।

“लो हो गया कैश्वर का काम शुरु।” ऐलेक्स ने मुंह बनाते हुए कहा- “लॉक मिलना शुरु हो गये .... अब पहले इसका कोड ढूंढना पड़ेगा।”

“चूंकि इस लॉक पर यह नहीं लिखा है कि इसे कितनी बार में खोलना है, इसलिये मैं इस लॉक को ‘क्रमचय-संचय’ या फिर ‘प्रायिकता’ (गणित का एक सूत्र) लगाकर आसानी से कुछ देर में खोल दूंगी।” शैफाली ने सभी को देखते हुए कहा।

“इतना समय भी देने की जरुरत नहीं है, मुझे लगता है कि इसका कोड मुझे पता है।” यह कहकर सुयश ने आगे बढ़कर उस लॉक पर एक नम्बर लगाया और लॉक तुरंत खुल गया।”

यह देख सभी आश्चर्य में पड़ गये।

“कैप्टेन आपको इस लॉक का कोड कैसे पता चला?” तौफीक ने सुयश को देखते हुए आश्चर्य से पूछा।

“अब धीरे-धीरे मैं भी कैश्वर के दिमाग को पढ़ना सीख रहा हूं।” सुयश ने मुस्कुरा कर कहा- “वैसे इस दरवाजे का कोड 354 था, जो कि स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी की इन सीढ़ियों की कुल संख्या है। कैश्वर इसके अलावा और किसी कोड को रखने के बारे में सोचता भी नहीं।”

सुयश यह कहकर दरवाजा खोलकर सीढियां चढ़ना शुरु हो गया।

सभी सुयश के पीछे-पीछे चल दिये।

ऊपर पहुंचने तक सबकी हालत खराब हो गई क्योंकि 22 मंजिल सीढ़ियों के द्वारा चढ़ना इतना भी आसान नहीं था।

“बेड़ा गर्क हो इस कैश्वर का।” ऐलेक्स ने अपनी फूलती साँसों के साथ कैश्वर को भला-बुरा कहना शुरु कर दिया- “अगर ऐसे ही 3-4 बार ऊपर-नीचे करना पड़े, तो आदमी बिना तिलिस्मा के खतरे के मारा जायेगा।”

सभी ने कुछ देर तक बैठकर आराम किया और फिर अपने आस-पास देखने लगे।

इस समय सभी मूर्ति के सिर वाले मुकुट में बने कमरे में थे, जिसके चारो ओर खिड़कियां बनी थीं।

कमरे की छत पर एक गोला सा बना था, जिससे मुकुट की सारी किरणें जुड़ीं थीं। उस गोले में 7 घिरनियां लगीं थीं, जो कि पतले पाइप पर फिसल सकती थीं। शायद हर घिरनी एक किरण का प्रतिनिधित्व कर रही थी।

ऐलेक्स ने ध्यान से उन घिरनियों को देखा, तो उसे 2 घिरनियां बहुत पास-पास दिखाई दीं।

“कैप्टेन, मुझे इन घिरनियों में कुछ प्रॉब्लम दिख रही है?” ऐलेक्स ने सुयश को आवाज लगाते हुए कहा।

ऐलेक्स की आवाज सुन सुयश उन घिरनियों की ओर देखने लगा।

कुछ देर तक देखने के बाद सुयश ने आगे जाकर, एक खिड़की से झांककर मूर्ति के ऊपर की ओर देखा।

कुछ देर देखने के बाद सुयश ने अपना सिर अंदर कर लिया और बोला- “बाहर मूर्ति के मुकुट में 7 किरणें होनी चाहिये थीं, पर अभी वह 6 ही नजर आ रही हैं, इसका मतलब हमें उन्हें 7 करना होगा .... अब अगर अंदर कमरे की छत पर मौजूद इन घिरनियों को देखें, तो साफ पता चलता है कि इन घिरनियों से ही मुकुट की किरणें नियंत्रित होती हैं और यह 2 घिरनियां पास-पास है, जिसकी वजह से बाहर 6 ही किरणें नजर आ रहीं हैं। यानि हमें किसी भी प्रकार से इन घिरनियों को इनकी वास्तविक स्थिति पर लाना होगा। अब चूंकि कमरे की ऊंचाई 15 फुट है, तो हममें से कोई भी इस ऊंचाई तक नहीं पहुंच सकता, पर अगर हम सम्मिलित कोशिश करें, तो हम एक के ऊपर एक खड़े होकर ऊपर तक पहुंच सकते हैं।”

सुयश की बात से सभी सहमत हो गये। आनन-फानन सभी ने गोला बनाकर, अथक प्रयास कर शैफाली को ऊपर तक पहुंचा दिया, पर शैफाली की पूरी ताकत लगाने के बाद भी, वह किसी भी घिरनी को हिला नहीं पाई।

यह देख शैफाली नीचे आ गई।

“इसका मतलब घिरनी को घुमाने के लिये कोई और साधन है, यह हाथ से नहीं घूमेगी।” सुयश ने चारो ओर देखते हुए कहा- “अब फिलहाल इस कमी को भी बाद में सुधारेंगे .... अब कुछ नयी गलती ढूंढो।”

“कैप्टेन अंकल आपने कहा था कि इस मुकुट में 25 खिड़कियां है, पर मुझे यहां सिर्फ 24 खिड़कियां ही दिखाई दे रहीं है।” शैफाली ने सबका ध्यान खिड़कियों की ओर कराते हुए कहा।

सुयश ने भी खिड़कियों की गिनती की, शैफाली सही कह रही थी।

अब सुयश ध्यान से सभी खिड़कियों के बीच की दूरी का अध्ययन करने लगा, पर सभी खिड़कियों में बराबर दूरी थी।

“कैप्टेन, सभी खिड़कियों की दूरी बराबर है और इसके बीच कोई नयी खिड़की नहीं लगाई जा सकती।” तौफीक ने कहा- “इसका साफ मतलब है कि हमें मूर्ति के सिर के पीछे वाले स्थान पर ही कुछ ढूंढना पड़ेगा क्योंकि वहां पर खाली दीवार है।”

तौफीक की बात सुन सभी मूर्ति के चेहरे के पीछे वाली साइड में आ गये।

ऐलेक्स अब हाथों से टटोलकर उस दीवार को देखने लगा। तभी ऐलेक्स का हाथ किसी अदृश्य चीज से टकराया।

ऐलेक्स ने उस चीज को अपनी ओर खींचा, वह अदृश्य चीज अब दीवार से निकलकर ऐलेक्स के हाथ में आ गई और इसी के साथ उस दीवार में अब 25 खिड़की नजर आने लगी।

25वीं खिड़की देख सभी खुशी से भर उठे। अब वह सभी ऐलेक्स की ओर देख रहे थे, जो कि अपने हाथों को अजीब ढंग से हवा में घुमाकर कुछ कर रहा था।

“तुम यह क्या कर रहे हो ऐलेक्स?” क्रिस्टी ने ऐलेक्स से पूछा- “और तुमने यह 25वीं खिड़की कैसे बनायी?”

“25वीं खिड़की पहले से ही यहां पर थी, पर उसे किसी अदृश्य चीज ने घेर रखा था? मैंने जैसे ही उस अदृश्य चीज को दीवार से हटाया वह खिड़की दिखाई देने लगी।” ऐलेक्स ने कहा- “और अब मैं उसी अदृश्य चीज को समझने की कोशिश कर रहा हूं कि वह है क्या?”

“ऐलेक्स भैया, आप वह चीज मुझे दे दीजिये, मेरा स्पर्श का अनुभव आपसे ज्यादा है, मैं उसे आसानी से समझ सकती हूं।” शैफाली की बात सही थी क्योंकि शैफाली ने 13 वर्षों तक हर चीज को छूकर ही तो अनुभव किया था।

ऐलेक्स ने वह चीज शैफाली को दे दी।

शैफाली ने वह चीज ले, अपनी आँखें बंद कर लीं और छूकर उसे महसूस करने लगी।

“यह चीज किसी जापानी पंखें की तरह है, जिसे फैलाकर खोला और बंद किया जा सकता है।” यह कहकर शैफाली ने उस अदृश्य जापानी पंखे को खोल दिया, तभी मूर्ति के चेहरे की ओर से एक तेज आवाज उभरी, वह आवाज सुन शैफाली ने डरकर पंखें को फिर से बंद कर दिया।

अब सभी मूर्ति के चेहरे की ओर आ गये।

“शैफाली के जापानी पंखे के खोलने पर आगे से कोई आवाज उभरी थी। शायद इस ओर उस समय कुछ घटित हुआ था।” सुयश ने शैफाली को देखते हुए कहा- “शैफाली जरा एक बार फिर उस पंखे को खोलो, मैं देखना चाहता हूं कि वह आवाज कहां से आयी थी?”

सुयश की बात सुन शैफाली ने एक झटके से पंखे को फिर खोल दिया।

पंखा खुलते ही आपस में चिपकी हुई दोनों घिरनियां अलग-अलग हो गईं, जिसे सभी ने देख लिया।

यह देख सुयश ने भागकर एक खिड़की से फिर बाहर की ओर झांक कर देखा।

बाहर अब मूर्ति के मुकुट पर 7 किरणें दिखाई देने लगीं थीं, यह देख सुयश खुश हो गया।

“हमने 3 बाधाओं को पार कर लिया।” सुयश ने सभी की ओर देखते हुए कहा- “पहली सीढ़ियों के लॉक की बाधा, दूसरी 25वीं खिड़की को खोजना और तीसरा 7वीं किरण को सही करना। .... वेलडन दोस्तों ....

अब हमें मूर्ति की अगली कमी पर ध्यान देना होगा ... एक तो मूर्ति की बेड़ियां अभी भी लगी हैं ... और दूसरा मूर्ति का रंग अभी भी भूरा है ... पर इसको सही करने के पहले हमें एक बार फिर से ध्यान से मूर्ति को देखना होगा कि मूर्ति में कोई और कमी तो नहीं है?"

सुयश की बात सुन सभी खिड़कियों से झांककर मूर्ति का देखने लगे।

"कैप्टेन, मूर्ति के हाथ में पकड़ी मशाल की फ्लेम नहीं है।" ऐलेक्स ने बाहर झांकते हुए कहा।

"कैप्टेन मुझे मूर्ति के हाथ में पकड़ी किताब की तारीख भी सही नहीं लग रही है।" क्रिस्टी ने कहा- "चूंकि अमेरिका 4 जुलाई 1776 को आजाद हुआ था, इस हिसाब से किताब पर रोमन में 'IV' (यानि 4) MDCCLXXVI (यानि 1776) लिखा होना चाहिये था, पर किताब में 'IV' (यानि 4) MDCCLSSIV (यानि 1774) लिखा है, जो कि गलत है।"

(रोमन संख्याः M=1000, D=500, C=100, L=50, X=10, VI=6, IV=4)

"यानि कि यह तारीख अमेरिका की आजादी के 2 वर्ष पहले की है, शायद इसीलिये मूर्ति के पैरों में, अभी भी बेड़ियां लगी हुईं है ।"

"बहुत अच्छे क्रिस्टी। तुमने बहुत अच्छी चीज पर ध्यान दिया।" सुयश ने क्रिस्टी की तारीफ करते हुए कहा- "यानि की अगर हम उस किताब पर लिखी तारीख को सही कर दें तो मूर्ति के पैरों में लगी बेड़ियां अपने आप हट जायेंगी।"

"कैप्टेन, आपने मेरी तारीफ क्यों नहीं की?" ऐलेक्स ने नकली मुंह बनाते हुए कहा।

ऐलेक्स का ऐसा मुंह देख सभी की चेहरे पर मुस्कान आ गई।

सुयश ने ऐलेक्स की ओर देखा और जोर से उसका गाल पकड़ कर खींच दिया।

यह देख सभी हंस दिये।

"अच्छा अगली बात कि मूर्ति के हाथ में पकड़ी मशाल की फ्लेम भी गायब है ... हमें उसे भी ढूंढना पड़ेगा।" सुयश ने सभी को फिर से काम की याद दिलाते हुए कहा।

“कैप्टेन, मशाल वाली जगह पर जाने के लिये तो सीढ़ियां बनी हैं, पर इस किताब वाली जगह पर कैसे जायेंगे, वहां जाने का तो कोई रास्ता नहीं है।” तौफीक ने सुयश को ध्यान दिलाते हुए कहा।

“हमें वहां पर उतरने के लिये एक लंबी और मजबूत रस्सी चाहिये होगी ... जो कि शायद यहीं कहीं हमें ढूंढने पर मिल जाये? ... पर पहले हमें मशाल वाली जगह पर चलना होगा।” सुयश यह कहकर वापस सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

कुछ देर में सभी मशाल वाली जगह पर थे। यह जगह मूर्ति की सबसे ऊंची जगह थी, यहां से न्यूयार्क शहर का एक बहुत बड़ा हिस्सा दिख रहा था।

सभी ने चारो ओर देखा, पर मशाल की फ्लेम कहीं भी नजर नहीं आयी।

जब काफी देर तक मशाल की फ्लेम नहीं मिली, तो थककर ऐलेक्स ने कहा- “मशाल की फ्लेम का आकार काफी बड़ा है, ऐसे में उस फ्लेम को इस स्थान के अलावा मूर्ति में कहीं नहीं रखा गया होगा, क्योंकि अगर उसे कहीं और रखा गया होता, तो उसको उठाकर यहां तक लाने के लिये कुछ ना कुछ व्यवस्था जरुर होती? पर हमें यहां और कुछ नहीं दिखाई दे रहा? इसका मतलब कुछ तो जरुर ऐसा है, जिसे हम समझ नहीं पा रहे हैं?”

ऐलेक्स के शब्द सुन सुयश कुछ देर के लिये सोच में पड़ गया और फिर वह मशाल की सीढ़ियां चढ़कर मशाल की फ्लेम के पास आ गया।

सुयश कुछ देर तक मशाल की फ्लेम के ऊपर हवा में हाथ लहराता रहा और अचानक से जैसे ही सुयश ने अपना हाथ नीचे किया, मशाल पर फ्लेम दिखाई देने लगी।

सुयश अब उतरकर नीचे आ गया। सुयश के नीचे आते ही सभी ने उसे घेर लिया।

“कैप्टेन, आप ने यह कैसे किया?” जेनिथ ने सुयश से पूछ लिया।

“दरअसल मुझे अपने पुराने समय की एक घटना याद आ गई।” सुयश ने कहा- “जब मैं 14 साल का था, तो मुझे याद है कि अमेरिका के एक प्रसिद्ध जादूगर ‘डेविड कॉपरफील्ड’ ने सबके सामने जादू से, स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी को गायब कर दिया था, मैंने भी वह शो टी.वी. पर देखा था। उस समय तो सभी के लिये, यह एक बहुत बड़े जादू के समान था, पर

बाद में पता चला कि स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी कहीं गायब ही नहीं हुआ था, जादूगर ने उसके सामने एक शीट लगाकर सिर्फ दुनिया की नजर में गायब किया था। तो जब ऐलेक्स यह कह रहा था कि मशाल की फ्लेम को कहीं और नहीं रखा जा सकता? तो मुझे लगा कि कहीं मशाल की फ्लेम अपनी जगह पर ही तो नहीं है, जिसे किसी अदृश्य शीट से ढक दिया गया हो। तभी मुझे उस अदृश्य चीज का ख्याल आया, जिससे कैश्वर ने 25वीं खिड़की गायब की थी। बस यही सोचने के बाद, मैं उसे चेक करने के लिये मशाल के पास जा पहुंचा और मेरा सोचना बिल्कुल ठीक निकला। कैश्वर ने मशाल की फ्लेम को भी हमें भ्रमित करने के लिये अदृश्य कर रखा था।”

“तो कैप्टेन अब सिर्फ 2 चीजें ही बदलने को बची हैं।” तौफीक ने कहा- “एक तो किताब की तारीख बदल कर मूर्ति की बेड़ियां तोड़नी है और दूसरा मूर्ति का रंग भूरे से हरा करना है बस।”

“तो फिर पहले हमें तुरंत कहीं से रस्सी ढूंढनी होगी।” क्रिस्टी ने कहा।

“तो फिर सबसे पहले इस स्थान को ही ठीक से चेक कर लेते हैं और फिर वापस मुकुट वाले स्थान पर जायेंगे।” ऐलेक्स ने कहा।

सभी ने मशाल वाली जगह को हाथ से टटोलकर ठीक से देख लिया, पर वहां कुछ भी नहीं था।

इसके बाद सभी मुकुट वाले स्थान पर आ गये।

पूरा कमरा सबने छान मारा, पर कहीं भी उन्हें रस्सी ना मिली।

यह देख जेनिथ ने हर खिड़की को खोलकर, उसके नीचे बाहर की ओर चेक करना शुरु कर दिया।

आखिरकार जेनिथ को सफलता मिल ही गई। उसका हाथ किसी अदृश्य चीज से टकराया।

“कैप्टेन!” जेनिथ ने खुशी से चीखते हुए कहा- “हम लोग रस्सी ढूंढ रहे थे, पर यहां इस खिड़की के नीचे बाहर की ओर अदृश्य सीढ़ियां हैं, जो कि नीचे किताब तक जा रहीं हैं।”

यह सुन सुयश ने राहत की साँस ली।

“पर यह सीढियां तो अदृश्य हैं, बिना देखे इस पर से उतरना खतरे से खाली नहीं है।” क्रिस्टी ने कहा।

“इसीलिये तो मैं आप लोगों के साथ हूं।” शैफाली ने मुस्कुराते हुए कहा- “यह काम भी मुझसे अच्छा कोई नहीं कर सकता।”

सभी को शैफाली का तर्क सही लगा।

अब शैफाली ने खिड़की के ऊपर चढ़कर अपना पहला कदम सीढ़ियों पर रखा।

कुछ ही देर में टटोलते हुए शैफाली किताब तक पहुंच गई।

शैफाली ने अब किताब के ऊपर लिखे रोमन अक्षरों को सही से सेट कर दिया।

जैसे ही किताब के अक्षर बदले, मूर्ति के पैर में बंधी बेड़ियां अपने आप खुल गईं। शैफाली धीरे-धीरे वापस ऊपर आ गई।

तभी एकाएक स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के ऊपर काले घनघोर बादल नजर आने लगे और मौसम बहुत ज्यादा खराब हो गया।

सभी आश्चर्य से ऊपर की ओर देख रहे थे, क्योंकि बादल सिर्फ स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी के ही ऊपर थे। न्यूयार्क की ओर मौसम बिल्कुल साफ नजर आ रहा था।

तभी समुद्र का पानी भी जोर-जोर से ऊपर की ओर उछलने लगा।

“यह मौसम एकाएक कैसे खराब हो गया?” सुयश ने आश्चर्य से ऊपर आसमान की ओर देखते हुए कहा।

तभी अचानक सुयश को कुछ याद आया और वह चीखकर सभी से बोला- “तुरंत यहां से नीचे की ओर भागो, नहीं तो सब मारे जायेंगे।”

“ये आप क्या कह रहे हैं कैप्टेन?” ऐलेक्स ने आश्चर्यचकित होते हुए पूछा- “हमें यहां पर किससे खतरा है?”

“पहले भागो, रास्ते में बताता हूं।” यह कहकर सुयश भी तेजी से सीढ़ियां उतरने लगा।

किसी को कुछ भी समझ में नहीं आया कि सुयश क्यों सबको भागने के लिये कह रहा है, पर फिर भी सभी सुयश के पीछे भागने लगे।

भागते-भागते सुयश ने चिल्लाकर कहा- “यह मूर्ति तांबे की बनी है, जिसके कारण यह मूर्ति आसमान की बिजली को अपनी ओर खींचती है। इसी वजह से पूरे साल में इस पर कम से कम 300 बार बिजली गिरती है। अगर हमारे यहां रहते, वह बिजली इस पर गिरी तो हम झुलस जायेंगे।”

सुयश के शब्द सुन सभी डर गये और तेजी से सीढ़ियां उतरने लगी।

तभी कहीं पानी में जोर की बिजली गिरी, जिसकी वजह से समुद्र के पानी ने मूर्ति को भिगा दिया।

समुद्र के पानी में भीगते ही स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी का रंग भूरे से, हल्का हरा हो गया।

तभी सभी मूर्ति के नीचे मौजूद पत्थर पर पहुंच गये।

अभी यह जैसे ही पत्थर के पास पहुंचे, तभी मूर्ति के ऊपर एक जोर की बिजली गिरी।

बिजली के गिरने से तेज प्रकाश चारो ओर फैल गया। अगर सुयश सभी को लेकर समय पर नीचे नहीं आया होता, तो अब तक सभी बिजली में झुलस गये होते।

तभी सुयश की निगाह मूर्ति के हरे रंग पर गई।

“लगता है समुद्र का पानी मूर्ति पर गिरने से ऑक्सीकरण के द्वारा मूर्ति हरी हो गई है।” सुयश ने कहा- “पर अगर मूर्ति हरी हो गई है तो अभी तक यह मायाजाल टूटा क्यों नहीं?”

सुयश के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे।

तभी एक और बिजली आकर मूर्ति पर गिरी। बिजली की रोशनी में सुयश ने जो देखा, उसे देखकर उसकी रुह फना हो गई, बगल वाली स्टेचू ऑफ़ लिबर्टी जिंदा हो गई थी और उन्हीं की ओर आ रही थी।

सुयश के चेहरे के भावों को बदलता देख सभी की निगाह उस ओर चली गई, जिधर सुयश देख रहा था।

दूसरी मूर्ति को जिंदा होते देख सबकी हालत खराब हो गई क्योंकि इस समय किसी के भी पास कोई भी चमत्कारी शक्ति नहीं थी और बिना किसी चमत्कारी शक्ति के 151 फुट ऊंची धातु की प्रतिमा को पराजित करना इनमें से किसी के भी बस की बात नहीं थी।

“अब क्या करें कैप्टेन?” क्रिस्टी ने घबराए स्वर में कहा- “बिजली अभी चमकना बंद नहीं हुई है, इसलिये हम मूर्ति के अंदर भी नहीं जा सकते और बाहर रहे तो ये दूसरी मूर्ति हमें मार देगी और इस मूर्ति को हम किसी भी प्रकार से परजित नहीं कर सकते।”

क्रिस्टी की बात तो सही थी, पर पता नहीं क्यों अभी भी सुयश तेजी से कुछ सोच रहा था।

अचानक सुयश जोर से चिल्लाया- "तुम लोग कुछ देर तक इससे बचने की कोशिश करो, मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं?"

यह कहकर सुयश तेजी से सीढ़ियां चढ़कर वापस ऊपर की ओर भागा।

किसी की समझ में नहीं आया कि सुयश क्यों अब मूर्ति के ऊपर जाकर अपनी मौत को दावत दे रहा है, पर अभी सबका ध्यान दूसरी मूर्ति की ओर था।

दूसरी मूर्ति चलती हुई पहली मूर्ति के पास आयी और पानी में हाथ लगाकर उसे गिराने का प्रयत्न करने लगी।

सभी उसे देखकर मूर्ति वाले पत्थर के नीचे छिपकर खड़े हो गये थे। अभी तक दूसरी मूर्ति की निगाह इनमें से किसी पर नहीं पड़ी थी, इसलिये वह बस पहली मूर्ति को उखाड़ने का प्रयत्न ही कर रही थी।

उधर सुयश लगातार सीढ़ियां चढ़ता जा रहा था, इस समय जैसे उस पर किसी थकान का कोई असर नहीं हो रहा था।

कुछ ही देर में सुयश मूर्ति के मुकुट वाले स्थान पर पहुंच गया, अब वो तेजी से जमीन पर टटोलते हुए जापानी पंखा ढूंढ रहा था।

कुछ देर की मेहनत के बाद सुयश के हाथ वह जापानी पंखा लग गया।

सुयश ने तेजी से उस पंखे को वापस बंद कर दिया। ऐसा करते ही पहली मूर्ति के मुकुट की सारी किरणें सिमट कर एक हो गईं और दूसरी मूर्ति अपनी जगह पर स्थिर हो गई।

तभी फिर से एक जोर की बिजली आसमान से पहली मूर्ति पर गिरी, परंतु आश्चर्यजनक ढंग से वह सारी बिजली बिना सुयश को क्षति पहुंचाये उस एक किरण से निकलकर दूर पानी में जा गिरी।

यह देख सुयश के चेहरे पर मुस्कान खिल गई।

अब उसने जापानी पंखें के द्वारा पहली मूर्ति की किरण को इस प्रकार सेट कर दिया कि अगर अब पहली मूर्ति पर बिजली गिरे तो वह परावर्तित होकर दूसरी मूर्ति पर जा गिरे।

अब बस सुयश को इंतजार था, एक बार फिर से बिजली के पहली मूर्ति पर गिरने का। और इसके लिये सुयश को ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा।

कुछ ही देर में आसमान में फिर जोर की बिजली कड़की और पहली मूर्ति पर आ गिरी। इसी के साथ पहली मूर्ति के मुकुट में बनी किरण ने, बिजली को संकेन्द्रित करके दूसरी मूर्ति की ओर भेज दिया।

दूसरी मूर्ति पर बिजली गिरते ही वह मूर्ति टूटकर कणों में परिवर्तित हो गई।

और इसी के साथ आसमान में छाए घने बादल कहीं गायब हो गए।

अब सुयश ने एक बार फिर से जापानी पंखे का प्रयोग कर पहली मूर्ति की सातो किरणों को पहले के समान कर दिया।

जैसे ही मूर्ति अपने वास्तविक रुप में आयी, मूर्ति जिस पत्थर पर खड़ी थी, उसमें एक नया द्वार खुल गया, जो कि इस बात का प्रमाण था कि तिलिस्मा का यह द्वार भी पार हो चुका है।

अब सभी को बस सुयश के नीचे आने का इंतजार था। जैसे ही सुयश नीचे आया, सभी ने सुयश के नाम का जोर का जयकारा लगाया।

कुछ देर खुशी मनाने के बाद सभी शांत हो गये।

अब ऐलेक्स ने आखिर पूछ ही लिया- “आपने यह सब कैसे किया कैप्टेन?”

“मैंने सोचा कि दूसरी मूर्ति अगर पहली मूर्ति की सब कमियां दूर करने के बाद जिंदा हुई है, तो वापस पहली मूर्ति में कमी लाकर दूसरी मूर्ति को रोका जा सकता था। यही सोचकर मैंने जापानी पंखे के द्वारा मूर्ति के मुकुट में फिर से कमी ला दी, जिससे दूसरी मूर्ति अपने स्थान पर ही रुक गई। अब रही बात उस मूर्ति को नष्ट करने की, तो मैंने यह देखा कि बिजली उस मूर्ति पर नहीं गिर रही है, इसका साफ मतलब था कि वह मूर्ति तांबे से नहीं बनी है। अब बची बात इस मूर्ति की तो तांबा हमेशा नमक वाले पानी से रिएक्शन कर एक बैटरी का रुप ले लेता है और समुद्र के पानी में नमक था, यानि कि जितनी बार बिजली इस मूर्ति पर गिर रही थी, वह इसे चार्ज करती जा रही थी, अब बस उस बिजली को बढ़ाकर सही दिशा देने की जरुरत थी और वह सही दिशा मैंने सभी किरणों को एक करके कर दी। इस प्रकार से नयी गिरी बिजली, मूर्ति में स्टोर की हुई बिजली के साथ संकेन्द्रित होकर एक दिशा में जाने लगी। जिसे देखकर

मैंने उस किरण का मुंह दूसरी मूर्ति की ओर कर दिया और इसी के साथ वह दूसरी मूर्ति नष्ट हो गई।”

“वाह कैप्टेन! आपने तो कमाल कर दिया।” क्रिस्टी ने सुयश की तारीफ करते हुए कहा- “हम तो सोच भी नहीं सकते थे कि इतनी बड़ी मूर्ति को बिना किसी चमत्कारी शक्ति के भी पराजित किया जा सकता है।”

“जिस समय तुमने बिना किसी शक्ति के रेत के सभी जीवों को परजित किया था, यह भी बिल्कुल वैसे ही था।” सुयश ने क्रिस्टी से कहा- “हमें किसी भी चीज को पराजित करने के लिये सही समय पर सही सोच की जरुरत होती है बस ... और वह सही सोच हममें से सबके पास है।”

सुयश के शब्दों से सभी प्रभावित हो गए।

कुछ देर बाद सभी अगले द्वार में प्रवेश कर गये।

◆ ◆ ◆

अंधेरे का देवता

16.01.02, बुधवार, 13:50, मकोटा महल, सीनोर राज्य, अराका द्वीप

लुफासा जब मेलाइट, रोजर और सुर्वया का परिचय पूछ रहा था, तभी मकोटा ने लुफासा को सिग्नल भेजकर अपने महल में बुलवा लिया था।

पर आज पूरा 1 दिन बीत जाने के बाद भी मकोटा, लुफासा से मिला नहीं था।

लुफासा इंतजार करते-करते पूरी तरह से परेशान हो गया था, पर मकोटा से वह कुछ कह भी नहीं सकता था।

एक तो मकोटा महल में उन काले भेड़ियों के अलावा कोई था भी तो नहीं, तो लुफासा आखिर पूछता भी तो किससे? कि मकोटा को मिलने में और कितना समय लगेगा?

बहरहाल लुफासा के पास और इंतजार करने के अलावा कुछ नहीं था।

आखिरकार एक लंबे इंतजार के बाद, उस कमरे का एक दरवाजा खुला और उसमें से मकोटा चलकर आता दिखाई दिया।

मकोटा को देख लुफासा ने राहत की साँस ली और झुककर मकोटा को अभिवादन किया।

“कल से तुम्हें बुलाने के बाद अचानक से पिरामिड में काम कुछ बढ़ गया था, इसलिये मिलने में कुछ ज्यादा ही समय लग गया। उम्मीद है तुम्हें कोई परेशानी नहीं हुई होगी?” मकोटा ने लुफासा को देखते हुए कहा।

लुफासा का मन किया कि इस मकोटा की गंजी खोपड़ी पर कोई डंडा फेंक कर मार दे, पर उसने अपनी भावनाओं पर काबू करते हुए ‘ना’ में अपना सिर हिला दिया।

मकोटा लुफासा के सामने पड़ी कुर्सी पर बैठते हुए बोला- “देखो लुफासा, तुम अराका का भविष्य हो। मैं चाहता हूं कि तुम अराका ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज करो, बस इसीलिये मैं दिन-रात मेहनत कर रहा हूं। मेरी मेहनत को देखते हुए तुम्हारा भी हक बनता है कि तुम भी पूरे दिल से मेरा साथ दो। .... और अब वैसे भी मेरे सपने को पूरा होने से कोई

नहीं रोक सकता .... मेरा मतलब है कि तुम्हें राजा बनने से। ..... देखो लुफासा, मैंने पिछले कुछ दिनों में तुम्हें कई कार्य सौंपे, पर तुम इतनी शक्तियां होने के बाद भी, किसी भी कार्य में सफल नहीं हो पाये। जब मैंने ध्यान से सोचा तो मुझे लगा कि ये तुम्हारी शक्तियों का दोष नहीं है, सिर्फ तुम्हारी मानसिक स्थिति का दोष है। तुम अपने स्वयं के निर्णय लेने में भी बहुत असमंजस में दिखते हो। और ऐसा इसलिये है कि तुम्हें मैं ज्यादा कुछ नहीं बताता। पर आज मैंने तुम्हें सबकुछ बताने का निर्णय लिया है। जिससे आगे भविष्य में तुम अपने अच्छे-बुरे को पहचान सको। ये पहचान सको कि तुम्हारे साथ कौन खड़ा है? और तुम्हारे विरुद्ध कौन है?"

मकोटा के शब्द सुनकर लुफासा और सतर्क हो गया। वह समझ गया कि मकोटा उसके आस-पास कोई और जाल बुनना चाह रहा है।

"तुम मेरे साथ पिरामिड चलो, मैं आज तुम्हें सारा सच बताना चाहता हूं।" यह कहकर मकोटा कुर्सी से उठकर खड़ा हो गया।

मकोटा को उठकर जाते देख लुफासा भी मकोटा के पीछे-पीछे चल दिया।

लुफासा जान गया था कि कुछ भी हो पर आज मकोटा के कई रहस्यों से पर्दा उठने वाला था।

कुछ ही देर में भेड़ियों के रथ पर बैठकर मकोटा और लुफासा सीनोर राज्य में स्थित, उन 4 पिरामिडों के पास पहुंच गये।

मकोटा ने अपना रथ पिरामिड नंबर 4 के पास रोका, यह देख लुफासा हैरान हो गया क्योंकि आज तक उसने किसी को भी पिरामिड नंबर 4 में जाते हुए नहीं देखा था?

मकोटा, लुफासा को लेकर पिरामिड नंबर 4 में प्रवेश कर गया।

पिरामिड नंबर 4 के बीच में 2 ताबूत रखे थे।

मकोटा लुफासा को लेकर उन्हीं ताबूतों के पास पहुंच गया। उन ताबूतों का ऊपरी हिस्सा पारदर्शी शीशे का बना था।

लुफासा आश्चर्य से उन ताबूतों को देखने लगा।

"तुम्हें पता है लुफासा कि इन ताबूतों में कौन है?" मकोटा ने लुफासा से पूछा।

लुफासा ने अपना सिर ना के अंदाज में हिला दिया।

“इन ताबूतों में ‘मुफासा और कागोशी’ की लाश हैं।” मकोटा ने कहा।

मकोटा के शब्द सुनते ही लुफासा पर बिजली सी गिर गई।

“आपका मतलब है कि इन ताबूतों में मेरे माता-पिता की लाशें हैं?” लुफासा ने शीशे के पास अपना चेहरा लाकर, अंदर झांकते हुए कहा।

“हां ये तुम्हारे माता-पिता की ही लाश हैं, जिन्हें आज से 22 वर्ष पहले सामरा राज्य के राजा कलाट ने मार दिया था।” मकोटा के शब्द रहस्य से भरे थे।

“कलाट ने?” लुफासा कलाट का नाम सुन आश्चर्य से भर उठा।

“चलो मैं तुम्हें शुरु से सुनाता हूं।” लग रहा था कि आज मकोटा सारे रहस्य खोलने के मूड में था- “तुम्हें पता है कि सामरा और सीनोर के लोगों की औसत आयु 800 वर्ष होती है, पर दोनों ही राज्यों के नियम के अनुसार जिस व्यक्ति को राजा बनाया जाता है, उसे 600 वर्षों तक अपने राज्य पर शासन करना होता है, इस दौरान वह पुत्र या पुत्री उत्पन्न नहीं कर सकता। तो आज से 625 वर्ष पहले भी, इसी प्रकार से सीनोर का राजा मुफासा को और सामरा का राजा कलाट को बनाया गया। तुम तो जानते ही हो कि सामरा और सीनोर की दुश्मनी हजारों वर्षों से चली आ रही थी। इस दुश्मनी की वजह से दोनों ही अपनी शक्तियों को बढ़ाना चाहते थे। पर इस कहानी में नया मोड़ तब आया, जब सन् 1908 में मध्य साइबेरिया के जंगलों में एक बहुत बड़ा उल्का पिंड गिरा। मुफासा उस उल्का पिंड की जांच के लिये साइबेरिया जा पहुंचा। वहां पहुंचकर मुफासा को पता चला कि वह कोई उल्का पिंड नहीं, बल्कि बुद्ध ग्रह की एक यानरुपी प्रयोगशाला थी। जिसमें बुद्ध ग्रह के जीव, हरे कीड़े थे, जो कि पृथ्वी पर एक प्रयोग करने आ रहे थे, परंतु पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करते समय, किसी प्रकार उनका यान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और वह साइबेरिया के जंगलों में जा गिरे। उन बुद्ध ग्रह के हरे कीड़ों ने मनुष्यों से तो अपना यान छिपा लिया, परंतु मुफासा से नहीं छिपा पाये। मुफासा को जब हरे कीड़ों के आने का उद्देश्य पता चला, तो वह उनकी मदद को तैयार हो गया, पर बदले में वह उनके देवता जैगन से मिलना चाहता था। हरे कीड़े सहर्ष ही इस बात पर तैयार हो गये। जैगन से मिलने के बाद यह तय हुआ कि मुफासा पृथ्वी पर हरे कीड़ों की शक्तियों के विस्तार के लिये पिरामिड बनवायेगा और बदले में जैगन उन्हें वैज्ञानिक शक्तियां देकर शक्तिशाली बनायेगा। अब शुरु हुआ धरती पर पिरामिडों का निर्माण। बुद्ध गह की मदद से धरती पर कुल 8 पिरामिडों का निर्माण हुआ, जिसमें 4 पिरामिड

सीनोर राज्य में, 2 पिरामिड मैक्सिको में और 2 पिरामिड मिस्र में बनवाये गये। सारा कार्य बहुत गुपचुप तरीके से किया गया। दरअसल हरे कीड़े मनुष्यों के शरीर की ऊर्जा खींचकर, अपना आकार बढ़ाना चाहते थे, जिससे वह हर प्रकार के वातावरण में जिंदा रह सकें। इस कार्य की शुरुआत के लिये जब जैगन पृथ्वी पर आया, तब तुम और वीनस 2-3 साल के थे। मुफासा का राजा होने का कार्यकाल अब खत्म हो चुका था। मुफासा ने जैगन से काला मोती प्राप्त करने के लिये मदद मांगी, तभी पता नहीं कैसे धरा, मयूर और कलाट ने हमारे इस पिरामिड पर हमला कर दिया। जहां एक ओर धरा ने अपनी धरा शक्ति से जैगन को पृथ्वी से बांध दिया, वहीं दूसरी ओर अराका द्वीप के नियमों के विपरीत जाने की वजह से कलाट ने तुम्हारे पिता और माता का मार दिया। सभी के यहां से जाने के बाद, मैंने तुम्हारे माता और पिता के शरीर पर एक रसायन का लेप लगाकर इस ताबूत में रख दिया। मुझे पता था कि जब जैगन जागेगा, तो अपने गुरु 'कुवान' की मदद से तुम्हारे माता-पिता को फिर से जिंदा कर देगा क्योंकि जैगन की अंधेरी शक्तियां भी कुवान की ही देन थीं। पर जब 15 वर्षों के बाद भी जैगन नहीं जागा, तो हमने जैगन के सेवक गोंजालो के कहने से, स्वयं अदृश्य शक्तियों के स्वामी कुवान की साधना करनी शुरु कर दी। कुवान के आशीर्वाद से हमें भेड़ियों की फौज और मेरा सेवक वुल्फा मिला। अब हम कुवान के आदेशानुसार काला मोती को प्राप्त करने के लिये, दूसरे पिरामिड से तिलिस्मा के अंदर तक एक सुरंग बना रहे हैं, जिससे हम बिना तिलिस्मा में प्रवेश किये ही काला मोती को प्राप्त कर लें और तुम्हारे माता-पिता को जिन्दा करके कलाट से बदला ले सकें।" यह कहकर मकोटा कुछ देर के लिये रुक गया और ध्यान से लुफासा के चेहरे को देखने लगा।

लुफासा मकोटा की बातें सुनकर बहुत तेजी से कुछ सोच रहा था, यह देख मकोटा फिर से बोल उठा- "अगर तुम्हें सबकुछ समझ आ गया हो और अगर तुम मेरी बात से सहमत हो तो मुझे बताओ, तब मैं इसके आगे की बात बताऊं?"

"पहले मुझे ये बताइये कि ये सारी बातें सनूरा को क्यों नहीं पता? जबकि वह तो पिछले 600 वर्षों से सीनोर राज्य की सेनापति है।" लुफासा ने अपना शक प्रकट करते हुए कहा।

"मुफासा का साइबेरिया जाना और जैगन से मिलकर पिरामिड बनवाना बहुत ही गुप्त रखा गया था, इस बात का पता तो तुम्हारी माँ कागोशी को भी नहीं था, फिर सनूरा को कैसे होता? और अब रही बात कलाट के तुम्हारे माता-पिता को मारने की बात, तो उस समय सनूरा किसी कार्य से अराका द्वीप से बाहर गई थी? उसके आने के बाद हमने कलाट

की बात उसे इसलिये नहीं बताई कि यह बात सुनकर कहीं तैश में आकर सामरा राज्य पर हमला ना बोल दे और उस समय तक सामरा राज्य की शक्तियां हमसे ज्यादा थीं, इसलिये मैं बस समय आने का इंतजार कर रहा था, जिससे उचित समय पर मैं ये सारी बातें तुम्हें स्वयं बता सकूं।” मकोटा ने कहा।

“अब मुझे ये बताइये कि कलाट ने मेरी माँ को क्यों मारा, उसने किसी का क्या बिगाड़ा था?” लुफासा ने क्रोध में आते हुए कहा।

“कलाट ने जब तलवार से तुम्हारे पिता पर हमला किया, उस समय तुम्हारी माँ बीच में आ गई, जिससे वह भी मारी गई।” मकोटा ने कहा।

“जैगन के इस प्रयोग से तो पूरी इंसानियत खतरे में पड़ रही थी, आप लोगों ने जैगन की बात मानने ये पहले ये क्यों नहीं सोचा?” लुफासा ने कहा।

“मनुष्य पहले भी अटलांटियन के आगे कुछ नहीं थे, इसलिये अटलांटियन को कभी भी मनुष्यों की चिंता नहीं रही। .... ऐसा मैं नहीं ... तुम्हारे पिता का कहना था। मैं तो बस उनकी आज्ञा का पालन कर रहा था।” मकोटा ने उदास होते हुए कहा।

“ठीक है, अब आप मुझसे क्या चाहते हैं?” लुफासा ने कहा।

“चलो मैं पहले तुम्हें बाकी के पिरामिड दिखाता हूं, फिर कहीं बैठकर बात करेंगे।” यह कहकर मकोटा तीसरे पिरामिड की ओर बढ़ गया।

तीसरे पिरामिड में एक विशाल भेड़िया मानव की मूर्ति लगी थी, जिसके पीछे की ओर एक काँच की लिफ्ट लगी थी। मकोटा उसी लिफ्ट में बैठाकर, लुफासा को जमीन के नीचे की ओर ले गया। यहां चारो ओर लगभग 20 काँच के कैप्सूल दिखाई दे रहे थे, जिसमें बहुत से विचित्र जीव योद्धा खड़े दिखाई दे रहे थे, परंतु वह सभी निष्क्रिय थे।

“ये सभी योद्धा अलग-अलग जीवों से मिलाकर बनाये गये हैं, जिसे बाद में कुवान अपनी शक्तियों से जीवित करेंगे। यह सभी योद्धा हमें सामरा राज्य से युद्ध में जीत दिलायेंगे।”

यह कहकर मकोटा लुफासा को वहां से भी लेकर दूसरे पिरामिड की ओर चल दिया।

यह पिरामिड पिछले 2 पिरामिडों से बड़ा था।

दूसरे पिरामिड के एक कमरे में कुछ हरे कीड़े जमीन में सुरंग खोद रहे थे।

एक कमरे में गोंजालो जख्मी हालत में लेटा था, और हरे कीड़े उसका इलाज कर रहे थे।

"यह गोंजालो कैसे जख्मी हो गया, इसके पास तो बहुत सी शक्तियां थीं।" लुफासा ने मकोटा से पूछा।

"आजकल समय ही खराब है ... मैंने तुम्हें जिस देवी शलाका से मिलाया था, वह भी झूठी निकली और मेरी कई शक्तियां लेकर भाग गई। उधर गोंजालो जब सामरा राज्य छिपकर खबर लाने गया था, तो किसी अज्ञात इंसान ने गोंजालो पर महाशक्ति से हमला कर दिया, बहुत मुश्किल से गोंजालो बचकर वापस आ पाया है।" मकोटा ने कहा- "मुझे तो यही समझ नहीं आ रहा कि एक इंसान के पास महाशक्ति आयी कैसे? .... उधर गोंजालो का ऊर्जा द्वार, तिलिस्मा के ऊर्जा द्वार से टकरा गया, जिससे तिलिस्मा का कोई जीव भी भाग निकला, पर हम जैसे ही उस द्वार से घुसने चले, वह द्वार पुनः बंद हो गया।"

"तिलिस्मा का ऊर्जा द्वार?" लुफासा ने हैरान होते हुए कहा।

"हां, हमें भी नहीं मालूम था कि पिरमिड के पीछे तिलिस्मा का कोई छिपा ऊर्जा द्वार है, नहीं तो हम पहले ही उस द्वार से छिपकर तिलिस्मा में प्रवेश कर जाते, पर अब तो वह भी बंद हो गया। अब तो सुरंग ही एक मात्र रास्ता है, अगर वहां भी कोई अड़चन नहीं आयी तो?" मकोटा ने कहा- "बस एक ही चीज हमारे साथ अच्छी हुई है ..... ना जाने कैसे धरा शक्ति ने काम करना बंद कर दिया जिससे जैगन होश में आ गया है .... अब अगर तुम और सनूरा भी दिल से हमारा साथ देना शुरु कर दो, तो फिर हम जल्दी ही तुम्हारे माता-पिता को भी जिंदा कर लेंगे और फिर जीत हमारी ही होगी।"

"मैं तो पहले भी आपका साथ दे रहा था, फिर भी मैं आपके हर कार्य को करने के लिये अब अपनी जी-जान लगा दूंगा। आप बस आदेश करें मांत्रिक" लुफासा ने कहा और मकोटा के सामने अपने घुटने टेक कर सिर झुका दिया।

मकोटा ने रहस्य बताने के बहाने लुफासा को अपनी ओर करना चाहा था, लुफासा इस बात को अच्छी तरह से समझ रहा था, पर फिर भी अपने माता-पिता के नाम पर, वह भी मकोटा का साथ देने को मजबूर था।

लुफासा का यह रुप देख मक्कार मकोटा मुस्कुरा दिया .... आखिर उसकी चाल कामयाब हो ही गई।

◆ ◆ ◆

चैपटर-9

सपनों का संसार

तिलिस्मा 3.3

सुयश के साथ सभी अगले द्वार में प्रवेश कर गये।

तिलिस्मा के इस द्वार में प्रवेश करते ही सभी को लगभग 100 फुट ऊंची एक किताब दिखाई दी। जिस पर बड़े-बड़े अक्षरों में 'सपनों का संसार' लिखा था।

उस किताब में एक दरवाजा भी लगा था। दरवाजे के अंदर कुछ सीढ़ियां बनीं थीं, जो कि ऊपर की ओर जा रहीं थीं।

सभी उस दरवाजे में प्रवेश कर गये और सीढ़ियां चढ़कर ऊपर की ओर चल दिये।

लगभग 50 सीढ़ियां चढ़ने के बाद सभी को फिर से एक दरवाजा दिखाई दिया।

सभी उस दरवाजे से अंदर प्रवेश कर गये।

अब वह सभी एक ऊंचे से प्लेटफार्म पर खड़े थे और ऊपर आसमान की ओर ऐसे सैकड़ों प्लेटफार्म दिखाई दे रहे थे।

हर प्लेटफार्म के चारो ओर कुछ सीढ़ियां और 2 दरवाजे बने थे। सारे प्लेटफार्म हवा में झूल रहे थे।

"यह सब क्या है? और हमें जाना कहां है?" ऐलेक्स ने सुयश को देखते हुए कहा।

"पता नहीं, पर मुझे लगता है कि हमें अपने सामने मौजूद दूसरे दरवाजे में घुसने पर ही पता चलेगा कि हमें जाना कहां है?" सुयश ने कहा।

यह सुनकर क्रिस्टी अपने सामने मौजूद दरवाजे में प्रवेश कर गई, अब क्रिस्टी उनसे काफी ऊंचाई पर बने दूसरे प्लेटफार्म पर दिखाई दी।

“कैप्टेन आप लोग भी ऊपर आ जाइये, मुझे लगता है कि हमें इन प्लेटफार्म के द्वारा ही ऊपर की ओर जाना है।” क्रिस्टी ने तेज आवाज में कहा।

क्रिस्टी की आवाज सुन सभी उस दरवाजे में प्रवेश कर गये।

इसी प्रकार कई बार अलग-अलग दरवाजों में प्रवेश करने के बाद, आखिरकार उनका दरवाजा एक बादल के ऊपर जाकर खुला।

जैसे ही सभी बादल के ऊपर खड़े हुए, वह दरवाजा और प्लेटफार्म दोनों ही गायब हो गये।

अब सभी ने अपने चारो ओर नजर डाली।

इस समय वह सभी जिस बादल पर खड़े थे, वह लगभग 200 वर्ग फुट का था और बिल्कुल सफेद था।

उस बादल से 100 मीटर की दूरी पर एक बड़ा सा गोला सूर्य के समान चमक रहा था, उसकी रोशनी से ही पूरा क्षेत्र प्रकाशमान था।

“क्या वह कृत्रिम सूर्य है?” जेनिथ ने उस सूर्य के समान गोले की ओर देखते हुए कहा।

“लगता है कैश्वर ने यह द्वार कुछ अलग तरीके से बनाया है।” सुयश ने कहा- “वह सामने का गोला कृत्रिम सूर्य है, जो सूर्य के समान ही रोशनी दे रहा है। हम इस समय बादलों के ऊपर खड़े हैं। पर इन दोनों के अलावा यहां पर कुछ नजर नहीं आ रहा। ना तो बाहर निकलने का कोई दरवाजा दिख रहा है और ना ही यह समझ में आ रहा है कि यहां पर करना क्या है?”

तभी शैफाली की नजर आसमान की ओर गई। आसमान पर नजर पड़ते ही शैफाली आश्चर्य से भर उठी।

“कैप्टेन अंकल, जरा ऊपर आसमान की ओर देखिये, वहां पर बहुत कुछ विचित्र सा है?” शैफाली ने सुयश को आसमान की ओर इशारा करते हुए कहा।

शैफाली की बात सुन सभी ने आसमान की ओर देखा। अब सभी अपना सिर उठाये विस्मय से ऊपर की ओर देख रहे थे।

“यह आसमान में क्या चीजें बनी हैं?” ऐलेक्स ने गड़बड़ाते हुए कहा।

“मुझे लग रहा है कि हमारे सिर के ऊपर आसमान नहीं बल्कि जमीन है, आसमान पर तो हम लोग खड़े हैं, यानि कि यहां पर सब कुछ उल्टा-पुल्टा है।” क्रिस्टी ने कहा।

“सब लोग जरा ध्यान लगा कर देखो कि वहां ऊपर क्या-क्या चीजें है?” सुयश ने सभी से कहा।

“कैप्टेन मुझे वहां एक खेत दिखाई दे रहा है, जिस में एक किसान बीज बो रहा है।” तौफीक ने कहा।

“मुझे उस खेत के बाहर 5 मूर्तियां दिखाई दे रहीं हैं, शायद वह किसी देवी-देवता की मूर्तियां हैं, उन मूर्तियों पर कुछ लिखा भी है, पर यह भाषा मैं पढ़ना नहीं जानती।” जेनिथ ने कहा।

“वह मूर्तियां सूर्य, चंद्र, इंद्र, पवन और पृथ्वी की हैं।” सुयश ने मूर्तियों की ओर देखते हुए कहा- “और उस पर हिंदी भाषा में लिखा है।” यह कहकर सुयश ने सभी को उन देवी देवताओं के बारे में बता दिया।

“कैप्टेन खेत से कुछ दूरी पर एक बड़ा सा तालाब बना है, जिससे समुद्र जैसी लहरें उठ रहीं हैं।” ऐलेक्स ने कहा- और उसके सामने एक बड़ा सा कमरा बना है, जिस पर एक तीर ऊपर की ओर मुंह किये हुए लगा है। उस तीर के सामने एक बड़ी सी पवनचक्की जमीन पर गिरी पड़ी है।”

“यह तो कोई बहुत अजीब सी पहेली लग रही है .... क्योंकि ना तो हम सूर्य के पास जा सकते हैं और ना ही ऊपर जमीन की ओर ..... और इन बादलों में कुछ है नहीं? ... फिर इस पहेली को हल कैसे करें?” क्रिस्टी ने कहा।

सभी बहुत देर तक सोचते रहे, परंतु किसी को कुछ समझ नहीं आया कि करना क्या है?

तभी जेनिथ की निगाह सूर्य की ओर गई।

“कैप्टेन सूर्य अपना रंग बदल रहा है ... अब वह सुनहरे से सफेद होता जा रहा है।” जेनिथ ने कहा।

जेनिथ की बात सुन सभी सूर्य की ओर देखने लगे।

जेनिथ सही कह रही थी, सूर्य सच में एक किनारे से सफेद हो रहा था।

“मुझे लग रहा है कि सूर्य धीरे-धीरे चंद्रमा में परिवर्तित हो रहा है।” शैफाली ने कहा- “यानि दिन के समय यही सूर्य बन जाता है और रात को यही चंद्रमा बन जाता है।”

“मुझे लगता है कि हमें थोड़ी देर और इंतजार करना चाहिये, हो सकता है कि रात होने पर चंद्रमा हमें कोई मार्ग दिखाए?” तौफीक ने कहा।

तौफीक की बात सुन सभी आराम से वहीं सफेद बादल पर बैठ गये।

धीरे-धीरे सूर्य पूरी तरह से चंद्रमा में परिवर्तित हो गया, अब सभी ध्यान से चंद्रमा को देखने लगे।

“कैप्टेन चंद्रमा में एक द्वार बना है, मुझे लगता है कि हमें उसी द्वार से बाहर जाना है।” जेनिथ ने कहा।

“चलो एक परेशानी तो दूर हुई, कम से कम ये तो पता चला कि हमें जाना कहां है?” सुयश ने खुशी भरे शब्दों में कहा- “अब हमें बस चंद्रमा तक जाने का रास्ता ढूंढना है। क्योंकि इन बादलों से चंद्रमा के बीच सिर्फ हवा ही है।”

“मुझे लगता है कि हमें यहां से कूद कर जमीन तक जाना होगा, चंद्रमा का रास्ता अवश्य ही नीचे से होगा।” ऐलेक्स ने कहा।

“अरे बुद्धू, हम खुद ही नीचे हैं, कूदने से ऊपर कैसे चले जायेंगे?” क्रिस्टी ने ऐलेक्स से हंस कर कहा।

“तो फिर अगर कोई चीज इन बादलों से गिरे तो वह कहां जायेगी? हमसे भी नीचे .... या फिर ऊपर जमीन की ओर?” ऐलेक्स की अभी भी समझ में नहीं आ रहा था।

“रुको अभी चेक कर लेते हैं।” यह कहकर क्रिस्टी ने अपनी जेब में रखा एक फल निकाला और उसे कुछ दूरी पर फेंक दिया।

वह फल नीचे जाने की जगह तेजी से ऊपर जमीन की ओर चला गया।

“अब समझे, जमीन और उसका गुरुत्वाकर्षण ऊपर की ओर ही है, हम लोग सिर्फ ऊंचाई पर खड़े हैं और हमें उल्टा दिख रहा है बस। .... और अगर तुमने यहां से कूदने की कोशिश की तो तुम्हारी हड्डियां भी टूट जायेंगी या फिर तुम मर भी सकते है, क्योंकि हमारी ऊंचाई बहुत ज्यादा है।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स को समझाते हुए कहा।

सुयश ने कहा- मुझे तो लगता है कि अवश्य ही अब इन बादलों में कुछ ना कुछ छिपा है ... खाली हाथ तो हम लोग इस द्वार को पार नहीं कर पायेंगे।”

सुयश की बात सुन सभी उस सफेद बादल में हाथ डालकर, टटोल कर कुछ ढूंढने की कोशिश करने लगे।

तभी शैफाली का हाथ बादल में मौजूद किसी चीज से टकराया। शैफाली ने उस चीज को खींचकर निकाल लिया।

वह एक 3 फुट का वर्गाकार शीशा था।

“पहले मेरे दिमाग में यह बात क्यों नहीं आयी।” सुयश ने शीशे को देख अपने सिर पर हाथ मारते हुए कहा- “और ढूंढो ... हो सकता है कि कुछ और भी यहां पर हो?”

तभी जेनिथ ने खुशी से कहा- “कैप्टेन, मुझे यह छड़ी मिली है।”

सुयश ने जेनिथ के हाथ में थमी छड़ी को देखा। वह एक साधारण लकड़ी की छड़ी लग रही थी।

सभी फिर से बादलों से कुछ और पाने की चाह में उन बादलों का मंथन करने लगे।

पर काफी देर ढूंढने के बाद भी बादलों से कुछ और ना मिला।

“यहां तो सिर्फ एक शीशा और छड़ी थी, इन दोनों के द्वारा भला हम चंद्रमा तक कैसे पहुंच सकते हैं?” क्रिस्टी ने कहा।

“इन दोनों के द्वारा हम चंद्रमा तक नहीं पहुंच सकते, पर इनका कुछ ना कुछ तो उपयोग है।” यह कहकर सुयश ने शीशे को चंद्रमा की रोशनी की ओर कर दिया, पर उसमें चंद्रमा की परछाईं दिखने के सिवा कुछ नहीं हुआ।

धीरे-धीरे कई घंटे और बीत गये। अब चंद्रमा फिर से सूर्य में परिवर्तित होने लगा।

सूर्य की पहली किरण सुयश के माथे से आकर टकराई, तभी सुयश के दिमाग में एक विचार कौंधा।

अब सुयश ने शैफाली से शीशा लेकर सूर्य की दिशा में कर दिया।

सूर्य की किरणें शीशे से टकराकर परावर्तित होने लगीं। अब सुयश ने जमीन की ओर ध्यान से देखा।

खेत में बैठा किसान बीज बोने के बाद, बार-बार ऊपर बादलों की ओर देख रहा था। कभी-कभी वह अपने माथे पर आये पसीने को, अपने कंधे पर रखे कपड़े से पोंछ रहा था।

अब सुयश की निगाह इंद्र की मूर्ति पर पड़ी।

इंद्र की मूर्ति देखने के बाद सुयश के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई।

सुयश की मुस्कान देखकर सभी समझ गये कि सुयश को अवश्य कोई ना कोई उपाय मिल गया है?

“कुछ समझ में आया तुम लोगों को?” सुयश ने सभी से पूछा।

सभी ने ना में सिर हिला दिया।

यह देख सुयश ने बोलना शुरु कर दिया- “मुझे भी अभी सबकुछ तो समझ में नहीं आया है, पर उस किसान को देखकर यह साफ पता चल रहा है कि उसे बीज बोने के बाद बारिश का इंतजार है और वह बारिश हमें करानी पड़ेगी।”

“यह कैसे संभव है कैप्टेन? हम भला बारिश कैसे करा सकते हैं?” तौफीक ने सुयश का मुंह देखते हुए आश्चर्य से पूछा।

“संभव है .... मगर पहले मुझे ये बताओ कि धरती पर बारिश होती कैसे है?” सुयश ने उल्टा तौफीक से ही सवाल कर दिया।

“समुद्र का पानी, सूर्य की गर्मी से वाष्पीकृत होकर, बादलों का रुप ले लेता है और बादल जब आपस में टकराते हैं या फिर उनमें पानी की मात्रा ज्यादा हो जाती है, तो वह बूंदों के रुप में धरती की प्यास बुझाते हैं।” तौफीक ने कहा।

“अब जरा जमीन की ओर देखो। सूर्य की रोशनी उस तालाब के ऊपर नहीं पड़ रही है, इसीलिये किसान के खेत पर बारिश नहीं हो रही है।” सुयश ने तालाब की ओर इशारा करते हुए कहा।

“पर हम सूर्य की रोशनी को तालाब की ओर कैसे मोड़ पायेंगे?” क्रिस्टी के चेहरे पर उलझन के भाव नजर आये।

“इस शीशे की मदद से।” सुयश ने कहा- “इसकी मदद से हम सूर्य के प्रकाश को परावर्तित कर उस तालाब पर डाल सकते हैं।”

“पर यह प्रक्रिया तो बहुत लंबी चलती है। क्या हमें शीशा इतनी देर तक पकड़े रखना पड़ेगा?” ऐलेक्स ने पूछा

“पता नहीं कितना समय लगेगा, पर इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता भी नहीं है?” यह कहकर सुयश ने शीशे को इस प्रकार पकड़ लिया, कि अब सूर्य की रोशनी उससे परावर्तित होकर तालाब पर जाकर पड़ने लगी।

लगभग 2 घंटे की अपार सफलता के बाद, तालाब का पानी वाष्पीकृत होकर बादलों का रुप लेने लगा।

यह देख सभी में नयी ऊर्जा का संचार हो गया। अब सभी बारी-बारी शीशे को पकड़ रहे थे।

अब उनके सफेद बादल का रंग धीरे-धीरे काला होने लगा।

लगभग आधे दिन के बाद उनके बादलों का रंग पूर्ण काला हो गया।

अब उस बादल के बीच बिजली भी कड़क रही थी, पर आश्चर्यजनक तरीके से वह बिजली इनमें से किसी को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचा रही थी।

बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक देख किसान खुशी से नाचने लगा।

पर बादलों को बरसाना कैसे था? यह किसी को नहीं पता था?

सुयश की निगाह अब जेनिथ के हाथ में पकड़ी छड़ी की ओर गई। सुयश ने वह छड़ी जेनिथ के हाथ से ले ली।

सुयश ने बादल पर जैसे ही वह छड़ी मारी, बादल से जोर की आवाज करती बिजली निकली और जमीन पर स्थित उस घर के ऊपर बने तीर में समा गई।

सुयश ने 2-3 बार ऐसे ही किया। अब बादल से तेज मूसलाधार बारिश शुरु हो गई और धरा की प्यास बुझाने, पृथ्वी की ओर जाने लगी।

बहुत ही विचित्र नजारा था। बादलों से निकली हर बूंद ऊपर की ओर जा रही थी।

तभी सूर्य के सतरंगी प्रकाश से आसमान में एक बड़ा इंद्रधनुष बन गया।

सभी को पता था कि यह सब कुछ असली नहीं है, फिर भी वह सभी मंत्रमुग्ध से प्रकृति के इस सुंदर दृश्य को निहार रहे थे।

बूंदों ने अब किसान के खेत पर बरसना शुरु कर दिया।

बूंदों के पड़ते ही अचानक किसान का बोया हुआ बीज अंकुरित हो गया। कुछ ही देर में वह अंकुरित बीज एक लता का रुप ले उस बादल की ओर बढ़ने लगा।

सभी आश्चर्य से उस पृथ्वी के पौधे को बढ़ता हुआ देख रहे थे।

10 मिनट में ही उस लताधारी वृक्ष ने, बादलों से पृथ्वी तक एक विचित्र पुल का निर्माण कर दिया।

तभी वह शीशा और छड़ी गायब हो गये।

"यही है वह रास्ता, जिससे होकर हमें पृथ्वी तक पहुंचना है।" सुयश ने धीरे से पेड़ की लताओं को पकड़ा और सरक कर नीचे जाने लगा।

सुयश को ऐसा करते देख, सभी उसी प्रकार से सुयश के पीछे आसमान से उतरने लगे।

कुछ ही देर बाद सभी जमीन पर थे।

"अब जाकर कुछ बेहतर महसूस हुआ।" ऐलेक्स ने लंबी साँस छोड़ते हुए कहा- "ऊपर से उल्टा देखते-देखते दिमाग चकरा गया था।

सुयश ने अब खेत के चारो ओर देखा। सभी के बादलों से उतरते ही वह पेड़ और किसान दोनों ही गायब हो गये थे।

सुयश सभी को लेकर खेत से बाहर आ गया।

बाहर अब 2 ही मूर्तियां दिख रहीं थीं।

"कैप्टेन, यह 3 मूर्तियां कहां गायब हो गईं?" क्रिस्टी ने कहा।

"जिन मूर्तिंयों का कार्य खत्म हो गया, वह मूर्तियां स्वतः गायब हो गयीं। जैसे सूर्य की मूर्ति का कार्य सूर्य के प्रकाश को परावर्तित करने तक था। इंद्र की मूर्ति का कार्य बिजली और बारिश तक ही सीमित था और पृथ्वी की मूर्ति का कार्य पेड़ को बड़ा होने तक था।" सुयश ने सभी को समझाते हुए कहा।

"इसका मतलब अब चंद्र और पवन का काम बचा है।" जेनिथ ने कहा।

"बिल्कुल ठीक कहा जेनिथ ... और इन्हीं 2 मूर्तियों के कार्य के द्वारा ही हम तिलिस्मा के इस द्वार को पार कर पायेंगे।" सुयश ने जेनिथ को देखते हुए कहा- 'चलो सबसे पहले उस जमीन पर पड़ी पवनचक्की को देखते हैं। जरुर उसी से हमें चंद्रमा तक जाने का रास्ता मिलेगा।"

सभी को सुयश की बात सही लगी, इसलिये वह तालाब के किनारे स्थित उस मैदान तक जा पहुंचे, जहां पर जमीन पर वह पवनचक्की पड़ी थी।

पवनचक्की का आकार काफी बड़ा था। उस पवनचक्की के बीच में एक गोल प्लेटफार्म बना था। उस प्लेटफार्म पर चढ़ने के लिये सीढियां बनीं थीं।

सभी सीढ़ियां चढ़कर उस प्लेटफार्म के ऊपर आ गये। प्लेटफार्म के ऊपर एक बड़ा सा लीवर लगा था।

प्लेटफार्म का ऊपरी हिस्सा जालीदार था, जो कि एक मजबूत धातु से बना लग रहा था।

उस जालीदार हिस्से के नीचे नीले रंग का कोई द्रव भरा हुआ था।

“वह द्रव किस प्रकार का हो सकता है?” तौफीक ने कहा- “वह ऐसी जगह पर रखा है जो कि पूरी तरह से बंद है इसलिये हम सिर्फ उसे देख ही सकते हैं।”

“मैं उस द्रव को सूंघ भी सकता हूं।” ऐलेक्स ने अपनी नाक पर जोर देते हुए कहा- “वह किसी प्रकार का ‘कास्टिक’ है, जिससे साबुन बनाया जाता है।”

“साबुन???” जेनिथ ने आश्चर्य से कहा- “साबुन का यहां क्या काम हो सकता है?”

“कोई भी काम हो ... पर अब यह तो श्योर हो गया है कि यही पवनचक्की हमें चंद्रमा तक पहुंचायेगी क्योंकि एक तो यह बिल्कुल सूर्य के नीचे है और दूसरा अभी पवनदेव का काम बचा हुआ है .... अब बस ये देखना है कि इस पवनचक्की को शुरु कैसे करना है?” सुयश ने कहा- “चलो चलकर उस कमरे को भी देख लें, हो सकता है कि पवनचक्की का नियंत्रण उसी कमरे में ही हो?”

सभी पवनचक्की के पास बने, उस कमरे के अंदर आ गये।

कमरे में एक बहुत बड़ी सी मशीन रखी थी, जिसमें कुछ लाल रंग की लाइट जल रहीं थीं।

सुयश ने ध्यान से पूरी मशीन को देखा और फिर बोल उठा- “पवनचक्की इस मशीन से ही चलेगी। इस कमरे की छत पर जो तीर लगा है, असल में वह तड़ितचालक (लाइटनिंग अरेस्टर) है, जिसका प्रयोग नये

भवनों के निर्माण में किया जाता है। तड़ितचालक भवनों के ऊपर गिरने वाली आसमानी बिजली को, जमीन के अंदर भेज कर भवनों की सुरक्षा करता है। पर इस कमरे पर लगे, तड़ितचालक पर जब बिजली गिरी तो उसने सारी बिजली को इस मशीन में सुरक्षित कर लिया था। अब उसी बिजली के द्वारा पवनचक्की को हम चला सकते हैं और वह पवनचक्की हमें किसी ना किसी प्रकार से चंद्रमा पर भेज देगी।"

"इसका मतलब इसे शुरु करने के बाद हमें पवनचक्की पर मौजूद उस प्लेटफार्म पर जाकर खड़े होना होगा और वहां मौजूद लीवर को दबाते ही, पवनचक्की हमें चंद्रमा पर भेज देगी।" क्रिस्टी ने कहा।

"बिल्कुल ठीक कहा क्रिस्टी ... जरुर ऐसा ही होगा।" जेनिथ ने भी क्रिस्टी की हां में हां मिलाते हुए कहा।

"तो फिर देर किस बात की, चलिये मशीन को शुरु करके एक बार देख तो लें।" ऐलेक्स ने कहा।

सुयश ने सिर हिलाया और मशीन से कुछ दूरी पर लगे, एक ऑन बटन को दबा दिया, पर ऑन बटन के दबाने के बाद भी मशीन शुरु नहीं हुई।

अब सुयश फिर ध्यान से उस मशीन के मैकेनिज्म को समझने की कोशिश करने लगा।

"यह मशीन ऐसे स्टार्ट नहीं होगी।" नक्षत्रा ने जेनिथ को समझाते हुए कहा- "इस मशीन का कोई भी कनेक्शन ऑन बटन के साथ नहीं है, इसका मतलब मशीन के ऑन बटन को स्टार्ट करने के लिये कोई और तरीका है .... जेनिथ जरा एक बार कमरे में पूरा घूमो ... मैं देखना चाहता हूं कि यहां और क्या-क्या है?"

नक्षत्रा के ऐसा कहने पर जेनिथ कमरे में चारो ओर घूमने लगी।

तभी एक छोटी सी मशीन को देख नक्षत्रा ने जेनिथ को रुकने का इशारा किया- "यह मशीन टरबाइन की तरह लग रही है, और यही छोटी मशीन, एक तार के माध्यम से ऑन बटन के साथ जुड़ी है ... तुम एक काम करो सुयश को यह सारी चीजें बता दो, मैं जानता हूं कि वह समझ जायेगा कि उसे आगे क्या करना है?"

जेनिथ ने नक्षत्रा की सारी बातें सुयश को समझा दीं।

"ओ.के. टरबाइन को चलाने के लिये हमें किसी सोर्स की जरुरत होती है, फिर चाहे वह हवा हो या फिर पानी ..... पानी .... बिल्कुल सही,

ये टरबाइन तालाब की लहरों से स्टार्ट किया जा सकता है और देखो इसका तार भी बहुत लंबा है।”

सुयश अब तौफीक और ऐलेक्स की मदद से उस भारी टरबाइन को लेकर तालाब के किनारे आ गया।

तालाब के किनारे टरबाइन को रखने का एक प्लेटफार्म भी बना था, पर इस समय तालाब का पानी बिल्कुल शांत था।

यह देख सुयश का चेहरा मुर्झा सा गया।

“क्या हुआ कैप्टेन? आप उदास क्यों हो गये?” ऐलेक्स ने कहा- “आपने तो कहा था कि तालाब के पानी से यह टरबाइन चलायी जा सकती है?”

“जब हम ऊपर बादलों पर थे, तो तालाब का पानी किसी समुद्र की लहर की भांति काम कर रहा था, पर अभी यह बिल्कुल शांत है और टरबाइन को चलाने के लिये हमें लहरों की जरुरत पड़ेगी।” सुयश ने कहा।

“कैप्टेन अंकल, आप परेशान मत होइये, मैं जानती हूं कि तालाब का पानी अभी शांत क्यों है?” शैफाली ने कहा।

शैफाली के शब्द सुन सुयश आश्चर्य से शैफाली की ओर देखने लगा।

“कैप्टेन अंकल समुद्र की लहरों के लिये चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण ही जिम्मेदार माना जाता है और आप देख रहे हैं कि अभी दिन है और आसमान में सूर्य निकला हुआ है। मुझे लगता है कि जैसे ही शाम होगी और आसमान में चंद्रमा निकलेगा, तालाब का पानी फिर से लहरों में परिवर्तित हो जायेगा और वैसे भी हम दिन में आसमान में जाकर करेंगे भी तो क्या? यहां से निकलने का द्वार तो चंद्रमा में मौजूद है। इसलिये आप बस थोड़ा सा इंतजार कर लीजिये बस ...।” शैफाली ने कहा।

शैफाली के शब्दों से एक पल में सुयश सब कुछ समझ गया।

“अच्छा तो इसी के साथ पवन और चंद्रमा की मूर्तियों का कार्य भी पूर्ण हो जायेगा।” सुयश ने खुश होते हुए कहा।

सभी अब चुपचाप वहीं बैठकर चंद्रमा के आने का इंतजार करने लगे।

जैसे ही सूर्य पूरी तरह से सफेद हुआ, शैफाली के कहे अनुसार तालाब का पानी लहरों में परिवर्तित होकर हिलोरें मारने लगा।

तालाब की लहरें अब टरबाइन पर गिरने लगीं, जिससे टरबाइन के अंदर मौजूद ब्लेड ने घूमना शुरु कर दिया।

सुयश टरबाइन पर पानी गिरता देख, भागकर कमरे में पहुंचा और उस मशीन का ऑन बटन दबा दिया।

एक घरघराहट के साथ मशीन ऑन हो गई।

यह देख सुयश सभी को साथ लेकर पवनचक्की के ऊपर मौजूद जालीदार प्लेटफार्म पर पहुंच गया।

सुयश ने एक बार सभी को देखा और फिर वहां मौजूद उस लीवर को नीचे की ओर कर दिया।

एक गड़गड़ाहट के साथ विशालकाय पवनचक्की घूमना शुरु हो गई।

जहां सभी एक ओर इक्साइटेड भी थे, वहीं पर सावधान भी थे।

पवनचक्की ने जैसे ही गति पकड़ी, प्लेटफार्म के नीचे मौजूद नीले रंग का कास्टिक तेजी से जाली के ऊपर की ओर आया और जाली पर एक विशालकाय बुलबुला बन गया।

सभी उस बुलबुले के अंदर बंद हो गये और इसी के साथ वह बुलबुला पवनचक्की की तेज हवाओं से ऊपर आसमान की ओर जाने लगा।

ऐलेक्स को छोड़ सभी को एकाएक शैफाली का बुलबुला और ज्वालामुखी वाला सीन याद आ गया।

“अब समझ में आया कि वहां नीचे कास्टिक क्यों रखा था।” सुयश ने मुस्कुराते हुए कहा।

“अपने ऐलेक्स की नाक तो बिल्कुल कुत्ते जैसी हो गई।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स का मजाक उड़ाते हुए कहा।

“और तुम्हारी आँखें भी तो ....।” कहते-कहते ऐलेक्स रुक गया।

“हां-हां बोलो-बोलो मेरी आँखें भी तो .... किसी जानवर से मिलती ही होंगी।” क्रिस्टी ने मुंह बनाते हुए कहा।

“हां तुम्हारी आँखें बिल्कुल जलपरी के जैसी हैं, जी चाहता है कि इसमें डूब जाऊं।” अचानक से ऐलेक्स ने सुर ही बदल दिया।

क्रिस्टी को ऐलेक्स से इस तरह के जवाब की उम्मीद नहीं थी, इसलिये वह शर्मा सी गई।

“और तुम्हारा चेहरा इस चंद्रमा से भी ज्यादा खूबसूरत है।” ऐलेक्स क्रिस्टी को शर्माते देख किसी शायर की तरह क्रिस्टी की तारीफ करने लगा।

सभी क्रिस्टी और ऐलेक्स की इन मीठी बातों का आनन्द उठा रहे थे।

उधर वह बुलबुला धीरे-धीरे हवा में तैरता हुआ चंद्रमा तक जा पहुंचा।

सभी के चंद्रमा पर उतरते ही वह बुलबुला हवा में फट गया।

बुलबुले के फटते ही सभी चंद्रमा पर उतर गये और चंद्रमा के द्वार में प्रवेश कर गये।

◆ ◆ ◆

समुद्री हमला

17.01.02, गुरुवार, 08:00, वॉशिंगटन डी.सी., अमेरिका

धरा और मयूर को गये हुए आज 4 दिन बीत गये थे।

वीनस पिछले 4 दिन से वेगा के घर पर ही रह रही थी, उसे अब अपने भाई लुफासा का भी डर नहीं था, वह अब खुलकर अपनी जिंदगी जीना चाहती थी, भले ही बाद में अंजाम कुछ भी हो।

इस समय सुबह के 8 बज रहे थे।

वेगा और वीनस दोनों ही बेडरुम में सो रहे थे कि तभी 'खट्-खट्' की हल्की आवाज ने वीनस की नींद खोल दी।

वीनस ने अपने बगल में सो रहे वेगा को देखा और फिर उसके माथे को चूम लिया।

तभी वीनस को फिर वही खट्-खट् की आवाज सुनाई दी।

अब वीनस ने अपनी नजरें आवाज की दिशा में घुमाई।

वह आवाज बेडरुम की खिड़की से आ रही थी।

वीनस अपने बेड से उठी और पर्दे को हटाकर बंद पड़ी खिड़की की ओर देखने लगी। तभी उसे खिड़की से बाहर एक नन्हीं चिड़िया, खिड़की के शीशे पर अपनी चोंच मारती हुई दिखाई दी।

वह खट्-खट् की आवाज उसी वजह से हो रही थी।

वीनस को वह रंग-बिरंगी नन्हीं चिड़िया बहुत अच्छी लगी, इसलिये उसने खिड़की के शीशे को खोल दिया।

जैसे ही वीनस ने खिड़की का शीशा हटाया, वह चिड़िया कमरे में आ गई और चीं-चीं कर पूरे कमरे में चक्कर लगाने लगी।

यह देख वीनस मुस्कुराकर चिड़िया की ओर चल दी- "अरे नन्हीं चिड़िया ये तुम्हारा घर नहीं है। यहां कहां से आ गई?"

पर वह चिड़िया अभी भी खुली खिड़की से बाहर जाने का नाम नहीं ले रही थी।

अब वीनस को वह चिड़िया थोड़ी परेशान दिखाई दी। उसे परेशान देख वीनस ने उस चिड़िया की आवाज में ही उससे पूछा- “क्या हुआ नन्हीं चिड़िया? तुम कुछ परेशान दिख रही हो?”

अब चिड़िया हैरानी से वीनस की ओर देखने लगी, शायद उसने कभी किसी इंसान को अपनी आवाज में बोलते नहीं देखा था।

पर वह वीनस से कुछ कहने की जगह डरकर एक पर्दे के पीछे छिप गई।

अब वीनस को शक होने लगा कि कहीं यह लुफासा तो नहीं? जो कि चिड़िया का रुप धरकर यहां आ गया हो।

इसलिये वीनस धीरे-धीरे पर्दे के पीछे बैठी, उस चिड़िया की ओर बढ़ने लगी।

चिड़िया को बाहर निकालने के चक्कर में, वीनस ने खिड़की को अभी बंद नहीं किया था।

तभी खिड़की से अनगिनत चिड़िया और कौए कमरे में घुसने लगे। यह देख वीनस घबरा गई, वह उस चिड़िया को छोड़ जल्दी से खिड़की के बंद करने के पीछे भागी।

कमरे में चारो ओर चिड़ियों और कौओं का शोर गूंजने लगा। इस शोर को सुनकर वेगा भी घबराकर उठ गया।

उठते ही वेगा की नजर कमरे में घूम रहे, दर्जनों पक्षियों पर पड़ी। उन पक्षियों को देखकर वह चिल्लाने लगा- “मैंने पहले ही कहा था कि लुफासा खाली नहीं बैठेगा, लो वह आ गया अपने सब दोस्तों को लेकर, मुझसे बदला लेने।”

तभी वेगा की नजर वीनस पर पड़ी, जो कि लगातार खिड़की खोले बाहर की ओर देख रही थी।

वेगा को वीनस का इस प्रकार खिड़की पर खड़े होना, थोड़ा आश्चर्यजनक सा लगा, इसलिये वह तुरंत बिस्तर से कूदकर वीनस के पास आ गया।

वेगा की नजर उस ओर गई, जिधर वीनस देख रही थी, इसी के साथ वेगा आश्चर्य से भर गया।

पूरे वॉशिंगटन डी.सी. की सड़कें, मरे हुए पक्षियों से भरी हुई थी। कुछ पक्षी तड़प रहे थे, तो कुछ मर चुके थे।

पर अभी भी आसमान से पक्षियों का गिरना रुका नहीं था।

“ये सब क्या हो रहा है? ये पक्षी कैसे मर रहें हैं?” वेगा ने वीनस से सवाल कर दिया।

कुछ देर के लिये वेगा अपने कमरे में घूम रहे पक्षियों को भूल गया।

“मुझे भी नहीं पता, पर जो कुछ भी हो रहा है, वह ठीक नहीं लग रहा।” वीनस ने कहा- “पता नहीं क्यों ऐसा लग रहा है कि जैसे कुछ बहुत बुरा होने वाला है?”

अब आसमान से पक्षियों का गिरना बंद हो गया था, जिसका साफ मतलब था कि या तो आसमान में पक्षी ही खत्म हो गये थे या फिर वह अंजानी मुसीबत चली गई थी।

अब वीनस का ध्यान कमरे के अंदर के पक्षियों पर गया।

कमरे के अंदर के सारे पक्षी अब उड़ना छोड़, इधर-उधर कमरे में ही छिप गये थे।

यह देख वीनस की नजर एक कबूतर पर गई, जो कि एक टेबल के पीछे छिपा था।

वह दूसरों से उम्र में कुछ बड़ा दिख रहा था और थोड़ा सा बेहतर भी महसूस हो रहा था।

वीनस ने कबूतर को देखते हुए उसकी जुबान में कहा- “मुझसे डरो नहीं, मैं तुम्हारी दोस्त हूं, मुझे बताओ कि बाहर क्या हुआ था?”

वीनस को अपनी भाषा में बोलता देख कबूतर टेबल की ओट से बाहर आ गया।

“तुम हमारी भाषा कैसे बोल लेती हो?” कबूतर ने पूछा।

“क्योंकि मैं तुम्हारी दोस्त हूं, इसलिये तुम्हारी भाषा समझ सकती हूं। तुम मुझे बताओ कि बाहर क्या हुआ था?”

“मैं बाहर आसमान में अपनी रोटी लेकर उड़ रहा था कि तभी एक दूसरे कबूतर ने मेरी रोटी छीनने की कोशिश की, मैं अपनी रोटी बचाकर भागा कि तभी पता नहीं मेरे पीछे वाले कबूतर ने कौन सा जादू किया, कि आसमान में मेरे साथ उड़ रहे सभी पक्षियों का दम घुटने लगा और हम नीचे गिरने लगे। वह कोई बहुत बड़ा जादूगर कबूतर था।” उस समझदार कबूतर ने अपनी समझदारी का परिचय देते हुए कहा।

कोई और समय होता, तो वीनस को उस कबूतर की समझदारी पर बहुत तेज हंसी आती, पर यह समय कुछ और था, इसलिये वीनस उस कबूतर को छोड़ दूसरे पक्षियों की ओर देखने लगी।

तभी एक छोटा सा कौआ कमरे की ओट से निकलकर बाहर आ गया और वीनस को देखते हुए बोला- “यह कबूतर तो मूर्ख है, मैं आपको बताता हूं कि क्या हुआ?” मैं उस समय एक ऊंची सी छत पर बैठा था कि तभी एक विचित्र सा जीव आसमान में उड़ता हुआ आया। उसके हाथ में कोई यंत्र था, उसने आसमान में चारो ओर उस यंत्र से कुछ फैला दिया। उसने जो भी चीज आसमान में फैलाई थी, वह दिखाई नहीं दे रही थी, पर उस अदृश्य चीज ने सबको मारा है, मैं भी अगर इस कमरे में नहीं आता, तो मै भी मारा जाता।”

“उसके बाद वह जीव किधर गया?” वीनस ने कौए से पूछा- “मैंने उसे आखिर में समुद्र की ओर जाते हुए देखा था।” कौए ने कहा।

“बहुत अच्छे, तुम इन सबसे ज्यादा समझदार हो।” वीनस ने उस कौए की तारीफ करते हुए कहा।

कौआ अपनी तारीफ सुनकर खुश हो गया।

“क्या कहा इन पक्षियों ने? क्या इनमें से किसी को पता है कि यह परेशानी कैसे उत्पन्न हुई?” वेगा ने वीनस से पूछा।

वीनस ने कौए की सारी बातें वेगा को बता दीं।

पर इससे पहले कि वेगा कुछ और पूछ पाता कि तभी बाहर से शोर की आवाज सुनाई दी।

शोर सुनकर वेगा और वीनस दोनों ही भाग कर खिड़की के पास पहुंच गये।

वह लोग जो कुछ देर पहले अपने घरों से निकलकर पक्षियों की फोटो खींच रहे थे, अब वह चीखकर भाग रहे थे।

कुछ ही देर में वेगा और वीनस को उनके चीखने का कारण पता चल गया, उन लोगों के पीछे समुद्र के कुछ विचित्र जीव दौड़ रहे थे।

“अरे, यह जीव कैसे हैं?” वीनस ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा- “वेगा जरा इन्हें ध्यान से देखो, इनमें से कुछ शार्क जैसे लग रहे हैं और कुछ दूसरी बड़ी और छोटी मछलियों के जैसे। पर यह समुद्री जीव विकृत होकर पानी से बाहर कैसे आ गये? और ये पानी के बाहर साँस कैसे ले रहे

हैं? कुछ ना कुछ तो गड़बड़ है ... पर हमें सभी लोगों को इन जीवों से बचाना होगा।"

"पर कैसे वीनस, हममें से अगर किसी ने भी बाहर जाकर, अपनी शक्तियों से सब लोगों को बचाने की कोशिश की, तो सभी हमें पहचान लेंगे और फिर बाद में हमें सबके सवालों के जवाब देने पड़ेंगे, जो कि हम नहीं दे सकते।" वेगा ने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा।

"हम इतनी शक्तियां होते हुए भी ऐसे घर में बैठे नहीं रह सकते वेगा।" यह कहकर वीनस ने अलमारी से कैंची निकाली और एक पर्दे को काट जल्दी से उसमें आँखों के देखने भर की जगह काट कर निकाल दी और ऐसा करके 2 मास्क तैयार कर दिये।

वीनस ने एक मास्क अपने चेहरे पर कसकर बांधा और दूसरा मास्क वेगा के चेहरे पर।

अब उन दोनों के चेहरे छिप गये थे, बस आँख की जगह 2 छेद दिखाई दे रहे थे।

यह करके दोनों अपने घर से निकलकर बाहर की ओर आ गये।

इस समय चारो ओर शोर-शराबा होने की वजह से किसी ने उन पर ध्यान नहीं दिया।

वेगा ने बाहर निकलते समय अपनी जोडियाक वॉच पहनना नहीं भूला था।

बाहर निकलते ही वीनस को एक बड़ी सी मछली, एक 12 वर्षीय बच्चे के पीछे भागती दिखाई दी।

वीनस ने उछलते हुए अपने पास रखा एक ड्रम उस मछली की ओर फेंक दिया। मछली का सारा ध्यान इस समय बच्चे की ओर था। इसलिये वह ड्रम का वार झेल नहीं पायी और लड़खड़ा गयी।

इतनी देर में वीनस ने उस बच्चे को पकड़ अपनी ओर खींच लिया।

उधर वेगा ने अपनी जोडियाक वॉच पर सिंह राशि को सेट कर दिया। ऐसा करते ही वेगा के सामने, एक विचित्र जीव प्रकट हो गया, जिसका सिर शेर का और शरीर किसी ताकतवर इंसान की तरह था।

उस सिंहमानव ने एक सुनहरी धातु का कवच अपने सीने पर पहन रखा था। अचानक उसके हाथ के नाखून बहुत लंबे और स्टील की तरह पैने दिखने लगे।

अब उस सिंहमानव ने अपने हाथों से सामने से आ रही मछलियों को चीरना-फाड़ना शुरु कर दिया।

एक नजर में वह नरसिंह देवता का अवतार दिखाई दे रहा था।

“अरे वाह, अब तो मुझे कुछ करने की जरुरत ही नहीं है, यह सिंहमानव ही अकेले सबको निपटा देगा।” वेगा खुश होते हुए एक स्थान पर बैठ गया।

तभी उसकी नजर वीनस पर पड़ी, जो कि जमीन से कुछ ना कुछ उठाकर, उन जीवों पर फेंक रही थी और उनसे बचने की कोशिश भी कर रही थी।

यह देख वेगा सटपटा गया और उठकर वीनस की ओर भागा।

“तुम इधर क्यों आ गये? उधर जाकर बैठकर आराम करो, मैं अकेले ही इनसे निपट लूंगी।” वीनस की बात सुन वेगा समझ गया कि वीनस ने उसे बैठे देख लिया था।

“वो ये तुम्हारा बनाया मास्क मेरी आँखों पर आ गया था, उसी को बैठकर एडजेस्ट कर रहा था।” वेगा ने सफाई देते हुए कहा।

“चल झूठे, शर्म नहीं आती झूठ बोलते।” वीनस ने अपने हाथ में पकड़ी कैंची को एक ऑक्टोपस की आँखों में मारते हुए कहा।

“अरे बाप रे, तुम अभी तक आँख मारती थी, अब आँख फोड़ने भी लगी।” वेगा अभी भी आराम से खड़ा होकर शरारतें कर रहा था।

तभी ऑक्टोपस ने अपने एक हाथ से वीनस की गर्दन पकड़ ली। वीनस की साँसें अब घुटने लगीं। कैंची भी उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गई।

यह देख वेगा ने पास पड़े पानी के पाइप से पानी की फुहार, ऑक्टोपस के चेहरे पर मारने लगा।

“अरे बेवकूफ, तुम उसकी ओर हो या मेरी ओर।” वीनस ने अपना गला छुड़ाते हुए कहा- “वह पानी का ही जीव है और तुम उस पर पानी मार रहे हो।”

वेगा को अपनी गलती का अहसास हो गया, पर तब तक वह ऑक्टोपस आकार में और बड़ा हो गया।

तभी सिंहमानव बाकी जीवों को अपने पंजो से नोचता हुआ उधर आ गया, उसने बिना उस ऑक्टोपस को मौका दिये, उसका पूरा पेट अपने पंजे से फाड़ दिया।

यह देख वीनस डरकर वेगा की ओर आ गई।

सिंहमानव अब बाकियों का काल बनकर आगे बढ़ गया।

तभी अचानक पता नहीं कहां से सैकड़ों समुद्री जीवों ने सिंहमानव पर हमला कर दिया।

एकसाथ इतने जीवों से लड़ना सिंहमानव के बस की भी बात नहीं थी, अब वह सभी जीव मिलकर सिंहमानव को काटने लगे।

यह देख वेगा ने अपनी घड़ी के वॉलपेपर को बदल कर ‘सिंह’ से ‘धनु’ कर लिया।

अब वह सिंहमानव अपनी जगह से गायब हो गया और उसकी जगह एक अश्वमानव दिखाई देने लगा।

अश्वमानव के हाथ में तीर और धनुष था।

अश्वमानव ने बिना किसी को मौका दिये दूर से ही सबको तीरों से बेधना शुरु कर दिया।

अश्वमानव के तीर चलाने के गति इतनी अधिक थी, कि कोई जलीय जंतु उसके पास ही नहीं आ पा रहा था।

वह एक साथ अपने धनुष पर 5 तीर चढ़ाकर सबको मार रहा था। सबसे विशेष बात थी कि उसके तरकश से तीर खत्म ही नहीं हो रहे थे।

वेगा और वीनस अब मात्र दर्शक बने उस अश्वमानव को युद्ध करते देख रहे थे।

“क्या ये जलीय जीव तुम्हारा कहना नहीं मान रहे थे?” वेगा ने वीनस से पूछा।

“नहीं, इनका मस्तिष्क इनके बस में नहीं है और ऐसी स्थिति में यह मेरा कहना नहीं मान सकते।” वीनस ने कहा।

तभी पता नहीं कहां से एक ईल मछली आकर वेगा के गले से लिपट गई।

यह देख वीनस ने अश्वमानव की ओर देखा, अश्वमानव अभी भी सभी से युद्ध कर रहा था।

वीनस समझ गई कि एक पल की भी देरी वेगा के लिये घातक हो सकती है, पर परेशानी ये थी कि वीनस उस ईल को अपने हाथों से नहीं छुड़ा सकती थी।

तभी वीनस की नजर सामने एक शेड पर बैठे बाज की ओर गई।

बाज को देखते ही वीनस के मुंह से एक विचित्र सी आवाज उभरी। उस आवाज को सुन बाज तेजी से उस ओर आया और वेगा के गले में फंसी ईल को एक झटके से ले हवा में उड़ गया।

यह देख वीनस ने भागकर वेगा को थामा। गला घुटने की वजह से वेगा की आँखों के आगे अंधेरा छा गया था।

पर साँस आते ही वेगा ठीक हो गया।

“मैं भी सोच रही थी कि उस ईल के मुंह पर पानी मार दूं, पर आसपास कहीं पानी था ही नहीं, इसलिये बाज के द्वारा उस ईल को पास के तालाब तक भिजवा दिया है।” वीनस ने मुस्कुराते हुए कहा।

वेगा ने घूरकर वीनस की ओर देखा पर कुछ कहा नहीं।

उधर तब तक अश्वमानव ने सभी जलीय जीवों का सफाया कर दिया था।

“सारे जीव खत्म हो गये हैं, पर अब अपने घर कैसे चलें? आसपास के सारे लोग खिड़की से हमें ही देख रहे हैं।” वीनस ने दबी आवाज में कहा।

“तो फिर अभी घर की जगह कहीं और चलो, कुछ देर बाद हम वापस आ जायेंगे।“

यह कह वेगा ने अश्वमानव को गायब किया और चुपचाप अपने घर की विपरीत दिशा में वीनस के साथ दौड़ पड़ा।

आज इन दोनों का एक सुपरहीरो की तरह पहला युद्ध था, लेकिन इस पहले युद्ध ने ही इन्हें बहुत कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-10

शरद ऋतु

तिलिस्मा 4.1

सुयश के साथ सभी अब एक विशाल कमरे में निकले।

इस कमरे में एक किनारे पर 15 फुट ऊंचा, एक पृथ्वी का ग्लोब रखा था, जिसे नचाया भी जा सकता था।

उस ग्लोब के आगे एक 12 इंच की त्रिज्या का, सुनहरी धातु का रिंग रखा था, जिसके आगे एक धातु की पट्टी पर, अंग्रेजी के कैपिटल अक्षरों से RING लिखा था।

इस रिंग के बगल में एक छोटी सी ट्रे रखी थी, जिसमें 4 रंग के छोटे फ्लैग रखे थे।

उस कमरे की पूरी जमीन काँच की बनी थी, जिस पर पूरे विश्व का मानचित्र बना था। मानचित्र में विश्व के सभी देशों को 4 अलग-अलग रंगों से दर्शाया गया था।

एक जगह पर उन 4 रंगों का वर्गीकरण किया गया था।

जहां लाल रंग ग्रीष्म ऋतु का, नीला रंग शीत ऋतु का, नारंगी रंग शरद ऋतु का और हरा रंग वसंत ऋतु के प्रतीक के रुप में दर्शाया गया था।

“कैप्टेन, इस कमरे को देख कर तो लग रहा है कि यहां पर विश्व के अलग-अलग देशों को, वहां पायी जाने वाली ऋतुओं के हिसाब से वर्गीकृत किया गया है और उसे ग्लोब और मानचित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।” जेनिथ ने सुयश को देखते हुए कहा।

“तुम बिल्कुल ठीक कह रही हो जेनिथ।” सुयश ने कमरे में चारो ओर देखते हुए कहा- “पर अब हमें यह देखना है कि हमें यहां करना क्या है? क्योंकि उसको जाने बिना हम इस द्वार को नहीं पार कर पायेंगे?”

“कैप्टेन मैंने एक चीज गौर की है कि जमीन पर बने मानचित्र में भी 4 रंगों को दर्शाया गया है और यहां टेबल पर रखी ट्रे में मौजूद फ्लैग भी उन्हीं 4 रंग के हैं, इसका मतलब इनमें आपस में कोई ना कोई सम्बन्ध तो जरुर है?” ऐलेक्स ने कहा।

“दरअसल विश्व के अधिकतर देशों में 4 ऋतुओं को ही प्रधानता दी गई है, इसलिये यहां उन्हीं 4 ऋतुओं को मानचित्र के माध्यम से दर्शाया गया है।” सुयश ने कहा।

“कैप्टेन अंकल, मुझे तो इस कमरे में सबकुछ एक ही थीम पर आधारित लग रहा है, बस यह रिंग यहां पर कुछ अजीब सा लग रहा है क्योंकि ऋतुओं या विश्व के मानचित्र में रिंग का कहीं उल्लेख नहीं है।” शैफाली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा।

“बात तो तुम्हारी सही है शैफाली, तो फिर चलो पहले इसी पर ध्यान देते हैं।” यह कहकर सुयश उस रिंग के पास आकर खड़ा हो गया और ध्यान से उसे देखने लगा।

“कैप्टेन एक बात और है।” तौफीक ने कहा- “यह रिंग हमारे सामने रखा है और हम इसे देखकर पहचान सकते हैं कि यह एक रिंग है, फिर इसके पास यह नेम प्लेट लगाकर रिंग लिखा क्यों गया है?” मुझे यह बात थोड़ी अजीब सी लग रही है।”

इधर सभी बातें कर रहे थे, उधर ऐलेक्स ग्लोब के पास खड़ा होकर ग्लोब को नचा रहा था।

जैसे ही ग्लोब रुक जाता, ऐलेक्स उसे फिर नचा देता। कुछ देर तक ऐसे ही करते रहने के बाद ऐलेक्स ने इस बार जैसे ही ग्लोब को नचाना चाहा, उसके हाथों पर किसी चीज का स्पर्श हुआ।

यह अहसास होते ही ऐलेक्स ध्यान से उस स्थान को देखने लगा।

ध्यान से देखने पर ऐलेक्स को इंडिया वाले स्थान पर एक उभरी हुई बिन्दी चिपकी दिखाई दी।

“कैप्टेन, जरा एक बार इसे देखिये।” ऐलेक्स ने सुयश को वहां आने का इशारा करते हुए कहा- “यहां ग्लोब में इंडिया वाले स्थान पर उभरी हुई बिन्दी चिपकी है। क्या इसका कोई मतलब हो सकता है?”

ऐलेक्स की आवाज सुन सुयश सहित, सभी उस ग्लोब के पास आ गये और छूकर उस बिन्दी को देखने लगे।

“इस बिन्दी का कोई रंग नहीं है, यह पूर्णतया पारदर्शी है।” सुयश ने कहा- “यानि कि इसे छुए बिना इसके बारे में नहीं जाना जा सकता था, अब ऐसी चीज कैश्वर ने यूं ही तो नहीं लगाई होगी? इसकी कुछ ना कुछ तो अर्थ निकलता ही होगा?”

“ऐलेक्स भैया, एक बार पूरा ग्लोब ध्यान से देखिये। क्या ग्लोब पर और भी ऐसी ही बिन्दियां हैं?” शैफाली ने ऐलेक्स से कहा।

शैफाली की बात सुन कर ऐलेक्स, अपने हाथों के स्पर्श से ग्लोब पर और भी बिन्दियों को ढूंढने में लग गया।

कुछ ही देर में ऐलेक्स ने पूरा ग्लोब ध्यान से चेक कर लिया।

“इस ग्लोब पर इंडिया के अलावा रुस, ग्रीनलैंड और न्यूजीलैंड के स्थान पर भी पारदर्शी बिन्दियां भी मौजूद हैं।” ऐलेक्स ने शैफाली से कहा।

यह सुनकर शैफाली मुस्कुरा दी और उठकर ऐलेक्स के गले लगते हुए बोली- “वाह ऐलेक्स भैया, आपने तो इतनी बड़ी समस्या को आसानी से सुलझा दिया।”

पर ऐलेक्स को तो स्वयं नहीं समझ में आया कि उसने कौन सी समस्या को अंजाने में सुलझा दिया, इसलिये वह प्रश्नवाचक नजरों से शैफाली की ओर देखने लगा।

“कैप्टेन अंकल, यहां पर लिखा RING शब्द 4 अक्षर R, I, N और G से बना है, जबकि ग्लोब पर जिन देशों के आगे पारदर्शी बिन्दियां चिपकी हुई हैं, उनके नाम का पहला अक्षर भी यही है। यानि कि Russia का R, India का I, New Zealand का N और Greenland का G .... अब मुझे लग रहा है कि हमें ट्रे में मौजूद इन फ्लैग्स को ग्लोब के ऊपर लगाना होगा? पर ध्यान रहे कि जिस देश की ऋतु का रंग जो मानचित्र बता रहा है, फ्लैग हमें उसी ढंग से लगाना होगा।” शैफाली ने तो एक झटके से पूरी गुत्थी ही सुलझा दी।

सभी के चेहरे पर अब खुशी साफ नजर आने लगी थी।

तुरंत तौफीक ने जमीन पर बने मानचित्र पर सबसे पहले रुस देश का रंग देखा, जो कि नारंगी था।

अब ऐलेक्स ने ट्रे से नारंगी रंग का फ्लैग निकालकर उसे ग्लोब के उसी पारदर्शी बिन्दी पर लगा दिया।

जैसे ही ऐलेक्स ने फ्लैग को रुस के स्थान पर लगाया, वातावरण में एक तेज 'बजर' की आवाज सुनाई देने लगी।

सभी वह आवाज सुन डर गये। तभी उनकी नजर जमीन पर गई, अब पूरी जमीन पर सिर्फ रुस का ही मानचित्र दिख रहा था और रुस की राजधानी मास्को के स्थान पर एक लाल रंग की लाइट जोर से ब्लिंक करती हुई दिखाई दी।

"यह सब क्या हो रहा है कैप्टेन?" क्रिस्टी ने सुयश से पूछा।

"मुझे लगता है कि हम जहां खड़े है, वह तिलिस्म नहीं है, बल्कि अब हमें तिलिस्म में प्रवेश करना है और यह बजर हमें इसी का संकेत दे रही है।" सुयश ने कहा- "मुझे लगता है कि तिलिस्म का अगला द्वार मास्को में हमारा इंतजार कर रहा है।"

यह कहकर सुयश आगे बढ़कर मास्को के उस स्थान पर खड़ा हो गया, जहां पर लाइट ब्लिंक कर रही थी।

सुयश जैसे ही वहां पर खड़ा हुआ, वह उस स्थान से गायब हो गया।

यह देख सभी उस स्थान पर पहुंच कर खड़े हो गये और इसी के साथ सभी गायब होकर मास्को के एक पार्क में जा पहुंचे।

सुयश वहां पहले से ही खड़ा था।

"यह तो मास्को का एक पार्क है।" ऐलेक्स ने चारो ओर देखते हुए कहा- "यहां तो मैं रोज घूमने आता था, यहां से मेरा घर ज्यादा दूर नहीं है।"

"अच्छा तो ब्वॉयफ्रेंड जी, कहीं आप हमको छोड़ कर अपने घर जाने की तो नहीं सोच रहे?" क्रिस्टी ने एक बार फिर से ऐलेक्स को छेड़ते हुए कहा।

"ये लो कर लो बात।" ऐलेक्स ने क्रिस्टी की आँखों में झांकते हुए कहा- "अरे तुम्हारे लिये तो मैं दुनिया छोड़ दूं, तुम्हारे सामने घर की बिसात ही क्या है। और वैसे भी मुझे पता है कि यह कैश्वर का बनाया एक सेट है, असली मास्को नहीं। लेकिन एक बात तो इससे कंफर्म हो गई कि कैश्वर किसी प्रकार से हमारे दिमाग को पढ़ रहा है और उसके बाद ही इन दरवाजों की रचना कर रहा है।"

ऐलेक्स की बात सुन सुयश भी सोच में पड़ गया क्योंकि ऐलेक्स कह तो सही रहा था, इस तिलिस्मा में ऐसी चीजों का ही निर्माण हुआ था, जो

कहीं ना कहीं उनके दिमाग में थीं।

“चलिये कैप्टेन, अब इस पार्क को भी देख लें कि यहां पर क्या-क्या है?” तौफीक की आवाज ने सुयश का ध्यान भंग कर दिया और वह अपनी सोच की दुनिया से बाहर आ गया।

सभी अब पार्क में घूमकर वहां मौजूद एक-एक चीज को देखने लगे।

उस पार्क में सबसे पहले एक देवी की मूर्ति मौजूद थी, जो अपने हाथ में ‘सैंड वॉच’ लिये थी।

“क्या कोई बता सकता है कि यह कौन सी देवी हैं?” सुयश ने सभी की ओर देखते हुए पूछा।

“हां, मैं जानती हूं इनके बारे में।” क्रिस्टी ने जवाब दिया- “यह देवी ‘कार्पो’ हैं, ग्रीक माइथालोजी में इन्हें शरद ऋतु (Autumn Season) की देवी कहा जाता है, यानि कि ये देवी बारिश के बाद, प्रकृति में बड़ा बदलाव करते हुए, सभी पेड़ों के पुराने वस्त्रों, यानि कि उनके पत्तों को उनके शरीर से गिरा देती हैं। इसीलिये इस मौसम को पतझड़ भी कहते हैं। यह सबकुछ समय के द्वारा नियंत्रित करती हैं।”

“हमने वहां मानचित्र में भी नारंगी रंग को शरद ऋतु के प्रतीक के रुप में देखा था, यानि तिलिस्मा के चौथे द्वार में इस बार हमारा पाला ऋतुओं से पड़ा है और उसी के फलस्वरुप हम पहली ऋतु का सामना करने के लिये मास्को आये हैं।” जेनिथ ने कहा।

जैसे ही जेनिथ ने यह कहा अचानक से मूर्ति ने अपने हाथ में पकड़ी ‘सैंड वॉच’ को उल्टा कर दिया।

यह देख सभी आश्चर्य से मूर्ति की ओर देखने लगे।

तभी उनके आसपास के वातावरण में बदलाव शुरु हो गये और वहां मौजूद सैकड़ों ‘मैपल’ के पेड़ों की पत्तियों ने अपना रंग बदलना शुरु कर दिया।

अब सभी मैपल की पत्तियां हरे से लाल रंग में परिवर्तित होने लगी। हवा भी अब थोड़ी शुष्क हो चली थी।

“कैप्टेन अंकल, देवी कार्पो के सैंड वॉच के चलते ही मौसम में शरद ऋतु के समान बदलाव होने लगे हैं .... इसी के साथ देवी का सैंड वॉच यह भी बता रहा है कि हमें जो भी करना है, उसके लिये हमारे पास बस 2 घंटे का ही समय है ... पर हमें करना क्या है? यह हमें अभी तक नहीं पता।” शैफाली ने पार्क में चारो ओर देखते हुए कहा- “इसलिये हमें सबसे पहले अपना कार्य पहचानना होगा, तभी हम उसे समय रहते पूरा कर पायेंगे।”

शैफाली की बात बिल्कुल सही थी, इसलिये बिना देर किये सभी पार्क के चारो ओर घूमकर वहां मौजूद चीजों से अपना कार्य ढूंढने की चेष्टा करने लगे।

तभी उन्हें पार्क के बीचोबीच एक हरा-भरा पेड़ दिखाई दिया, जो अपनी ग्रीनरी के कारण सभी पेड़ों से अलग ही नजर आ रहा था।

“यह क्या? जहां सभी मैपल के पेड़ों के पत्ते धीरे-धीरे लाल होने लगे है, वहां यह पेड़ अभी भी इतना हरा-भरा कैसे नजर आ रहा है?” तौफीक ने कहा।

“शायद इस पेड़ पर देवी कार्पो और शरद ऋतु का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा?” शैफाली ने कहा- “और मुझे लग रहा है कि यही हमारा कार्य है। हमें इस पेड़ पर भी शरद ऋतु का प्रभाव डालना ही होगा, नहीं तो यह प्रकृति के विरुद्ध होगा और इसका दुष्परिणाम हमें भुगतना होगा।”

शैफाली की बात से सभी सहमत थे।

पर जैसे ही ऐलेक्स ने आगे बढ़कर पेड़ के पास जाने की सोची, किसी अदृश्य दीवार ने ऐलेक्स का रास्ता रोक लिया।

“कैप्टेन, यहां पर कोई अदृश्य दीवार है, जो मुझे आगे जाने नहीं दे रही है।” ऐलेक्स ने सुयश से कहा- “अब अगर आगे जायेंगे ही नही, तो इस पेड़ की परेशानी को दूर कैसे करेंगे?”

ऐलेक्स के शब्द सुनकर सभी ने पेड़ के पास जाने की कोशिश की, पर सभी पेड़ के पास पहुंचने में असफल रहे।

“हमें पेड़ के पास पहुंचने का कोई ना कोई तरीका तो ढूंढना ही होगा?” जेनिथ ने कहा और अपने आसपास कुछ ढूंढने लगी।

पर पार्क में उस जगह पर एक बेंच के सिवा कुछ नहीं था।

समय धीरे-धीरे बीत रहा था, पार्क के बाकी पेड़ों की पत्तियां पूरी लाल हो चुकीं थीं, पर सामने खड़ा वह पेड़ अपनी हरी पत्तियों को दिखाकर मानो सबको चिढ़ा रहा था।

सुयश अब थककर पेड़ की ओर देख रहा था, कि तभी सुयश को पेड़ के पास, एक छोटे से बिल से एक चूहा झांकता नजर आया, जो कि सुयश को अपनी ओर देखता पाकर वापस बिल में घुस गया।

चूहे को देखकर अचानक सुयश के मस्तिष्क में एक आइडिया आ गया।

“दोस्तों, मैंने अभी इस पेड़ के पास एक चूहा घूमता देखा, तो मुझे लग रहा है कि यदि हम जमीन के अंदर-अंदर, इस पेड़ तक एक सुरंग खोदें तो उस पर इस अदृश्य दीवार का असर नहीं होगा।”

“पर कैप्टेन, हमारे पास समय बहुत कम है, ऐसे में बिना किसी फावड़े या कुदाल के हम इतनी जल्दी इतनी बड़ी सुरंग कैसे खोद पायेंगे?” जेनिथ ने कहा।

“पहली बात है कि हमें सुरंग को पेड़ तक नहीं खोदना है, हमें बस उसे 2 फुट ही खोदना है, जिससे कि हम बस इस अदृश्य दीवार को पार कर जायें। दूसरी बात जिस पेड़ के पास चूहों ने अपना घर बनाया होता है, उस पेड़ के पास की जमीन वैसे ही अंदर से नर्म होती है, इसलिये हमें ज्यादा मुश्किल नहीं आयेगी।” सुयश ने कहा।

तभी ऐलेक्स भागकर सामने पड़ी बेंच की ओर आ गया। वह कुछ देर तक बेंच को देखता रहा और फिर उसने बेंच के हत्थे को खींचकर बेंच से निकाल लिया।

बेंच का वह हत्था बिल्कुल किसी कुदाल के अगले भाग की तरह था, उसके बीच में लकड़ी लगाने के लिये छेद भी था।

ऐलेक्स की नजरें अब बेंच के लकड़ी के एक पाये की ओर गई। इस बार ऐलेक्स ने बेंच से लकड़ी का वह पाया भी अलग कर लिया।

ऐलेक्स ने लकड़ी के उस पाये को कुदाल के अगले भाग में फंसा दिया।

इसके बाद जमीन पर थोड़ा ठोंकते ही कुदाल ने पूरा आकार ले लिया।

अब ऐलेक्स ने भागकर वह कुदाल सुयश को पकड़ा दी। सुयश आश्चर्य से ऐलेक्स को देख रहा था, उसे तो समझ में भी नहीं आया कि ऐलेक्स यह कुदाल ले कहां से आया?

“ऐलेक्स ने तो इस काम को बहुत आसान कर दिया। चलो दोस्तों अब थोड़ा मेहनत भी कर ली जाए।” यह कहकर सुयश तेजी से कुदाल से अदृश्य दीवार के आगे के हिस्से को खोदने लगा।

बाकी के लोग खुदी हुई मिट्टी को दूर करने में लगे थे।

सुयश का कहना सही था, चूहों ने पेड़ के आसपास की मिट्टी को भुरभुरा बना दिया था। इसलिये एक छोटी सुरंग तैयार करने में मात्र 15 मिनट की मेहनत ही करनी पड़ी।

सुरंग बनते ही सुयश और तौफीक तेजी से उस सुरंग में घुसकर पेड़ के पास पहुंच गये और कुछ ना समझ में आते देख पेड़ की पत्तियों को उखाड़ना शुरु कर दिया।

पर सुयश और तौफीक जितनी पत्तियां तोड़ रहे थे, उतनी ही पत्तियां पेड़ पर फिर से आ जा रहीं थीं।

“कैप्टेन अंकल, रुक जाइये।” शैफाली ने सुयश को रुकने का इशारा किया- “आप लोग जितनी पत्तियां तोड़ रहे हैं, उतनी ही पेड़ पर फिर उग रहीं हैं, इसलिये मुझे नहीं लगता कि यह सही तरीका है पेड़ के बदलाव का। हमें कुछ और ही सोचना होगा?”

शैफाली की बात सुन सुयश के चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं क्योंकि लगभग 1.5 घंटा बीत चुका था, अब सिर्फ आधा घंटा ही शेष था।

आसपास के बाकी पेड़ की पत्तियां लगभग झड़ चुकीं थीं।

“जो भी सोचना है जल्दी सोचो शैफाली, क्योंकि हमारे पास ज्यादा समय नहीं बचा है और पेड़ के बारे में तुमसे बेहतर हममें से कोई नहीं सोच सकता।” सुयश ने शैफाली की तारीफ करते हुए उसका उत्साह बढ़ाया।

सुयश के शब्दों को सुन शैफाली जोर-जोर से बड़बड़ा कर सोचने लगी- “मैपल के पेड़ की पत्तियां गर्मियों में हरी होती है, पर जैसे ही शरद ऋतु आती है, वह लाल होने लगती हैं। शरद ऋतु में सूर्य की प्रकाश ज्यादा पृथ्वी पर नहीं पहुंच पाता, इसका मतलब कि इस पेड़ को भी, कहीं से सूर्य का प्रकाश ज्यादा मिल रहा है, जिसकी वजह से यह इस मौसम में भी अच्छे से क्लोरोफिल बना रहा है, यानि हमें इसका हरापन रोकने के लिये, सूर्य के प्रकाश के स्रोत का पता लगाना होगा?”

शैफाली की बात सुन ऐलेक्स ने एक बार फिर ध्यान लगाकर पेड़ को देखना शुरु कर दिया, अब उसे प्रकाश की एक किरण किसी ओर से आकर उस पेड़ पर पड़ती दिखाई दी।

“सब लोग मेरे पीछे आओ, मुझे एक प्रकाश की किरण कहीं से आकर इस पेड़ पर पड़ती हुई दिख रही है।” यह कहकर ऐलेक्स पार्क में एक दिशा की ओर भागा।

तब तक सुयश और तौफीक भी सुरंग के रास्ते वापस बाहर निकल आये थे।

सभी अब ऐलेक्स के पीछे भागे।

ऐलेक्स भागकर पार्क में मौजूद एक दूसरी मूर्ति के पास पहुंच गया।

यह मूर्ति 20 फुट ऊंची थी। उस मूर्ति ने अपने हाथ में एक गोला उठाया हुआ था, जो कि नारंगी रंग का चमक रहा था।

वह प्रकाश उसी गोले से आ रहा था।

“यह मूर्ति ग्रीक देवता हीलीयस की है, इन्हें सूर्य के देवता के रुप में जाना जाता है।” क्रिस्टी ने मूर्ति को देखते हुए कहा- “और इन्होंने सूर्य को ही अपने हाथों में उठा रखा है।”

“इसका मतलब इसी सूर्य की किरणों से वह पेड़ अब भी हरा है।” शैफाली ने कहा- “हमें कैसे भी इन किरणों को उस पेड़ तक पहुंचने से रोकना होगा?”

“पर इन किरणों को रोका कैसे जा सकता है?” क्रिस्टी ने दिमाग लगाते हुए कहा।

कुछ सोचने के बाद सुयश ने अपनी बदन पर मौजूद लेदर की जैकेट को उछालकर हीलीयस के हाथ में पकड़े सूर्य पर टांग दिया, पर एक मिनट से भी कम समय में वह जैकेट जलकर राख हो गई और इसी के साथ सुयश के शरीर पर बिल्कुल वैसी ही एक नयी जैकेट आ गई।

“यह प्लान तो काम नहीं करेगा।” सुयश ने कहा- “हम इस सूर्य को किसी भी चीज से ढक नहीं सकते। कुछ और ही सोचना पड़ेगा?”

यह सुनकर सभी इधर-उधर देखने लगे कि शायद यहां कोई और ऐसी चीज हो, जिससे सूर्य की रोशनी को रोका जा सके।

तभी क्रिस्टी की निगाह मूर्ति के पीछे की ओर गई और उसने चिल्लाकर सुयश का ध्यान अपनी ओर कराया- “कैप्टेन, कुछ ढूंढने की जरुरत नहीं है, सूर्य का ग्लोब पीछे की ओर से आधा काला है, इसका साफ मतलब है कि हमें इसके सामने कुछ नहीं रखना, बल्कि इसे घुमाकर इसका पिछला हिस्सा आगे की ओर कर देना है।”

“यह काम मैं करता हूं।” यह कहकर ऐलेक्स तेजी से मूर्ति के ऊपर चढ़ने लगा।

कुछ ही देर में ऐलेक्स मूर्ति के ऊपर था, अब वह सूर्य के ग्लोब को घुमाने की कोशिश करने लगा, पर ऐलेक्स के पूरी ताकत लगा देने के बाद भी वह सूर्य का ग्लोब टस से मस नहीं हुआ।

यह देख ऐलेक्स ने ऊपर से चिल्लाकर कहा- “कैप्टेन यह ग्लोब घूम नहीं रहा है, आप नीचे से देखो, हो सकता है कि मूर्ति को घुमाया जा सके।”

ऐलेक्स की बात सुन सुयश नीचे से मूर्ति को घुमाने की कोशिश करने लगा, पर उस मूर्ति में भी घूमने का कोई ऑप्शन दिखाई नहीं दिया।

अब सच में सबके लिये चिंता की बात थी, क्योंकि अब मात्र 5 मिनट का ही समय बचा था।

“कैप्टेन, मुझे लगता है कि अब हम इस द्वार को नहीं पार कर पायेंगे, क्योंकि अब हमारे पास सिर्फ और सिर्फ 5 मिनट ही बचा है।” जेनिथ ने निराश होने वाले अंदाज में कहा।

“हमें अंतिम दम तक हार नहीं माननी चाहिये। जिंदगी में कभी-कभी हम उस स्थान से हारकर वापस आ जाते हैं, जो समस्या के समाधान से बिल्कुल करीब होता है। इसलिये अपनी ओर से सभी लोग आखिरी सेकेण्ड तक कोशिश जारी रखो, बाकी सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दो।” सुयश के शब्द बिल्कुल जादू से भरे थे। इन शब्दों ने सभी में एक बार फिर से जोश का संचार कर दिया था।

सुयश के शब्द सुन ऐलेक्स के कान में गूंजने लगे- “सब कुछ ईश्वर पर छोड़ दो .... यही कहा है कैप्टेन ने .... पर मेरे पास तो देवता हीलीयस के सिवा इस समय कोई नहीं है, चलो इन्हीं पर ध्यान लगाता हूं।” यह सोच ऐलेक्स हीलीयस की मूर्ति को ध्यान से देखने लगा, तभी ऐलेक्स को मूर्ति की गर्दन और सिर के बीच कुछ गैप दिखाई दिया।

कुछ सोच ऐलेक्स ने मूर्ति के सिर को घुमाने की कोशिश की। ऐलेक्स की जरा सी कोशिश से ही मूर्ति का सिर पीछे की ओर घूम गया।

और जैसे ही मूर्ति का सिर पीछे की ओर हुआ, मूर्ति का शरीर भी स्वतः पीछे की ओर घूम गया।

इसी के साथ सूर्य की ग्लोब का अंधेरे वाला हिस्सा आगे की ओर आ गया और उस पेड़ को सूर्य की रोशनी मिलनी बंद हो गई।

इसी के साथ उस पेड़ के पत्तों का रंग भी लाल हो गया। यह देख सब खुशी से चिल्लाये।

पर सुयश की निगाह अब देवी कार्पो के हाथ में थमी सैंड वॉच पर थी।

उस सैंड वॉच में अब बहुत थोड़ी सी रेत ही बची थी।

अब सुयश कभी मैपल के पेड़ के पत्तों को, तो कभी सैंड वॉच में बची सैंड को देख रहा था।

पेड़ के पत्ते अब पूरे लाल होकर झड़ना शुरु हो गये थे, पर रेत भी बिल्कुल समाप्ति की ओर आ पहुंची थी।

सभी की साँसें इस प्रकार रुकी थीं, मानों विश्व कप फुटबाल के फाइनल के मैच में दोनों टीमें बराबरी पर हों और आखिरी 60 सेकेण्ड का टाइमर चल रहा हो।

पेड़ के सारे पत्ते झड़ गये, पर एक अखिरी पत्ता अभी भी डाल पर मौजूद था और सैंड वॉच में सिर्फ 5 सेकेण्ड की रेत ही बची थी ...... 5 .... 4 3

तभी तौफीक के हाथ में चाकू नजर आया और वह बिजली की तेजी से उस आखिरी पत्ते की ओर झपटा- 2 1

पर आखिरी मिली सेकेण्ड में चाकू ने उस पत्ते को पेड़ से गिरा दिया और इसी के साथ वह द्वार भी पार हो गया।

इससे पहले कि सभी खुशी मना पाते कि रोशनी के एक तेज झमाके के साथ सभी वापस उस कमरे में आ गये, जहां पृथ्वी का ग्लोब रखा था।

तौफीक पर नजर पड़ते ही जेनिथ को छोड़, सभी दौड़कर तौफीक के गले लग गये।

तौफीक की निगाह दूर खड़ी जेनिथ की ओर थी, पर इस समय जेनिथ की आँख में भी, तौफीक के लिये तारीफ के भाव थे।

“अपने मन को इतना व्यथित मत करो जेनिथ।” नक्षत्रा ने कहा- “जो चला गया, उसे जाने दो .... तुम्हारे भाग्य में शायद उससे भी बेहतर कुछ लिखा हो?”

नक्षत्रा की बात सुन जेनिथ ने स्वयं के भावों को एक बार फिर से कंट्रोल किया और बोली- “तुमको बड़ा पता है मेरे भाग्य के बारे में। ... एक तो वैसे ही यहां तिलिस्मा में तुम मुझसे कम बात करते हो और ऊपर से ज्ञान और दे रहे हो।”

“मैं क्या करुं जेनिथ, यहां एक कार्य अभी सही से खत्म भी नहीं होता कि दूसरा शुरु हो जाता है, बात करने का समय ही कहां मिल पा रहा? कैश्वर ने तो सबको रोबोट से भी बदतर बना दिया। अब वो देखो सभी फिर से अगले द्वार में जाने की तैयारी कर रहे हैं ... जाओ अब तुम भी उनके पास ... जब तक मैं कुछ नई खोज करता हूं।”

“तुम्हारे पास खोज करने के लिये लैब तो है ही नहीं, फिर तुम ये खोज करते कहां हो?” जेनिथ ने नक्षत्रा से पूछा।

“क्यों तुम्हारा दिमाग की प्रयोगशाला, किसी नक्षत्रशाला से कम है क्या? बस इसी में एक टेबल डालकर बैठा हूं। पर तुम चिंता मत करो, तुम्हारे दिमाग में होने वाले सारे प्रयोग पर बस तुम्हारा ही अधिकार होगा।” नक्षत्रा ने कहा।

“सिर्फ तुम्हारे प्रयोग पर ही नहीं तुम पर भी मेरा सारा अधिकार है, आखिर मैं ही तो सिखा रही हूं तुम्हें नयी-नयी चीजें।” जेनिथ ने कहा।

“अच्छा जी, कल तक तो दोस्त बता रही थी और आज अधिकार जताने लगी।” नक्षत्रा ने मजा लेते हुए कहा- “चलो माना तुम्हारा अधिकार स्वयं पर ... पर देखता हूं कि जब कोई मुझे तुम से अलग करने आयेगा, तो उसका सामना कैसे करोगी?”

“कौन अलग करने आयेगा? ... क्या तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो नक्षत्रा?” जेनिथ यह बात सुन थोड़ा परेशान दिखने लगी।

“नहीं ... नहीं ... मैं तो ऐसे ही मजाक कर रहा था। तुम कुछ अलग ही अर्थ निकालने लगी।” नक्षत्रा ने अपनी बात को संशोधित करते हुए कहा- “और जल्दी से उधर जाओ, देखो सारे लोग तैयार हैं, अगले द्वार में जाने के लिये।”

नक्षत्रा की बात सुन जेनिथ ने सबकी ओर देखा, सच में ऐलेक्स लाल रंग का फ्लैग हाथ में लिये, इंडिया के स्थान पर लगाने के लिये तैयार खड़ा था।

जेनिथ तुरंत सबके पास पहुंच गई। उसे पास आता देख ऐलेक्स ने लाल रंग के फ्लैग को इंडिया वाले स्थान पर, पृथ्वी के ग्लोब में लगा दिया।

इस बार जमीन पर बने मानचित्र में इंडिया का मैप बड़ा होकर आ गया और उस पर खड़े होते ही सभी एक बार फिर उस मानचित्र में समा गये।

◆ ◆ ◆

कस्तूरी मृग

17.01.02, गुरुवार, 09:30, सीनोर महल, अराका द्वीप

सनूरा ने सुर्वया और मेलाइट को एक कमरे में ठहरा दिया था और रोजर को दूसरा कमरा दिया था।

लुफासा के कहे अनुसार सनूरा ने मेलाइट को वापस जाने का भी आग्रह किया था, पर मेलाइट ने इस आग्रह को अस्वीकार कर दिया था।

इस समय मेलाइट और सुर्वया अपने कमरे में बैठीं थीं कि तभी सनूरा की आवाज ने दोनों का ध्यान भंग किया- "क्या हम अंदर आ सकते हैं?"

"हां-हां आइये ना।" मेलाइट ने विनम्र लहजे में कहा- "आपका ही महल है, आपको पूछने की आवश्यकता नहीं है।"

"जब एक कमरे में 2 राजकुमारियां बैठीं हों, तो सेनापति को हमेशा पूछ कर ही कमरे में जाना चाहिये।" सनूरा ने मुस्कुराते हुए कहा।

सनूरा की बात सुन मेलाइट और सुर्वया मुस्कुरा दीं।

सनूरा अब उनके सामने रखी कुर्सी पर बैठ गई।

"आप दोनों को यहां रहते हुए आज 2 दिन बीत गये हैं, उम्मीद है कि अब आप दोनों थोड़ा सहज महसूस करने लगी होंगी, इसलिये मैंने सोचा कि आप लोगों से आपकी पूरी कहानी सुन लूं, क्योंकि उस दिन लुफासा के जाने के बाद, हमें एक दूसरे से कुछ ज्यादा पूछने का समय नहीं मिला। ऊपर से आप लोग, उस दिन थोड़ा असहज भी दिख रहीं थीं, इसलिये मैंने 2 दिन तक आप लोगों से बात भी नहीं की।" सनूरा ने दोनों को देखते हुए कहा।

"बिल्कुल सही कहा आपने।" सुर्वया ने सनूरा की ओर देखते हुए कहा- "उस दिन हम लोग यही नहीं समझ पा रहे थे कि आप लोग सही हैं या गलत? इसलिये आपसे बहुत सोच-समझकर बात कर रहे थे। पर आज हम आपके सामने बेहतर महसूस कर रहे हैं। इसलिये अपनी कहानी बताने को तैयार हैं।"

"एक मिनट-एक मिनट।" मेलाइट ने बीच में ही सुर्वया को टोकते हुए कहा- "क्या हमें रोजर को भी इस समय यहां बुला लेना चाहिये? उसे

भी तो जानना होगा, हम सबके बारे में।”

मेलाइट की बात सुन सुर्वया मुस्कुराते हुए बोली- “तुम्हें रोजर की बहुत याद आ रही है .... सबकुछ ठीक तो है ना?”

सुर्वया के शब्दों में एक अर्थ छिपा था, जिसे मेलाइट तो समझ गई, पर सनूरा को कुछ समझ नहीं आया।

“क्या मैं जान सकती हूं कि आप दोनों रोजर की बात सुनकर इतना मुस्कुरा क्यों रहीं हैं?” सनूरा ने आश्चर्य से दोनों को देखते हुए कहा।

“एक मिनट रुकिये सनूरा, बस आपको अभी पता चल जायेगा .... जरा दरवाजे की ओर देखिये।” सुर्वया ने मुस्कुराते हुए सनूरा को दरवाजे की ओर देखने का इशारा किया।

सनूरा ने कमरे के दरवाजे की ओर देखा, पर उसे कुछ नजर नहीं आया।

तभी कमरे के दरवाजे से रोजर भागता हुआ कमरे में प्रविष्ठ हुआ। उसकी साँसें बहुत तेज चल रहीं थीं।

रोजर की कमर पर इस समय सिर्फ एक तौलिया लिपटा हुआ था, जिसने उसके निचले बदन को ढंक रखा था।

रोजर की नाभि से इस समय एक तीव्र सुनहरा प्रकाश निकल रहा था, उस प्रकाश से बहुत अच्छी खुशबू भी आ रही थी।

“कोई बतायेगा कि यह मेरे साथ क्या हो रहा है?” रोजर ने घबराए अंदाज में सबको देखते हुए कहा- “यह मेरे शरीर से कैसा प्रकाश निकल रहा है? कहीं यह आप दोनों की कोई शरारत तो नहीं?”

सनूरा भी आश्चर्य से रोजर के शरीर से निकलते प्रकाश को देख रही थी, उसे भी इस प्रकाश का स्रोत समझ में नहीं आया, पर सुर्वया के हल्के से इशारे से सनूरा चुपचाप बैठी रही।

रोजर की बात सुन मेलाइट अपनी जगह से उठकर खड़ी हुई और चलती हुई रोजर के पास जा पहुंची।

“क्या तुम्हें लगता है रोजी ... आई मीन रोजर ... कि यह हम दोनों की कोई शरारत है?” मेलाइट ने भोलेपन से जवाब दिया।

“हां, लगता है .... 2 दिन से आप दोनों मुझे अलग-अलग तरह से परेशान कर रही हो।” रोजर ने रोनी सूरत बनाते हुए कहा।

“हम दोनों? .... नहीं-नहीं रोजर .... इसमें सुर्वया का कोई हाथ नहीं। वह तो सिर्फ मेरे साथ थी .... तुम्हें तो परेशान तो मैं कर रही थी .... आई मीन ... हम तुम्हें परेशान क्यों करेंगे। दरअसल हमें तो पता भी नहीं कि यह रोशनी कहां से आ रही है? पर .... पर इसकी खुशबू मुझे मदहोश कर रही है रोजर .... कहां से लाते हो तुम इतनी खुशबू?” यह कहकर मेलाइट बेहोश होने का नाटक कर लहराकर गिरने लगी।

मेलाइट को गिरते देख रोजर ने बीच में ही उसे थाम लिया। अब रोजर मेलाइट की बंद आँखों को निहार रहा था।

तभी मेलाइट ने अपनी आँखें खोल दीं और अपने चेहरे पर बनावटी गुस्सा लाते हुए कहा- “ये तुमने मुझे अपनी बाहों में क्यों भर रखा है? क्या तुम्हें पता नहीं कि हम कौन हैं? और ... और ये तुम बिना कपड़ों के हमारे कमरे में क्या कर रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि इस कमरे में 3 लड़कियां हैं? अगर तुम्हारा यह तौलिया अपने स्थान से खिसक गया तो। अगर तुम ऐसी हरकत करोगे, तो मैं देवी आर्टेमिस से तुम्हारी शिकायत करुंगी।”

मेलाइट की बात सुन रोजर ने घबराकर मेलाइट को छोड़ दिया।

अब रोजर की नाभि से सुनहरी रोशनी निकलना बंद हो चुकी थी, यह देख रोजर ने एक नजर सब पर मारी और फिर वहां से जान छुड़ाकर ऐसे भागा, जैसे कि उसके पीछे भूत पड़े हों।

रोजर के जाने के बाद, मेलाइट अपने स्थान पर आकर पुनः बैठ गई, पर इस समय मेलाइट, सुर्वया और सनूरा तीनों के ही चेहरे पर एक मुस्कान थी।

“हां, तो हम कहां थे? आई मीन क्या बात कर रहे थे?” मेलाइट ने सनूरा से पूछा।

“हां ... हम एक-दूसरे से अपनी कहानियां सुनाने की बात कर रहे थे।” सनूरा ने कहा- “पर अब सबसे पहले मैं मेलाइट की कहानी जानना चाहती हूं, क्योंकि ये जो अभी कुछ देर पहले हुआ, ये मुझे काफी रोचक लगा।”

सनूरा की बात सुन मेलाइट के चेहरे पर फैली मुस्कान और गहरी हो गई और वह बोल उठी- “हम 5 बहनें दक्षिण ग्रीस के, सीरीनिया नामक जंगल के बीच की, एक सुंदर सी झील में रहते थे। हम सभी स्वच्छ जल में रहने वाली अप्सराएं थीं ... और आप तो जानती ही हैं कि पुराने समय में अप्सराओं का जीवन कितना विचित्र होता था, अप्सराओं की सुंदरता ही उनके लिये अभिशाप बन जाती थी। जब भी किसी देवता या शक्तिशाली

मनुष्य की निगाह सुंदर अप्सराओं पर पड़ती थी, तो वह जबरन उसे उठा ले जाते थे। इस प्रकार की किसी भी घटना से बचने के लिये अप्सराओं के देवता ने, हर अप्सरा को किसी जीव में बदल जाने की शक्ति दी, जिससे वह अपने घर से बाहर निकलते समय उस जीव में परिवर्तित हो जाती थीं। कुछ ऐसी ही शक्ति के तहत हम सभी बहनें भी सुनहरी हिरनी का रुप धारण कर लेते थे। एक दिन जब हम सीरीनिया के जंगल में सुनहरी हिरनी बनकर घूम रहे थे, तो शिकार की देवी आर्टेमिस ने हमें देख लिया, पर वह हमारी सुंदरता से मुग्ध हो गईं, इसलिये उन्होंने हमें मारा नहीं। मेरी 4 बहनों ने अपनी इच्छा से देवी आर्टेमिस का रथ खींचने का कार्यभार संभाल लिया। परंतु मैंने देवी आर्टेमिस की बात नहीं मानी।"

"क्यों? मैं जानना चाहती हूं कि तुमने देवी आर्टेमिस की बात क्यों नहीं मानी?" सनूरा ने बीच में ही मेलाइट को टोकते हुए कहा।

"क्योंकि देवी आर्टेमिस कुंवारी थीं इसलिये उनका रथ खींचने वाली सभी हिरनिओं को आजीवन कौमार्य व्रत धारण करना पड़ता और मुझे ये मंजूर नहीं था। मैं विवाह करके गृहस्थ जीवन जीना चाहती थी।" मेलाइट ने कहा- "आर्टेमिस ने मुझे इसकी इजाजत दे दी। अब मुझे तलाश थी किसी ऐसे योद्धा की, जिसके साथ रहने पर मुझे लगाव महसूस हो सके। आखिरकार एक दिन मुझे वह योद्धा मिल ही गया और वह योद्धा था- हरक्यूलिस, जो कि राजा यूरीस्थियस के कहे अनुसार अपने 12 कार्यों को पूरा करने निकला था। हरक्यूलिस को दिये गये 12 कार्यों में से एक मुझे पकड़कर ले जाना भी था। यूरीस्थियस नहीं चाहता था कि हरक्यूलिस अपने कार्य में सफल हो, इसलिये उसने मुझे पकड़ने का कार्य दिया था। उसे पता था कि जब हरक्यूलिस मुझे पकड़ने की कोशिश करेगा, तो देवी आर्टेमिस उसे जिंदा नहीं छोड़ेंगी। इसी कार्य के तहत हरक्यूलिस ने मुझे पकड़ लिया। मुझे हरक्यूलिस की वीरता और साहस से प्यार हो गया। मैंने बाद में हरक्यूलिस के सामने अपने विवाह का प्रस्ताव रखा, पर हरक्यूलिस तैयार नहीं हुआ। उसने कहा कि मेरे लिये 'कोई और' बना है। जब मैंने हरक्यूलिस से उस 'कोई और' के बारे में पूछा, तो उसने मुझे एक सुनहरी कस्तूरी दी और मुझसे कहा कि जब कभी मुझे, कोई भी पुरुष पहली बार स्पर्श करेगा, तो यह सुनहरी कस्तूरी उसकी नाभि में प्रवेश कर जायेगी। इस सुनहरी कस्तूरी की वजह से वह पुरुष एक सुनहरे मृग में भी परिवर्तित हो सकेगा और उसमें बहुत सी अदृश्य शक्तियां भी आ जायेंगी। वही पुरुष मेरा 'कोई और' .... मेरा मतलब है कि मेरा जीवनसाथी बनेगा। बस तब से आज तक मैं उस 'कोई और' को ढूंढ रहीं हूं।"

इतना कहकर मेलाइट चुप हो गई।

“अच्छा, अब मुझे समझ में आया कि तुम यहां से क्यों नहीं जाना चाहती।” सनूरा ने मुस्कुराते हुए कहा- “दरअसल तुम्हें यहां ‘कोई और’ मिल गया है, जो कि तौलिये में ‘किसी और’ के सामने घूम रहा है।”

सनूरा के यह शब्द सुन तीनों ही जोर से हंस दिये।

“अच्छा, एक बात तो बताओ मेलाइट? कि वह रोजर के शरीर से निकल रहा सुनहरा प्रकाश अपने आप बंद कैसे हो गया?” सनूरा ने अब किसी दोस्त की भांति मेलाइट से पूछा।

“जब भी मेरे मन में प्रेम की कोपलें फूटेंगी, उसके शरीर से प्रकाश प्रस्फुटित होने लगेगा, पर जैसे ही वह मुझे स्पर्श करेगा, उसके शरीर का प्रकाश स्वतः बंद हो जायेगा।” मेलाइट ने किसी जादूगर की भांति खड़े होकर अपना हाथ हवा में लहराते हुए अपने विचार प्रकट किये।

“ओ ... होऽऽऽऽऽ जादू भरी प्रेम कहानी। .... अद्भुत .... पर बेचारा रोशनी का देवता .... उसे तो अपनी ही प्रेम कहानी मालूम नहीं है।” सुर्वया ने आह भरते हुए मेलाइट को चिढ़ाया।

“तो ‘कोई और’ की कहानी तो पूरी हो गई।” सनूरा ने टॉपिक बदलते हुए, सुर्वया की ओर देखा- “अब आपकी कहानी में भी ‘कोई और’ तो नहीं।”

सनूरा ने अपने शब्दों से सुर्वया को अपनी कहानी सुनाने का इशारा किया था।

सनूरा की बात सुन सुर्वया ने गहरी साँस भरी और बोलना शुरु कर दिया- “काश .... काश मेरी भी कहानी में कोई और होता? .... मेरी कहानी में जादू तो है, पर ‘कोई और’ नहीं .... बस आकृति है ... एक ऐसी आकृति, जिसकी आकृति मुझे बिल्कुल भी पसंद नहीं। ..... बात आज से लगभग 5,015 वर्ष पहले कि है जब आकृति और आर्यन वेदालय के एक कार्य के चलते, सिंहलोक से ‘चतुर्मुख सिंहराज’ को लेने आये थे।”

“एक मिनट, यह आर्यन कौन है? वेदालय क्या है? और यह ‘चतुर्मुख सिंहराज’ क्या था? जरा खुलकर समझाओगी क्योंकि मैं इसके बारे में नहीं जानती।” सनूरा ने बीच में ही टोकते हुए कहा।

“आज से 20,000 वर्ष पहले हिन्दू देवताओं ने, भविष्य में पृथ्वी की सुरक्षा के लिये ब्रह्मांड रक्षकों को बनाने का निर्णय लिया। इसके लिये उन्हें कुछ अजेय मनुष्यों की जरुरत थी, जो कि देवशक्तियों के द्वारा छिपकर, पृथ्वी की रक्षा कर सकें। इस कार्य के तहत महागुरु नीलाभ और उनकी

पत्नि माया को देवताओं ने 15 लोकों का निर्माण करने को कहा। इन 15 लोकों में देवताओं ने 30 देव शक्तियों को छिपा दिया। फिर इसके बाद एक रहस्यमयी विद्यालय ‘वेदालय’ की रचना की गई। जिसमें पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ 13 बच्चों का चुनाव किया गया। इस वेदालय की पढ़ाई पूरे 10 वर्षों तक चलनी थी और इन 10 वर्षों में उन सभी बच्चों को वेदालय में ही रहकर इन सभी 30 देव शक्तियों को ढूंढना था। आकृति और आर्यन इन्हीं 13 बच्चों में से 2 थे। हमारा सिंहलोक भी इन्हीं 15 लोकों में से एक था, जहां पर 2 देव शक्तियां छिपी थीं- पहली थी ‘चतुर्मुख सिंहराज’ और दूसरी थी- ‘शुभार्जना’। दरअसल इन 2 शक्तियों की वजह से ही हमारा लोक एक प्रकार से अमर था। ‘चतुर्मुख सिंहराज’ एक 4 सिर वाली सिंह की प्रतिमा थी, जिसे राज्य के द्वार पर लगाया गया था। कहते थे कि यह ‘चतुर्मुख सिंहराज’ जिस राज्य के द्वार पर रहेगा, वहां कभी भी मृत्यु के देवता ‘यम’ प्रविष्ठ नहीं हो सकते। हमारे लोक की दूसरी शक्ति थी- शुभार्जना। शुभार्जना, एक छोटी सी डिबिया में बंद एक सिंह की गर्जना थी, जिसका 3 बार प्रयोग कर, किसी भी 3 मृत इंसान को जीवित किया जा सकता था। हां ... तो अब आते हैं ‘चतुर्मुख सिंहराज’ पर, जो कि आर्यन और आकृति हमारे लोक लेने के लिये आये थे। यहां मेरी दोस्ती आकृति से हो गई, जिससे आकृति को मेरी कायांतरण और दिव्यदृष्टि का पता चल गया। कायांतरण के द्वारा मैं किसी का भी चेहरा 24 घंटे के लिये बदल सकती थी और दिव्यदृष्टि के द्वारा किसी भी जीव को, जो जमीन पर हो, ढूंढ सकती थी। ..... एक बार वेदालय की पढ़ाई खत्म हो जाने के बाद आकृति मेरे पास आयी और उसने मुझसे अपने चेहरे पर शलाका का चेहरा लगाने को कहा। मुझे नहीं पता था कि वह इसके माध्यम से क्या करना चाहती है? इसलिये मैंने वैसा ही किया, जैसा कि वह चाहती थी। आकृति शलाका का चेहरा लगवाकर वहां से चली गई। 2 दिन बाद ही वह मेरे पास वापस आ गई, पर उसका चेहरा 24 घंटे के बाद भी शलाका का ही था। यह देख मुझे भी आश्चर्य हुआ कि मेरी कायांतरण शक्ति सही काम क्यों नहीं कर रही? बाद में मुझे पता चला कि आकृति ने शलाका के वेश में अमृतपान कर लिया था और अमृतपान का यह नियम था कि उसे जिस वेश में पिया जाता, वह वेश सदा के लिये पीने वाले को धारण करना पड़ता। यानि कि अब आकृति चाहकर भी, अपना चेहरा नहीं पा सकती थी। आकृति ने गुस्सा होकर मुझे एक जादुई दर्पण में बंद कर दिया और उस दर्पण को एक अंधेरे कमरे में रख दिया। मैं बिना प्रकाश के अपनी दिव्यदृष्टि का प्रयोग नहीं कर सकती थी। अब मैं सदा के लिये अंधेरे कमरे में, उस जादुई दर्पण में बंद हो गई। लगभग 10 महीने के बाद आकृति ने मुझे अंधेरे कमरे से निकाला और मुझे उसके पुत्र को ढूंढने के लिये कहा। उसने कहा कि अगर मैं उसके पुत्र को ढूंढ दूंगी, तो वह मुझे कैद से आजाद कर देगी। मैंने

आकृति के पुत्र को ढूंढने की बहुत कोशिश की। पर वह मुझे नहीं मिला ... शायद आर्यन ने उसे किसी ऐसी जगह रखा था, जहां मेरी दिव्यदृष्टि नहीं पहुंच पा रही थी। फिर अचानक एक दिन आर्यन और शलाका दोनों ही मेरी दिव्यदृष्टि से ओझल हो गये। यह सुनकर आकृति और ज्यादा गुस्सा गई और उसने मुझे फिर कभी भी अपनी कैद से नहीं छोड़ा।"

यह कहकर सुर्वया शांत हो गई।

"हम् ... तुम्हारी कहानी तो काफी दर्द भरी थी।" मेलाइट ने कहा- "पर तुमने यह नहीं बताया कि तुम सिंहलोक में कैसे पहुंची? तुम्हारे परिवार में कौन-कौन था? और तुम्हारे बाद सिंहलोक का क्या हुआ?"

"वह कहानी बहुत लंबी है ... उसे मैं फिर कभी सुनाऊंगी।" सुर्वया ने मुस्कुराने की असफल चेष्टा करते हुए कहा।

सुर्वया के चेहरे के भाव देख मेलाइट और सनूरा ने सुर्वया को और नहीं कुरेदा, पर वो समझ गये कि सुर्वया की जिंदगी का अभी एक और पन्ना खुलना बाकी है, जो कि समय आने पर ही खुलेगा।

"अब तुम अपने बारे में बताओ सनूरा।" सुर्वया ने सनूरा की ओर देखते हुए कहा।

लेकिन इससे पहले कि सनूरा अपने बारे में कुछ बोल पाती, कि तभी महल में, किसी बड़े से ढोल की आवाज गूंजने लगी, वह आवाज सुन सनूरा डर गई।

"यह तो खतरे का सिग्नल है, क्या सीनोर राज्य पर कोई खतरा मंडरा रहा है?" सनूरा ने कहा।

"रुको मैं देखती हूं।" यह कहकर सुर्वया ने अपनी आँखें बंद कर लीं। अब सुर्वया के माथे पर एक लाल रंग का प्रकाशपुंज दिखाई देने लगा।

"नहीं ... नहीं ... मुझे धुंधला दिखाई दे रहा है ... शायद खतरा अभी भी पानी के अंदर है ... रुको ... मुझे समुद्र की लहरों पर एक धुंधली सी विशाल आकृति दिख रही है ... क्या ... क्या यह कोई राक्षस है या फिर कोई बड़ा सा अंतरिक्ष यान?" सुर्वया ने इतना देखकर अपनी आँखें खोल दीं- "जब तक वह समुद्र की लहरों पर है, तब तक मैं उसे साफ नहीं देख सकती।"

सुर्वया के शब्द सुन सनूरा तेजी से बाहर की ओर भागी।

सनूरा को बाहर जाते देख मेलाइट और सुर्वया ने एक दूसरे की ओर देखा और फिर वह भी सनूरा के पीछे भाग लीं। आखिर वह सब अब एक अच्छी दोस्त थीं।

◆ ◆ ◆

चैपटर-11

ग्रीष्म ऋतु-1

तिलिस्मा 4.2

तिलिस्मा ने इस बार सभी को अपने द्वारा बनाये भारत के किसी स्थान पर भेज दिया।

वहां एक बहुत विशालकाय क्षेत्र था। चारो ओर हरियाली फैली थी, पेड़-पौधों पर रंग-बिरंगे फूल लगे थे, जो कि अपनी खुशबू से पूरा क्षेत्र महका रहे थे।

आसमान में पंछी अपनी मधुर आवाज बिखेर रहे थे।

कुल मिलाकर बहुत ही खुशनुमा वातावरण था।

“मुझे तो लगा था कि हमारा सामना यहां ग्रीष्म ऋतु से होगा और हमें यहां चिलचिलाती हुई गर्मी मिलेगी, पर यहां का मौसम तो बहुत ही खुशनुमा है।” जेनिथ ने कहा- “ऐसा लगता है कि जैसे यहां कोई परेशानी है ही नहीं?”

“कैश्वर ने हमें यहां मौज-मस्ती के लिये नहीं भेजा होगा .... अभी देखना, कुछ ही देर में कैश्वर का कार्य शुरु हो जायेगा।” ऐलेक्स ने नाक सिकोड़ते हुए कहा।

“चलो जब तक कोई परेशानी शुरु नहीं होती, तब तक इस क्षेत्र को अच्छी तरह से देख लेते हैं।” सुयश ने कहा- “पता नहीं बाद में समय मिले की नहीं?”

सुयश की बात सभी को सही लगी, इसलिये सभी आगे बढ़कर वह क्षेत्र देखने लगे।

परंतु कुछ आगे जाते ही सभी को जमीन पर एक विशालकाय खेल के जैसी कोई संरचना दिखाई दी।

“लो जी, कैश्वर से हमारी खुशी देखी नहीं गई, इसलिये भेज दिया किसी आफत को हमसे लड़ने के लिये।” ऐलेक्स ने फिर कैश्वर पर कटाक्ष

करते हुए कहा- “और दूर से ही मुझे यह कोई बहुत बड़ी परेशानी दिख रही है, क्योंकि यह लगभग 1 किलोमीटर के क्षेत्र में फैली हुई है।”

“मुझे तो यह कोई बड़ा सा बोर्ड गेम लग रहा है?” तौफीक ने कहा।

धीरे-धीरे चलते हुए सभी उसके पास पहुंच गये, पर वह पूरा सेटअप इतना बड़ा था कि पास से पूरा दिख ही नहीं रहा था।

“कैप्टेन हमें उस बड़ी सी चट्टान से यह खेल पूरा नजर आ जायेगा।” क्रिस्टी ने पास की ही एक चट्टान की ओर इशारा करते हुए कहा।

क्रिस्टी की बात सही थी, इसलिये सभी उस ऊंची सी चट्टान की ओर बढ़ गये।

चट्टान पर चढ़ने के बाद सभी ने उस पूरे खेल पर नजर डाली।

“कैप्टेन अंकल, यह तो साँप-सीढ़ी की तरह का कोई विशाल गेम है, जिस पर नम्बर्स लिखे हैं, मगर इस पर साँप-सीढ़ी की जगह कुछ संरचनाएं और चीजें बनी हैं।” शैफाली ने कहा।

“मगर यह पूरी आकृति गोलाकार है और इस के बहुत से नम्बरों पर हमारी आकाशगंगा के नक्षत्र घूम रहे हैं, यह संरचना बिल्कुल जलेबी की भांति है और इसके मध्य में आकाशगंगा के समान एक सूर्य चमक रहा है और यह पूरी संरचना उस सूर्य का चक्कर लगा रही है।” ऐलेक्स ने कहा- “यह तो बहुत विचित्र और खतरनाक द्वार लग रहा है।”

“कैप्टेन, एकाएक आपको इस चट्टान पर कुछ गर्मी बढ़ती हुई महसूस नहीं हो रही क्या?” क्रिस्टी ने अपने माथे पर बह आये पसीने को पोंछते हुए कहा।

“मुझे भी कुछ गर्मी बढ़ती हुई सी लग रही है।” तौफीक ने भी अपनी जैकेट उतारते हुए कहा।

“कैश्वर ने तो कहा था कि हमें तिलिस्मा में कुछ भी अहसास नहीं होगा। फिर यह गर्मी कैसे बढ़ रही है?” ऐलेक्स ने कहा।

“कैश्वर ने कहा था कि हमें भूख, प्यास नहीं लगेगी, गर्मी, सर्दी तो महसूस हो ही सकती है, पर यह देखो कि इतनी गर्मी के बाद भी हमें प्यास नहीं लग रही है।” तौफीक ने कहा।

कुछ ही देर में गर्मी और बढ़ गई, अब सबके लिये जैकेट को पहने रख पाना मुश्किल हो गया था, इसलिये बाकी सभी ने अपनी जैकेट उतार लीं।

“कैप्टेन कहीं इस गर्मी के बढ़ने के पीछे इस गेम का हाथ तो नहीं?” ऐलेक्स ने कहा- “क्योंकि इस गेम में भी आकाशगंगा और सूर्य ही बना है और वैसे भी हम इस समय मानचित्र के अनुसार विश्व के एक गर्म हिस्से में हैं।”

“ऐलेक्स तुम्ही सबसे ज्यादा दूर तक साफ देख सकते हो। तुम ही एक बार चेक करके बताओ कि तुम्हें इस गेम में क्या अलग नजर आ रहा है? .... मेरा मतलब कि इस गेम में हमें करना क्या है?”

जेनिथ ने ऐलेक्स को देखते हुए कहा।

जेनिथ की बात सुन ऐलेक्स ध्यान से उस पूरे गेम को देखने लगा। कुछ देर तक उस पूरे गेम का अध्ययन करने के बाद ऐलेक्स ने कहा- “कैप्टेन इस पूरे गेम में सभी ग्रह हमारी आकाशगंगा की ही भांति सूर्य का चक्कर लगा रहे हैं, परंतु इस समय इस गेम में, पृथ्वी अपनी अक्ष के परितः नहीं घूम रही है, जिसकी वजह से उसका एक भाग, लगातार सूर्य की परिक्रमा करते हुए सूर्य के सामने है। मुझे लग रहा है कि तभी हमारे आसपास गर्मी बढ़ती जा रही है। यानि अब पृथ्वी के एक भाग में हमेशा दिन रहेगा और दूसरे भाग में हमेशा रात होगी। दिन वाला भाग निरंतर गर्म होता जायेगा और रात वाला भाग निरंतर ठंडा। और हम इस समय पृथ्वी के गर्म वाले भाग में हैं।”

“यानि कि हमें जल्दी से जल्दी इस समस्या का समाधान करना होगा, नहीं तो गर्मी इतनी बढ़ जायेगी कि हम लोग लोग उसे बर्दास्त नहीं कर पायेंगे।” क्रिस्टी ने कहा- “इसका साफ मतलब निकलता है कि इस बार हमारा कार्य पृथ्वी को उसके अक्ष के परितः गति देना है।”

“बिल्कुल सही।” ऐलेक्स ने कहा- “तभी यह गोलाकार जलेबी जैसी संरचना सिर्फ पृथ्वी तक ही बनी है।”

“कैप्टेन तो फिर तुरंत चलते हैं इस गेम की ओर ... अब हमें ज्यादा देर करना सही नहीं होगा।” जेनिथ ने चट्टान से उतरते हुए कहा।

जेनिथ की बात सुन सभी तेजी से चट्टान से उतरने लगे।

कुछ ही देर में सभी उस विचित्र गेम के शुरुआती स्थान पर पहुंच गये।

पूरा गेम 10 बाई 10 फुट के वर्गाकार पत्थरों से बना था। नम्बर 1 की जगह स्टार्ट लिखा हुआ था और 10 नंबर पर आकाशगंगा की ‘कुईपर बेल्ट’ बनी थी।

(कुईपर बेल्ट हमारे आकाशगंगा का वह आखिरी छोर है, जहां तक हमारे सूर्य का गुरुत्वाकर्षण काम करता है। इस क्षेत्र में क्षुद्र ग्रह और स्टेरायड आते हैं)

"पर इस गेम में पासे तो हैं ही नहीं, फिर हमें चलना कैसे है?" क्रिस्टी ने कहा- "क्या मैं एक कदम आगे बढ़कर देखूं कैप्टेन?"

"नहीं थोड़ी देर रुक जाओ क्रिस्टी, मुझे लगता है कि कुछ ही देर में हमें पता चल जायेगा कि आगे कैसे बढ़ना है?" सुयश ने क्रिस्टी को रोकते हुए कहा।

तभी इनके सामने हवा में एक नीले रंग का धुंआ दिखाई दिया, उस धुंए ने हवा में अब कुछ लिखना शुरु कर दिया था।

कुछ ही देर में इन सभी के सामने हवा में, धुंए से एक पहेली लिखी नजर आने लगी।

इस पहेली पर लिखा था-

"एक लक्ष्य है, तीन हैं भाले,
अपनी किस्मत आजमा ले।"

"यह क्या लिखा है हवा में?" सुयश ने ध्यान से उसे पढ़ते हुए कहा- "ना तो यहां पर भाले हैं और ना ही कोई लक्ष्य। फिर इन पंक्तियों का क्या मतलब है?"

सुयश का इतना कहना था कि तभी हवा में 3 भाले प्रकट हो गये।

"वाह! अगर निशाना लगाना है तो यह प्रतियोगिता तौफीक के लिये बहुत आसान हो जायेगी।" क्रिस्टी ने कहा।

"अरे पर पहले लक्ष्य को तो दिखने दो, फिर निशाने के बारे में सोचेंगे।" सुयश ने कहा।

"लक्ष्य हमारे सामने है कैप्टेन अंकल।" शैफाली ने कहा।

"कहां है लक्ष्य, मुझे तो नहीं दिखाई दे रहा।" तौफीक ने शैफाली की ओर देखते हुए पूछा।

"हम इस समय 1 नम्बर पर खड़े हैं तौफीक अंकल और वह लक्ष्य 10 नम्बर पर एक 2 इंच की मछली के रुप में है, जो एक लकड़ी के मध्य फंसी है और अपने अक्ष के परितः हवा मे गोल-गोल नाच रही है। पर मुझे

लगता है कि वह अदृश्य है और सिर्फ मुझे ही दिख रही है।” शैफाली ने सामने की ओर देखते हुए कहा।

“वह मुझे भी दिख रही है, पर मैं इस जैसे 100 भाले से भी उसका निशाना नहीं लगा सकता।” ऐलेक्स ने मछली की ओर देखते हुए कहा।

“अब क्या करें कैप्टेन?” जेनिथ ने डरते हुए सुयश से पूछा- “जिसे वह मछली दिख रही है, वह निशाना लगा नहीं सकता और जो निशाना लगा सकता है, उसे वह मछली दिखाई नहीं दे रही है।”

“इसीलिये कहा था कि निशाने का नाम सुनते ही खुश होने की जरुरत नहीं है, वह कैश्वर है, हमें हमेशा अगली चुनौती, पिछली चुनौती से ज्यादा खतरनाक देगा।” सुयश ने कहा- “चलो कोई बात नहीं, मुझे अभी भी तौफीक की क्षमता पर पूरा भरोसा है, वह 3 बार में सही निशाना जरुर लगा लेगा, बस शैफाली या ऐलेक्स को तौफीक को गाइड करना होगा।”

“मेरे हिसाब से तौफीक अंकल को गाइड करने का काम मुझे करने दीजिये कैप्टेन अंकल, मुझे दिशा, हवा और बीच की दूरी का ज्यादा अच्छा ज्ञान है।” शैफाली ने स्वयं को मोटीवेट करते हुए सबके सामने प्रस्तुत किया, पर अगर वह ऐसा ना भी करती, तब भी सुयश ने यह काम शैफाली से ही करवाना था।

तौफीक ने अब पहला भाला हवा से उठा लिया। तौफीक ने पहले भाले के वजन का जायजा लिया और फिर उसे 2-3 बार अपने हाथों में ही चलाकर देख लिया, अब वह शैफाली की ओर देखने लगा।

शैफाली ने तौफीक को अपनी ओर देख बोलना शुरु कर दिया- “तौफीक अंकल, मैं आपको सिर्फ 4 चीजों के बारे में बताती हूं। नंबर 1, आपसे मछली की दूरी शत-प्रतिशत 100 फुट है, नंबर 2, मछली इस वर्गाकार पत्थर के बीच में है। नंबर 3, मछली की ऊंचाई जमीन से 5 फुट और 6 इंच है। नंबर 4, हवा का बहाव हमारे दाहिने से बांयी ओर लगभग 8 किलोमीटर प्रति घंटा है। अब आप अपनी तैयारी करिये और जैसे ही मैं 3 तक गिनती गिनूं, आप भाला चला दीजियेगा।”

तौफीक ने अपना सिर हिलाकर अपनी स्वीकृति दे दी।

अब तौफीक ने भाला अपनी कंधे की ऊंचाई पर लाकर अपनी तैयारी पूरी कर ली। तौफीक की नजरें अब बस शैफाली के बताये हुए आंकड़ों के हिसाब से हवा में केन्द्रित हो गई।

अब तौफीक को बस शैफाली की गिनती का इंतजार था।

उधर शैफाली ध्यान से मछली के गोल घूमने की गति का अंदाजा लगा रही थी। लगभग 5 मिनट तक शैफाली ने ध्यान से उस मछली को देखा और फिर अपनी गिनती शुरु कर दी- “3 .....2 ......1”

शैफाली के एक बोलते ही तौफीक ने अपने हाथ में पकड़ा भाला चला दिया।

भाला सनसनाता हुआ सीधा मछली के सिर में जा घुसा। 2 और निशाने की जरुरत ही नहीं पड़ी।

निशाना सही जगह लगते देख शैफाली और ऐलेक्स खुशी से चीख उठे।

उनके चीखने के अंदाज से ही सभी जान गये कि निशाना सही लगा है।

तभी वह पत्थर, जिस पर सब खड़े थे, अपने आप फिसलता हुआ उन्हें 11 नंबर पर लेकर पहुंच गया और पीछे के सभी नंबर अब गायब दिखने लगे।

अभी सब ठीक से खुशी भी नहीं मना पाये थे कि अब उनके सामने एक और समस्या खड़ी थी।

अब 20 नंबर पर प्लूटो ग्रह नाचता दिखाई दे रहा था और उसके बगल एक गोल सी चकरी लगी थी।

11 से 20 नंबर के बीच के क्षेत्र में जमी हुई झील के जैसा पानी दिखाई दे रहा था।

11 नंबर के अंत में 9 धातु के टुकड़ों पर एक पहेली फिर लिखी हुई नजर आ रही थी।

“डालो पानी में पानी,
बन जाओ जल की रानी।”

“अब इस पहेली का क्या मतलब हुआ?” क्रिस्टी ने कहा- “भला पानी में पानी कैसे डालना है? और मुझे तो साफ दिख रहा है कि उस पार लगी चकरी को घुमाने पर आगे का द्वार खुल जायेगा। ..... कैप्टेन अगर आप कहें तो मैं इस पानी में उतर कर इसे पार करने की कोशिश करूं क्या? हो सकता है कि इसे ऐसे ही पार करना हो?”

“रुक जाओ क्रिस्टी।” सुयश ने क्रिस्टी को रोकते हुए कहा- “यह पानी बर्फ सा ठंडा दिख रहा है, पहले इसमें मैं उतरकर देखता हूं।”

यह कहकर सुयश ने पानी में उतरने के लिये अपने पाँव लटकाये, पर उसे पानी में बहुत तेज करंट का झटका लगा।

“यह पानी तो करंट मार रहा है, पानी में उतर कर इसे पार नहीं किया जा सकता। कुछ और ही सोचना होगा?” सुयश ने अपने पैर ऊपर करते हुए कहा।

सुयश की बात सुन क्रिस्टी ने ऊपर से ही पानी को छुआ, पर उसे करंट का अहसास नहीं हुआ।

“कैप्टेन, यह पानी मुझे करंट नहीं मार रहा।” क्रिस्टी ने आश्चर्य से सुयश की ओर देखते हुए कहा।

“अब मुझे समझ में आया, इस पहेली की दूसरी पंक्ति यही कहती है कि इसमें कोई लड़की ही उतर सकती है।” शैफाली ने सभी को समझाते हुए कहा।

“तो कैप्टेन, क्या अब मैं पानी में उतरने की कोशिश कर सकती हूं?” क्रिस्टी ने रिक्वेस्ट वाले लहजे में सुयश से कहा।

सुयश ने अब सिर हिलाकर क्रिस्टी को अनुमति दे दी।

“सुयश की आज्ञा मिलते ही क्रिस्टी पानी में उतर गई, पर जैसे ही वह तैरने चली, पानी उसे नीचे की ओर खींचने लगा।

यह देख क्रिस्टी घबराकर ऊपर आ गई।

“कैप्टेन, यह पानी मुझे नीचे की ओर खींच रहा है, ऐसे में तैरकर इसे पार नहीं किया जा सकता।” क्रिस्टी ने कहा और बैठकर वहां लिखे शब्दों को ध्यान से देखने लगी।

अब सभी अपना दिमाग तेजी से चला रहे थे।

“कैप्टेन इस कविता में 9 ही शब्द हैं और यह सारे शब्द अलग-अलग धातु के टुकड़ों पर लिखे हैं, ऐसा क्यों है? यह सारे शब्द किसी एक ही टुकड़े पर भी तो लिखे जा सकते थे, फिर कैश्वर ने ऐसा क्यों किया?”

यह सुनते ही शैफाली के होंठों पर मुस्कान आ गई- “मिल गया मुझे कविता की पहली पंक्ति का अर्थ।”

यह कहकर शैफाली ने सभी शब्दों में से ‘पानी’ शब्द वाले दोनों धातु के टुकड़े उठा लिये और उसे उठाकर बर्फीले पानी में फेंक दिया।

शैफाली के ऐसा करते ही उन धातु के टुकड़ों में नीचे की ओर 2 हैण्डिल निकल आये और वह तेजी से 11 से 20 नंबर के बीच पानी में तैरने लगे।

“अच्छा तो पानी वाले शब्द को पानी में डालना था।” जेनिथ ने मुस्कुराते हुए कहा।

यह देख एक बार फिर क्रिस्टी पानी में उतर गई और साँस रोककर उन धातु के टुकड़ों के नीचे लगे हैण्डिल को दोनों हाथों से पकड़ लिया।

अब क्रिस्टी का पूरा शरीर पानी के अंदर था, पर धातु के टुकड़े 10 सेकेण्ड में ही क्रिस्टी को लेकर 20 नंबर के पास पहुंच गये।

क्रिस्टी धातु के टुकड़ों को छोड़ अब 20 नंबर पर पहुंच गई।

20 नंबर पर पहुंचते ही क्रिस्टी ने वहां लगी चकरी को क्लाक वाइज घुमा दिया।

चकरी के घुमाते ही 11 से 20 नंबर के बीच एक पुल बन गया और सभी उस पुल से होकर 21 नंबर पर पहुंच गये।

अब उन्हें 30 नंबर पर ‘नेपच्यून’ ग्रह नाचता हुआ दिख रहा था, जिसके पास एक बंदर की मूर्ति लगी दिखाई दी। उस बंदर के हाथ में एक केला था और उसकी पूंछ किसी असली बंदर के समान हवा में लहरा रही थी।

21 से 30 नंबर तक के बीच में जमीन धधक रही थी और उस जमीन से आग की तेज लपटें उठ रहीं थीं।

उन आग की लपटों के ऊपर हवा में 3 रस्सियां कुछ-कुछ दूरी पर लटक रहीं थीं।

यह रस्सियां ऊपर कहां से बंधी थीं, यह दिखाई नहीं दे रहा था।

तभी आग की लपटों से कुछ चिंगारियां निकलकर हवा में कुछ लिखने लगीं।

थोड़ी ही देर में सभी को हवा में लिखी एक और कविता नजर आने लगी, जिस पर लिखा था-

“झूलकर बन जाओ बंदर,
पार करो फिर अग्नि समुंदर।”

“ये लो फिर से एक और कविता।” ऐलेक्स ने कविता को पढ़ते हुए कहा।

“हां, पर ये इस कविता का सार बहुत ही आसान है।” क्रिस्टी ने कहा- “साफ पता चल रहा है कि हमें इन रस्सियों पर झूलते हुए इस आग के समुंदर को पार करना है।”

“कविता को समझना तो आसान है, पर हर किसी के लिये इस आग के समुंदर को पार करना इतना आसान नहीं है।” सुयश ने आग के ऊपर बंधी रस्सी की ओर देखते हुए कहा।

“मैं इसके द्वारा उस पार आसानी से जा सकता हूं।” ऐलेक्स ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “पर मुझे नहीं लगता कि किसी एक इंसान के पार करने से यह समस्या खत्म होगी।”

“क्यों अभी मैंने भी तो बर्फ की नदी पार की थी, उसके बाद तो सबके लिये पुल बन ही गया था।” क्रिस्टी ने ऐलेक्स से कहा- “जरुर यहां पर भी ऐसा ही होगा। वैसे भी कैश्वर को पता है कि सभी लोग झूलकर इसे पार नहीं कर सकते, इसलिये वह ऐसा तिलिस्म बनाएगा ही नहीं।”

“तो फिर ठीक है, मैं पहले उस पार जाता हूं, फिर उधर जाकर देखता हूं कि बाकी लोगों के उधर जाने की क्या व्यवस्था है।” ऐलेक्स ने कहा।

“जाओ मेरे बंदर, ये कार्य सिर्फ तुम्हारे लिये ही बना है। जाकर अपना कार्य पूर्ण करो।” यह कहकर क्रिस्टी ने किसी देवी की भांति अपना एक हाथ उठाकर ऐलेक्स को आशीर्वाद देते हुए कहा।

ऐलेक्स ने यह सुन क्रिस्टी को घूरकर देखा और फिर मुस्कुराकर 21 नंबर के पत्थर के किनारे पर आ गया।

ऐलेक्स ने एक बार रस्सी की ओर ध्यान से देखकर उसकी दूरी का जायजा लिया और फिर पहली रस्सी की ओर छलांग लगा दी।

पहली रस्सी आसानी से ऐलेक्स के हाथ में आ गई।

अब ऐलेक्स ने अपने शरीर को हवा मे थोड़ा झुलाया और एक हाथ से दूसरी रस्सी पकड़ ली।

पर दूसरी रस्सी को पकड़ते ही वह रस्सी पूरी के पूरी आग में गिर गई। भला हो कि अभी ऐलेक्स ने पहली रस्सी को छोड़ा नहीं था।

इसलिये ऐलेक्स का शरीर लड़खड़ाया, पर उसने स्वयं को संभाल लिया।

ऐलेक्स को फिसलता देख क्रिस्टी के मुंह से चीख निकल गई, पर ऐलेक्स को सुरक्षित देख उसने राहत की साँस ली।

"ऐलेक्स क्या तुम अब तीसरी रस्सी तक पहुंच पाओगे?" सुयश ने चिल्लाकर ऐलेक्स से पूछा।

"तीसरी रस्सी की दूरी थोड़ी ज्यादा है, पर मुझे लगता है कि मैं उस तक पहुंच जाऊंगा।" ऐलेक्स ने विश्वास से कहा।

लेकिन इससे पहले कि ऐलेक्स तीसरी रस्सी पर कूद पाता, कि तभी नीचे से आयी एक आग की लपट ने तीसरी रस्सी का जला दिया।

यह देख अब सभी के चेहरे पर चिंता की लकीरें आ गईं, क्योंकि अब यह टास्क ऐलेक्स के लिये भी मुश्किल बन गया था।

पर फिर भी ऐलेक्स ने हार नहीं मानी, उसने एक बार फिर अपने शरीर को हवा में जोर जोर से हिलाना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में ऐलेक्स के हवा में झूलने की गति काफी तेज हो गई।

अब ऐलेक्स धीरे-धीरे सरक कर रस्सी के बिल्कुल आखिरी किनारे पर आ गया, उसे पता था कि वह जितना नीचे से रस्सी को पकड़ेगा, उतना ही दूर तक जायेगा।

अब ऐलेक्स की नजरें सिर्फ और सिर्फ 30 नंबर के पत्थर पर थी।

आखिरकार ऐलेक्स ने रस्सी छोड़ दी। अब उसका शरीर हवा में उड़ता हुआ तेजी से 30 नंबर के पत्थर की ओर चल दिया।

ऐलेक्स को छलांग लगाते देख सभी की साँसें रुक सी गयीं।

आखिरकार ऐलेक्स का पैर 30 नंबर पत्थर के आखिरी छोर पर पहुंच ही गया। यह देख सभी खुश हो गये।

पर ऐलेक्स के शरीर का पूरा बैलेंस अभी बना नहीं था। इसी के साथ ऐलेक्स का शरीर हवा में लहराकर आग की ओर झुकने लगा।

यह देख क्रिस्टी के मुंह से चीख निकल गई।

ऐलेक्स समझ गया कि अब उसका बैलेंस बन नहीं पायेगा, तभी ऐलेक्स के हाथ में उस बंदर की मूर्ति की पूंछ आ गई, जो कि हवा में लहरा

रही थी।

ऐलेक्स ने घबराकर उस बंदर की पूंछ पकड़ ली।

बंदर की मूर्ति की पूंछ काफी मजबूत थी, जिसने आखिरकार ऐलेक्स को बचा ही लिया।

“देखा, मैंने कहा था ना कि तुम बंदरों के परिवार से हो, और अब इस बंदर ने तुम्हें बचाकर यह साबित भी कर दिया।” क्रिस्टी ने तेज से चिल्लाकर ऐलेक्स से कहा।

ऐलेक्स ने इस समय क्रिस्टी की बात पर ध्यान नहीं दिया, वह तो अब जल्दी-जल्दी वहां कोई ऐसा यंत्र ढूंढने लगा, जिससे उस आग के समुंदर पर पुल बनाया जा सके।

पर काफी ढूंढने के बाद भी ऐलेक्स को वहां ऐसा कुछ नजर नहीं आया।

अब ऐलेक्स उस बंदर की मूर्ति को ध्यान से देखने लगा, जो कि अपने हाथ में एक केला बैठा था।

“ये लो कर लो बात, इधर मैं परेशान हो रहा हूं और ये भाई साहब केला लिये, जीभ निकालकर मुझे चिढ़ा रहे हैं।” यह कहकर ऐलेक्स ने बंदर के मूर्ति के सिर पर एक धीरे से चपत लगा दी।

ऐलेक्स के ऐसा करते ही बंदर ने अपनी जीभ अंदर कर ली और केला खाने लगा, जैसे ही बंदर का केला खत्म हुआ, वह बंदर कहीं गायब हो गया, पर अब उस आग के समुंदर पर एक पुल बन चुका था।

यह देख ऐलेक्स खुश हो गया।

सभी उस पुल से होते हुए 30 नंबर को पार कर 31 नंबर पर पहुंच गये। अब उन्हें आगे की स्टेज दिखाई देने लगी थी।

40 नंबर पर एक पुच्छल तारा हवा में गोल-गोल नाच रहा था।

31 से 40 नंबर तक के बीच जमीन में एक पीले रंग का द्रव भरा था, जिसमें जगह-जगह पर बुलबुले उठ रहे थे।

उस पूरे रास्ते के बीच 8 बड़े आकार के लट्टू हवा में नाच रहे थे।

सभी लट्टू क्लाक वाइज नाच रहे थे।

तभी सुनहरी रोशनी से फिर कविता की कुछ पंक्तियां हवा में उभरी-

"नाच सको तो नाच लो,
अपनी प्रतिभ जांच लो।"

इन पंक्तियों को पढ़ जेनिथ के चेहरे पर मुस्कान आ गयी- "इस कैश्वर ने सभी की प्रतिभा के साथ पूरा न्याय किया है, जैसे कि अब देख कर ही पता चल रहा है कि यह द्वार मेरे लिये ही बनाया गया है।"

जेनिथ के शब्दों में सच्चाई झलक रही थी।

"पर जेनिथ तुम्हें उस पार जाने से पहले 2 चीजों का बहुत ज्यादा ध्यान रखना है।" सुयश ने जेनिथ को समझाते हुए कहा- "पहला यह कि लट्टू के नीचे का वह द्रव तेजाब है, तो अगर तुम गिरी तो मुझे नहीं लगता कि नक्षत्रा इतनी जल्दी तुम्हें सही कर पायेगा। दूसरी बात हर लट्टू क्लाक वाइज नाच रहा है। ऐसी स्थिति में तुम्हें एक लट्टू से दूसरे पर कूदना बहुत मुश्किल होगा। हां अगर एक क्लाक वाइज और दूसरा एंटी क्लाक वाइज नाचता तो तुम्हें बैलेंस करने में परेशानी नहीं आती। पर यहां पर ऐसा नहीं है, इसलिये तुम्हें लट्टू बदलते समय अपने बैलेंस का बहुत ध्यान रखना होगा।"

जेनिथ ने ध्यान से सुयश की बातें सुनीं और धीरे से उछलकर पहले लट्टू पर आ गई।

अगर यह कार्य जमीन पर करना होता, तो जेनिथ के लिये बिल्कुल मुश्किल नहीं होती क्योंकि नीलकमल पर जेनिथ ने इससे ज्यादा गति का सामना किया था, पर अभी यहां स्थिति अलग थी, यहां पर तेजाब का डर भी शामिल था।

तेजाब को देखकर जेनिथ में थोड़ा सा डर आ गया था। यह देखकर नक्षत्रा बोल उठा- "परेशान मत हो जेनिथ, अगर तुमने अपने भय को काबू में रखा, तो तुम आसानी से यह क्षेत्र पार कर सकोगी।"

"पर नक्षत्रा, वह तेजाब मुझे डरा रहा है, पता नहीं क्यों तेजाब को देखकर मुझे यह महसूस हो रहा है कि मैं इसमें गिर जाऊंगी।" जेनिथ ने डरते हुए कहा।

"अच्छा ये बताओ जेनिथ कि अगर तुम्हें यह तेजाब नहीं दिखाई दे रहा होता, तो क्या तुम इसे आसानी से पार कर सकती थी?" नक्षत्रा ने जेनिथ से पूछा।

"100 प्रतिशत मैं इसे आसानी से पार कर लेती।" जेनिथ ने पूर्ण विश्वास से कहा।

“तो फिर ठीक है, एक बार अपनी आँखें बंद करो और फिर खोलो।” नक्षत्रा के शब्द रहस्य से भरे थे।

जेनिथ को कुछ समझ में तो नहीं आया, पर उसने वैसा ही किया, जैसा कि नक्षत्रा ने कहा था।

आँखें खोलते ही जेनिथ आश्चर्य से भर गई, अब उसे लट्टू के नीचे तेजाब नहीं बल्कि हरी-हरी नर्म घास दिखाई दे रही थी।

“ज्यादा खुश होकर घास पर अपना पैर मत रख देना जेनिथ, यह बस मैंने तुम्हारा डर कम करने के लिये किया है, यह घास सिर्फ तुम्हारे आँखों का भ्रम है, नीचे अभी भी तेजाब ही है, पर मैंने अपनी शक्ति से तुम्हारे दिमाग में भ्रम उत्पन्न कर दिया है।” नक्षत्रा ने कहा।

“पर तुम यह किस प्रकार कर सकते हो नक्षत्रा?” जेनिथ ने नक्षत्रा से पूछा।

“लोग समझते हैं कि वह अपनी आँखों के द्वारा देखते हैं, पर यह गलत है। हमारी आँखों से निकली किरणे, जब किसी चीज से टकराकर हमारी आँखों में वापस आती हैं, तो वह इन्हें तरंगों के रुप में मस्तिष्क तक भेजती हैं और मस्तिष्क इन तरंगों को डीकोड कर समझ जाता है कि उस इंसान ने क्या देखा। तो इसका मतलब कोई भी चीज हमें आँखें नहीं बल्कि दिमाग दिखाता है। बस मैंने इसी थ्योरी पर काम कर एक नयी शक्ति का विकास कर लिया। अब मैं जब चाहूं तुम्हें तुम्हारी मनचाही वस्तु दिखा सकता हूं, पर यह ध्यान रखना कि वह असल में होगी नही, बस वह तुम्हें दिखेगी।”नक्षत्रा ने कहा।

हर बार की तरह इस बार भी विज्ञान की बातें जेनिथ की खोपड़ी के ऊपर से चलीं गईं, पर उसने सिर हिला दिया।

“एक बात और बता दो नक्षत्रा कि तुम इस शक्ति का प्रयोग तिलिस्मा में कैसे कर पा रहे हो, यहां तो बाहर की शक्ति काम नहीं करती।” जेनिथ ने एक सवाल और पूछ लिया।

“यह शक्ति कहां है जेनिथ, यह तो मात्र भ्रम है।” नक्षत्रा ने कहा- “अब तुम ज्यादा सवाल मत करो और इस द्वार को पार करो, देखो सभी आश्चर्य से तुम्हें इतनी देर से लट्टू पर नाचते देख रहे हैं। अब जरा इन लोगों को भी अपनी प्रतिभा दिखा दो।”

जेनिथ ने एक नजर किनारे पर खड़े लोगों पर मारी और फिर आराम से इस तरह सभी लट्टू को पार करती चली गई, जैसे वह अपने गार्डन में

खड़ी हो।

"वाह! क्या बात है? जेनिथ को तो इस द्वार में कोई भी परेशानी नहीं हुई?" तौफीक ने जेनिथ की तारीफ करते हुए कहा।

उधर जेनिथ जैसे ही दूसरी ओर पहुंची, तेजाब के ऊपर हवा में एक पुल बन गया, जिससे होकर सभी दूसरी ओर आ गये।

अब सभी जाकर 41 नंबर पर खड़े हो गये।

◆ ◆ ◆

जीव शक्ति

18 वर्ष पहले ....

जुलाई 1977, सीनोर राज्य का समुद्र तट, अराका द्वीप

सुबह का समय था। आज मौसम भी काफी अच्छा था इसलिये लुफासा और वीनस आज मौज-मस्ती करने के लिये, समुद्र तट के पास आ गये थे।

इस समय लुफासा की आयु 7 वर्ष और वीनस की आयु मात्र 5 वर्ष की थी।

“भाई, आज मौसम कितना अच्छा है, लहरें भी ऊंची-ऊंची उठ रही हैं, चलो ना लहरों के बीच चलें, वहां बहुत मजा आयेगा।” वीनस ने लुफासा को खींचते हुए लहरों की ओर ले जाना चाहा।

“नहीं, जब यहां किनारे से ही इतना अच्छा दृश्य दिख रहा है, तो वहां लहरों के पास जाने की क्या जरुरत है?” लुफासा ने वीनस से अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा- “अगर लहरों की वजह से तुम्हारा सिर किसी चट्टान से टकरा गया तो?”

“क्या भाई, आप भी कितना डरते हो? हम यहां कोई पहली बार तो नहीं आ रहें हैं ना।” वीनस ने अपनी जीभ निकालकर लुफासा को चिढ़ाते हुए कहा।

“देखो, तुम डरने का नाम मत लो, मैं किसी से नहीं डरता।” लुफासा ने गुस्साते हुए कहा।

“अच्छा ठीक है भाई, अब मैं आपको डरपोक नहीं कहूंगी।” यह कहकर वीनस, लुफासा से थोड़ा दूर गई और फिर तेज से चिल्लाकर भागी- “डरपोक .... डरपोक।”

“रुक जा अभी बताता हूं तुझे।” यह कहकर लुफासा भी वीनस के पीछे-पीछे उसे पकड़ने को भागा।

वीनस ने पास आ रही एक समुद्र की लहर को देखा और फिर वहां पड़े एक बड़े से पत्थर पर खड़ी होकर लुफासा के आने का इंतजार करने लगी।

“पकड़ लिया ....।” लुफासा ने पत्थर पर चढ़कर वीनस को पकड़ते हुए कहा- “अब बता क्या कह रही थी?”

“भाई .... वो ... वो .... मैं कह रही थी।” तभी समुद्र की तेज लहर ने वीनस और लुफासा दोनों को ही सराबोर कर दिया- “कि .... समुद्र की लहर इस पत्थर के ऊपर तक आने वाली हैं।”

लुफासा ने पहले अपने भीग चुके पूरे कपड़ों को देखा और फिर वीनस को डांटते हुए कहा- “बोलने में इतना देर लगाते हैं क्या? जब तक तुमने बोला, तब तक तो हम भीग चुके थे।”

“इसीलिये तो धीरे-धीरे बोल रही थी कि आपका ध्यान पूरी तरह से लहरों से भटककर मेरी ओर आ जाये और आप भीग जाओ।” वीनस ने शरारत भरे अंदाज में कहा- “भाई, अब तो चलो ना लहरों के बीच, देखो अब तो आपके कपड़े भी पूरी तरह से भीग गये हैं।”

लेकिन इससे पहले कि लुफासा कोई जवाब दे पाता, उसके नीचे की जमीन हिलने लगी और वह स्वतः ही समुद्र की ओर जाने लगे।

“यह क्या भाई, हमें यह पत्थर समुद्र की ओर क्यों ले जा रहा है?” वीनस ने डरते हुए कहा।

लुफासा पत्थर को सरकते देख उस पर कूद गया और ध्यान से उस पत्थर को देखने लगा।

“अरे, यह पत्थर नहीं बल्कि कोई बड़ा सा कछुआ है, जो अब समुद्र की ओर जा रहा है।” लुफासा ने कहा- “जल्दी से उतर जाओ, नहीं तो यह तुम्हें भी लेकर समुद्र में चला जायेगा।”

“ले जाने दो।” वीनस ने उस कछुए पर आराम से बैठते हुए कहा- “भाई तो ले नहीं जा रहा समुद्र में, तो यह कछुआ ही सही। अब मैं आज से इसे ही भाई कहकर बुलाउंगी, कम से कम यह मेरी बात तो मानता है। चलो-चलो कछुआ भाई ... समुद्र की ओर चलो ... और इस लुफासा की बात मत सुनना। यह अच्छा लड़का नहीं है।”

लुफासा अब वीनस को घूरकर देख रहा था, पर उसने भी ना तो वीनस को कछुए से नीचे उतारा और ना ही कछुए को रोका।

लुफासा को लग रहा था कि अभी कुछ आगे जाने के बाद वीनस डरकर कछुए से उतर जायेगी, पर वीनस भी एक नंबर की जिद्दी थी, वह भी लुफासा को परेशान करने के लिये कछुए से उतरी नहीं। बल्कि पानी के पास पहुंचने तक, अपने हाथ हिलाकर लुफासा को ‘बाय’ करती रही।

लुफासा को अब थोड़ी गड़बड़ लगने लगी थी क्योंकि वीनस अब बिल्कुल लहरों के पास पहुंच गई थी।

तभी समुद्र की एक ऊंची सी लहर आयी और जोर से वीनस और कछुए पर गिरी।

जब वह लहर हटी, तो लुफासा को ना तो वीनस कहीं नजर आयी और ना ही वह कछुआ।

यह देख लुफासा बहुत घबरा गया। माता-पिता के जाने के बाद अब वह वीनस को भी खोना नहीं चाहता था।

लुफासा अब चीखकर समुद्र की ओर भागा- “वीनसऽऽऽऽऽऽ।”

पर दूर-दूर तक लहरों के शोर के सिवा कुछ नहीं था।

वैसे तो सभी अटलांटियन पानी में साँस लेना जानते थे, यानि की वीनस के डूबने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था।

पर लुफासा की चिंता इसलिये भी ज्यादा दिख रही थी क्योंकि एक साधारण द्वीप के किनारे से इतनी आसानी से कोई कहीं नहीं जाता? पर अराका पानी पर तैर रहा एक कृत्रिम द्वीप था, जिसके थोड़ा ही आगे से गहरा समुद्र शुरु हो जाता था और गहरे समुद्र में खतरा पानी नहीं, बल्कि उसमें रहने वाले विशाल जीव थे।

लुफासा तुरंत वहां पहुंच गया, जहां कि अभी कुछ देर पहले वीनस और कछुआ थे।

लुफासा उस स्थान पर पानी में अपना मुंह डालकर अंदर की ओर देखने लगा, पर वीनस आसपास कहीं दिखाई नहीं दी।

अब लुफासा धीरे-धीरे समुद्र में आगे की ओर बढ़ने लगा।

कुछ ही देर में लुफासा अराका की धरती से कुछ दूर आ गया, पर पानी में दूर-दूर तक कुछ नहीं था।

तभी लुफासा को अराका की जमीन में पानी के नीचे एक कपड़ा फंसा हुआ दिखाई दिया।

वह कपड़ा देख लुफासा वापस अराका की ओर आ गया।

पानी के अंदर, अराका की जमीन में एक झाड़ी के पास वह कपड़ा फंसा था। लुफासा ने वह कपड़ा खींचा, पर उस कपड़े का दूसरा सिरा

वीनस ने पकड़ रखा था, जो कि झाड़ियों के पीछे छिपी एक गुफा में बैठी मुस्कुरा रही थी।

यह देख लुफासा को बहुत गुस्सा आया। वह समझ गया कि वीनस ने जानबूझकर यह शरारत की थी।

तभी वीनस ने लुफासा को मुंह पर उंगली रखकर चुप रहने का इशारा किया और तैरकर उस गुफा के अंदर चली गई।

लुफासा को गुस्सा तो बहुत आया, पर फिर भी वो वीनस के पीछे-पीछे उस गुफा के अंदर चला गया।

अंदर काफी अंधेरा था, पर दूर कहीं एक लाल रंग की रोशनी दिखाई दे रही थी।

लुफासा पानी के अंदर उस लाल रंग की रोशनी देख आश्चर्य से भर उठा।

अब उत्सुकतावश लुफासा तेजी से उस दिशा में तैरने लगा।

कुछ ही देर में वीनस और लुफासा एक ऐसे स्थान पर पहुंच गये, जिसका एकमात्र द्वार वह गुफा ही दिखाई दे रही थी।

यह स्थान लगभग 500 वर्ग फुट के आकार का था।

उस स्थान पर काँच का 1 वर्ग फुट का एक वर्गाकार डिब्बा दिखाई दे रहा था, जिसके अंदर सुर्ख लाल रंग का एक रत्न रखा हुआ था।

उसी रत्न का प्रकाश उस पूरी गुफा में फैला दिखाई दे रहा था।

वह गुफा उस लाल प्रकाश में पूरी जगमगा रही थी।

उस रत्न को देख, कुछ देर के लिये लुफासा यह भूल गया कि वह वीनस को डांट लगाने के लिये वहां आया था।

तभी लुफासा को वही समुद्री कछुआ दिखाई दिया, जो कि वीनस को लेकर भागा था।

उसे देख लुफासा समझ गया कि इसी कछुए का पीछा करते हुए, वीनस को झाड़ियों के पीछे छिपी यह गुफा दिखाई दी होगी।

अब वह कछुआ भी लाल रंग के प्रकाश की ओर आकर्षित हो गया था।

कछुए ने आगे बढ़कर उस काँच के डिब्बे को छू लिया।

उस डिब्बे को छूते ही कछुए के शरीर से लाल रंग का प्रकाश निकलने लगा। अब वह कछुआ खुशी से उस गुफा के चारो ओर चक्कर लगाने लगा।

यह देख वीनस और लुफासा भी तैरते हुए, उस काँच के डिब्बे के पास पहुंच गये।

डिब्बे के ऊपरी सिरे पर एक ढक्कन लगा था, जिसे लुफासा ने हल्के से प्रयास से ही खोल दिया।

अब लुफासा और वीनस की नजरें आपस में टकराईं और दोनों ने एक साथ झपटकर उस लाल रंग के रत्न को उठा लिया।

दोनों का हाथ रत्न पर एक साथ पड़ा, पर लुफासा ने वीनस से वह रत्न छीन लिया और उसे ध्यान से देखने लगा।

लुफासा और वीनस के छूते ही वह गाढ़े रंग का लाल प्रकाश उन दोनों के शरीर में समा गया और इसी के साथ वह रत्न पता नहीं कहां गायब हो गया?

रत्न के इस प्रकार गायब हो जाने पर दोनों घबराकर, अपने आसपास रत्न को ढूंढने लगे।

तभी वीनस को एक आवाज सुनाई दी- "वह रत्न गायब हो गया, मैंने देखा था।"

वीनस ने हैरान होते हुए अपने आसपास देखा। तभी वीनस से कुछ दूरी पर पानी में तैर रहा वही कछुआ बोल उठा- "इधर-उधर क्या देख रही हो? मैं ही बोल रहा हूं।"

वीनस कछुए को बोलते देख हैरान हो गई।

तभी वीनस को एक महीन गाने की आवाज सुनाई दी।

वीनस ने उस दिशा की ओर देखा, तो उसे कुछ नन्हीं रंग-बिरंगी मछलियां पानी में इधर-उधर घूमती दिखाईं दीं।

गाना वही मछलियां गा रहीं थीं। यह देख वीनस की खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा, वह भी पानी में तैरते हुए जोर-जोर से मछलियों वाला गाना गाने लगी।

कुछ देर बाद जब वीनस रुकी, तो उसने देखा कि उसके आसपास सैकड़ों जलीय जंतु उसे हैरानी से गाते हुए देख रहे थे और लुफासा डरा-

डरा गुफा के एक किनारे से चिपका हुआ था।

“आप हमारी भाषा जानती हो?” एक सितारा मछली ने आगे आते हुए पूछा।

“मुझे नहीं पता, पर अभी तुम जो बोली, मैं वह समझ गई। क्या तुम भी मेरी बात को समझ पा रही हो?” वीनस ने सितारा मछली से पूछा।

“हां ... यह ही क्या, हम सभी तुम्हारी बात सुन और समझ पा रहे हैं।” तभी एक नन्हें ऑक्टोपस ने आगे बढ़कर कहा।

“अरे वाह, ये तो बहुत अच्छी बात है, फिर तुम सब खड़े क्यों हो? मेरे साथ नाचते क्यों नहीं?” वीनस ने यह कहा और फिर से जोर-जोर से गाकर पानी में नाचने लगी।

वीनस को देख वहां के सभी जलीय जंतु वीनस के साथ-साथ पानी में नाचने लगे।

लुफासा यह देखकर और ज्यादा डर गया, उसे लगा कि वीनस में कोई समुद्री भूत घुस गया है, इसलिये वह किसी को डिस्टर्ब नहीं कर रहा था।

काफी देर तक उस गुफा में यह नाच गाने का कार्य चलता रहा, पर अब वीनस थक गई थी। इसलिये उसने अब सभी को वहां कल आने को बोल, लुफासा के पास आ गई।

लुफासा अब भी डरी-डरी नजरों से वीनस को देख रहा था।

“क्या हुआ भाई, आप मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो?” वीनस ने लुफासा की ओर देखते हुए पूछा।

“तुम में कोई समुद्री भूत घुस गया है, जिसकी वजह से तुम अभी समुद्री जीव-जंतुओं से बातें कर रही थी।” लुफासा ने डरते हुए कहा।

“क्या भाई आप भी ना? कितना डरते हो।” वीनस ने लुफासा पर गुस्साते हुए कहा- “अरे वह पत्थर जिसे हमने छुआ था, वह कोई चमत्कारी पत्थर था। उसी की वजह से अब मैं सभी जीवों की भाषा बोल और समझ सकती हूं। .. ... हम दोनों ने एक साथ पत्थर छुआ था, आप भी देखो ना भाई, अवश्य ही आप में भी कोई शक्ति आयी होगी। देखो आपके हाथों के अंदर अभी भी हल्की सी लाल रंग की रोशनी निकल रही है।”

वीनस की बात सुन लुफासा अपने हाथों की ओर देखने लगा।

“हां रोशनी तो निकल रही है, पर अगर मुझे भी तेरी तरह शक्ति मिली होती तो मैं भी उन मछलियों की भाषा समझ पाता, पर ऐसा नहीं हुआ, मुझे उनकी भाषा नहीं समझ में आयी।” लुफासा ने बेचैनी से कहा।

तभी एक पीले रंग की नन्हीं मछली लुफासा के चेहरे के पास आकर तैरने लगी। यह देख लुफासा ने गुस्से से उसे घूरा, पर उसको घूरते ही लुफासा स्वयं, उस मछली के समान बन गया।

यह देख वीनस खुशी से चीख उठी- “देखा भाई, मैंने कहा था ना कि कोई ना कोई शक्ति तो आपको भी मिली होगी?”

अपने आपको मछली बना देख लुफासा भी खुशी से नाचने लगा, तभी दूसरी दिशा से एक थोड़ी बड़ी मछली आयी और मछली बनी लुफासा को अपने मुंह में भरकर चली गई।

यह देख वीनस के मुंह से चीख निकल गई, वह तेजी से उस बड़ी मछली की ओर भागी, पर तभी एक आवाज ने उसे रोक लिया- “मैं यहां ठीक हूं वीनस, वापस लौट आओ।”

यह आवाज लुफासा की ही थी। वीनस ने पलटकर देखा, तो उसे लुफासा उसी स्थान पर बैठा दिखाई दिया, जहां पर वह मछली बनने के पहले बैठा था।

“यह क्या है भाई, आपको तो वह मछली निगल गई थी। फिर आप बच कैसे गये?” वीनस ने आश्चर्य से लुफासा की ओर देखते हुए कहा।

“मुझे भी नहीं पता, जब उस बड़ी मछली ने मुझे निगला, तो उसके बाद मैंने स्वयं को, अपने असली रुप में यहीं पर पाया। ..... पर .... पर अब मैं वह पीली सी मछली नहीं बन पा रहा हूं। शायद मेरी शक्ति चली गई।”

तभी लुफासा के सामने से एक दूसरी नीले रंग की मछली निकली। इस बार लुफासा ने उसे ध्यान से देखा और इसी के साथ लुफासा अब नीले रंग की मछली के समान बन गया।

“लगता है कि अगर किसी एक रुप में मेरी मौत हो गई, तो वह रुप मैं दोबारा नहीं धर सकता और मेरे उस रुप की मौत होने के बाद मैं वापस उसी स्थान और रुप में पहुंच जाता हूं, जो मैं उस रुप के पहले था।” लुफासा ने कहा।

“अरे वाह, ये तो इच्छाधारी शक्ति है ... आप कोई भी रुप धारण कर सकते हो।” वीनस ने कहा और अब वह लुफासा से बार-बार अलग-अलग

रुप बदलने को कहने लगी।

उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था कि मानों उन बच्चों को एक नया खेल मिल गया हो।

पर जो भी हो, लुफासा और वीनस अपनी शक्तियों से खुश थे।

◆ ◆ ◆

चैपटर-12

ग्रीष्म ऋतु-2

तिलिस्मा 4.2

सुयश सहित सभी लोग 41 नंबर पर खड़े थे। 50 नंबर पर यूरानस ग्रह चक्कर लगा रहा था।

41 से 50 के बीच बहुत ही गर्म सा कोई द्रव भरा हुआ नजर आ रहा था, जिसमें 41 वाली साइड एक नाव खड़ी थी।

"यह तो कोई आसान सा कार्य लग रहा है, क्योंकि हमें उस पार जाने के लिये पानी में एक बोट भी दी गई है।" ऐलेक्स ने कहा।

"तिलिस्मा में कोई कार्य आसान नहीं है।" क्रिस्टी ने उस बोट को देखते हुए कहा- "जरुर कैश्वर ने इस कार्य में भी कोई ना कोई पेंच डाल रखा होगा?"

तभी उस द्रव से धुंए की एक लकीर उठी और उसने हवा में एक नयी कविता लिख दी-

"जिसमें रहती उसी को खाए,
फिर भी नाव को पार लगाये।"

"अब इस पहेली का क्या मतलब हुआ?" जेनिथ ने अपना सिर पकड़ते हुए कहा।

कुछ देर तक सभी इस पहेली का मतलब समझने की कोशिश करते रहे, परंतु जब काफी देर तक किसी को कुछ समझ में नहीं आया, तो तौफीक बोल उठा- "मुझे नहीं लगता कि हमें अभी इतना दिमाग लगाने की जरुरत है कैप्टेन .... अगर हमारे सामने एक नाव खड़ी है, जो इस गर्म द्रव से बचाकर हमें उस पार पहुंचा सकती है, तो पहले हमें उसमें बैठकर उस पार पहुंचने की कोशिश करनी चाहिये, अगर हमें कोई परेशानी आती है, तब हमको इतना सोचना चाहिये, बिना पानी में उतरे, हम कुछ खास सोच नहीं पायेंगे, क्योंकि हमें पता ही नहीं है कि हमें सोचना क्या है?"

तौफीक की बात सभी को सही लगी, इसलिये सभी उतर कर नाव में बैठ गये।

नाव के दोनों ओर बैठने की लिये सीट लगीं थीं।

सभी उन सीटों पर बैठ गये।

नाव में एक 2 फुट का धातु का पैन (किचन में कार्य में लाया जाने वाला एक बर्तन) रखा था, जिसे तौफीक ने चप्पू समझ हाथ में उठा लिया, पर जब तौफीक ने पैन को उस द्रव में डालकर नाव को चलाने की कोशिश की, तो वह पैन उस नाव को हिला भी नहीं पाया।

“कैप्टेन यह तो बहुत ही गाढ़ा द्रव है, हम इस अकेले पैन से इस नाव को नहीं चला सकते।” तौफीक ने सुयश को देखते हुए कहा- “ऊपर से यह गर्म बहुत दिख रहा है, ऐसे में हम इसमें हाथ भी नहीं डाल सकते, तो फिर हम इस नाव को चलायेंगे कैसे?”

“तुमने कहा तो था तौफीक कि नाव में बैठने के बाद ही हमें असली समस्या का पता चलेगा, लो अब पता चल गयी असली समस्या। असली समस्या इस नाव को चलाने की है।” सुयश ने कहा- “अब हमें एक बार फिर ध्यान से इस नाव को उस पहेली से मैच कराना होगा, तभी इस समस्या से हमें छुटकारा मिलेगा।”

“कैप्टेन अंकल, बाहर जो द्रव दिखाई दे रहा है, मैं बहुत देर से उसे पहचानने की कोशिश कर रही हूं, अब मुझे उसकी गंध से पता चल गया कि वह द्रव असल में मोम है।”

“मोम????” मोम शब्द सुनते ही अचानक से सुयश को झटका लगा, अब वह कुछ सोच में पड़ गया।

कुछ देर सोचते रहने के बाद सुयश नाव की सीट से खड़ा हुआ और ध्यान से उस नाव का अगला हिस्सा देखने लगा।

नाव का अगला हिस्सा देखने के बाद सुयश ने तौफीक के हाथ से वह पैन ले लिया और उसे देखने लगा।

पैन को देखने के बाद अब सुयश के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई और वह बोला- “मिल गया इस पहेली का हल।”

सुयश की बात सुन सभी सुयश की ओर देखने लगे।

“इस पहेली की पहली पंक्ति हैं कि ‘जिसमें रहती उसी को खाए’ यानि की मोमबत्ती का धागा ..... मोमबत्ती का धागा, जिसमें रहता है, उसी

को खाता है, पहेली की दूसरी पंक्ति है “फिर भी नाव को पार लगाये’ यानि की हम इस नाव को मोमबत्ती से चला सकते हैं।” सुयश ने कहा।

“मोमबत्ती से?” क्रिस्टी आश्चर्य से सुयश का चेहरा देखने लगी- “मोमबत्ती से नाव कैसे चलेगी कैप्टेन?”

“चलेगी। .... लगता है कि तुमने अपने बचपन में ‘पॉप-पॉप बोट’ नहीं चलाई है क्रिस्टी।” सुयश ने मुस्कुराते हुए कहा- “पॉप-पॉप बोट को हम मोमबत्ती के द्वारा भाप बनाकर चलाते थे। .... रुको मैं तुम्हें यह करके दिखाता हूं।”

“मैं आपकी बात समझ गया कैप्टेन।” तौफीक ने सुयश को देखते हुए कहा- “मैंने बचपन में यह बोट चलाई है, पर आप यह बताइये कि हमारे पास ना तो यहां मोमबत्ती में लगाने वाला कोई धागा है और ना ही आग .... फिर हम मोमबत्ती बनायेंगे कैसे?”

“बताने की जगह मैं करके दिखाता हूं।” यह कहकर सुयश ने पैन को उस द्रव में डालकर उसे मोम से भर लिया।

मोम अभी गीला था, यह देखकर सुयश ने अपनी जेब से वह डोरी निकाल ली, जो खोपड़ी की माला में बंधी थी, उस डोरी को अभी तक सुयश ने फेंका नहीं था।

सुयश ने उस डोरी को उस पैन के एक किनारे पर द्रव में डाल दिया।

कुछ ही देर में मोम सूख गया। अब वह पैन एक मोमबत्ती का रुप धारण कर चुका था।

सुयश ने अपने बैग से अब 2 पत्थरों को निकाला और उन्हें रगड़ कर उनसे आग बना ली।

सुयश ने इस आग से मोमबत्ती रुपी पैन को जला लिया और उसे नाव के अगले भाग में रख दिया।

कुछ ही देर में नाव के पीछे मौजूद पाइप से ‘फट्-फट्’ की आवाज निकलने लगी और नाव सभी को लेकर दूसरी दिशा की ओर चल दी।

दूसरी दिशा से कुछ पहले ही सुयश ने पैन को नाव से हटा दिया, जिससे नाव उन सभी को दूसरी ओर पहुंचा कर बंद हो गई।

सभी उतरकर 50 नंबर पर खड़े हो गये।

“वाह! यह कार्य तो कैप्टेन के रहते आसान बन गया।” क्रिस्टी ने सुयश की तारीफ करते हुए कहा- “पर ये बताइये कैप्टेन, कि आपने यह पत्थर कब अपने बैग में रख लिये। क्योंकि जब अलबर्ट सर ने हमें आग से बचाया था, उस समय तो हमारे पास कुछ जलाने के लिये था ही नहीं। तभी अलबर्ट सर ने अपने चश्में से आग जलाई थी।”

“बस उसी घटना के बाद से मुझे समझ आ गया था कि आग की जरुरत हमें कहीं भी पड़ सकती है, इसलिये मैंने रास्ते में एक जगह से यह 2 पत्थर उठा लिये थे।” सुयश ने कहा।

“पर कैप्टेन, नाव तो लकड़ी की थी, फिर आपके आग लगाने से वह जली क्यों नहीं?” जेनिथ ने पूछा।

“पूरी नाव लकड़ी की थी, पर नाव का आगे का ऊपरी हिस्सा टिन से बना था, पर वह टिन का रंग लकड़ी की भांति था, मैंने सबसे पहले यही तो चेक किया था और उस टिन के हिस्से से 2 पतली धातु की पाइप नाव के पिछले हिस्से की ओर जा रही थी। बस इसी को देख मैं पहेली का मतलब समझ गया था।” सुयश ने कहा।

“पर एक बात कमाल की है कैप्टेन।” ऐलेक्स ने कहा- “आपने जो खोपड़ी की माला का धागा अभी तक बचाकर रखा था, कोई सोच भी नहीं सकता था कि वह तिलिस्मा में कहीं हमारे काम भी आ सकता है।”

“मैंने जबसे यह सुना था कि तिलिस्मा में कोई चमत्कारी शक्ति काम नहीं करेगी, तभी से हर छोटी से छोटी चीज को अपने बैग में जमा करना शुरु कर दिया था। क्योंकि मुझे पता है कि हर छोटी से छोटी चीज कभी तो काम आती है।” सुयश ने सभी को देखते हुए जवाब दिया।

“आप इतनी छोटी से छोटी चीज पर ध्यान कैसे दे लेते हैं कैप्टेन?” तौफीक ने सुयश से सवाल किया।

“सुयश, शायद इतनी छोटी से छोटी चीज पर कभी ध्यान नहीं देता, पर आर्यन ने तो अपनी जिंदगी के 10 बहुमूल्य वर्ष, वेदालय में यही सब तो किया था, माना कि अभी यादें थोड़ी धुंधली हैं, पर हैं तो मेरे ही दिमाग में।” सुयश ने अतीतकाल में एक डुबकी लगाते हुए जवाब दिया।

सभी अब 51 नंबर पर जाकर खड़े हो गये।

60 नंबर पर शनि ग्रह नाचता दिखाई दे रहा था।

51 से 60 के बीच में लावा फैला हुआ दिखाई दे रहा था। वहां पर पास में 2 लंबे से धातु के पतले खंभे रखे थे, जिनके ऊपर के सिरे पर

लगभग, 4 फुट की ऊंचाई पर एक छोटा सा बेस बना था।

देखने पर वह खंभे किसी सर्कस के जोकर वाले खंभे दिख रहे थे, जो कि जोकर अपने पैर में बांधकर चलने के लिये प्रयोग में लाते हैं।

“यह खंभे तो स्टिल्ट वॉकिंग के लिये प्रयोग किये जाते हैं” जेनिथ ने कहा- “आज के समय में बहुत से देशों में स्टिल्ट वॉकिंग की प्रतियोगिताएं कराई जाती हैं।”

एक बार फिर सभी को हवा में लावे से लिखी 2 पंक्तियां दिखाई दीं।

“आगे चलो तो मंजिल भागे,
उल्टा चलो आ जाओ आगे।”

“लगता है कि इस बार इन खंभों के माध्यम से हमें उस पार जाना होगा।” ऐलेक्स ने कहा- “अब ये कार्य हममें से कौन आसानी से कर सकता है?”

ऐलेक्स की बात सुनते ही सभी की निगाहें स्वतः ही क्रिस्टी की ओर चलीं गईं क्योंकि ऐसे कार्य में तो वही सिद्धहस्त थी।

सभी को अपनी ओर देखते पाकर क्रिस्टी ने उन खंभों को उठाकर उनके वजन का अंदाजा लगाया और एक खंभे को लावे में डालकर देखा।

पता नहीं वह खंभा किस धातु का बना था? कि लावे में डालने पर भी उस खंभे का कुछ नहीं हुआ?

अब क्रिस्टी ने दूसरा खंभा भी लावे में डाल दिया और उछलकर एक खंभे पर अपना बांया पैर रख लिया, क्रिस्टी ने दूसरे खंभे को भी अपने हाथों से नहीं छोड़ा था।

एक खंभे पर अपने शरीर का बैंलेस बनाने के बाद क्रिस्टी ने अपना दाहिना पैर दूसरे खंभे पर रख दिया।

अब क्रिस्टी के दोनों पैर 2 खंभों पर थे और वह पूरी तरह से उन दोनों खंभों के सहारे खड़ी थी।

क्रिस्टी ने अब अपना बांया पैर धीरे से हवा में उठाकर उस खंभे को आगे बढ़ाया। एक बार अच्छी तरह से बैंलेस बन जाने के बाद अब क्रिस्टी ने अपना दाहिना पैर हवा में उठाकर दाहिनी ओर वाले खंभे को भी आगे बढ़ाया।

इस प्रकार क्रिस्टी किसी सर्कस के अभ्यस्त जोकर की तरह आगे बढ़ने लगी।

तभी क्रिस्टी को वह दोनों खंभे धीरे-धीरे गर्म होते हुए महसूस हुए, पर मंजिल अब ज्यादा दूर नहीं थी इसलिये क्रिस्टी लगातार आगे बढ़ती रही।

अब क्रिस्टी की दूरी 60 नंबर से मात्र 15 फुट ही बची थी, क्रिस्टी ने फिर से अपने पैर को आगे बढ़ाया, क्रिस्टी के आगे बढ़ने के बाद अब उस दूरी को घट जाना चाहिये था, पर आश्चर्यजनक तरीके से वह दूरी घटी ही नहीं।

यह देख क्रिस्टी आश्चर्य से भर उठी। उसने फिर से अपना पैर आगे बढ़ाया, पर क्रिस्टी को एक बार फिर दूरी उतनी ही दिखाई दी।

“कैप्टेन, कुछ गड़बड़ है, मैं बार-बार आगे बढ़ रही हूं, पर मैं जितना आगे बढ़ती हूं, मेरे सामने की दूरी उतनी ही मुझसे दूर जा रही है।” क्रिस्टी ने घबराकर कहा- “इधर मेरे हाथ में मौजूद खंभे भी लावे की वजह से लगातार गर्म होते जा रहे हैं, अगर यही कुछ देर तक चलता रहा तो मैं इस कार्य को पूरा नहीं कर पाऊंगी।”

“मुझे पहले ही पता था कि कुछ ना कुछ गड़बड़ तो होगी ही।” सुयश ने चिल्लाकर कहा- “हमें उन कविता की पंक्तियों को ही ध्यान से समझना होगा, उन्हीं पंक्तियों में ही इस पहेली का राज छिपा होगा?”

“कैप्टेन इन कविता की पंक्तियों के हिसाब से तो मुझे इन खंभो के साथ उल्टा चलना होगा, पर उल्टा चलकर इन खंभों पर बैंलेस बनाना कैसे संभव है?” क्रिस्टी ने कहा।

“तुम कर सकती हो क्रिस्टी” ऐलेक्स ने चीखकर क्रिस्टी का हौसला बढ़ाया- “तुम हममें से सबसे अलग हो इसीलिये तिलिस्मा ने तुम्हें चुना है,

मुझे पता है कि तुम यह कर सकती हो। अब अपने डर को छोड़ो और जल्दी कोशिश करो, नहीं तो यह लावा तुम्हारे खंभे के द्वारा तुम्हारा हाथ जलाना शुरु कर देगा, फिर यह कार्य बिल्कुल असंभव हो जायेगा।"

क्रिस्टी ने ऐलेक्स के शब्दों को सुना और धीरे-धीरे अपना बैलेंस बनाकर मुड़ गयी।

अब क्रिस्टी की नजरें ऐलेक्स से मिलीं और क्रिस्टी के चेहरे पर एक विश्वास की झलक दिखने लगी।

क्रिस्टी ने धीरे-धीरे अपना एक कदम पीछे की ओर बढ़ाया, क्रिस्टी का यह प्रयास सफल रहा, अब क्रिस्टी की दूरी मात्र 10 फुट ही पीछे की ओर बची थी।

पर अब खंभे इतने ज्यादा गर्म हो गये थे कि क्रिस्टी का उसे पकड़े रह पाना असंभव हो गया। अतः क्रिस्टी ने उन खंभों को अपने हाथ से छोड़ दिया।

अब क्रिस्टी बिना किसी सपोर्ट के उन खंभों पर खड़ी थी।

क्रिस्टी ने ऐलेक्स को देख नजरें मिलायीं और मुस्कुराकर अपना शरीर पीछे की ओर गिरा दिया।

यह देख ऐलेक्स के मुंह से चीख निकल गई- "क्रिस्टीऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ!"

क्रिस्टी का शरीर अनियंत्रित होकर पीछे की ओर गिरने लगा, पर .... पर क्रिस्टी का शरीर लावे में नहीं बल्कि 60 नंबर पर जाकर गिरा क्योंकि क्रिस्टी की दूरी भी 10 फुट बची थी और जमीन से क्रिस्टी की ऊंचाई 11 फुट थी।

क्रिस्टी उठकर खड़ी हो गई और मुस्कुरा कर ऐलेक्स की ओर देखने लगी।

तभी लावे के ऊपर पुल बनने गया और ऐलेक्स भागकर आकर क्रिस्टी से लिपट गया।

"यह तुमने क्या किया था पागल?" ऐलेक्स ने क्रिस्टी को गले से लगाते हुए कहा- "अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो?"

"अरे कैसे हो जाता, मैंने पीछे की दूरी को भांप लिया था और जानबूझकर यह किया था।" क्रिस्टी ने कहा।

“चलो भाई, इन लोगों का मिलन तो चलता रहेगा, हम लोग 61 नंबर पर चलते हैं।” जेनिथ ने दोनों को देख मुस्कुरा कर कहा।

जेनिथ की बात सुन कर दोनों अलग हो गये, पर ऐलेक्स और क्रिस्टी की निगाहें अभी भी एक दूसरे की ओर ही थीं, और उन निगाहों में प्यार का अहसास भी था और दूसरे के प्रति चिंता भी।

कुछ देर बाद सभी 61 नंबर पर खड़े थे। 70 नंबर पर बृहस्पति ग्रह मौजूद था।

61 से 70 नंबर के बीच पूरे रास्ते में 12 इंच लंबे, नुकीले काँटे निकले थे और 61 नंबर के पास पतली लकड़ियों से निर्मित एक सप्तकोण टंगा था।

तभी हवा में फिर एक पहेली लिखी हुई उभरी-

“सात को अठ्ठारह में बांटें,
खत्म करें रास्ते के काँटे।”

“यह किन 7 को 18 में बांटने की बात कर रहा है?” जेनिथ ने दिमाग लगाते हुए कहा- “हम लोग भी नक्षत्रा को मिलाकर 7 ही हैं, कहीं यह हमें बांटने की बात तो नहीं कर रहा?”

“नहीं जेनिथ दीदी, वहां देखिये वह सप्तकोण भी 7 लकड़ी की एक बराकर तीलियों से बना है, मुझे लग रहा है कि कैश्वर इन्हीं तीलियों से कुछ करने को कह रहा है।” शैफाली ने जेनिथ को सप्तकोण दिखाते हुए कहा।

“अगर सप्तकोण की बात हो रही है, तो इसको बांटने के लिये तो इसे तोड़ना होगा।” ऐलेक्स ने कहा।

ऐलेक्स की बात सुन सुयश ने सप्तकोण को उतारकर लिया, पर जैसे ही सुयश ने सप्तकोण को उतारा, उसकी एक-एक तीलियां जमीन पर बिखर कर अलग हो गईं।

अब शैफाली ध्यान से उन तीलियों को देखने लगी।

काफी देर तक देखते रहने के बाद शैफाली ने एक गहरी साँस भरी और जमीन से उठकर खड़ी हो गई।

“क्या हुआ शैफाली?” सुयश ने शैफाली को उठते देख पूछ लिया- “कुछ समझ में आया क्या?”

“कैप्टेन अंकल, मैं आपसे एक प्रश्न पूछती हूं, जो कि मैं अपने स्कूल में अपने सभी दोस्तो से पूछा करती थी।” शैफाली ने सुयश की बात का जवाब दिये बिना उल्टा एक सवाल ही कर दिया।

पर सुयश शैफाली के तर्कों से अच्छी तरह से परिचित था, इसलिये उसने मुस्कुराकर अपना सिर हां के अंदाज में हिला दिया।

सुयश को हां करते देख शैफाली ने बोलना शुरु कर दिया- “कैप्टेन, एक छत पर 30 कबूतर बैठे हैं। आपको उन सभी को 7 बार में उड़ाना है, शर्त यह है कि आपको हर बार विषम संख्या में ही कबूतर को उड़ाना होगा, तो क्या आप बता सकते है कि किस बार में कितने कबूतर आप उड़ायेंगे?”

शैफाली के प्रश्न को सुनकर सभी लोग कबूतर उड़ाने में लग गये, उधर शैफाली अपनी पहेली को सुलझाने लगी।

अजीब सा माहौल था, तिलिस्म के अंदर भी शैफाली ने सबको काम पकड़ा दिया था।

लगभग 10 मिनट के बाद शैफाली की आँखें, किसी कारण से चमक उठीं।

उधर सभी अभी तक कबूतर उड़ाने में ही लगे थे।

“आप लोगों से नहीं हो पा रहा होगा, चलिये मैं आपको अपनी पहेली का उत्तर बताती हूं।” शैफाली के यह कहते ही, सभी कबूतर उड़ाना छोड़ शैफाली की ओर देखने लगे।

“कैप्टेन अंकल दरअसल मैंने आपसे जो प्रश्न किया था, उसका कोई उत्तर नहीं है।” शैफाली ने मुस्कुराते हुए कहा- “असल में गणित में 7 विषम अंको के जोड़ का उत्तर कभी ‘सम’ हो ही नहीं सकता, जबकि 30 एक सम संख्या है।”

यह सुनकर ऐलेक्स ने शैफाली के कान पकड़ लिये- “शैतान लड़की! जब इसका उत्तर था ही नहीं, तो तुमने हम लोगों से यह प्रश्न ही क्यों पूछा? हम लोग बेवकूफों की तरह से तबसे इसका उत्तर ढूंढ रहे हैं।”

“अरे मैं यही तो आप लोगों को समझाना चाह रही थी कि 7 लकड़ियों को कभी भी तोड़कर 18 में नहीं बांट सकते?” शैफाली ने ऐलेक्स के हाथों से अपना कान छुड़ाते हुए कहा।

“तो क्या कैश्वर भी हमें बेवकूफ बना रहा था?” तौफीक ने मुस्कुराते हुए शैफाली से पूछा।

“नहीं ... वह हमें बेवकूफ नहीं बना रहा था, बस इस पहेली का उत्तर जरा अलग ढंग से देने के लिये कह रहा था।”

यह कहकर शैफाली ने उन 7 लकड़ियों से रोमन अंको में 18 लिख दिया।

(रोमन अंक- XVIII)

इसी के साथ वहां बने काँटों जमीन में समा गये और सभी चलते हुए 70 नंबर को पार कर 71 पर आ गये।

पर सभी के चेहरे पर शैफाली की वजह से एक मुस्कान आ गयी थी।

80 नंबर पर ऐस्टेरोयड बेल्ट लिखा था और कुछ पत्थर हवा में नाच रहे थे।

71 से 80 नंबर के बीच में जमीन से लगभग 1 फुट ऊपर, मिट्टी के कण हवा में तैर रहे थे।

उस पूरे रास्ते में ऊपर छत भी बनी थी, जिस पर 1 फुट मोटी पानी की पर्त जमा थी।

पर वह पानी जमीन पर गिरने की जगह ऊपर की छत से चिपका हुआ था।

मिट्टी के ऊपर पहेली की नयी पंक्तियां लिखी हुई थीं-

“नीचे मिट्टी ऊपर पानी,
संग मिलें तो बने कहानी।”

“ये कैश्वर तो पूरा कविताकार बन गया है।” ऐलेक्स ने कहा- “कविता मार-मार कर हमें आगे बढ़ा रहा है।”

“मुझे अभी तक तो इस कार्य में कोई खास खतरा नहीं दिख रहा है।” तौफीक ने कहा- “लेकिन पिछले कार्यों को देखते हुए, मैं पूरी तरह से सहमत हूं कि यह कार्य भी इतनी आसानी से नहीं होगा।”

“कैप्टेन, क्या मैं आगे बढ़कर देखूं कि यहां कैसा खतरा है?” क्रिस्टी ने कहा।

सुयश ने कुछ ना होते देख क्रिस्टी को इशारा कर दिया।

क्रिस्टी ने जैसे ही मिट्टी वाले भाग में कदम रखा, वह हवा में लहराती हुई ऊपर छत से जा चिपकी। क्रिस्टी अब पानी से पूरी तरह से भीग गई थी।

“कैप्टेन, इस पूरे क्षेत्र में गुरुत्वाकर्षण नहीं है।” क्रिस्टी ने जोर से आवाज लगाते हुए कहा- “और मैं यहां छत से आ चिपकी हूं, मैं अब स्वयं को छत से अलग भी नहीं कर पा रहीं हूं।”

“इन कविता की पंक्तियों से यह तो साफ है कि मिट्टी और पानी को आपस में मिलाना पड़ेगा, तभी कुछ संभव हो सकता है।” सुयश ने कहा।

“पर यह कैसे संभव है कैप्टेन?” जेनिथ ने कहा- “क्योंकि पानी, छत के गुरुत्वाकर्षण से बंधा है और मिट्टी जमीन पर है, ऐसे में दोनों को मिलाना कैसे संभव है?”

“क्रिस्टी, तुम अपने हाथों से पानी को जमीन की ओर फेंकने की कोशिश करके देखो।” सुयश ने क्रिस्टी को आवाज लगाकर कहा- “हो सकता है कि पानी जमीन तक पहुंच जाये?”

सुयश की बात सुन क्रिस्टी ने अपने हाथों की अंजुलि से, ऊपर का पानी नीचे जमीन की ओर फेंकने की कोशिश की, पर उसके द्वारा फेंके गये पानी का बहुत थोड़ा भाग ही नीचे हवा में तैर रही मिट्टी तक पहुंच पाया और इतने थोड़े पानी को उस मिट्टी ने ऐसे सोख लिया, जैसे कि वह जन्म-जन्म से प्यासी हो।

पर जितनी मिट्टी ने पानी को सोखा, वह पानी मिट्टी में मिलकर जमीन पर ही रह गया।

उधर क्रिस्टी लगातार पानी को फेंकने की कोशिश कर रही थी, पर कुछ ही देर में क्रिस्टी के हाथ, अब उसका साथ छोड़ने लगे और क्रिस्टी ने थककर पानी फेंकना बंद कर दिया।

“तौफीक और ऐलेक्स तुम्हें भी वहां ऊपर क्रिस्टी की सहायता के लिये जाना पड़ेगा।” सुयश ने ऐलेक्स और तौफीक से कहा- “मुझे ऐसा लग रहा है कि जितनी मिट्टी, पानी से मिक्स हो जा रही है, उस पर जमीन की गुरुत्वाकर्षण शक्ति काम करने लगी है।”

सुयश की बात सुन ऐलेक्स और तौफीक भी मिट्टी के उस क्षेत्र में घुस कर क्रिस्टी के पास ऊपर जा पहुंचे।

अब ऐलेक्स और तौफीक ने भी पानी को अपने हाथों में भर-भर कर मिट्टी पर फेंकना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर में मिट्टी का अधिकांश भाग जमीन के गुरुत्वाकर्षण के कारण, पानी से मिक्स होकर नीचे आ गया।

सुयश ने एक इशारे से अब ऐलेक्स और तौफीक को पानी फेंकने से मना कर दिया।

अब जमीन पर मिट्टी, पानी से मिक्स होने की वजह से, कीचड़ की मानिंद नजर आने लगी थी।

यह देख सुयश ने अपना एक हाथ धीरे से मिट्टी वाले क्षेत्र में डाला।

सुयश को अपना हाथ हवा में उठता दिखाई दिया। अब सुयश ने वहां पड़ी कीचड़ को हाथ में उठा लिया।

कीचड़ के हाथ में उठाते ही सुयश का हाथ हवा में खिंचना बंद हो गया।

अब सुयश के पास दूसरी ओर जाने का एक तरीका मिल गया था।

सुयश ने हाथ आगे बढ़ाकर धीरे-धीरे बहुत सी कीचड़ को अपनी ओर उठाकर रख लिया। जब काफी कीचड़ इकठ्ठा हो गई, तो सुयश उस कीचड़ को अपने शरीर पर लगाने लगा।

सभी सुयश को यह करते देख रहे थे, पर सभी को सुयश का प्लान समझ आ गया था।

कुछ ही देर में सुयश पूरा का पूरा कीचड़ से नहा गया। यह देख सुयश अब आगे बढ़कर मिट्टी वाले क्षेत्र में आ गया।

पर सुयश का शरीर साधारण तरीके से ही काम करता रहा। यह देख सुयश खुश हो गया क्योंकि आखिर उसका प्लान काम कर गया था।

सुयश अब धीरे-धीरे 80 नंबर की ओर बढ़ने लगा। कुछ ही देर में सुयश उस पार पहुंच गया।

सुयश के उस पार पहुंचते ही हवा में लटके ऐलेक्स, क्रिस्टी और तौफीक नीचे आ गिरे और मिट्टी वाला वह स्थान अब सामान्य काम करने लगा।

सभी अब उस रास्ते को पार कर 80 नंबर पर आ गये। तभी छत पर रुका पूरा पानी, एक बौछार की तरीके से सभी पर आकर गिरने लगा और इसी के साथ ऐलेक्स, क्रिस्टी, तौफीक और सुयश के शरीर पर लगी सारी कीचड़ उस पानी से धुल गई।

“ये कैश्वर इतना भी बुरा नहीं है, देखो हमारे नहाने की व्यवस्था भी कर दी उसने।” ऐलेक्स ने खुश होते हुए कहा।

सभी ऐलेक्स की बात सुनकर मुस्कुरा दिये।

सभी अब आगे बढ़कर 81 नंबर पर आ गये।

81 नंबर पर 3 फुट का 1 तीर रखा था।

90 नंबर पर मंगल ग्रह था और 81 से 90 नंबर के बीच हवा में एक लाल रंग की गैस विद्यमान थी, जिसे देखने पर ही वह कोई खतरनाक गैस महसूस हो रही थी।

तभी उस लाल रंग की गैस ने हवा में एक पहेली लिखी।

“नहीं गिरे सिर से यह तीर,
चाहे जल जाये तेरा शरीर।”

“ये अब खतरनाक स्टेज है।” ऐलेक्स ने कविता को पढ़ने के बाद अपने होठों को गोल करते हुए कहा- “कविता की पंक्तियों से ही पता चल रहा है कि इस भाग को पार करने में बहुत मुश्किल आने वाली है।”

ऐलेक्स की बात से सभी सहमत थे।

“मुझे लगता है कि इस तीर को सिर पर रखकर इस क्षेत्र को पार करना होगा।” शैफाली ने कहा- “परंतु मुझे यह गैस जहरीली लग रही है और कविता की पंक्तियों में भी शरीर के जलने की बात की गई है।”

कुछ सोच जेनिथ ने अपना हाथ धीरे से उस गैस वाले हिस्से में डालकर देखा। परंतु जैसे ही जेनिथ का हाथ उस गैस के हिस्से में पहुंचा, उसका हाथ बुरी तरह जल गया।

“आह!” जेनिथ ने कराहते हुए अपना हाथ तुरंत अंदर कर लिया। नक्षत्रा ने तुरंत जेनिथ के जले हुए हाथ को सही कर दिया, पर उस एक पल के अहसास ने ही जेनिथ की जान निकाल दी थी।

“यह गैस बहुत खतरनाक है, हममें से इसे कोई नहीं पार कर सकता।” सुयश ने सभी को देखते हुए कहा।

"मैं पार कर सकती हूं।" जेनिथ ने अपने दाँत को भींचते हुए कहा- "और यकीन मानिये, कैश्वर ने यह भाग मुझे और नक्षत्रा को ध्यान में रखकर ही बनाया है।"

"जेनिथ, माना कि नक्षत्रा ने तुम्हें तुरंत सही कर दिया, पर उस एक पल के लिये मैंने तुम्हारे चेहरे पर दर्द को महसूस किया था, तिलिस्म के इस भाग को पार करने में तुम्हें नर्क से भी भयानक दर्द का सामना करना पड़ेगा और यह दर्द असहनीय हो सकता है।" सुयश ने दर्द भरे स्वर में जेनिथ की ओर देखते हुए कहा।

"कैप्टेन, हमारे पास और कोई चारा भी नहीं है। अगर मैंने इस भाग को पार करने की कोशिश नहीं की, तो हममें से कोई भी इस तिलिस्म से कभी नहीं निकल पायेगा .... इसलिये मुझे एक बार कोशिश तो करनी ही होगी .... भले ही मुझे कितने भी दर्द का सामना क्यों न करना पड़े और वैसे भी ईश्वर ने सिर्फ स्त्री को ही असहनीय दर्द से लड़ने की शक्ति दी है। आपको पता है कैप्टेन कि एक आदमी का शरीर सिर्फ 45 डेल का दर्द सह सकता है, जबकि एक स्त्री का शरीर, बच्चे के जन्म के समय 57 डेल का दर्द सहता है, जो कि शरीर की 20 हड्डियों के टूटने के बराबर होता है। तो आज मैं भी तैयार हूं, इस असहनीय दर्द को सहने के लिये।"

('डेल' दर्द मापने की एक इकाई है, जिसे डोलोरीमीटर यंत्र के द्वारा मापा जाता है)

सभी आश्चर्य से जेनिथ का मुंह देख रहे थे, उनके पास जेनिथ से कुछ कहने के लिये शब्द ही नहीं थे, वह बस जेनिथ की हिम्मत को महसूस करने की कोशिश कर रहे थे।

"नक्षत्रा क्या तुम तैयार हो?" जेनिथ ने नक्षत्रा से पूछा।

"मैं तो हमेशा से तैयार हूं, पर तुम्हारी इन भावनाओं का मेरे पास भी कोई जवाब नहीं है, मुझे भी समझ नहीं आ रहा कि मैं तुम्हें क्या कहूं .... मैं आज मान गया कि इस समूचे ब्रह्मांड में जितने भी जीव हैं, मनुष्य उन सबसे भावनाओं के मामले में सर्वश्रेष्ठ है। आज मुझे बहुत खुशी हो रही है कि मैंने तुम्हें चुना।" नक्षत्रा ने कहा- "चलो जेनिथ, ये तुम्हारी ही नहीं, मेरी भी परीक्षा है, मुझे भी आज यह देखना है कि मैं किस गति से तुम्हारे शरीर को सही कर सकता हूं।"

यह सुन जेनिथ उस गैस वाले क्षेत्र में उतर गई।

जेनिथ के उस क्षेत्र में उतरते ही गैस ने जेनिथ के पूरे शरीर को जलाना शुरु कर दिया।

एक असहनीय दर्द जेनिथ के शरीर में दौड़ गया। एक पल को तो जेनिथ का शरीर डगमगा भी गया, पर तुरंत ही जेनिथ ने अपने दाँतों को पूरी ताकत से भींचकर आगे बढ़ गयी।

जेनिथ के शरीर से खाल झूलने लगी, उसका चेहरा भी बुरी तरह से जल गया।

नक्षत्रा पूरी ताकत से जेनिथ के शरीर के जख्मों को भरने की कोशिश कर रहा था, पर गैस का कहर निरंतर जारी था।

जेनिथ के कदम लड़खड़ा रहे थे, पर वह हार नहीं मान रही थी।

सुयश और क्रिस्टी तो यह दृश्य देख ही नहीं पा रहे थे, उन्होंने अपना चेहरा दूसरी दिशा में कर लिया।

इस समय सभी की आँखों में जेनिथ के लिये आँसू थे, यहां तक कि तौफीक की भी ..... पता नहीं क्यों आज तौफीक को बहुत बुरा महसूस हो रहा था, एक पल में उसे यह जलन अपने शरीर पर महसूस हो रही थी।

तौफीक को अफसोस था कि क्या यह वही लड़की है? जिसके द्वारा वह अपना बदला लेने आया था, उसे अपने पर धिक्कार हो रहा था।

जेनिथ के शरीर पर अब कई जगह पर हड्डियां भी नजर आने लगीं थीं, पर पता नहीं कैसा जुनून था? कैसा यह बलिदान था कि जेनिथ रुकने का नाम नहीं ले रही थी।

यह भी भला था कि उस गैस का जेनिथ के कपड़े पर कोई असर नहीं हुआ था।

अब बस 4 कदम की ही दूरी बची थी, पर अब जेनिथ के शरीर पर मूर्छा हावी होने लगी।

यह 4 कदम की दूरी भी उसे मीलों बराबर की लगने लगी और इससे पहले कि कोई कुछ समझ पाता कि जेनिथ लहराकर वही गैस के क्षेत्र में गिर गई।

यह देख ऐलेक्स, शैफाली और तौफीक के मुंह से चीख निकल गई।

इनकी चीखें सुनकर क्रिस्टी और सुयश भी भागकर आगे की ओर आ गये।

जेनिथ का शरीर उस गैस के क्षेत्र में सुलग रहा था। एक बेखौफ लड़की का अंत निकट था।

कोई सोच भी नहीं सकता था कि ऐसा हो जायेगा कि तभी एक चमत्कार हो गया।

ना जाने कहां से एक शक्तिशाली योद्धा वहां प्रकट हो गया, जिसने कि बैंगनी रंग की धातु की एक पोशाक पहन रखी थी।

उसके हाथों की मसल्स दूर से ही चमक रहे थे, उसके चेहरे पर देवताओं सा तेज था। उसने सिर पर एक सुनहरे रंग का पट्टीनुमा मुकुट भी लगा रखा था, जिसके बीच में एक कालें रंग की मणि लगी हुई थी। उस योद्धा के बाल सुनहरे थे।

सभी बिना पलकें झपकाये उस योद्धा को देख रहे थे।

उस योद्धा ने जेनिथ का शरीर गैस वाले क्षेत्र से उठाकर 90 नंबर पर रखा और इसी के साथ हवा में कहीं गायब हो गया।

“वो कौन था कैप्टेन?” तौफीक ने सुयश की ओर देखते हुए कहा- “कैश्वर ने तो कहा था कि तिलिस्मा में हमारी कोई मदद नहीं कर सकता, फिर वह योद्धा यहां कैसे आ पहुंचा? और फिर जेनिथ को बचाकर गायब भी हो गया।”

“मुझे भी इसका कोई आइडिया नहीं है तौफीक?” सुयश ने ना में सिर हिलाते हुए कहा- “पर वह जो भी था, हमारे लिये तो ईश्वर के ही समान था क्योंकि उसने जेनिथ की जान बचाई है।

उधर जेनिथ के उस पार पहुंचते ही 81 से 90 के बीच की गैस स्वतः कहीं गायब हो गई।

अब सभी भागकर जेनिथ के पास पहुंच गये।

नक्षत्रा अभी भी जेनिथ के शरीर को तेजी से सही कर रहा था।

यह देख सभी जेनिथ से कुछ दूर खड़े हो गये।

आखिरकार लगभग 7 से 8 मिनट के अंदर नक्षत्रा ने जेनिथ को पूरी तरह से सही कर दिया। थोड़ी देर के बाद जेनिथ होश में भी आ गई।

वह आश्चर्य से सभी को देख रही थी- “मैं बच कैसे गई? मैं तो गैस का वह क्षेत्र पार नहीं कर पायी थी।”

जेनिथ की बात सुन क्रिस्टी ने कुछ देर पहले घटी पूरी घटना जेनिथ को अक्षरशः सुना दी।

यह सुन जेनिथ भी आश्चर्य में आ गई।

“नक्षत्रा क्या तुमने देखा उस रहस्यमयी योद्धा को?” जेनिथ ने नक्षत्रा से पूछा।

“नहीं जेनिथ, मैं तो उस समय पूरी ताकत से तुम्हें सही करने में लगा था इसलिये मैंने उस योद्धा को नहीं देखा।” नक्षत्रा ने कहा।

“चलो वह जो भी था, उसका बहुत-बहुत शुक्रिया बोलो, क्योंकि हम लोगों ने तो तुम्हें गैस में गिरते देख, तुम्हारे जीने की आस छोड़ दी थी, पर पता नहीं कहां से वह योद्धा आ गया?” सुयश ने जेनिथ से कहा- “चलो दोस्तों कुल मिलाकर सब कुछ अच्छा हुआ ... अब आगे बढ़कर पृथ्वी को गति देते हैं।”

यह कहकर सुयश आगे बढ़कर 91 पर जाकर खड़ा हो गया।

100 नंबर पर अब रुकी हुई पृथ्वी साफ नजर आ रही थी, पर इस बार रास्ते में कुछ भी नहीं था।

“कैप्टेन इस 91 से 100 के बीच का रास्ता तो बिल्कुल साफ है, यहां तो कुछ भी नहीं है।” ऐलेक्स ने कहा।

काफी देर तक इधर-उधर देखने के बाद क्रिस्टी ने धीरे से अपना कदम 92 पर बढ़ाया, पर वह आगे जा नहीं सकी।

“कैप्टेन आगे कोई अदृश्य दीवार है, जो हमें आगे नहीं बढ़ने दे रही।” क्रिस्टी ने कहा।

तभी दीवार पर भाप से एक पहेली लिख गई-

“साँसों की ताकत पहचानो,
शब्दों से तुम लिखना जानो।”

“साँसों की ताकत? इसका मतलब समझ में नहीं आया?” तौफीक ने कहा।

“कैप्टेन अंकल, यहां का मौसम कुछ ठंडा है, देखिये हमारे बोलने पर हमारे मुंह से भाप निकल रही है।” शैफाली ने सुयश से कहा- “कहीं हमारे मुंह से निकली भाप ही तो हमारी साँसों की ताकत नहीं?”

“हो भी सकता है।” सुयश ने कहा- “पर हम अपने मुंह से निकली भाप पर क्या लिख सकते हैं?”

शैफाली ने कुछ सोच सामने की अदृश्य दीवार पर अपने मुंह से निकली भाप को मारा, अदृश्य दीवार पर किसी शीशे की तरह से भाप की

पर्त चढ़ गई।

अब शैफाली ने कुछ सोच उस पर 92 लिख दिया, ऐसा करते ही शैफाली अब अदृश्य दीवार को पार कर 92 पर आ गई।

यह देख सभी ने ऐसा किया, अब सभी 92 नंबर पर थे।

आगे एक और अदृश्य दीवार थी।

इस बार शैफाली ने सीधे 100 नंबर अपने मुंह से निकली भाप से लिख दिया और इसी के साथ वह सीधे 100 नंबर पर पृथ्वी के पास पहुंच गई।

शैफाली को वहां पहुंचते देख बाकी सभी ने भी वैसा ही किया। अब सभी 100 नंबर पर थे और आगे अब कोई भी अदृश्य दीवार मौजूद नहीं थी।

सुयश ने अब आगे बढ़कर पृथ्वी को अपने हाथों से घुमाने की कोशिश की, पर पृथ्वी अपने स्थान से टस से मस नहीं हुई।

“अब इसे आगे कैसे घुमाना है?” सुयश ने पृथ्वी को देखते हुए कहा।

सभी अब चारो ओर देखने लगे, पर आसपास ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं दिया, जिसके द्वारा वह पृथ्वी को घुमा सकें।

बहुत देर तक किसी को कुछ समझ नहीं आया, तभी शैफाली को अब भी सबके मुंह से भाप निकलती दिखाई दी।

यह देख शैफाली ने अपने मुंह से फिर से भाप छोड़ी और हवा में बिखरी उस भाप पर अंग्रेजी में ‘अर्थ रोटेशन’ लिख दिया।

शैफाली के ऐसा करते ही पृथ्वी ने नाचना शुरु कर दिया और इसी के साथ सभी फिर से पृथ्वी के ग्लोब के पास पहुंच गये।

“कैप्टेन, हमने 2 ऋतुओं को पार कर लिया, अब 2 ऋतुएं और बचीं हैं, तो हमें कुछ देर आराम करना है, या फिर मैं न्यूजीलैंड का फ्लैग लगा दूं, पृथ्वी के ग्लोब में।” ऐलेक्स ने सुयश की ओर देखकर पूछा।

“हम तिलिस्मा में हैं, यहां हमें थकान का अनुभव तो हो नहीं रहा। ऊपर से यहां का 1 दिन बाहर के 7 दिन के बराबर है, तो जितनी जल्दी हम यहां से निकल जाएं, उतना ही अच्छा है। ज्यादा देर करने में कहीं ऐसा ना हो जाये कि जब हम बाहर निकलें तो 50 वर्ष बीत चुके हों और हमारे जानने वाले सभी लोग बूढ़े हो चुके हों।” सुयश ने हंसते हुए कहा।

सुयश की बात सुन ऐलेक्स ने नीला फ्लैग उठाकर न्यूजीलैंड वाले स्थान पर लगा दिया।

हर बार की तरह जमीन पर बने न्यूजीलैंड का मानचित्र बड़ा होकर चमकने लगा।

यह देख सभी एक-एक कर उस मानचित्र पर जाकर खड़े हो गये।

फिर रोशनी का एक झमाका हुआ और सभी अपने स्थान से गायब हो गये।

◆ ◆ ◆

दिव्यपुरुष

17.01.02, गुरुवार, 10:40, हिमालय का गर्भग्रह, रुद्रलोक

हिमालय पर हर ओर श्वेत, स्निग्ध सी बर्फ फैली हुई थी, इसी बर्फ पर हनुका चला जा रहा था।

बड़ा ही घुमावदार और दुर्गम रास्ता था। कुछ दूर जाने के लिये भी एक लंबा चक्कर लगाना पड़ रहा था।

हनुका ने जबसे अराका द्वीप पर माया का बना सुरक्षा कवच देखा था, तब से ही वह बहुत व्यग्र रह रहा था।

वह चाहता था कि महागुरु नीलाभ से माता के बारे में सबकुछ बता दे, पर महागुरु तो हजारों वर्षों से किसी से मिल ही नहीं रहे थे।

यहां तक कि हनुका के सिवा कोई जानता भी नहीं था कि नीलाभ आखिर है कहां पर? और वह पूरी दुनिया से छिप क्यों रहे हैं?

पर आज हनुका का दिल बहुत बेचैन लग रहा था, इसलिये वह महागुरु से मिलने रुद्रलोक की ओर चल दिया था।

उसे पता था कि महागुरु हिमालय के गर्भगृह में स्थित, रुद्रलोक के रुद्रदेव मंदिर में हैं, पर वह रुद्रलोक में सीधे रास्ते से नहीं जा सकता था, नहीं तो सभी को महागुरु के वहां होने का पता चल जाता।

इसलिये हनुका ने महागुरु से मिलने के लिये रुद्रलोक का गुप्त द्वार चुना था, जो कि 'सागरमाथा' पर्वत से होकर जाता था।

(एवरेस्ट पर्वत का प्राचीन नाम सागरमाथा है)

कुछ ही देर में उछलते-कूदते हनुका सागरमाथा पर्वत के एक शिखर पर पहुंच गया।

हनुका ने अब अपने चारो ओर देखा और फिर उस पर्वतशिखर के एक स्थान की बर्फ अपने हाथों से साफ करने लगा।

कुछ ही देर में उस बर्फ के नीचे महादेव का एक चित्र उभर आया, जो कि शायद बहुत प्राचीन काल में ही किसी ने वहां पर बनाया था।

हनुका ध्यान से महादेव के उस चित्र को देखने लगा। कुछ ही देर में हनुका की निगाह चित्र में बने महादेव की तीसरी आँख पर गई।

महादेव की उस आँख के स्थान पर एक बहुत छोटा सा छिद्र नजर आ रहा था।

अब हनुका ने 'ऊँ नमः शिवाय' का जाप किया और अपने शरीर को इतना छोटा कर लिया, कि वह शरीर उस छोटे से छिद्र के पार आसानी से चला जाता।

हनुका उस छिद्र के पार चला गया।

दूसरी ओर पहाड़ में एक छोटा सा प्लेटफार्म बना था, हनुका उसी पर जा गिरा।

अब हनुका ने अपने शरीर को पुनः पहले के आकार में कर लिया और उस छिद्र से मुंह लगाकर अपनी साँस को जोर से खींचा।

हनुका के ऐसा करते ही पर्वतशिखर पर मौजूद बर्फ ने वापस उस चित्र को ढक लिया।

अब हनुका ने अपने आसपास देखा, वह इस समय एक प्लेटफार्म पर, पर्वत के सबसे ऊंचे स्थान पर खड़ा था।

हनुका के नीचे की ओर, कुछ दूरी पर एक 200 फुट ऊंची महादेव की विशाल प्रतिमा बनी थी।

वह प्रतिमा सिर्फ कमर तक ही थी। प्रतिमा की जटाओं से गंगा की एक धार निकलकर, नीचे स्थित एक छोटी सी झील में गिर रही थी।

झील का पानी इतना साफ था कि झील के पानी में महादेव की प्रतिमा की छाया बिल्कुल साफ दिखाई दे रही थी।

महादेव की प्रतिमा से निकली गंगा की धारा, पानी में स्थित प्रतिमा की छाया से बने, महादेव के तीसरे नेत्र के स्थान पर गिर रही थी।

जहां पर गंगा की धारा गिर रही थी, वहां पानी में नीले रंग का एक गोल छल्ला बन गया था।

हनुका को पता था कि उस नीले गोल छल्ले से होकर ही रुद्रलोक जाया जा सकता है, पर वह नीला गोल छल्ला गंगा की धारा के सिवा, किसी को भी अपने अंदर से जाने नहीं देता। अगर हनुका भी बिना गंगा की धारा के उस गोल छल्ले से निकलने की कोशिश करता, तो वह छल्ला उसे पीस देता।

अतः हनुका ने हाथ जोड़कर महादेव को प्रणाम किया और ऊंचाई से, प्रतिमा से निकल रही गंगा की धारा में छलांग लगा दी।

“जय माँ गंगे।”

हनुका का शरीर जैसे ही गंगा की धारा से टकराया, धारा ने हनुका के शरीर के चारो ओर, एक सफेद रंग का कवच सा बना दिया।

हनुका का शरीर अब वेग से नीचे गिरने की जगह, गंगा की धारा के साथ उस झील के पानी की ओर बढ़ा।

जैसे ही हनुका का शरीर झील की सतह के पास पहुंचा, वह नीला छल्ला स्वतः ही आकार में बड़ा हो गया और हनुका का शरीर उस छल्ले को पार करता हुआ, झील के पानी में जा गिरा।

पानी में गिरते ही हनुका तेजी से पानी की तली की ओर तैरने लगा।

झील की तली में हनुका को एक विशाल त्रिशूल दिखाई दिया, जिस पर एक डमरु लटक रहा था।

हनुका ने त्रिशूल को प्रणाम कर उसे तेजी से घुमा दिया। त्रिशूल के घूमते ही डमरु की आवाज उस झील की तली में गूंज उठी।

इसी के साथ झील की तली में एक द्वार नजर आने लगा।

हनुका उस द्वार में प्रवेश कर गया।

वह द्वार एक विशाल मैदान में खुला, जहां एक बहुत ही विशाल संगमरमर के पत्थरों से निर्मित शिव मंदिर बना था, जिसका आकार, बैठे हुए नंदी के समान था।

नंदी के मस्तक पर एक सोने का मुकुट जड़ा था, जिस पर एक नारंगी रंग की पताका (झंडा) लहरा रही थी।

उस पताका पर एक सुनहरे रंग का त्रिशूल बना था, जिसके नीचे ‘ॐ’ लिखा था।

नंदी का मुख खुला हुआ था और उस खुले मुख से होकर ही मंदिर का रास्ता जा रहा था।

हनुका नंदी के खुले मुख से, मंदिर के अंदर की ओर प्रवेश कर गया।

मंदिर के अंदर पहले 12 मंडप थे, हर एक मंडप में महादेव की एक ज्योतिर्लिंग की प्रतिकृति विराजमान थी।

इसके बाद मंदिर का गर्भगृह था, जहां बीचोबीच में महादेव का एक विशाल शिवलिंग उपस्थित था। उस शिवलिंग के दूसरी ओर सैकड़ों त्रिशूल जमीन में धंसे थे।

उन त्रिशूलों के ऊपर, एक मानव शरीर नंगे पैर, शिव तांडव की मुद्रा में नृत्य कर रहा था।

यह और कोई नहीं, बल्कि नीलाभ था। शिव का परम भक्त नीलाभ। हलाहल से प्रकट हुआ दिव्यपुरुष नीलाभ। जिसके जीवन का उद्देश्य ही मनुष्यों को वेदों का ज्ञान देना था।

हनुका ने पहले महादेव को और फिर नीलाभ को प्रणाम किया और चुपचाप वहीं महादेव की मूर्ति के पास बैठकर नीलाभ की साधना पूर्ण होने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ देर बाद नीलाभ की साधना पूर्ण हो गई और वह उन्हीं त्रिशूलों पर आसन की मुद्रा में बैठ गया।

“बताओ हनुका, कैसे आना हुआ तुम्हारा?” नीलाभ ने हनुका को देखते हुए पूछा।

“महागुरु, कुछ दिन पहले मैंने पश्चिम दिशा में स्थित एक छोटे से द्वीप पर माता की शक्तियों से बना कवच देखा। शायद माता उस स्थान के ही आसपास कहीं हैं? मैं यह समाचार देने ही आपके पास आया हूं।” हनुका ने कहा।

“तुम उस स्थान पर जाकर माया को ढूंढने की कोशिश करो हनुका, इधर मेरी भी साधना पूर्ण होने वाली है। साधना पूर्ण होने के बाद मैं भी सभी के समक्ष प्रकट हो जाऊंगा।” नीलाभ ने कहा।

“यह किस प्रकार की साधना है महागुरु? जो कि 5,000 वर्षों से अनवरत् चलती ही जा रही है।” हनुका ने अपनी जिज्ञासा को शांत करते हुए कहा।

“पृथ्वी पर एक घोर संकट आने वाला है हनुका, जिसे सभी महाशक्तियां मिलकर भी नहीं समाप्त कर सकती हैं। इसीलिये ईश्वर चाहते हैं कि मैं कुछ क्षणों के लिये महादेव की कुछ शक्तियों को अपने शरीर पर धारण करुं। इसीलिये 5,000 वर्षों से मैं अपने शरीर को उस योग्य बनाने के लिये प्रयासरत हूं। अब तुम जाओ हनुका ... और अपनी माता को ढूंढने की कोशिश करो। हां जाने से पहले शिवलिंग के पास रखी, रक्त भैरवी की वह डिबिया भी लेते जाओ, कुछ ही दिन में वह तुम्हारे काम आने वाली है।

... तुम्हें पता है कि उसका प्रयोग कैसे करना है?” इतना कहकर नीलाभ वापस अपनी साधना में लीन हो गया।

पर हनुका आवाक सा खड़ा, कभी नीलाभ को तो कभी शिवलिंग के पास रखी रक्त भैरवी की डिबिया को देख रहा था।

उसे समझ नहीं आ रहा था कि खतरा कितना बड़ा है? जो रक्त भैरवी की डिबिया का प्रयोग करने की जरुरत आ पड़ी।

हनुका ने एक गहरी साँस भरी और रक्त भैरवी की डिबिया उठाकर अपने वस्त्रों में छिपा ली।

हनुका अब मंदिर के बाहर की ओर चल पड़ा, पर अब वह मानसिक तौर पर महायुद्ध के लिये तैयार था।

◆ ◆ ◆

चैपटर-13

शीत ऋतु-1

तिलिस्मा 4.3

सुयश के साथ सभी अगले द्वार न्यूजीलैंड में प्रवेश कर गये। पर वहां का नजारा देखकर सभी हैरान रह गये।

जहां तक नजर जा रही थी, उन्हें बर्फ ही बर्फ दिखाई दे रही थी।

“यह क्या? यह तो ऐसा लग रहा है कि जैसे हम अंटार्कटिका में आ गये हों।” जेनिथ ने चारो ओर देखते हुए कहा।

“न्यूजीलैंड भी काफी ठंडी जगह है और वैसे भी हम यहां शीत ऋतु का सामना करने आये हैं, तो बर्फ तो नजर आयेगी ही।” सुयश ने कहा।

तभी उनकी नजर उस बर्फ के मैदान के बीचोबीच खड़ी एक मूर्ति पर गई।

मूर्ति देख सब उसी दिशा की ओर चल दिये।

वह एक 10 फुट ऊंची अश्वमानव की बर्फ की प्रतिमा थी, जिसका कमर के नीचे का शरीर घोड़े का और कमर से ऊपर का शरीर एक इंसान का था।

वह अश्वमानव किसी योद्धा के समान शक्तिशाली लग रहा था, उसके हाथ में विचित्र सा अस्त्र था।

उस अस्त्र की मूठ अश्वमानव के हाथ में थी, उस मूठ से एक जंजीर के द्वारा बंधा काँटे जैसा गदा हवा में झूल रहा था। यह अस्त्र बर्फ का नहीं बल्कि किसी धातु का बना दिखाई दे रहा था।

सभी ध्यान से उस अश्वमानव को देखने लगे।

“कैप्टेन, यह रोमन साम्राज्य का योद्धा ‘सेन्टौर’ है।” क्रिस्टी ने कहा- “और इसने अपने हाथ में जो अस्त्र पकड़ रखा है, उसे ‘कंटक’ कहते हैं।”

“पर कैप्टेन, एक बात आपने ध्यान दी, कि इस सेन्टौर का पूरा शरीर तो बर्फ का बना है परंतु इसकी आँख और पूंछ के बाल असली जैसे लग रहे है।” ऐलेक्स ने कहा।

“हो सकता है कि इसकी पूंछ और आँखों में ही कोई रहस्य छिपा हो?” सुयश ने सेन्टौर को देखते हुए कहा।

“लेकिन इस जगह पर सेन्टौर की मूर्ति के सिवा और कुछ तो है ही नहीं, फिर हमें यहां करना क्या है?” जेनिथ ने कहा।

“है जेनिथ दीदी, यहां पर और भी चीजें हैं, पर आप लोगों ने अभी तक उस पर ध्यान ही नहीं दिया है।” यह कहकर शैफाली ने सभी का ध्यान जमीन के नीचे बनी बर्फ की झील की ओर कर दिया- “नीचे जमीन की ओर देखिये, जमीन के नीचे एक विशाल बर्फ की झील मौजूद है, जिसमें कुछ मछलियां और समुद्री घोड़ा तैर रहा है।”

शैफाली की बात सुनकर सभी ने नीचे की ओर देखा, शैफाली सही कह रही थी, नीचे एक झील मौजूद थी।

“पर कैप्टेन, मेरी जानकारी के हिसाब से समुद्री घोड़ा ना तो झील के पानी में पाया जाता है और ना ही इतने ठंडे पानी में वह रह सकता है।” तौफीक ने सुयश की ओर देखते हुए कहा।

“यह तिलिस्म है, यहां पर कुछ भी संभव हो सकता है?” सुयश ने कहा।

तभी शैफाली बैठकर पानी के नीचे तैर रही, उन मछलियों को ध्यान से देखने लगी।

वह मछलियां साधारण मछलियों के हिसाब से बहुत धीरे तैर रहीं थीं।

“कैप्टेन अंकल, ये ऑस्ट्रेलिया में पायी जाने वाली मिस गर्न नाम की मछली है, इंसान इस मछली का प्रयोग भूकंप का पता लगाने के लिये करता है। वैसे प्रायः यह मछलियां बहुत सुस्त होतीं हैं, पर जब भी भूकंप आने वाला होता है, यह बहुत तेजी से इधर-उधर भागने लगती हैं। दरअसल यह मछलियां पृथ्वी की भूगर्भीय हलचल को कुछ समय पहले ही पहचान जातीं हैं, जिससे यह घबराकर तेज गति से तैरने लगती हैं।” शैफाली ने कहा।

“इसका मतलब हमें इस द्वार में भूकंप का सामना करना पड़ेगा क्योंकि कैश्वर इस मिस गर्न मछली को यूं ही तो नहीं रखा होगा यहां पर?”

जेनिथ ने कहा।

जेनिथ की बात सभी को सही लगी।

“तो कैप्टेन हमें कहीं ना कहीं से तो इस तिलिस्म की शुरुआत करनी ही पड़ेगी, तो आप कृपया बताइये कि हमें कहां से शुरु करना सही रहेगा?” क्रिस्टी ने सुयश से पूछा।

“देखो, यहां 3 चीजें ही हैं, पहला वह सेन्टौर, दूसरा समुद्री घोड़ा और तीसरा मिस गर्न मछली। अब 2 चीजें तो पानी के अंदर हैं, तो फिर हमें इस सेन्टौर से ही शुरु करना होगा।” सुयश ने कहा।

यह सुन सभी सेन्टौर के पास आकर खड़े हो गये।

“इस सेन्टौर के शरीर में पूंछ और आँखें ही असली लग रहीं हैं, इसलिये इन दोनों में ही कोई ना कोई रहस्य होगा? तो ऐसा करो कि 3 लोग इसके अगले भाग में रहकर, इसकी आँखों पर नजर रखो और बाकी बचे 3 लोग पीछे की ओर जाकर इसकी पूंछ को छुओ और देखो कि इस सेन्टौर में क्या परिवर्तन हो रहें हैं?”

सुयश के यह कहते ही क्रिस्टी और जेनिथ सुयश के साथ सेन्टौर के पिछले हिस्से की ओर खड़े हो गये और तौफीक, ऐलेक्स और शैफाली सेन्टौर के अगले भाग में खड़े होकर सेन्टौर की आँखों की ओर देखने लगे।

अब क्रिस्टी ने सेन्टौर की पूंछ को धीरे से उमेठ दिया।

क्रिस्टी के पूंछ को उमेठते ही सेन्टौर की दोनों आँखें 2 दिशाओं में देखने लगीं।

“कैप्टेन, क्रिस्टी के पूंछ के छूते ही सेन्टौर की दोनों आँखें पता नहीं कैसे 2 दिशाओ में देखने लगी हैं।” ऐलेक्स ने कहा- “पर इससे हमारे आसपास कोई परिवर्तन तो नहीं आया?”

“तभी पानी के नीचे घूम रहा समुद्री घोड़ा एक स्थान से बर्फ को तोड़कर बाहर आ गया।

झील के पानी से बाहर निकलते ही समुद्री घोड़े का आकार 10 इंच से बढ़कर 6 फुट का हो गया।

सभी आश्चर्य से बढ़ते हुए उस समुद्री घोड़े को देख रहे थे, परंतु सभी किसी भी खतरे से बचने के लिये सावधान थे।

तभी समुद्री घोड़े का बढ़ना रुक गया। अब वह झील के ठंडे पानी को अपने मुंह में भरने लगा।

बहुत सारा पानी अपने मुंह में भरने के बाद, समुद्री घोड़े ने अपना मुंह ऊपर आसमान की ओर उठाकर, सारा पानी हवा में फूंक मार कर उड़ा दिया।

सभी आश्चर्य से ऊपर आसमान की ओर देखने लगे, किसी को समझ नहीं आया कि उस समुद्री घोड़े ने ऐसा क्यों किया?

"तभी शैफाली ने चिल्लाकर कहा- "भागो, झील का वह पानी ओले बनकर ऊपर आसमान से गिरने वाला है।"

शैफाली की चीख सुनकर सभी सेन्टौर की ओर भागे, क्योंकि उनके बचने की वही एक सुरक्षित जगह थी।

तभी एक ओले का टुकड़ा आकर ऐलेक्स से टकरा गया और सबके देखते ही देखते ऐलेक्स भी एक समुद्री घोड़े में बदल गया।

बाकी सभी लोग बचकर सेन्टौर के नीचे पहुंचने में सफल हो गये, पर अब उधर 2 समुद्री घोड़े हो गये थे।

दोनों समुद्री घोड़े एक दूसरे के पास पहुंचकर तेजी से नाचने लगे।

अब यह पहचानना बहुत ही मुश्किल हो गया कि उनमें से असली समुद्री घोड़ा कौन है और ऐलेक्स कौन है?

अब दोनों समुद्री घोड़े झील से अपने मुंह में पानी भरकर, आसमान की ओर उछालने लगे।

ऐलेक्स को समुद्री घोड़ा बनते देख, क्रिस्टी इस बार ज्यादा परेशान नहीं हुई क्योंकि अब उसे तिलिस्मा के बारे में पता चल गया था।

वह जानती थी कि इस द्वार को पार करते ही ऐलेक्स स्वतः ही सही हो जायेगा।

बहरहाल अब ओलों की ताकत सभी जान गये थे, इसलिये कोई भी सेन्टौर के नीचे से निकलने को नही तैयार था।

एक फायदा यह था कि दोनों समुद्री घोड़ों में से कोई भी उनके पास आने की कोशिश नहीं कर रहा था।

"मेरे हिसाब से यह परेशानी इस सेन्टौर की पूंछ उमेठने से आयी थी, तो अगर हम वापस इसकी पूंछ को सही कर दें, तो शायद ऐलेक्स भी सही

हो जाये और यह असली समुद्री घोड़ा भी वापस झील में चला जाये।" जेनिथ ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा।

सेन्टौर की पूंछ उमेठने के लिये किसी को बाहर जाने की जरुरत नहीं थी। क्रिस्टी धीरे से सेन्टौर के पूंछ वाले हिस्से की ओर आ गई और उसने सेन्टौर की पूंछ को पहली वाली स्थिति में कर दिया, पर फिर भी दोनों समुद्री घोड़ों का ओले बनाने का कार्य जारी रहा।

यह देख क्रिस्टी वापस आ गई।

"कैप्टेन अब सेन्टौर की पूंछ पहले जैसे करने पर भी कुछ नहीं हो रहा?" क्रिस्टी ने कहा।

"मुझे लगता है कि इस समस्या का हल सेन्टौर की पूंछ में नहीं बल्कि उसकी आँख में छिपा है।" शैफाली ने कहा- "कैप्टेन, समुद्र घोड़े की दोनों आँखें 2 दिशाओं में देख सकती हैं, पर जमीन पर चलने वाला घोड़ा ऐसा नहीं कर सकता। तो फिर हो ना हो इस सेन्टौर की आँखें 2 दिशाओं में हो जाने की वजह से, वह समुद्री घोड़ा जागा था। और अगर ऐसा है तो हम सेन्टौर की आँखों को सही कर समुद्री घोड़े को रोक सकते हैं।"

शैफाली की बात सुनकर तौफीक सेन्टौर के नीचे से निकला और सेन्टौर की आँखों को अपने हाथ से एडजेस्ट कर सही कर दिया।

तौफीक के ऐसा करते ही बाहर मौजूद दोनों समुद्री घोड़े अचानक से रुक गये।

अब एक घोड़े का आकार फिर से छोटा होने लगा। कुछ ही देर में वह समुद्री घोड़ा वापस 10 इंच का हो गया और झील में कूदकर गायब हो गया।

"चलो 2 मुसीबत से पीछा छूटा।" जेनिथ ने कहा- "एक तो आसमान से ओले गिरना बंद हो गया और दूसरा वह समुद्री घोड़ा वापस झील में चला गया।"

"पर यह ऐलेक्स अभी तक अपने रुप में क्यों नहीं आया?" क्रिस्टी ने घबराते हुए कहा- "कहीं यह हमेशा के लिये समुद्री घोड़ा तो नहीं बन गया?"

"अरे नहीं-नहीं क्रिस्टी दीदी, ऐलेक्स भैया जल्दी ही सहीं हो जायेंगे।" शैफाली ने क्रिस्टी को सांत्वना देते हुए कहा- "रुकिये, मुझे सोचने दीजिये कि ऐलेक्स भैया सही क्यों नहीं हुए? .... समुद्री घोड़ा, सेन्टौर की वजह से जागा था, इसलिये सेन्टौर की आँखें सही करने पर वह

सही हो गया, परंतु ऐलेक्स भैया, ... वह तो ओले की वजह से समुद्री घोड़ा बने थे, इसलिये अवश्य ही ऐलेक्स भैया को सही करने के लिये समुद्री घोड़े की आँख को सही करना पड़ेगा? और मेरे सोच को तर्क देने के लिये हमें समुद्री घोड़े की आँख एक बार देखनी ही होगी?"

"पर कैसे? समुद्री घोड़ा तो अपना काम करके वापस झील में चला गया है।" सुयश ने कहा- "अब इतने बर्फ जैसे पानी में जाकर कौन उसे ढूंढ पायेगा?"

"मैं स्वयं जाऊंगी।" शैफाली ने दृढ़ता से कहा- "मैं इसके पहले भी पेंग्विन के पीछे बर्फ में गई थी, उस समय मुझ पर बर्फ की ठंडक का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।"

यह सुनकर सुयश ने अपना सिर हिलाकर शैफाली को झील के अंदर जाने की इजाजत दे दी।

सुयश की इजाजत मिलते ही शैफाली ने अपने जूते बाहर उतारे और उसी रास्ते से झील के अंदर दाखिल हो गई, जिस रास्ते से वह समुद्री घोड़ा बाहर आया था।

सच में शैफाली को बर्फ से कोई फर्क नहीं पड़ रहा था, वह आसानी से इतने ठंडे पानी में तैर रही थी।

झील में प्रवेश करते ही शैफाली ने एक डुबकी मारी और पानी के अंदर अपनी नजरें घुमाना शुरु कर दिया।

शैफाली को अब कुछ दूरी पर एक खूबसूरत परी की एक मूर्ति दिखाई दी। यह मूर्ति पानी में एक स्थान पर खड़ी थी।

यह मूर्ति देखने में बिल्कुल सजीव प्रतीत हो रही थी। परी के शरीर पर बैंगनी रंग की एक बहुत ही खूबसूरत ड्रेस थी। उसने अपने हाथ में एक लंबा सा राजदंड भी पकड़ रखा था।

उस परी के चारो ओर कुछ जलपरियां, अपने हाथ में त्रिशूल लेकर घूम रहीं थीं। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह उस जलपरी की रक्षा कर रहीं हों या फिर उसकी परिक्रमा लगा रहीं हों।

पर उन्होंने शैफाली से कुछ नहीं कहा।

"यह तो पानी के नीचे भी कोई तिलिस्म बना है?" शैफाली ने अपने मन में सोचा- "लगता है उस परी के हाथ में जो राजदण्ड है, उसमें अवश्य

ही इस द्वार का कोई राज है, पर पहले मुझे वह कार्य कर लेना चाहिये, जिसके लिये मैं इस स्थान पर आयी हूं।”

अब शैफाली परी को छोड़कर उस समुद्री घोड़े को ढूंढने लगी।

कुछ ही देर में शैफाली की निगाह में वह समुद्री घोड़ा आ गया, जो कि मिस गर्न मछली के बीच छिपकर पानी में तैर रहा था।

शैफाली उस समुद्री घोड़े की ओर बढ़ गयी।

समुद्री घोड़े के पास पहुंचकर शैफाली ने उसे पकड़ने की कोशिश की, पर शैफाली के आगे बढ़ते ही वह समुद्री घोड़ा 1 फुट पीछे हो गया।

पहले प्रयास में शैफाली नाकाम रही। शैफाली ने फिर से पानी में आगे बढ़कर उस समुद्री घोड़े को पकड़ने की कोशिश की, पर इस बार भी वह समुद्री घोड़ा 1 फुट पीछे हो गया।

अब यह सिलसिला शुरु हो गया था, जब भी शैफाली आगे बढ़ती, वह समुद्री घोड़ा 1 फुट पीछे हो जाता।

यह देख शैफाली ने तेजी से अपना दिमाग लगाना शुरु कर दिया।

तभी शैफाली की नजर उस समुद्री घोड़े के आगे-पीछे घूम रही मिस गर्न मछली की ओर गई।

अब शैफाली के दिमाग में एक आइडिया आ गया था।

शैफाली इस बार ध्यान से समुद्री घोड़े को देखती रही, जैसे ही एक मिस गर्न मछली, उस समुद्री घोड़े के ठीक पीछे पहुंची, शैफाली ने ठीक उसी समय पर, समुद्री घोड़े की ओर छलांग लगा दी।

हर बार की तरह इस बार भी समुद्री घोड़ा 1 फुट पीछे जाने के लिये बढ़ा, पर वह पीछे जा नहीं पाया और मिस गर्न मछली से टकराकर वहीं रह गया।

तभी शैफाली ने झपटते हुए उस समुद्री घोड़े को पकड़ लिया।

अब शैफाली ने उसकी आँखों को देखा। समुद्री घोड़े की दोनों आँखें 2 दिशा में थीं, जिसे शैफाली ने अपने हाथों से सही कर दिया और इसके बाद उस समुद्री घोड़े को वहीं झील के पानी में छोड़, वह झील की सतह की ओर चल दी।

झील की सतह पर सभी बेसब्री से शैफाली के आने का इंतजार कर रहे थे।

पानी से शैफाली का चेहरा निकलते देख सभी खुश हो गये।

शैफाली ने अपना सिर हिलाकर सभी को काम पूरा होने की खबर दे दी।

शैफाली की बात सुन क्रिस्टी ने एक नजर ऐलेक्स की ओर डाली, ऐलेक्स अब अपने रुप में तो वापस आ गया था, पर वह अब भी बर्फ की मूर्ति बना दिखाई दे रहा था।

“ये ऐलेक्स तो अब बर्फ का बन गया, अब इसे बर्फ से कैसे सही करें?” क्रिस्टी ने दुखी होते हुए कहा- “हो ना हो इस सेन्टौर में ही कोई चक्कर है, इसी की वजह से ऐलेक्स अभी तक सही नहीं हुआ है।”

यह कहकर क्रिस्टी उस सेन्टौर के पास जाकर उसकी मूर्ति को जगह-जगह से हिलाकर देखने लगी।

क्रिस्टी से किसी को ऐसी आशा नहीं थी, इसलिये सभी उसे ऐसा करने से रोकने के लिये भागे।

सभी जानते थे कि क्रिस्टी की एक गलत हरकत उन्हें हमेशा के लिये इस तिलिस्म में कैद कर सकती है।

तभी क्रिस्टी के मूर्ति के हिलाने की वजह से सेन्टौर के हाथ में पकड़ा कंटक जमीन पर गिर गया और इसी के साथ सबके सामने एक मुसीबत और खड़ी हो गई।

सेन्टौर जीवित हो गया था और सबको खूनी नजरों से देख रहा था।

“हो गया काम तमाम, बड़ी मुश्किल से अभी उस समुद्री घोड़े से बचे थे, अब यह सेन्टौर जाग गया।” तौफीक ने क्रिस्टी पर नाराज होते हुए कहा।

क्रिस्टी एक पल में ही अपनी गलती को समझ गयी, पर अब क्या हो सकता था?

तभी उस सेन्टौर ने अपने पैर को बर्फ की जमीन पर जोर से पटका, उसके ऐसा करने से एक जोर की आवाज हुई और इसी के साथ झील में मौजूद मिस गर्न मछलियां तेजी से गति करने लगीं।

यह देख शैफाली ने चीखकर सबको आगाह करते हुए कहा- “सब लोग सावधान हो जाओ, भूकंप आने वाला है।”

तभी पूरी बर्फ की धरती हिलने लगी और बर्फ के उस हिस्से में मौजूद ऊंची चट्टानें गिरना शुरु हो गईं।

सभी किसी प्रकार उन चट्टानों से बचने की कोशिश कर रहे थे, तभी एक बड़ी चट्टान ऐलेक्स की ओर गिरने लगी, यह देख सभी के मुंह से चीख निकल गई।

इतने कम समय में कोई भी ऐलेक्स को बचा नहीं सकता था।

जोर से गड़गड़ाती वह चट्टान ऐलेक्स के ऊपर आकर गिरी, पर तभी एक चमत्कार हुआ, वह भारी चट्टान ऐलेक्स के शरीर से टकराकर उसमें समा गई।

“यह बर्फ की चट्टान ऐलेक्स के शरीर के अंदर कैसे चली गई।” जेनिथ ने आश्चर्य से ऐलेक्स की ओर देखते हुए कहा।

तभी एक और चट्टान ऐलेक्स के शरीर से टकराई, इसका हस्र भी पहले वाली चट्टान के जैसा हुआ, वह चट्टान भी ऐलेक्स के शरीर में समा गई।

यह देख सुयश ने सबसे चिल्लाकर कहा- “सभी लोग ऐलेक्स के शरीर की ओट में छिप जाओ, नहीं तो यह गिरती हुई चट्टानें हमें पीस देंगी।”

सुयश की बात सुन सभी ऐलेक्स की ओर भागे और उसके पीछे जाकर छिप गये।

ऐलेक्स के आसपास बहुत सी चट्टानें गिर रहीं थीं, परंतु समय पर सुयश का दिमाग काम करने की वजह से सभी सुरक्षित थे।

उधर जोर-जोर से सेन्टौर के पैर पटकने की वजह से झील की बहुत सी मछलियां उछलकर झील के बाहर आ गईं थीं।

“कैप्टेन, हमें जल्द से जल्द इस सेन्टौर का इलाज करना होगा, नहीं तो यह हमें चुटकियों में मसल देगा।” क्रिस्टी ने गुस्साये हुए सेन्टौर की ओर देखते हुए कहा।

तभी तौफीक की निगाह सेन्टौर के गिरे अस्त्र कंटक पर गई। उसे देखकर तौफीक बोला- “अगर सेन्टौर का यह अस्त्र भी हमारे हाथ लग जाये तो कुछ देर तक तो इससे बचा ही जा सकता है? पर वह भी कमबख्त बिल्कुल उसके बगल में ही गिरा पड़ा है।”

तौफीक की बात सुन शैफाली की आँखें सिकुड़ गईं- “कैप्टेन अंकल, कंटक तो सेन्टौर के बगल में ही गिरा पड़ा है, तो फिर यह सेन्टौर उसे उठा क्यों नहीं रहा? उसे उठाने के बाद तो यह और विनाश कर सकता है।”

“इसी कंटक के इसके हाथ से निकलने के बाद ही तो यह जिंदा हुआ था।” क्रिस्टी ने कहा।

“इसका मतलब यदि हम इस कंटक को दोबारा से इसके हाथ में पकड़ा दें, तो यह सेन्टौर फिर से बर्फ का बन सकता है।” शैफाली ने कहा।

शैफाली की बात सुन सुयश ने तौफीक की ओर देखते हुए कहा- “तौफीक, तुम इस सेन्टौर का ध्यान भटकाकर उसे दूसरी दिशा में ले जाओ, तब तक मैं इस कंटक को उठा लूंगा।”

सुयश की बात सुनकर तौफीक ने अपना सिर हिलाया और ऐलेक्स की ओट से बाहर निकल, सेन्टौर से कुछ दूरी पर जाकर दौड़ने लगा।

सामने तौफीक को दौड़ते देख सेन्टौर तौफीक की ओर चल दिया। जैसे ही सेन्टौर का चेहरा दूसरी ओर हुआ, सुयश तेजी से कंटक की ओर भागा।

एक पल में ही सुयश कंटक के पास पहुंच गया, मगर जैसे ही सुयश ने कंटक को उठाया, वह भी बर्फ की मूर्ति में परिवर्तित हो गया।

यह देख शैफाली और तौफीक दोनों ही आश्चर्य से भर उठे। अब दोनों के पास कोई और तरीका नहीं बचा था।

◆ ◆ ◆

सूर्यपुत्र

30 वर्ष पहले........

जनवरी, 1972, प्रातःकाल, अयोध्या, भारत

"दादा जी, आप हमेशा बंदूक लेकर क्यों चलते हो?" नन्हें सुयश ने अपने दादा सूर्य नारायण सिंह को सम्बोधित करते हुए पूछा- "क्या आपको बहुत डर लगता है?"

सुयश की बात सुन सूर्य नारायण सिंह के चेहरे पर मुस्कान बिखर गई।

"नहीं हमें डर नहीं लगता, यह हम अपने वंश की शान के लिये, अपने साथ लेकर चलते हैं। हम सूर्यवंशी राजपूत हैं, मेरे दादाजी तो हाथ में तलवार लेकर चलते थे। अंग्रेज भी उन्हें देख थर-थर कांपते थे, पर अब समय बदलने के साथ तलवारों का चलन खत्म हो गया और तलवारों का स्थान इस अग्निमारक बंदूक ने ले लिया।"

सुयश से बात करते-करते सूर्य नारायण सिंह, घर के आंगन में खड़ी एक खुली जीप में बैठ गये और सुयश को उन्होंने अपने बगल में बैठा लिया।

"मैं जब बड़ा होऊंगा, तो अपने हाथ में तलवार ही लेकर चलूंगा, बंदूक तो डाकू लोग चलाते हैं।" नन्हें सुयश ने अपने दिल के उद्गार प्रकट किये।

"अच्छा-अच्छा छोटे युवराज, आप तलवार लेकर ही चलना, पर वादा करो कि कुलदेवता के मंदिर में पूजा के समय, आज आप मुझे तंग नहीं करोगे।" सूर्य नारायण सिंह ने सुयश के बालों में हाथ फेरते हुए कहा।

"ठीक है, मैं आपको नहीं परेशान करुंगा, पर आप भी वादा करो कि वापस आने के बाद आप मुझे कैम्पा कोला पिलाओगे।" सुयश ने अपनी जुबान से चटकारा लगाते हुए कहा।

"ठीक है, मैं वादा करता हूं।" सूर्य नारायण सिंह ने अपनी हथेली को सुयश की नन्हीं हथेली से टकराते हुए कहा।

तभी दूसरी जीप में कुछ महिलाएं पूजा की थाली और कुछ पूजा की सामग्री लेकर बैठने लगीं।

“अरे अभय, तुम अपनी जीप चलाओ, बाकी लोग पीछे से आते रहेंगे। अगर हम थोड़ा जल्दी भी मंदिर पहुंच गये, तो कोई परेशानी की बात नहीं।” सूर्य नारायण सिंह ने जीप के ड्राइवर से कहा।

“जी मालिक।” सूर्य नारायण सिंह की बात सुन ड्राइवर ने जीप स्टार्ट करके आगे बढ़ा दी।

“अच्छा दादा जी, आप ये बताओ कि आज आप रात को मुझे कौन सी कहानी सुनाओगे?” सुयश ने अपने दादा जी से पूछा।

“मैं .... मैं आज तुम्हारी सबसे प्रिय यति और उड़ने वाले घोड़े की कहानी सुनाऊंगा।” सूर्य नारायण सिंह ने सुयश के गाल खींचते हुए कहा।

“नहीं दादा जी आज मुझे भगवान सूर्य की कहानी सुननी है। .... वह कहानी सुने बहुत दिन बीत गये।” सुयश ने अपने दिमाग के कोनों को खंगालते हुए कहा।

“ठीक है, मैं आज तुम्हें अपने कुलदेवता भगवान सूर्य की ही कहानी सुनाऊंगा।” सूर्य नारायण सिंह ने सुयश के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

रास्ते भर सुयश ऐसे ही अपने दादा जी से कुछ ना कुछ पूछता रहा।

आधा घंटे के ड्राइव के बाद आखिर कुलदेवता का मंदिर आ ही गया।

अभय ने जीप को मंदिर के प्रांगण के बाहर ही रोक दिया।

सूर्य मंदिर एक पर्वत की चोटी पर बना था। सुयश अपने दादा जी के साथ मंदिर के प्रांगण में आ गया।

मंदिर के मुख्य द्वार पर 7 घोड़ों के रथ पर बैठे सूर्यदेव की मूर्ति लगी थी। मंदिर के शिखर पर सूर्य के मुख की ज्वाला उगलती आकृति बनी थी।

“अरे दादा जी यह आकृति तो बिल्कुल वैसी ही है, जैसी आपके दाहिने हाथ की कलाई पर बनी है।” सुयश ने आश्चर्य से दादा जी की कलाई देखते हुए कहा।

“हां बेटा, यह हमारे कुलदेवता का चिन्ह है, जिसे मैंने अपनी कलाई पर बनवा लिया था। क्या यह चिन्ह आपको पसंद है?” सूर्य नारायण सिंह ने सुयश से पूछा।

“हां दादा जी मुझे यह चिन्ह बहुत पसंद है, मैं एक दिन यही चिन्ह अपनी पूरी पीठ पर बनवाऊंगा।” सुयश ने दादा जी के हाथ पर बने सूर्य चिन्ह को अपनी नन्हीं हथेली से सहलाते हुए कहा।

“ठीक है, जब तुम बड़े होकर कलेक्टर बन जाओगे, तो मैं यह सूर्य चिन्ह तुम्हारे पीठ पर बनवा दूंगा।” सूर्य नारायण सिंह ने चारो ओर फैले पर्वतों को देखते हुए कहा।

“कलेक्टर? ये कलेक्टर क्या होता है दादा जी?” सुयश ने पूछा।

“कलेक्टर पूरे जिले का सबसे बड़ा ऑफिसर होता है।” सूर्य नारायण सिंह ने सुयश की ओर देखते हुए जवाब दिया।

“नहीं-नहीं दादा जी, मैं कलेक्टर नहीं बनूंगा, मैं तो एक बहुत बड़े से पानी के जहाज का कप्तान बनूंगा और समुद्र की विशाल लहरों में अपना जहाज लेकर घूमूंगा।” सुयश ने अपनी कल्पना को उड़ान देते हुए कहा।

“अरे वाह, छोटे युवराज, आपकी सोच तो कमाल की है।” यह कहकर सूर्य नारायण सिंह ने सुयश को अपनी गोद में उठा लिया और चलते हुए मंदिर के प्रांगण के किनारे आ गये।

उस स्थान से उगते हुए सूर्यदेव बिल्कुल साफ नजर आ रहे थे।

सूर्य की लालिमा प्रकाश का रुप ले, संपूर्ण आभामंडल को दैदीप्यमान कर रही थी।

तभी मंदिर का एक पंडित अपने हाथ में 2 तांबे के लोटे में, जल लेकर आ गया। एक तांबे का लोटा थोड़ा छोटा था, जो कि निश्चित ही सुयश के लिये था।

“चलो बेटा, अब भगवान सूर्य को अर्घ्य दो, पर ध्यान रहे, यह पात्र तुम्हारे दोनों हाथों में सिर से ऊपर की ऊंचाई पर होना चाहिये और जल की धार टूटनी नहीं चाहिये। इस प्रकार करने से सूर्य की पहली जीवनदायिनी किरण स्वच्छ जल को पारकर हमारे शरीर से टकराती है और हमें सभी प्रकार के रोग से मुक्त करती है।”

यह कहकर सूर्य नारायण सिंह ने छोटा लोटा सुयश की ओर पकड़ा दिया और बड़े लोटे से स्वयं सूर्य को अर्घ्य देने लगे।

सुयश ने भी अपने दादा जी को देखते हुए ठीक उसी प्रकार से किया, जैसा कि दादा जी ने कहा था।

तभी दूसरी जीप भी आ गई। यह देखकर सूर्य नारायण सिंह ने भगवान सूर्य को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उन लोगों की ओर बढ़ गये।

सूर्य नारायण सिंह ने अभय को सुयश का ध्यान रखने के कार्य पर लगा दिया।

दादा जी के जाने के बाद नन्हें सुयश ने भगवान सूर्य को देखा, सूर्य की लालिमा सुयश को बहुत भली लग रही थी।

धीरे-धीरे सूर्य का प्रकाश बढ़ता जा रहा था, पर सुयश अभी भी अपनी नजरें सूर्य से नहीं हटा रहा था, ऐसा लग रहा था कि जैसे सूर्य से सुयश का कोई बहुत गहरा रिश्ता हो।

तभी अचानक सुयश को सूर्य, बैंगनी रंग का होता दिखाई दिया।

यह देख सुयश अचकचा गया, पर तभी सुयश को अपनी नाक पर बैठी एक नीले रंग की खूबसूरत सी तितली दिखाई दी।

उसी तितली के पंखों की वजह से सुयश को सूर्य का रंग बदलता हुआ दिखा था।

सुयश ने अपने हाथों से उस तितली को पकड़ने की कोशिश की, पर वह तितली सुयश की नाक से उड़कर दूर चली गई।

उस तितली का रंग इतना प्यारा था, कि सुयश का ध्यान अब तितली की ओर आकृष्ट हो गया था।

सुयश अब मंदिर के प्रांगण में तितली के पीछे-पीछे भागकर उसे पकड़ने की कोशिश करने लगा।

उधर अभय को जीप में रखा एक पूजा का सामान याद आ गया, उसने एक बार सुयश को खेलते हुए देखा और फिर बाहर जीप में रखें सामान को लाने के लिये चला गया।

सुयश अभी भी तितली के पीछे-पीछे भाग रहा था। तितली कभी एक स्थान पर बैठती, तो कभी दूसरे स्थान पर।

इस बार तितली मंदिर के प्रांगण के किनारे लगे एक छोटे से पेड़ की शाख पर जा बैठी।

सुयश अपना हाथ बढ़कार तितली को पकड़ने की कोशिश करने लगा, पर वह पेड़ की डाल सुयश के नन्हें हाथों से थोड़ा दूर थी, इसलिये सुयश ने अपना एक पैर मंदिर के प्रांगण की रेलिंग से बाहर निकाल लिया।

पर इससे पहले कि सुयश उस नीले रंग की तितली को पकड़ पाता, उसका पैर फिसला और वह पहाड़ से नीचे की ओर गिरने लगा।

सुयश के मुंह से चीख निकल गई।

तभी सूर्य की किरणों की चमक बढ़ गई और सुयश, बिना किसी सहारे के हवा में झूलने लगा। उसे देखकर ऐसा लग रहा था कि जैसे वह सूर्य की किरणों से बने झूले पर बैठा हो।

नन्हें सुयश को कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

तभी सुयश को अपने सामने एक दिव्य प्रकाशपुंज स्वरुप एक पुरुष दिखाई दिया।

उसे देख सुयश ने पूछ ही लिया- "आप कौन हो?"

"मैं सूर्यदेव हूं।" सूर्यदेव ने कहा- "मैंने ही तुम्हें इस ऊंचे पर्वत से गिरने से बचाया है।"

"आपने मुझे क्यों बचाया?" सुयश के शब्दों में एक बालरस झलक रहा था।

"क्योंकि मैंने तुम्हें अपने पुत्र रुप में स्वीकार किया है, फिर भला मैं तुम्हें मरने कैसे देता?" सूर्यदेव ने कहा।

"आप इतनी जल्दी उतनी ऊंचाई से मेरे पास कैसे आ गये?" सुयश ने सूर्यदेव की ओर देखते हुए पूछा।

"क्योंकि मेरी किरणों से तेज चलने वाली चीज अभी इस ब्रह्मांड में नहीं है। .... अपना ध्यान रखना सुयश।" सूर्यदेव ने कहा और सुयश को उठाकर, मंदिर के प्रांगण के बाहर लगी घनी झाड़ियों पर बैठा दिया।

इसी के साथ सूर्यदेव हवा में कहीं गायब हो गये।

उधर अभय जैसे ही मंदिर के प्रांगण में पहुंचा, उसे सुयश कहीं दिखाई नहीं दिया। घबराकर अभय ने मंदिर के प्रांगण के किनारे जाकर नीचे की ओर देखा।

नीचे की ओर देखते ही अभय की जान सूख गई क्योंकि सुयश इस समय नीचे एक झाड़ी में फंसा दिखाई दे रहा था।

अभय ने घबराकर अपने चारो ओर देखा, पर उसे आसपास कोई नजर नहीं आया, यह देख अभय ने जल्दी से नीचे लटककर, सुयश का एक हाथ पकड़ा और उसे ऊपर खींच लिया।

सुयश को सही सलामत देख अभय की जान में जान आयी, पर उसे यही डर था कि कहीं सुयश, सूर्य नारायण सिंह को यह सारी बात बता ना

दे।

“देखो बेटा, तुम यह बात किसी को बताना नहीं, मैं तुम्हें ढेर सारी टॉफियां दूंगा।” अभय ने सुयश को फुसलाते हुए कहा।

टॉफियों की बात सुन सुयश तुरंत मान गया।

2 घंटे के बाद सभी पूजा करके वापस घर की ओर चल दिये।

“तुम्हें भगवान सूर्यदेव कैसे लगे सुयश?” सूर्य नारायण सिंह ने सुयश को अपने से चिपटाते हुए पूछा।

“अच्छे लगे, पर जब उन्होंने मुझे गोद में उठाया, तो मुझे बहुत अच्छा लगा।” सुयश ने भोलेपन से कहा।

“अच्छा, तो भगवान सूर्य ने तुम्हें गोद में उठाकर क्या कहा?” सूर्य नारायण सिंह ने हंसते हुए पूछा।

“उन्होंने कहा कि वो मुझे ढेर सारी टॉफियां देंगे। ..... नहीं-नहीं .... ये तो अभय अंकल ने कहा था ..... उन्होने कहा था .... उन्होने कहा था ...... क्या दादा जी आपने तो सब भुलवा दिया?” सुयश ने कहा और दादा जी के सीने से चिपक गया।

“शैतान बच्चा, 2 मिनट में कहानियां बनाकर सुनाने लगता है।” सुयश की बात सुन सूर्य नारायण सिंह मुस्कुराए और फिर से सुयश के सिर पर हाथ फेरने लगे।

सुयश अब दादा जी से ऐसे चिपका था, जैसे कि वह सूर्य नारायण सिंह ना होकर साक्षात सूर्यदेव हों।

◆ ◆ ◆

आर्केडिया

17.01.02, गुरुवार, 12:30, ट्रांस अंटार्कटिक माउन्टेन, अंटार्कटिका

शलाका वेदांत रहस्यम् पढ़कर इतना ज्यादा विचलित हो गई, कि 2 दिन तक तो वो अपने कमरे से बाहर भी नहीं आई, पर उसने अब दृढ़ निश्चय कर लिया था और वह निश्चय था आर्यन और आकृति के पुत्र को ढूंढने का।

तभी शलाका को जेम्स का ध्यान आया। जेम्स को उसने अपने पास तो रख लिया था, पर 2 दिन से शलाका उससे मिली नहीं थी।

यह सोच शलाका अपने कमरे से निकली और जेम्स के कमरे की ओर आ गई।

जेम्स अभी भी उसी कमरे में था, जिसमें वह पहले विल्मर के साथ रह रहा था।

शलाका को आता देख जेम्स उठकर खड़ा होने लगा।

शलाका ने जेम्स को बैठने का इशारा किया और स्वयं एक कुर्सी लेकर उस पर बैठ गई।

“हां जेम्स, आज से तुम्हारा काम शुरु, पर तुम पहले अगर कुछ जानना चाहते हो, तो वह बता दो, फिर मैं तुम्हें समझाती हूं कि तुम्हें यहां पर अब काम क्या करना है?” शलाका ने जेम्स की ओर देखते हए कहा।

“मैं सबसे पहले आपके और आपके भाईयों के बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं।” जेम्स ने कहा।

“ठीक है, तो मैं शुरु से बताती हूं।” शलाका ने कहा- “एक बार ग्रीक देवता पोसाईडन ने धरती पर स्वर्ग बनाने की कल्पना की और एक खूबसूरत लड़की क्लीटो से शादी कर ली। पोसाइडन ने क्लीटो को अटलांटिस के निर्माण के लिये काला मोती और एक तिलिस्मी अंगूठी दी। काला मोती ब्रह्मांड के सप्त तत्वों पर भी नियंत्रण कर सकता था। परंतु उस काले मोती को सिर्फ वही नियंत्रित कर सकता था, जिसके पास पोसाइडन की दी हुई तिलिस्मी अंगूठी हो। क्लीटो ने उस तिलिस्मी अंगूठी की सहायता से काले मोती को नियंत्रित कर, अटलांटिस का निर्माण किया। धीरे-धीरे क्लीटो ने 10 पुत्रों को जन्म दिया। समय आने पर क्लीटो ने अपने सबसे बड़े पुत्र ‘एटलस‘ को अटलांटिस का राजा बना दिया। एक

बार पोसाइडन को किसी बात पर क्लीटो के चरित्र पर शक हो गया। उसने क्रोधित होकर क्लीटो से अपनी तिलिस्मी अंगूठी छीन ली। क्लीटो ने बिना तिलिस्मी अंगूठी के जैसे ही काला मोती को अपने हाथ में उठाया, वह पत्थर की बन गई। इसके बाद पोसाइडन ने एक कृत्रिम द्वीप अराका का निर्माण करवाकर पत्थर बनी क्लीटो को काला मोती सहित एक तिलिस्म में डाल दिया। पोसाईडन ने तिलिस्म का निर्माण इस प्रकार करवाया था कि उस तिलिस्म को कोई देवपुत्री ही तोड़ सकती थी। पोसाइडन को पता था कि एटलस की अगली सात पीढ़ियों में अभी कोई पुत्री जन्म नहीं लेने वाली। पोसाईडन ने अटलांटिस को भी समुद्र में डुबो दिया। अब उस परिवार की केवल एक सदस्य ही बची थी और वह थी एटलस की पत्नी ‘लीडिया‘, जो कि गर्भवती होने के कारण अपने माँ के घर ‘एरियन आकाशगंगा‘ पर मौजूद थी। सब कुछ खत्म होने के बाद जब लीडिया अटलांटिस पहुंची तो वहां सिर्फ सामरा और सीनोर जाति के कुछ योद्धा ही बचे थे और बचा था तो बस अराका द्वीप .... जो पानी पर तैरने की वजह से इस खतरनाक दुर्घटना से बच गया था। लीडिया अब सामरा और सीनोर के साथ अराका पर रहने लगी। हजारों साल बाद एटलस के परिवार में एक लड़की का जन्म हुआ। जिसका नाम ‘ऐलेना‘ रखा गया। बड़ी होने पर ऐलेना की शादी ‘एरियन आकाशगंगा‘ के एक महान योद्धा ‘आर्गस‘ के साथ हुई। अब फिर सभी तिलस्मी अंगूठी को ढूंढने लगे। समय धीरे-धीरे बीतता गया पर ऐलेना को तिलिस्मी अंगूठी नहीं मिली। कुछ समय बाद ऐलेना ने भी एक-एक कर 8 बच्चों को जन्म दिया। जिनमें 7 लड़के थे और एक आखिरी सबसे छोटी लड़की थी, जो कि मैं थी। मेरी माँ ने सभी को बताया कि उनके 7 पुत्रों के पास देवताओं की सप्त शक्ति है”

“तो आपके भाइयों के पास देवताओं की सप्त शक्ति है।” जेम्स ने पूछा।

“नहीं, मेरे भाइयों के पास असल में कोई शक्ति नहीं है। यह झूठ मेरी माँ ऐलेना के द्वारा फैलाया गया था। उन्होंने ऐसा इसलिये किया था कि कहीं उनके पुत्रों को शक्तिहीन जानकर सामरा और सीनोर राज्य के लोग उनके विरुद्ध ना हो जायें और इसी भ्रम को बनाये रखने के लिये उन्होंने अराका पर जगह-जगह मेरे भाइयों की वीरता की कहानियां, चित्रों के माध्यम से सभी ओर बनवा दी थीं। अगर सामरा व सीनोर राज्य उनके विरुद्ध हो जाते तो उनके पास रहने को भी जगह ना बचती।” शलाका ने कहा।

“क्यों? .... वह अपने पति आर्गस के घर ‘एरियन आकाशगंगा’ में जा सकती थीं।” जेम्स ने कहा।

“नहीं जा सकती थीं। मेरे पिता हमेशा से चाहते थे, कि मेरी माँ अपने सभी बच्चों के साथ एरियन आकाशगंगा में चल कर रहें। पर मेरी माँ मेरे जन्म के बाद भी, मेरी नानी लीडिया को छोड़कर नहीं जाना चाहती थीं। इसीलिये मेरे पिता आर्गस ने हम सभी से, सभी प्रकार के सम्पर्क तोड़ लिये थे। अब हमारे पास अपने पिता की याद के लिये, इस आर्केडिया यान के अलावा कुछ नहीं था।” शलाका ने कहा।

“क्याऽऽऽऽ? यह एक अंतरिक्ष यान है?” जेम्स ने आश्चर्य से भरते हुए कहा।

“हां, यह एक अंतरिक्ष यान है, इसका नाम आर्केडिया है, यह हमारे पिता की आखिरी निशानी है।” शलाका ने उदास होते हुए कहा।

“मेरे पिता के जाने के बाद जब मैं 10 वर्ष की हो गई, तो मेरी माँ ने मुझे वेदालय जाकर पढ़ाई करने को कहा। वेदालय उस समय पृथ्वी का सबसे रहस्यमयी विद्यालय था, जिसमें अनेकों देव शक्तियां भरीं थीं। मेरी माँ ने मुझे इसलिये वहां भेजा, जिससे कि मैं सप्त शक्तियों का ज्ञान अर्जित कर क्लीटो को आजाद करा सकूं। पर वेदालय में पढ़ाई करते समय मुझे आर्यन से प्यार हो गया। मैंने अपनी माँ को बिना बताए आर्यन से विवाह कर लिया।” शलाका ने कहा।

“वेदालय में और कौन-कौन थे? और वह कैसा विद्यालय था?” जेम्स ने पूछा।

जेम्स की बात सुन शलाका ने जेम्स को जल्दी-जल्दी वेदालय की थोड़ी सी जानकारी दे दी।

“तो क्या पढ़ाई पूरी करने के बाद आपको कोई शक्ति मिली?” जेम्स ने उत्सुकतावश पूछ लिया।

“हां, जब शक्तियों का चयन करने की बात आयी, तो थोड़ी सी परेशानी हुई। क्योंकि मेरी माँ चाहती थीं कि मैं जल शक्ति का चुनाव करुं, और उस जलशक्ति से फिर से अटलांटिस का निर्माण करुं। पर मुझे पूरी जिंदगी आर्यन के साथ रहना था और चूंकि आर्यन ने सूर्य शक्ति का चुनाव किया था, इसलिये मैंने अग्नि शक्ति का चुनाव किया।”

“अगर वेदालय की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद सभी को शक्तियां मिलीं, तो फिर आकृति को क्यों नहीं मिलीं?” जेम्स ने कहा।

“पढ़ाई खत्म होने के बाद बाकी के 5 जोड़ों को एक ही तरह की शक्ति दी गई। पर पूरे 10 वर्षों के दौरान सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगिताएं जीतने वाले

जोड़े को 2 शक्तियां मिलनी थीं। अंत में सर्वश्रेष्ठ विजेता आर्यन के साथ मैं और आकृति दोनों खड़े थे, पर अपने जोड़े के चुनाव का अधिकार आर्यन के पास था। इसलिये आर्यन में मुझे अपने जोड़े के तौर पर चुना। आकृति को ना चुने जाने की वजह से उसे कोई देवशक्ति नहीं मिली। इसलिये वह नाराज होकर वहां से चली गई। इसके बाद सभी को अमृतपान करने का अवसर मिला, पर मेरे और आर्यन के विवाह की बात सुन हमें अमृतपान नहीं कराया गया। इसलिये वेदालय से निकलने के बाद आर्यन हम दोनों के लिये ब्रह्मलोक से अमृत लाने चला गया। जब वह अमृत लेकर लौटा, तो आकृति ने मेरा वेश धारणकर आर्यन को धोखा दिया और अमृत की एक बूंद भी पी ली। जिससे क्रोधित होकर आर्यन ने अपने और आकृति के बच्चे को एक काँच के अष्टकोण में बंद कर, कहीं धरती में छिपा दिया और स्वयं अपनी मृत्यु का वरण कर लिया। जिस समय आर्यन ने मृत्यु का वरण किया, ठीक उससे कुछ पहले मेरी माँ की मृत्यु हो जाने की वजह से मैं आर्यन से कुछ दिनों के लिये दूर चली गई थी जिसका अर्थ आर्यन ने यह निकाला कि मैं उसे छोड़कर कहीं चली गई। जब मैं लौटकर आयी, तो आर्यन मुझे कहीं नहीं मिला। मैंने महागुरु नीलाभ से जब उसका कारण पूछा, तो उन्होंने बताया कि आर्यन अब मर चुका है और वह 5,000 वर्षों के बाद दूसरा जन्म लेकर फिर से आयेगा। अब मेरी आयु मात्र 2000 वर्ष की ही थी, तो भला मैं आर्यन का 5,000 वर्ष तक इंतजार कैसे करती। अतः मैंने अपने भाइयों के साथ 5,000 वर्ष की शीतनिद्रा का विचार बनाया और अपने यान आर्केडिया में आकर सो गई। मुझे पता था कि पृथ्वी के कुछ लोगों के पास ऐसी दिव्यशक्ति है कि वह जमीन पर मौजूद किसी भी जीव को ढूंढ सकते हैं इसलिये मैंने अपने आर्केडिया को बर्फ के नीचे दबा दिया। मुझे पता था कि अंटार्कटिका में कोई नहीं रहता, इसलिये यह जगह मेरे यान के लिये सबसे सुरक्षित थी।"

इतना कहकर शलाका चुप हो गई, पर उसकी आँखों में अब लाल डोरे तैरने लगे थे।

यह देख जेम्स ने तुरंत टॉपिक को बदलते हुए कहा।

"आप मुझे कुछ काम बताने वालीं थीं?"

"अरे हां ... आओ मेरे साथ।" यह कहकर शलाका जेम्स को लेकर एक दिशा की ओर चल दी।

कुछ आगे जाने के बाद शलाका ने आर्केडिया का एक द्वार खोला, जो कि शायद उस यान का कंट्रोल रुम था।

“घबराओ नहीं, यह आर्केडिया का असली कंट्रोल रुम नहीं है, यहां सिर्फ एक वीडियो गेम की तरह आर्केडिया को चलाने की ट्रेनिंग दी जाती है।”

यह कहकर शलाका ने एक स्क्रीन को ऑन कर दिया और ऊपर लगी एक अलमारी खोल, एक किताब निकालकर जेम्स के हाथों में पकड़ा दी।

“यह है आर्केडिया को चलाने के कंट्रोल्स की किताब। तुम पहले इसे पढ़कर वीडियो गेम पर ट्रेनिंग लो। जब तुम यह चलाना सीख जाओ, तो मुझे बताना। तब मैं तुम्हें दूसरा कार्य दूंगी।”

“मतलब कि एक दिन मुझे सच का अंतरिक्ष यान उड़ाने को मिलेगा?” जेम्स ने खुश होते हुए कहा।

“पहले सीख जाओ, फिर सोचेंगे ... अच्छा अब मैं चलती हूं ... और हां, यह एक छोटा सा यंत्र है, जिसके द्वारा तुम कभी भी मुझसे संम्पर्क कर सकते हो।”

यह कहकर शलाका ने एक छोटा सा बटन जैसा लाल रंग का यंत्र जेम्स के हवाले किया और वहां से निकलकर चली गई।

जेम्स अब काफी उत्तेजित दिख रहा था, वह अब बटनों से खेलने लगा।

◆ ◆ ◆

चैपटर-14

शीत ऋतु-2

तिलिस्मा 4.3

तौफीक सेन्टौर से लगातार बचने की कोशिश कर रहा था।

क्रिस्टी, शैफाली और जेनिथ, ऐलेक्स की बर्फ की मूर्ति के पीछे छिपे भागते हुए तौफीक को देख रहे थे।

सुयश भी कंटक को हाथ में पकड़े बर्फ की मूर्ति बन चुका था। इसलिये किसी और की कंटक उठाने की इच्छा नहीं थी और बिना कंटक इस दैत्याकार सेन्टौर को हराना मुश्किल लग रहा था।

तौफीक अब थकना शुरु हो गया था, यह देख अब क्रिस्टी मैदान में आ गई, वह सेन्टौर के पास जाकर उसका ध्यान भटकाने की कोशिश करने लगी।

ऐसा पहली बार हुआ था कि इन्हें तिलिस्मा में गाइड करने के लिये कप्तान ही नहीं था।

तभी शैफाली को बर्फ पर कुछ दूरी पर पड़ी 1 मिस गर्न मछली दिखाई दी, जो पानी के वजह से मर गई थी।

शैफाली ने दौड़कर उस मछली को उठा लिया और तौफीक की ओर देखकर चीख कर कहा- “तौफीक अंकल, जरा अपना चाकू मेरी ओर फेंकिये।”

तौफीक ने शैफाली की आवाज सुन अपनी जेब से चाकू निकाला और शैफाली की ओर उछाल दिया।

शैफाली ने जमीन पर गिरे चाकू को उठाकर, उससे मिस गर्न मछली को बीच से फाड़ डाला।

उसके बाद उस मछली की खाल अलगकर, जैसे ही अपने हाथ के पास ले गई, वह मछली की खाल शैफाली के हाथों में किसी दस्ताने की तरह से फिट हो गई।

यह देख शैफाली और जेनिथ के चेहरे पर मुस्कान आ गई।

शैफाली ने अब आगे बढ़कर कंटक को सुयश के हाथ से ले लिया।

मछली की खाल से बने दस्ताने की वजह से, शैफाली सफलतापूर्वक कंटक को उठाने में सफल हो गई, उधर सुयश के हाथ से कंटक निकलते ही, वह भी अपने असली रुप में आ गया।

सुयश ने पहले शैफाली के हाथ में पहने दस्ताने को देखा और फिर उसके हाथ में पकड़े कंटक को। एक पल में ही सुयश सारी कहानी समझ गया।

उधर अब शैफाली ने ध्यान से सेन्टौर की ओर देखा और फिर कंटक को लेकर उसकी ओर चल दी।

सेन्टौर से कुछ दूर पहले ही शैफाली रुक गई।

शैफाली ने सेन्टौर पर चिल्लाते हुए एक बर्फ का छोटा सा टुकड़ा उसके चेहरे पर फेंक कर मारा।

उस छोटे टुकड़े से सेन्टौर का कुछ नहीं हुआ, पर अब उसका ध्यान शैफाली की ओर हो गया था।

शैफाली ने अब एक पत्थर का टुकड़ा उठाकर सेन्टौर की ओर फेंका।

सेन्टौर ने हंसते हुए पत्थर के टुकड़े को रास्तें में ही, हाथ से पकड़कर दूर फेंक दिया।

अब शैफाली ने पास पड़ी एक मृत, मिस गर्न मछली को सेन्टौर की ओर फेंक दिया। सेन्टौर ने फिर पुनरावृति करते हुए, उस मछली को भी हाथ से पकड़कर दूर फेंक दिया।

अब सेन्टौर चलता हुआ शैफाली के पास पहुंच गया।

सभी साँस रोके शैफाली और सेन्टौर को देख रहे थे।

तभी शैफाली ने इस बार कंटक को सेन्टौर की ओर उछाल दिया और इसी के साथ सेन्टौर शैफाली के बिछाये जाल में फंस गया।

कंटक को हाथ से पकड़ते ही सेन्टौर फिर से बर्फ में बदल गया।

यह देख सभी खुश हो गये।

“चलो, यह मुसीबत तो खत्म हो गई, पर अभी ऐलेक्स का क्या करना है? और तिलिस्मा के इस स्थान से निकलने का द्वार किधर है?”

क्रिस्टी ने शैफाली की ओर देखते हुए कहा।

“इस द्वार का कुछ भाग नीचे झील में भी है, मुझे लगता है कि झील में मौजूद, परी के हाथ में पकड़े राजदण्ड से ही ऐलेक्स सही होगा।” शैफाली ने कहा- “पर इस द्वार का वो हिस्सा मुझे अकेले ही पार करना होगा क्योंकि झील के पानी में हममें से और कोई ज्यादा देर तक नहीं रह सकता।”

यह कहकर शैफाली ने सभी को झील के नीचे मौजूद, तिलिस्मा के उस भाग के बारे में बता दिया जो कि उसने कुछ देर पहले ही देखा था।

इसके बाद शैफाली समय को बचाते हुए, तुरंत ही उस झील के जल में कूद गई।

एक छोटी सी डाइव के बाद शैफाली उस स्थान पर पहुंच गई, जहां वह परी की मूर्ति खड़ी थी।

पर जैसे ही शैफाली ने मूर्ति की ओर बढ़ने की कोशिश की, त्रिशूल वाली जलपरियों ने शैफाली पर हमला कर दिया।

यह देख शैफाली परी की मूर्ति से दूर हट गई।

“बिना किसी अस्त्र के मैं इन जलपरियों का मुकाबला नहीं कर सकती। मुझे कुछ और ही सोचना पड़ेगा?” यह सोच शैफाली ने अपनी नजरें चारो ओर दौड़ाईं, पर उसे आसपास लगे कुछ लाल रंग के फूलों के सिवा कुछ नजर नहीं आया।

अब शैफाली परेशान होकर आसपास तैरने लगी।

तभी शैफाली को झील की तली में एक मूंगे की दीवार के पीछे लिखे कुछ शब्द दिखाई दिये।

शैफाली ने उत्सुकतावश मूंगे की दीवार को अपने हाथों से साफ कर दिया। अब वहां लिखे शब्द बिल्कुल साफ दिखाई दे रहे थे-

“भौंरा जब बन जाये भंवर,
थिरक उठेंगे हिम के स्वर”

“ये कैसी पहेली है?” इस पानी में भौंरा कहां से आयेगा?” अब शैफाली अपनी नजरें चारो ओर घुमाने लगी।

तभी उसकी नजरें उन फूलों पर जाकर टिक गई, जिनका रंग और आकार पानी से मैच नहीं कर रहा था।

“भौंरा तो फूलों के पास ही पाया जाता है, अब अगर फूल यहां हैं, तो अवश्य ही भौंरा भी कहीं ना कहीं होगा?”

अब शैफाली एक-एक फूलों को ध्यान से देखने लगी।

“यह क्या? यहां लगे सभी फूल खिले हुए हैं, जबकि उसी के आकार के एक फूल ने अपनी पंखुड़ियों को बंद कर रखा है।”

शैफाली ने अब उस बंद फूल की पंखुड़ियों को अपने हाथों से खोलना शुरु कर दिया।

अभी शैफाली ने 5 से 6 पंखुड़ियां ही खोली थीं कि तभी उन पंखुड़ियों के बीच से एक काले रंग का बड़ा भौंरा निकला और उस परी की मूर्ति के पास पहुंचकर तेजी से चारो ओर चक्कर लगाने लगा।

भौंरे के नाचने की गति बढ़ती जा रही थी और इसी के साथ उस स्थान पर पानी में एक भंवर बनती जा रही थी।

यह देख शैफाली उस भंवर से थोड़ा दूर हट गई।

कुछ ही देर में भंवर ने सभी जलपरियों को अपनी चपेट में ले लिया। वह जलपरियां कहां जाकर गिरीं, कुछ पता नहीं चला, पर कुछ देर बाद जब भंवर शांत हुई, तो झील के पानी में वह परी जीवित खड़ी थी और उसके आसपास का पानी, परी की पोशाक के समान बैंगनी हो गया था।

यह देख शैफाली उस परी के पास पहुंच गई।

परी अब बहुत ध्यान से शैफाली को देख रही थी। शैफाली को ऐसा लगा कि जैसे वह परी कुछ कहना चाह रही हो, पर पानी की वजह से कुछ कह नहीं पा रही हो, इसलिये शैफाली ने उस परी को अपने पीछे आने का इशारा किया और स्वयं झील की सतह के ऊपर की ओर चल दी।

शैफाली के साथ किसी परी को झील के पानी से निकलता देख सभी ने उन्हें घेर लिया।

परी इतने सारे लोगों को अपने पास देख काफी उत्साहित हो गई।

“शायद तुम पानी में कुछ कहना चाह रही थी, पर कह नहीं पा रही थी। .... क्या तुम हमारी भाषा समझ सकती हो?” शैफाली ने परी से कहा।

पर परी ने जवाब देने की जगह, शैफाली को देखते हुए उसे छूना शुरु कर दिया। वह कभी शैफाली के बाल को तो कभी शैफाली चेहरे को

छूकर देख रही थी।

ऐसा लग रहा था कि जैसे वह शैफाली को छूकर कुछ महसूस करना चाह रही हो।

शैफाली को परी से कुछ पॉजिटिव फीलिंग आती दिखी, अब शैफाली से रहा नहीं गया और शैफाली ने उस परी से पूछ ही लिया- “ये तुम मुझे छूकर क्यों देख रही हो?”

“दरअसल मैंने कभी इंसान को महसूस नहीं किया, इसलिये ऐसा कर रहीं हूं।” परी ने कहा।

“क्या मतलब! क्या तुम कैश्वर की बनाई रचना नहीं हो?” शैफाली ने आश्चर्य से कहा।

“कौन कैश्वर? मैं किसी कैश्वर को नहीं जानती, मुझे तो बस इतना पता है कि मुझे इन जलपरियों ने मूर्ति बनाकर, इस झील में कैद कर दिया था और मैं आपकी वजह से आज इस जगह से निकल आयी।” परी ने कहा।

“शैफाली, पहले क्या तुम मुझे बताओगी कि यह सब क्या हो रहा है?” सुयश ने बीच में ही शैफाली को टोकते हुए कहा।

शैफाली ने जल्दी-जल्दी झील के अंदर की सारी घटना सुयश सहित सभी को सुना दी।

इसके बाद वह फिर परी की ओर घूम गई।

“क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारा नाम क्या है? और तुम यहां कैद होने से पहले कहां रहती थी?” शैफाली ने फिर परी से एक सवाल कर दिया।

“मेरा नाम ... मेरा नाम मुझे याद नहीं आ रहा। यहां तक कि मुझे यह भी याद नहीं कि मैं कहां रहती थी, बस मुझे इतना पता है कि मेरे पास हिम के स्वर हैं और उनके द्वारा मैं जादू कर सकती हूं।” परी ने कहा।

“हिम के स्वर?” तभी शैफाली को कविता की दूसरी पंक्ति याद आ गई- “थिरक उठेंगे हिम के स्वर।”

यह सोच शैफाली ने उस परी से कहा- “जरा हमें भी तो हिम के स्वर का जादू दिखाओ। हम तो देखें कि तुममें कितनी प्रतिभा है?”

शैफाली के यह कहते ही उस परी ने अपने हाथ में पकड़े राजदण्ड को हवा में हिलाया।

परी के ऐसा करते ही, उसके राजदण्ड में आगे लगे बैंगनी मोती से, कुछ किरणें हवा में निकलीं और इसी के साथ हवा में एक बैंगनी रंग की तितली प्रकट हो गई।

वह तितली जैसे-जैसे अपने पंख हिला रही थी, वातावरण में गुलाबी रंग के अजीब से फाहे फैलते जा रहे थे।

इसी के साथ बर्फ से अजीब से मधुर स्वर निकल कर वातावरण में गूंजने लगे।

जैसे ही वह स्वर ऐलेक्स के कानों में पड़े, ऐलेक्स के शरीर की बर्फ पिघलने लगी। कुछ ही देर में ऐलेक्स बिल्कुल सही हो गया।

जैसे ही ऐलेक्स सही हुआ, वह परी चीख उठी- “मुझे बचा लो ... मुझे कुछ हो रहा है, मैं मरना नहीं चाहती, मैं यहां से बाहर जाना चाहती हूं।”

तभी परी का शरीर हवा में धुंआ बनकर उड़ गया, अब बस हवा में उसकी चीखें बचीं थीं।

वातावरण से भी अब बैंगनी रंग पूरी तरह से गायब हो चुका था।

शैफाली को छोड़ किसी की समझ में नहीं आया कि उस परी के साथ क्या हुआ? और वह गायब होकर कहां चली गई।

परी को गायब होता देख, शैफाली की पेशानी पर बल पड़ गये। अब उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें साफ नजर आनें लगीं।

यह देख सुयश ने शैफाली से पूछ लिया- “ये परी अचानक से कहां गायब हो गई? उसे उसका अतीत याद क्यों नहीं आ रहा था? और तुम्हारे चेहरे पर यह चिंता की लकीरें क्यों हैं शैफाली?”

“कैप्टेन अंकल, कुछ तो गलत हो रहा है तिलिस्मा में? ... जो मुझे चिंता में डाल रहा है” शैफाली ने चिंतित स्वर में कहा- “दरअसल यह परी कैश्वर का ही बनाया हुआ तिलिस्मा का एक प्रोजेक्ट थी, जो कि अपना कार्य समाप्त करके स्वतः गायब हो जाती, पर जाने कैसे इस परी को ये महसूस होने लगा, कि वह एक जीवित परी है और इसने अपने कार्य को अपनी कहानी बना लिया। ऐसा तभी हो सकता है, जबकि कैश्वर के बनाये इन प्राणियों में अपने आप भावनाएं आ जाएं। अगर इन प्राणियों में

भावनाएं आ गईं, तो यह अपना कार्य करना छोड़ एक स्वतंत्र प्राणी की भांति जीने को सोचने लगेंगे और यह स्थिति पूरी पृथ्वी के लिये खतरनाक हो जायेगी। क्योंकि यह काल्पनिक प्राणी, तब जीवित प्राणियों से युद्ध करना शुरु कर देंगे और पृथ्वी का जीवनचक्र खराब कर देंगे। मुझे नहीं पता कि अभी ये भावना एक ही प्राणी में थी या फिर सभी में आ गई है। क्योंकि अगर यह भावना सभी तिलिस्मा के प्राणियों में आ गई, तो वह प्राणी नियमों के विरुद्ध जाकर हमें इस तिलिस्मा को पार नहीं करने देंगे, क्योंकि हमारे द्वार पार करते ही वह स्वतः खत्म हो जायेंगे।"

"मुझे तो लगता है कि कैश्वर को ईश्वर बनने की कुछ ज्यादा ही जल्दी है, इसलिये वह जानबूझकर सभी प्राणियों में भावनाएं डाल रहा है, जिससे हम इस तिलिस्मा को पार नहीं कर सकें।" सुयश ने गुस्साते हुए कहा।

"चलो, फिलहाल इस द्वार को पार करते हैं फिर आगे की बाद में सोचेंगे।" तौफीक ने सबको याद दिलाते हुए कहा।

"इस द्वार की सभी चीजें तो समाप्त हो गईं, फिर भी अभी तक हमें यहां से निकलने का दरवाजा क्यों नहीं मिला?" जेनिथ ने चारो ओर देखते हुए कहा।

तभी शैफाली की नजर जमीन पर गिरी, एक लाल रंग की गोल सी वस्तु पर गई, जो कि एक कंचे के समान था।

शैफाली ने आगे बढ़कर उसे ध्यान से देखा। वह कंचा नहीं बल्कि उसी मिस गर्न मछली की आँख थी, जिसकी खाल से शैफाली ने दस्ताने बनाये थे।

"जब सबकुछ गायब हो गया, तो यह आँख अभी तक क्यों गायब नहीं हुई?" यह सोच शैफाली ने आगे बढ़कर उस मछली की आँख को उठा लिया।

पर जैसे ही शैफाली ने उस आँख को जमीन से उठाया, उस आँख का आकार तेजी से बढ़ने लगा।

यह देख शैफाली ने घबराकर उस मछली की आँख को अपने हाथों से छोड़ दिया।

जमीन पर गिरते ही वह आँख फिर से सामान्य आकार की हो गई।

शैफाली ने दोबारा से उसे उठाने की कोशिश की, परंतु फिर से वह आँख बड़ी होने लगी। शैफाली ने दोबारा उस आँख को जमीन पर छोड़

दिया।

यह देख ऐलेक्स ने गुस्साते हुए उस मछली की आँख को उठाकर ऊपर आसमान में उछाल दिया- “अरे फेंको इसे ... यह मछली की नहीं, बल्कि शैतान की आँख है।”

अब वह मछली की आँख तेजी से आसमान की ओर जा रही थी और हर अगले पल में आकार में दुगनी होती जा रही थी।

कुछ ही देर में वह आँख अधिकतम ऊंचाई तक पहुंच गई। परंतु अब उसका आकार किसी ग्रह के बराबर हो गया था और अब वह सब पर गिरने के लिये नीचे आ रही थी।

“हे भगवान ये क्या बला है?” क्रिस्टी ने गुर्राते हुए कहा- “अब यह मछली की आँख, हम सबकी माँ की आँख करने वाली है।”

किसी के पास ना तो बचने का कोई उपाय था और ना ही छिपने की जगह।

कुछ ही पलों में वह मंगल ग्रह के समान मछली की आँख उन सब पर आ गिरी।

सभी की आँखें डर के मारे बंद हो गईं और उनके मुंह से चीख निकल गई।

जब सबकी आँखें खुलीं तो वह वापस पृथ्वी के ग्लोब वाले स्थान पर थे।

“वह तिलिस्मा के उस भाग से बाहर निकलने का द्वार था?” सुयश ने आश्चर्य से कहा- “भगवान बचाये ऐसे द्वार से .... मुझे तो लगा कि अब हम सबका काम खत्म हो गया।”

“चलो दोस्तों, अब तिलिस्मा के चौथे भाग के आखिरी द्वार की ओर चलते है, जहां हमें ग्रीनलैंड जाकर वसंत ऋतु की बाधा को दूर करना है।” जेनिथ ने कहा।

अब सभी पृथ्वी के ग्लोब की ओर एक बार फिर से बढ़ गये।

◆ ◆ ◆

विद्युम्ना का रहस्य

2 दिन पहले......

15.01.02, मंगलवार, 07:30, महावृक्ष, सामरा राज्य, अराका द्वीप

व्योम, त्रिकाली, युगाका और कलाट महावृक्ष के सामने खड़े थे।

“हे महावृक्ष हमारे परिवार की नयी अमरबेल को आपके आशीर्वाद की जरुरत है। अतः नये वर-वधू को अपने आशीर्वाद से कृतार्थ करें।” कलाट ने महावृक्ष को देखते हुए कहा।

“महाशक्ति के रक्षक को हम पहले ही आशीर्वाद दे चुके है कलाट।” महावृक्ष की आवाज वातवरण में गूंजी- “अब तो बस इनके प्रेम की परीक्षा का समय है।”

“परीक्षा? कैसी परीक्षा महावृक्ष?” युगाका ने आश्चर्य से महावृक्ष को देखते हुए कहा।

“ठीक वैसी ही, जैसी मैंने बचपन में तुम्हारी परीक्षा ली थी।” महावृक्ष ने कहा।

युगाका अपनी बचपन की परीक्षा को याद कर सिहर उठा, अचानक से उसे अपने शरीर के जलने का अहसास याद आ गया।

“हम किसी भी प्रकार की परीक्षा देने को सहर्ष तैयार है महावृक्ष।” व्योम ने आगे बढ़ते हुए कहा।

“तो फिर ठीक है, तैयार हो जाओ, इस विषम परीक्षा के लिये।” अचानक महावृक्ष की आवाज बहुत तेज हो गई।

ऐसा लगा जैसे महावृक्ष बहुत क्रोध में आ गया हो।

अचानक से व्योम और त्रिकाली के सामने से कलाट और युगाका गायब हो गये और महावृक्ष ने अपने शरीर को विकराल कर लिया।

अब व्योम और त्रिकाली को अपना शरीर हवा में उड़ता हुआ दिखाई दिया।

इसी के साथ व्योम और त्रिकाली महावृक्ष की कोटर से होते हुए उसके अंदर समा गये।

अंदर इतनी तीव्र रोशनी थी कि दोनों को कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

धीरे-धीरे रोशनी कम होने लगी, अब त्रिकाली और व्योम ने अपने चारो ओर देखा, उनके सामने आसमान में विशाल रुप में विद्युम्ना के चेहरा दिख रहा था।

नीचे जमीन पर, एक काँच की ट्यूब में त्रिशाल और कलिका बंद थे।

उस काँच की ट्यूब के सामने 3 व्यक्ति खड़े थे। एक व्यक्ति जल से निर्मित एक जलमानव लग रहा था। दूसरा व्यक्ति एक 20 फुट का शक्तिशाली दानव था, जिसने अपने हाथ में कुल्हाड़ा पकड़ रखा था और तीसरा व्यक्ति एक मरियल सा सुकड़ी हड्डी वाला एक बालक था।

“हाऽऽऽ हाऽऽऽऽ हाऽऽऽऽ तो तुम दोनों आये हो विद्युम्ना का विनाश करने।” विद्युम्ना ने हंसते हुए कहा- “जब 2 दिव्य शक्तियों के पास होने के बावजूद भी तुम्हारे माता-पिता मेरा कुछ नहीं कर पाये, तो तुम बच्चे लोग क्या कर पाओगे?”

“यह हम सीधे विद्युम्ना के पास कैसे पहुंच गये? महावृक्ष तो हमारी परीक्षा लेने जा रहे थे।” व्योम ने फुसफुसा कर त्रिकाली से पूछा।

“मुझे भी नहीं पता, पर महावृक्ष कुछ भी कर सकते हैं?” त्रिकाली ने व्योम के समीप जाते हुए कहा।

“तो आओ, जो काम कल करना था, वह आज ही करते हैं।” व्योम ने अपने दाँत भींचते हुए कहा और इसी के साथ व्योम के हाथ में पंचशूल प्रकट हो गया।

त्रिकाली के भी दोनों हाथ बर्फ से भर गये।

“मेरे पास महादेव की दी हुई त्रिशक्ति की ताकत है, जिसे तुम कभी परास्त नहीं कर सकते व्योम।” विद्युम्ना ने हंसते हुए कहा- “तुम्हें पहले मेरी जल शक्ति से टकराना होगा।”

इतना कहते ही विद्युम्ना की आँखों से एक तरंग निकली और इसी के साथ जलमानव, एक छोटी सी झील के ऊपर खड़ा दिखाई देने लगा।

“तुम्हें इस जलमानव से इस झील के ऊपर ही लड़ना होगा व्योम। इस जलमानव की शक्ति जल ही है और तुम्हें इसे हराना भी जल के ही ऊपर होगा।” विद्युम्ना ने कहा।

यह देख व्योम उछलकर जल की सतह पर जा खड़ा हुआ- “ठीक है, तो फिर मैं इसे जल के ऊपर ही परास्त करुंगा।”

त्रिकाली हैरानी से व्योम को जल के ऊपर चलते हुए देख रही थी, त्रिकाली को व्योम की इस शक्ति के बारे में कुछ नहीं पता था।

यह व्योम की गुरुत्व शक्ति का कमाल था, जिसकी वजह से वह जल की सतह पर गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो खड़ा था।

जलमानव ने व्योम को जल के ऊपर आते देख, व्योम पर जल की बूंदों से प्रहार किया। उन बूंदों के शरीर पर पड़ते ही व्योम का शरीर कई जगह से जल गया, पर पंचशूल ने तुरंत ही व्योम के शरीर को सही कर दिया।

अब व्योम ने पंचशूल को फेंककर, जलमानव का सिर धड़ से अलग कर दिया।

पर जलमानव का सिर तुरंत से वापस जुड़ गया। यह देख व्योम ने इस बार पंचशूल को हवा में गोल-गोल नचाकर फेंका।

पंचशूल ने पंखे की तरह से घूमते हुए जलमानव के शरीर के असंख्य टुकड़े कर झील में दूर-दूर तक फेंक दिये।

पर कुछ ही देर में झील के जल ने सभी टुकड़ों को जोड़कर जलमानव को फिर से खड़ा कर दिया।

यह देख व्योम ने त्रिकाली को एक इशारा किया। इस बार जैसे ही जलमानव पूरी तरह से जुड़ा, त्रिकाली ने अपनी बर्फ की शक्तियों से जलमानव को पूरा का पूरा जमा दिया।

जलमानव को जमते देख व्योम ने एक बार फिर पंचशूल का उपयोग कर जलमानव के टुकड़े कर दिये, पर जैसे ही वह सभी बर्फ के टुकड़े पानी के सम्पर्क में आये, वह फिर से पिघलकर जलमानव का रुप लेने लगे।

अब व्योम को यह मुसीबत थोड़ी बड़ी दिखने लगी थी।

इस बार जैसे ही जलमानव सही हुआ, व्योम ने अपने पंचशूल से ऊर्जा का एक तेज प्रहार जलमानव पर किया।

इस ऊर्जा ने अग्नि के रुप में जलमानव को पिघलाकर पूर्णतया भाप में परिवर्तित कर दिया।

अब वह भाप झील के पानी से मिक्स नहीं हो सकती थी, यह देख व्योम के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। उसने मान लिया कि जलमानव अब खत्म हो गया।

पर कहते हैं ना, कि जो सोचो, वह चीज उस हिसाब से होती नहीं है और यह कहावत यहां पूरी तरीके से चरितार्थ हो रही थी।

हवा में तैर रहे उन भाप के कणों ने आपस में मिलकर एक बादल का रुप ले लिया और बारिश बनकर वापस झील के पानी में मिल गये।

यह देख विद्युम्ना की हंसी फिर से वातावरण में गूंज गई- "यह जलमानव महादेव की शक्ति से निर्मित है व्योम, यह इतनी आसानी से समाप्त नहीं होगा।"

जलमानव एक बार फिर जल की सतह पर खड़ा हो गया था।

इस बार व्योम ने अपना बांया हाथ जलमानव की ओर कर हवा में लहराया, पर व्योम के इस प्रहार से जलमानव को कुछ होता दिखाई नहीं दिया?

अब एक बार फिर व्योम ने त्रिकाली की ओर देखकर मदद मांगी।

त्रिकाली ने फिर से जलमानव के शरीर को बर्फ में विभक्त कर दिया। इस बार व्योम ने आगे बढ़कर एक प्रचण्ड घूंसा उस जलमानव के सिर पर मार दिया।

जलमानव हर बार की तरह फिर खण्ड-खण्ड हो बिखर गया। पर इस बार जलमानव का शरीर पानी से नहीं मिला, वह बर्फ के सारे टुकड़े अब जल की सतह से कुछ ऊपर हवा में तैर रहे थे।

यह देख विद्युम्ना आश्चर्य से भर उठी- "यह कौन सी शक्ति है व्योम?"

"यह गुरुत्वाकर्षण को मुक्त करने वाली शक्ति है, अब इस शक्ति के माध्यम से यह बर्फ के टुकड़े पानी से कभी नहीं मिल सकते, यह इसी प्रकार से हवा में घूमते रहेंगे।" व्योम ने कहा- "अब दूसरी शक्ति को भेजो विद्युम्ना .... मैं आज सभी को हराकर त्रिकाली के माता-पिता को यहां से ले जाऊंगा।"

यह देख विद्युम्ना ने उस दानव को अब व्योम से लड़ने के लिये भेज दिया- "यह मेरी बल शक्ति है, इसके बराबर का बल दुनिया में किसी के पास नहीं है और इस पर तुम्हारे पंचशूल का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

इसके सामने तुम्हारा पंचशूल मात्र एक साधारण अस्त्र की तरह है। परंतु तुम्हें इससे जल पर नहीं, जमीन पर लड़ना होगा।”

उस दानव ने अब व्योम पर अपने कुल्हाड़े से आक्रमण कर दिया। व्योम ने उस दानव का वार अपने पंचशूल पर रोक लिया।

अब व्योम ने पंचशूल को हवा में नचाते हुए दानव पर वार कर दिया, पर उस वार को दानव ने आसानी से बचा लिया।

अब व्योम और दानव के बीच युद्ध शुरु हो गया था। कभी लगता कि व्योम दानव पर भारी पड़ रहा है, तो कभी दानव व्योम पर भारी पड़ते दिखाई देता।

त्रिकाली मात्र दर्शक बनी उस युद्ध को निहार रही थी।

लगभग आधा घंटा ऐसे ही लड़ते रहने के बाद, व्योम समझ गया कि उस दानव को ऐसे नहीं हराया जा सकता।

“अवश्य ही इस दानव के पास कोई ऐसी चमत्कारी शक्ति है? जो यह प्रयोग कर रहा है, पर मुझे वह दिखाई नहीं दे रही है” व्योम अपने मन ही मन में बड़बड़ाया- “विद्युम्ना इस दानव को ‘बल’ कह कर सम्बोधित कर रही थी, कहीं इसके नाम में ही तो कोई रहस्य नहीं छिपा?”

यह सोच अब व्योम लड़ते हुए उस दानव को ध्यान से देखने लगा।

कुछ ही देर में व्योम ने उस दानव की एक आदत को पकड़ लिया और वह आदत थी कि कुछ देर लड़ने के बाद वह दानव अपने पैर को जमीन पर मार रहा था।

“यह बार-बार अपने पैर को जमीन पर मार रहा है, कहीं ये पृथ्वी से कोई शक्ति तो नहीं ले रहा।“

अब व्योम के चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई थी।

व्योम को मुस्कुराते देख त्रिकाली ने कहा- “दिमाग खराब हो गया है क्या? यह तुम मुस्कुराकर क्यों लड़ रहे हो?”

“क्या तुम न्यूटन को जानती हो?” व्योम ने लड़ते-लड़तें अजीब सा सवाल त्रिकाली से कर लिया।

त्रिकाली ने ‘ना’ में अपना सिर हिला दिया।

यह देख व्योम ने उस दानव पर अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रयोग कर दिया। अब उस दानव के पैर जमीन को छोड़ हवा में लहराने लगे।

अब वह दानव बहुत कोशिश करने के बाद भी आगे नहीं बढ़ पा रहा था। तभी व्योम ने इस बार उछलकर एक जोर का मुक्का उस दानव के सिर पर मारा, दानव तुरंत वहीं गिर कर बेहोश हो गया।

यह देख विद्युम्ना आश्चर्य से भर उठी- “यह तुमने कैसे किया व्योम?”

“पृथ्वी के एक महान वैज्ञानिक ने कहा था कि बल हमेशा द्रव्यमान (भार) और उसके त्वरण (गति) पर निर्भर होता है। यानि की अगर हमारा वजन जितना ज्यादा हो, हम अपनी गति से उतना बल उत्पन्न कर सकते हैं, तो बस मैंने उन्हीं वैज्ञानिक के कथनों को विचार करते हुए, अपनी गुरुत्वाकर्षण शक्ति से इस दानव के भार को ही समाप्त कर दिया। अब जब किसी का भार ही नहीं बचा, तो उसमें बल कहां से आयेगा? और एक बलरहित दानव को मारने में ज्यादा समय तो लगना नहीं था।”

“बहुत अच्छे।” विद्युम्ना ने व्योम की तारीफ करते हुए कहा- “अब जरा मेरी तीसरी शक्ति से भी निपट लो।”

अब व्योम की नजर विद्युम्ना की तीसरी शक्ति की ओर गई। उस दुबले-पतले बालक को देख व्योम के चेहरे पर हंसी आ गयी- “ये भी लड़ेगा क्या?”

तभी वह बालक धीरे-धीरे व्योम की ओर बढ़ने लगा। व्योम पहले देखना चाहता था कि यह बालक कैसा है? इसलिये व्योम ने उसे कुछ नहीं कहा।

पास आकर उस बालक ने अपना जोर का घूंसा व्योम के पेट में मारा, पर व्योम को उस बालक का घूंसा गुदगुदी के समान महसूस हुआ।

बालक ने अपना मुंह बनाकर, दुखी भाव से विद्युम्ना की ओर देखा और फिर एक बार जोर का हाथ लहराकर अपना घूंसा व्योम के पेट में मारा, बालक के इस वार से व्योम हवा में उड़ता हुआ 100 फुट से भी ज्यादा दूर गिरा।

व्योम का पूरा शरीर दर्द से कराह उठा। व्योम को अब अपनी गलती का अहसास हो रहा था। व्योम धीरे से उठकर खड़ा हो गया।

उसने अब अपनी निगाह उस बालक पर डाली, पर तब तक बालक ने त्रिकाली को पकड़कर एक काँच के आदमकद बर्तन में डाल दिया, जो कि हवा में उल्टा लटका था और उस बर्तन का ढक्कन बंद था।

अब त्रिशाल, कलिका और त्रिकाली, तीनो अलग-अलग काँच के बर्तन में हवा में टंगे थे। उनके नीचे जमीन पर एक चाकुओं का बिस्तर सा

बना था।

साफ दिख रहा था कि अगर कोई भी उस काँच के बर्तन से गिरा, तो वह सीधे उन धारदार चाकुओं पर गिरेगा।

“कैसा लगा व्योम मेरी छल शक्ति का कमाल?” विद्युम्ना ने कहा- “अब इन तीनों काँच के बर्तनों का बटन मेरे पास है। मैं तीनों बर्तनों का ढक्कन एक साथ खोलूंगी। मेरे ढक्कन खोलते ही तीनों एक साथ इन चाकुओं पर गिरेंगे। अब तुम इन तीनों में से किसी एक को ही बचा सकते हो। और मुझे जानना है कि तुम इन तीनों में से किसे बचाते हो?”

व्योम के पास समय नहीं था सोचने का। अतः उसने एक पल में अपना निर्णय ले लिया।

व्योम अब तेजी से उन चाकुओं की ओर भागा।

उसे भागते देख विद्युम्ना ने अपने हाथ में पकड़े यंत्र का बटन दबा दिया।

बटन के दबते ही तीनों शरीर हवा में लहराकर नीचे की ओर जाने लगे। इसी के साथ व्योम किसी को भी बचाने की जगह, उन चाकुओं पर स्वयं लेट गया।

तीनों शरीर व्योम के ऊपर आकर गिरे। अब तीनों लोग तो बच गये थे, पर उनके भार की वजह से सारे चाकू व्योम के शरीर में घुस गये।

यह देख त्रिकाली के मुंह से चीख निकल गई, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कर पाती, रोशनी का एक तेज झमाका हुआ और त्रिकाली की आँखें बंद हो गईं, जब त्रिकाली की आँखें खुलीं, तो वह और व्योम दोनों ही सकुशल हालत में महावृक्ष के सामने खड़े थे और उनके बगल कलाट और युगाका वैसे ही खड़े थे, जैसा कि वह लोग उन्हें छोड़ कर गये थे।

व्योम और त्रिकाली हैरानी से अपने चारो ओर त्रिशाल व कलिका को ढूंढने लगे।

तभी वातावरण में महावृक्ष की आवाज गूंजी- “कलाट, मेरी परीक्षा पूर्ण हुई, अब व्योम और त्रिकाली विद्युम्ना से टकराने के लिये तैयार हैं।”

“क्या मतलब? क्या यह सिर्फ परीक्षा थी?” व्योम ने उलझे-उलझे से स्वर में पूछा।

“हां व्योम।” महावृक्ष ने कहा- “ये विद्युम्ना, उसकी शक्तियां और त्रिकाली के माता-पिता सब मेरे द्वारा फैलाया भ्रमजाल था। मैं तुम्हें यह

दिखाना चाहता था, कि विद्युम्ना कितनी खतरनाक हो सकती है? मैंने अपने भ्रमजाल का निर्माण ठीक उसी प्रकार किया था, जैसे कि विद्युम्ना अपने भ्रमन्तिका का करती है। मुझे ये नहीं पता कि उसकी जल, बल और छल की शक्ति किस प्रकार होगी? पर मैंने तुम्हें अपने भ्रमजाल के माध्यम से समझाना चाहा है कि वह शक्तियां किसी भी प्रकार से हो सकती हैं? इसलिये तुम्हें हर कदम पर सावधान रहना होगा। .... अब तुम यह बताओ व्योम, कि तुम्हें मेरे भ्रमजाल से क्या सीखने को मिला?"

"मैंने सीखा कि शत्रु के चेहरे और उसके शरीर की काया देखकर, उसकी शक्ति का अंदाजा नहीं लगाना चाहिये। छल शक्ति ने मुझे इसी कारण पराजित किया था क्योंकि मैंने उसके शरीर को देखकर उसकी शक्तियों का गलत आंकलन किया था।" व्योम ने कहा।

"बिल्कुल सही व्योम ... पर तुमने भ्रमजाल में एक और गलती की थी, जो तुम्हें अभी तक समझ में नहीं आयी?" महावृक्ष ने कहा- "तुम्हें अपनी शक्तियों के बारे में शत्रु को कभी नहीं बताना है, भले ही वह तुम्हारी कितनी भी तारीफ करते हुए पूछे। दरअसल विद्युम्ना की सबसे खास बात यही है, वह पहले लोगों को शब्दजाल से भ्रमित कर, या फिर उनकी किसी प्रकार से परीक्षा ले, उनकी शक्तियों के बारे में जान जाती है और फिर उनके शक्तियों को देखकर ही वह नये भ्रमन्तिका का निर्माण करती है। तो एक बात हमेशा ध्यान रखना, जब तक तुम उसके सामने ना पहुंच जाओ, तब तक अपनी, किसी एक शक्ति का प्रयोग मत करना, वहीं शक्ति अंत में तुम्हें विजय दिलायेगी।"

"जी महावृक्ष, मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।" व्योम ने हाथ जोड़कर महावृक्ष को प्रणाम करते हुए कहा।

"तुमने तो देख ही लिया कलाट कि व्योम ने अंतिम समय में किसी एक को ना बचाकर, सभी को बचाने का प्रयत्न किया और यह एक महाशक्तिधारक की सबसे बड़ी निशानी है। त्रिकाली का चयन उत्तम है।" महावृक्ष ने कलाट की ओर देखते हुए कहा।

"जी महावृक्ष, अब आज्ञा दीजिये। त्रिकाली और व्योम को आज ही हिमालय की ओर प्रस्थान करना है।" कलाट ने महावृक्ष को प्रणाम करते हुए कहा और सभी को लेकर सामरा राज्य के महल की ओर चल दिया।

रास्ते भर त्रिकाली के कानों में महावृक्ष के कहे शब्द गूंज रहे थे- "त्रिकाली का चयन उत्तम है।" अब वह धीरे-धीरे मुस्कुरा कर बीच-बीच में कनखियों से व्योम को देख ले रही थी।

काली बिल्ली

5 दिन पहले......

12.01.02, शनिवार, 11:30, सीनोर राज्य की सीमा, मायावन, अराका द्वीप

विशाल टेरोसोर अलबर्ट को उठाये आसमान में उड़ा चला जा रहा था।

नीचे कुछ नन्हें टेरोसोर आसमान की ओर अपना मुंह उठाये, उस विशाल टेरोसोर के पीछे-पीछे तेज आवाज करते भाग रहे थे।

अलबर्ट का ध्यान टेरोसोर पर कम और नीचे जमीन की ओर ज्यादा था।

उसे ऊंचाई से नीचे गिरने का ज्यादा डर दिख रहा था।

अलबर्ट ने अब एक बार ऊपर टेरोसोर के मुंह की ओर देखा। टेरोसोर अपनी लंबी चोंच में पहले से ही किसी जानवर को पकड़े था।

अब अलबर्ट की नजर टेरोसोर के पंजों की ओर गई, तो अलबर्ट हैरान हो गया क्योंकि इस समय टेरोसोर के पंजों में अलबर्ट के शरीर का कोई हिस्सा नहीं था।

वह टेरोसोर अलबर्ट की जैकेट को अपने पंजे से पकड़े था, यानि कि अगर जैकेट को खोल दिया जाता, तो ऐलेक्स नीचे गिर सकता था।

यह देख ऐलेक्स तेजी से सोचने लगा- “अगर ये टेरोसोर मुझे अपने घोसले में लेकर पहुंच गया? तो मेरा बचना बिल्कुल असंभव है, मुझे इसके पहले ही इस टेरोसोर की पकड़ से छूटना होगा। ... वैसे तो जैकेट खोलते ही मैं आजाद हो जाऊंगा, पर इतनी ऊंचाई से नीचे गिरने पर तो मेरी मौत पक्का हो जायेगी .... इसलिये मुझे टेरोसोर के थोड़ा नीचे आने का इंतजार करना होगा।”

नन्हें टेरोसोर अब बहुत पीछे छूट गये थे, पर अलबर्ट को पता था कि वो पीछे से आ रहे होंगे।

तभी अचानक पता नहीं कहां से एक दूसरा विशाल पक्षी आकर, उस टेरोसोर के मुंह में पकड़े जानवर को छीनने की कोशिश करने लगा।

यह देख टेरोसोर ने एक बड़ी सी डाइव मारी और अब थोड़ा नीचे उड़ने लगा।

अलबर्ट को इस समय नीचे घने पेड़ दिखाई दिये और अब उन घने पेड़ों से अलबर्ट की ऊंचाई भी ज्यादा नहीं थी।

इससे अच्छा मौका अलबर्ट को फिर नहीं मिलता, अतः उसने एक झटके से अपनी जैकेट की 'जिप' को खोल दिया और अपने हाथ ऊपर की ओर कर लिये।

एक क्षण में ही अलबर्ट की जैकेट उसके शरीर से अलग हो गई और वह तेजी से नीचे घने पेड़ों की ओर गिरने लगा।

किस्मत अच्छी थी कि अलबर्ट का शरीर एक घने पेड़ की शाखाओं में उलझकर रुक गया और वह जमीन पर गिरने से बच गया।

अलबर्ट ने अपने शरीर का बैलेंस बनाया और पेड़ की शाखाओं से छूटकर वहीं बैठ गया।

अलबर्ट की निगाह अब नीचे की ओर जा रही थी।

अलबर्ट का अंदाजा सही निकला, कुछ ही देर में चीखते हुए छोटे टेरोसोर उधर से गुजरे।

अगर अलबर्ट पेड़ से नीचे उतर गया होता, तो पक्का उसे इन नन्हें टेरोसोर का शिकार बन जाना था।

कुछ देर तक अलबर्ट नीचे देखता रहा और फिर कोई खतरा ना देख धीरे से नीचे उतर गया।

अब वह सुयश और बाकी सभी लोगों के बारे में सोचने लगा। उसे पता था कि सभी लोग अब पोसाईडन पर्वत की ओर चले गये होंगे।

अगर उन लोगों से मिलना है तो उसे भी पोसाईडन पर्वत की ओर जाना ही होगा।

अलबर्ट जानता था कि वैसे भी, वह अकेले इस भयानक जंगल में ज्यादा दिन तक सुरक्षित नहीं रह सकता।

यह सोच अलबर्ट अंदाजे से ही, पोसाईडन पर्वत की ओर चल दिया।

नीचे काफी सूखी पत्तियां पड़ी थीं, इसलिये अलबर्ट के चलने से वातावरण में तेज आवाज गूंज रही थी।

कुछ आगे चलते ही अलबर्ट का पैर एक गहरे गड्ढे पर पड़ा और वह अपने शरीर का संतुलन खो, तेजी से गहरे गड्ढे में जा गिरा।

पेड़ों की टहनियां और सूखी पत्तियां, गड्ढे के ऊपर पड़े होने की वजह से अलबर्ट को वह गड्ढा दिखाई नहीं दिया था।

भला यही था कि उस गड्ढे में कोई पत्थर नहीं था, नहीं तो अलबर्ट का सिर फट जाना था।

अलबर्ट ने अब उस गड्ढे को ध्यान से देखा, वह एक बड़ा सा सूखा कुंआ था।

अलबर्ट को उस कुंए से निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। अभी दिन होने की वजह से सूर्य की थोड़ी रोशनी कुएं में आ रही थी।

तभी अलबर्ट को कुएं में एक दिशा पर एक हल्की रोशनी दिखाई दी। इस रोशनी की किरण ने अलबर्ट के अंदर एक नया उत्साह भर दिया।

वह अब कुएं के उस ओर आ गया, जहां से रोशनी नजर आ रही थी।

वहां पहुंचते ही अलबर्ट आश्चर्य से भर गया क्योंकि उस स्थान पर पेड़ों की बेल के पीछे, एक विशाल बिल्ली के मुंह वाली गुफा नजर आ रही थी।

देखने से साफ पता चल रहा था कि यह गुफा किसी इंसान के द्वारा बनायी गई है।

अलबर्ट उस बिल्ली वाली गुफा में प्रवेश कर गया।

उस गुफा में चारो ओर पत्थरों से बने अर्द्धचंद्राकार 5 दरवाजे बने थे, जिनके बीच में बहुत से महीन सुराख थे।

उन सुराखों से जल की पतली धारा किसी झरने के तरह से गिर रही थी।

पर इस धारा का पानी जमीन पर कहीं दिखाई नहीं दे रहा था। ऐसा लग रहा था कि जैसे वह पानी जमीन पर गिरने के पहले ही कहीं गायब हो जा रहा है।

उन अर्द्धचंद्राकार दरवाजों के बीच, एक बिल्ली जैसे मुंह वाली देवी की मूर्ति खड़ी थी। जिसके दोनों हाथ आगे की ओर थे और उन हाथों के बीच एक सुनहरी धातु का पात्र रखा था।

उस पात्र के ऊपर से हवा में, कुछ पानी की बूंदें स्वतः बन रहीं थीं और वह बूंद एक-एक कर उस पात्र में गिर रही थी।

पात्र जल से पूरा भरा था, पर फिर भी उसकी बूंदे, पात्र से बाहर नहीं गिर रहीं थीं।

उस देवी ने अपने दाहिने हाथ में एक सुनहरे रंग का ब्रेसलेट पहन रखा था, जो कि दूर से ही चमक रहा था।

उन अर्द्धचंद्राकार दरवाजों के पीछे, पत्थर से बनी दीवारों पर कुछ चित्रकारी की गई थी।

उस प्रत्येक चित्रकारी में चित्र कोई भी हो, पर एक काली बिल्ली को उस पात्र से जल पीते हुए दिखाया गया था।

यह देख अलबर्ट का खुराफाती दिमाग जाग उठा- “अवश्य ही इस पात्र में कोई ना कोई दिव्य जल है, जिसकी महत्वता दीवारों पर चित्रों के माध्यम से दर्शाई गई है। मुझे अवश्य ही इस जल को पीकर देखना चाहिये, भले ही मैं इसे पीने के बाद मैं काली बिल्ली ही क्यों ना बन जाऊं? और वैसे भी अब मैं अपनी पूरी जिंदगी तो जी चुका, फिर इन छोटे-छोटे प्रयोगों से क्या डरना?”

यह सोच अलबर्ट ने देवी के हाथ से उस पात्र को उठाया और पूरा का पूरा जल पी गया।

अलबर्ट ने पूरा जल पीने के बाद देवी के हाथ में कटोरा पुनः वापस रख दिया और ध्यान से अपने शरीर में हो रहे बदलाव को देखने लगा।

पर जब 10 मिनट के अपार निरीक्षण के बाद भी अलबर्ट को अपने शरीर में कोई बदलाव दिखाई नहीं दिया, तो वह निराश हो गया।

“लगता है सबको बेवकूफ बनाने के लिये दीवारों पर चित्रकारी की गई थी।” अलबर्ट ने गुस्साते हुए कहा।

अब अलबर्ट ने देवी के हाथ से वह ब्रेसलेट भी निकाल कर अपने हाथों में पहन लिया।

पर इसके बाद भी जब कुछ ना हुआ तो खीझकर अलबर्ट उस कुएं से निकलने का रास्ता ढूंढने लगा।

◆ ◆ ◆

प्रश्नावली

दोस्तों जैसा कि आप देख रहे हैं कि यह कथानक बहुत तेजी से बढ़ता जा रहा है और हर पेज पर आपके दिमाग एक नया प्रश्न खड़ा करता जा रहा है। प्रश्नों की संख्या अब इतनी ज्यादा हो चुकी है कि अब वह मस्तिष्क में एकत्रित नहीं हो पा रहे हैं। तो क्यों न इन सारे प्रश्नों को एक जगह पर एकत्रित कर लें-

1) ‘अटलांटिस का इतिहास‘ नामक किताब ‘लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस में कैसे पहुची? क्या इसके लेखक वेगा के बाबा कलाट ही थे? क्या इस किताब से और भी राज आगे खुले?

2) माया से विदा लेने के बाद मेरोन और सोफिया का क्या हुआ? क्या माया कैस्पर को उसकी असलियत बता पायी?

3) क्या जेनिथ सुयश के सामने तौफीक का राज खोल पायी?

4) क्रिस्टी को नदी की तली से मिली, वह काँच की पेंसिल कैसी थी?

5) शैफाली को मैग्ना की ड्रेस तक पहुंचाने वाली पेंग्विन और डॉल्फिन क्या थीं?

6) पंचशूल का निर्माण किसने और क्यों किया था?

7) ऐमू के अमरत्व का क्या राज है?

8) जैगन का सेवक गोंजालो कौन था? क्या उसकी मूर्ति में भी कोई राज छिपा था?

9) क्या सनूरा की शक्तियों का राज एक रहस्यमय बिल्ली है?

10) मैग्ना का ड्रैगन, लैडन नदी की तली में क्यों सो रहा था? मेलाइट उसे क्यों जगाना चाहती थी?

11) उड़नतश्तरी के अंदर मौजूद 6 फुट का हरा कीड़ा बाकी कीड़ों से अलग क्यों था? वह इंसानों की तरह कैसे चल रहा था?

12) मकोटा के सर्पदंड का क्या रहस्य था?

13) सागरिका, वेगिका, अग्निका आदि चमत्कारी पुस्तकों का क्या रहस्य था?

14) माया सभ्यता का अंत किस प्रकार हुआ?

15) माया को इतनी सारी देवशक्तियां कहां से प्राप्त हुईं?

16) कौन था ‘ओरस’? जिसे फेरोना ग्रह का राजा एलान्का ढूंढ रहा था।

17) क्या था फेरोना ग्रह के जनक, पेन्टाक्स का रहस्य?

18) क्या थी एण्ड्रोवर्स पावर? जिसके हरे ग्रह पर भेजने से एलान्का गुस्सा रहा था।

19) कौन थी रेने? जिसे एलान्का ने एण्ड्रोनिका का प्रतिनिधित्व करने को कहा था? उसके पास कैसी शक्तियां थीं?

20) क्या शलाका आर्यन के पुत्र को ढूंढने अवन्ती राज्य गई?

21) कहां था आर्यन का पुत्र? क्या वह अब भी अष्टकोण में बंद था? या किसी ने उसे निकाल लिया था?

22) अष्टकोण के साथ रखी उस अमृत की दूसरी बूंद का क्या हुआ?

23) एण्ड्रोनिका में एलनिको और एनम के सिवा कितनी शक्तियां और थीं?

24) एण्ड्रोनिका में जाने के बाद धरा और मयूर का क्या हुआ?

25) गोंजालो का ऊर्जा द्वार, तिलिस्मा के ऊर्जा द्वार से कैसे टकरा गया?

26) कैश्वर अंतरिक्ष से किसे बुलाना चाह रहा था?

27) माया ने कैस्पर से किस प्रकार से, महाविनाश की तैयारी करने की बात की थी?

28) महावृक्ष के स्वप्नतरु में कितने रहस्य छिपे थे?

29) सुनहरी ढाल और तलवार से 'आकृति' देवराज इंद्र से कैसे वरदान मांगना चाहती थी?

30) विक्रम बर्फ के गोले में कैसे पहुंच गया? उसकी स्मृति कैसे चली गई थी? जबकि वह एक अमर योद्धा था।

31) क्या विक्रम आकृति की दी हुई नीली अंगूठी उतारकर वारुणी से सम्पर्क कर सका?

32) क्या ओरैकल से मिलने के बाद आर्टेमिस ने आकृति का पीछा करना बंद कर दिया था?

33) क्या मुफासा और कागोशी को सच में कलाट ने मारा था?

34) कौन था जैगन का गुरु कुवान? क्या मकोटा को वुल्फा उसी से मिला था?

35) तीसरे पिरामिड में कुवान की मूर्ति के नीचे खड़े निष्क्रिय जीव योद्धा कौन थे?

36) क्या मकोटा सुरंग के रास्ते तिलिस्मा में प्रवेश कर सका?

37) क्या जैगन धरा के बेहोश होने की वजह से जाग गया था?

38) कौन था वह विचित्र जीव? जिसने आसमान से सभी पंक्षियों को मारकर वांशिगटन डी.सी. पर गिरा दिया था? क्या समुद्री जीवों को भड़काना भी उसी की हरकत थी?

39) क्या मेलाइट, रोजर को कस्तूरी मृग का रहस्य बता पाई?

40) वेदालय की देवशक्तियों का क्या रहस्य था?

41) सुर्वया के सिंहलोक में ‘चतुर्भुज सिंहराज’, शुभार्जना और दिव्यदृष्टि जैसी शक्तियां कहां से आयीं थीं? सुर्वया ने अपने परिवार के बारे में क्यों नहीं बताया?

42) क्या थी सीनोर द्वीप पर आयी वह अंजानी मुसीबत? जो कि एक विशाल आकृति में समुद्र की लहरों पर मौजूद थी।

43) क्या लुफासा और वीनस को मिलने वाला वह लाल रंग का पत्थर मैग्ना की जीवशक्ति ही थे?

44) क्या था उस रक्त भैरवी की डिबिया के अंदर, जिसे नीलाभ ने हनुका को दिया था?

45) कैश्वर के बनाए प्राणियों में भावनाओं का संचार कैसे शुरु हो गया था?

46) क्या विद्युम्ना की त्रिशक्ति, महावृक्ष के द्वारा बनाये गये भ्रमजाल से भी ज्यादा खतरनाक थीं?

47) बिल्ली वाली देवी के, पात्र के जल और ब्रेसलेट का क्या रहस्य था?

48) कैसा था तिलिस्मा का आगे का मायाजाल? क्या वह आगे और कठिन होता गया?

49) क्या त्रिकाली और व्योम, त्रिशाल और कलिका को विद्युम्ना के भ्रमन्तिका से छुड़ा पाये?

50) क्या तिलिस्मा में घुसे सभी लोग तिलिस्मा को पार कर काला मोती प्राप्त कर सके?

51) क्या था इन अद्भुत देवशक्तियों का रहस्य?

ऐसे ही ना जाने कितने सवाल होंगे जो आपके दिमाग में घूम रहे होंगें।

तो दोस्तों इन सारे अनसुलझे सवालों के जवाब पेज की कमी के कारण, हम इस पुस्तक में नहीं दे पा रहे हैं। तो इंतजार कीजिए हमारे इस उपन्यास के अगले भाग का जिसका नाम है- “देवशक्ति- अद्भुत दिव्यास्त्र”

जिसमें हम आपको ले चलेंगे, देवताओं के एक ऐसे अद्भुत संसार में, जहां पर दिव्यास्त्रों की उत्पत्ति के रहस्य छिपे हैं ....

इस उपन्यास के बारे में अपने अमूल्य सुझाव हमें अवश्य भेजें।

मेल आई डीः

shivendra.suryavanshi2@gmail.com

फेसबुक पेजः

@shivendrasuryavanshitheauthor

दोस्तों इस पुस्तक को लिखने में बहुत मेहनत और शोध लगा है। अगर आपको यह पुस्तक अच्छी लगी, तो कृपया इस पुस्तक को रिव्यू या रेटिंग देना ना भूलें। आपका यह छोटा सा प्रयास मुझे और अच्छा लिखने के लिये प्रेरित करता रहेगा।

आपका दोस्त

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

◆ ◆ ◆

लेखक के बारे में

शिवेन्द्र सूर्यवंशी

“कृति का संकलन हूं, नये शब्दों का संचार हूं मैं,
अनकही गाथा हूं, या मस्तिष्क का विचार हूं मैं,
मेरे कथनों की कल्पना का सागर असीम है,
लफ्जों में बिखरी हुई, वीणा की झंकार हूं मैं,
मत दीजिये मेरे अलफाजों को पंक्तियों की चुनौती,
जो रुह को महका दे, फजा में बिखरी वो बयार हूं मैं,
मेरा वजूद छाया है अनंत ब्रह्मांड की गहराई में,
शिवेन्द्र’ हूं मैं, किताबों में सिमटा संसार हूं मैं”

दोस्तों इन्द्रधनुष के रंगों की मांनिद होती है एक लेखक की रचनाएं। जिस प्रकार इन्द्रधनुष में सात रंग होते हैं, ठीक उसी प्रकार लेखक की रचनाओं में भी सात रंग पाये जाते हैं। हर रंग अपने आप में एक अलग पहचान रखता है।

एक उच्चस्तरीय लेख लिखने के लिए सबसे पहले एक सम्मोहक कथानक की आवश्यकता होती है, फिर इसके एक एक पात्र को मनका समझकर माला में पिरोया जाता है, जिससे पाठकों को हर एक पात्र के जीवंत दर्शन हो सके। फिर कल्पना के असीम सागर में डुबकी लगाकर मोतियों की तरह एक एक शब्द को चुनकर उनके भावों को अभिव्यक्त करना पड़ता है। तब कहीं जाकर तैयार होती है एक लेखक की रचना।

दोस्तों मेरा नाम शिवेन्द्र सूर्यवंशी है। आपके लिए शायद यह लेखक व इसकी लेखनी नयी है। पर यह कलम आज से लगभग 25 वर्ष पहले से निरंतर रात की तन्हाइयों में कोरे कागज पर एक अनकही दस्तक देती चली आ रही है। यह अनकही दस्तक “रिंग ऑफ़ अटलांटिस“ नामक एक कथा श्रृंखला का रुप लेकर अब आपके समक्ष है। यह मेरा वादा है कि इस कथा श्रृंखला की हर एक पुस्तक अपने आप में अद्धितीय होगी। इस श्रृंखला की चौथी पुस्तक "तिलिस्मा" आपके हाथ में है।

इस श्रृंखला की बाकी पुस्तकें जल्दी ही किंडल पर प्रकाशित होंगी।

तो दोस्तों मेरा नाम आपके लिए नया जरुर है, पर मेरी लेखनी आपको नयी नहीं लगेगी।

"दूसरों को बनाने में तमाम उम्र गुजारी है,
पंख नये हैं, पर अब मेरे उड़ने की बारी है“

दोस्तों इस किताब को लिखने में बहुत समय और मेहनत लगी है। इसे पढ़कर कृपया ‘‘रिव्यू‘‘ के माध्यम से अपने विचार जरुर व्यक्त करियेगा।

इस श्रृंखला की अन्य पुस्तकों के नाम नीचे दिये हुए हैं जो कि जल्द से जल्द आपके हाथों में होंगीं

1) देवशक्ति (प्रकाशन तिथिः 15 जुलाई 2021)
2) काला मोती
3) देवयुद्ध

इस उपन्यास के बारे में अपनी अमूल्य सुझाव हमें अवश्य भेजें। हमारी मेल आई डी है

मेल आई डीः shivendra.suryavanshi2@gmail.com
फेसबुक पेजः @shivendrasuryavanshitheauthor